

V. 1721. αἰθρομένοις. V. 1723. γέλω. V. 1725. ἐπισο-
βείσκον. V. 1726. μίσσῃ pro τοῖσι. Sic et Flor. V.
1735. ὑπαί. V. 1741. θεῶν. V. 1743. † Ἀλλά με. V.
1747. Αἰσονίδῃ. Ibid. θεοπροπίης. V. 1759. Σιντίκδα.
Versus 1763. deest. V. 1766. ἀκτίσιν η supra i ad-
criptum est. V. 1771. ἐνθέμενοι. V. 1778. ἀνέστηθιν.
V. 1781. ἀσπασίας. In fine legitur: Θεῶ τὸ δῶρον· καὶ
πόνος ταπεινῶ Πέτρῃ. Ἀμήν.

Τ Ε Λ Ο Σ.

Corrigenda.

Lib. I. V. 58. lege Καίνειδης. V. 76. δηϊόσιν. V. 96. lege:
ἔμμελῆς. Cf. Hom. Il. ζ. 449. ρ, 9. V. 110. Ἐρεχθεΐδας.
V. 124. αἶε. V. 162. οἶ. V. 178. ἐπολίσσειν. V. 318. l. ἀκτὴν. V.
323. l. πανσυδῆ. V. 348. ὥς. V. 365. λείω. V. 445. δαδαῶς.
V. 526. τόρρ. 529. ῶ. V. 609. ὑπερβασίησι. V. 612. ἐχθῆ-
ραντες. V. 613. ἔρον. V. 671. ἐδριόωντο. V. 769. ἐκηβ. V. 815
l. 915. V. 926. l. σφιν et ἄη. V. 940. ὑπέρ. V. 1046. Οἰνείδης.
V. 1247. κάμησιν. V. 1248. ὥς. V. 1285. ἄσπετος. V. 1305.
ἀμφιρίτη. Lib. II. V. 4. ὑπερόπληέσατον. V. 78. σῆ. V.
481. ἔτμηξεν. V. 501. γάρ. V. 665. ζυγῶ. V. 842. ἐπι pro ἐπ·
et post ἰδεσθαι, V. 857. Ἀβαντιάδας. V. 890. δῆ. V. 943.
δ' αὐτε. V. 1045. ταχινόν. Lib. III. V. 9. post κῆσσαι, V.
61. ἐι. V. 105. μειλίζομαι. V. 126. σὺν. V. 130. νῆιν. V. 423.
ῆσθ'. V. 450. βεβήκει. V. 570. Ὡ. V. 712. ὄφελλεν. V. 729.
με. V. 730. ἐι. V. 868. ῆ. V. 879. ὠπείας. V. 1008. δ'. V.
1296. σάκος. V. 1358. νεόθεν. V. 1386. ἀγχι' ἔρσιον tolerari
potest Cf. Lib. I. V. 532. ἀγχι οἶ. V. 1388. μέμαρπῶς.
Lib. III. V. 9. Αἰήτης. V. 73. τεκμαίρετο. V. 721. ναυτιλῆνι.
V. 805. εἶναι. V. 827. ἡδ. V. 1042. δέισατε. V. 1151. Ὡρσε.
V. 1339. βαρεῖα. V. 1444. del. ἄρα. V. 1466. Λυγκεύς.
V. 1618. βύθον.

1508. † τὰ πρῶτα. V. 1510. ὁπόσον pro ὅσον. Ibid. γίνεθ' male. V. 1521. † ἄλλαι; αὐταὶ Medae personae non convenit. V. 1523. † ἐνεκ' pro ἐπεὶ † ἔλκος. Brunk ex ingenio ἄλγος. V. 1531. λάχνη pro ἄχνη. V. 1537. πρόσοντος pro πρήθοντος. V. 1538. † ἀποτεκμήρκετο. V. 1540. Φέροντο. V. 1544. μαιμῶνντι, ω in penultima vitiosum est. V. 1553. προΐσето. V. 1561. † Θηροτρόφον. V. 1566. † βορείαις cum θυέλλαις bene congruit. Cf. Odyss. XIV. 253. Βορέη ἀνέμω. V. 1567. † ἐπὶ πείρασσι. V. 1568. μεταχρονίην. V. 1575. μεσσηγὺ. V. 1581. † περιβρῆδην. Post hunc verum sequitur in nostro Codice vers. 1653. εἰ μὴ — usque ad v. 1719. et post ῥέζειν sequitur v. 1582. κλινομένης. — V. 1583. Post τετάνυσαι Noster ἰθὺς habet, quod c. m. V. 1588. † ὁ τείω pro ὅγ' ὡμοῖς quod Brunk e coniect. dedit. V. 1595. † ἐκρίνατο pro ἐὺ κρίνατο. V. 1597. † τῆσδε φαάνθης. V. 1598. Φόρκυν. V. 1601. ῥα καὶ pro ῥ' ἅμα ῥ. Ibid. ὕδατα pro οἶδατα. V. 1602. βένθος. V. 1605. ἐνπειθία. V. 1606. Deest ἐπ'. V. 1613. † ὑπαὶ pro ὑπὲκ. Ibid. διακρίρα. V. 1623. Deest αὐτήν. V. 1625. ἦ deest ρι. V. 1628. πρυμνήτω pro ἀργέτω. Ibid. καχάροντο pre χήραντο. V. 1635. ἀπόπροθε. V. 1647. ὃ τὴν γε. V. 1650. † περιδδείσαντες. V. 1652. ἀμφοτέροις. V. 1653. σφιν. V. 1659. ἐρύοντο. V. 1660. θρετμοῖς. Ibid. ῥέζει. V. 1662. ἐκάτερθεν. V. 1664. κληῖδος. V. 1665. Ἐνθ' αἰοιδῆσι. Ibid. θέλγε pro μέλπε. V. 1669. ἐχθροδαποῖσιν. V. 1670. Desideratur ὄμμασι. V. 1671. κρίεν. V. 1674. μένον pro λυγρός. V. 1679. πετραίη. Ibid. σχεδὸν pro σφυρόν. V. 1685. ῥιπῆσιν μεν πρώτιστα C. m. V. 1686. ἐξαγεῖσα. V. 1691. ἱερὸν. V. 1695. † ἄλλα pro αἰδινή quod Brunkius ex ingenio dedit. V. 1699. φορέοντο. C. m. V. 1709. ἐνέσχεθεν. V. 1710. † μαρμαρέην † βίος † αἰγλήν. V. 1712. Ἵπκ-ρίδος. V. 1718. μεν ἀτυζομένοις. V. 1720. ἐφεπλίσαιαν.

ἄγισθαι. V. 1244. παῦρον ἔλειπτο. V. 1255. μενοινάωντας,
 Cf. Il. v, 79; aut potius μενοινάωντας scribendum est,
 Cf. Il. τ. 164. Saepissime enim α et ω apud Nostrum ut
 ω scripta et inter se confusa sunt. V. 1256. κεν. Ibid. ἀνέμοισι.
 V. 1260. ἀγόρευε. V. 1261. Ἀλόμειθ' gl. πλανώμειθ'. V.
 V. 1267. † ἦδε κείσθῃ. V. 1269. μεταχρονίην. V. 1273.
 δέ τις pro γέ τις. V. 1274. φαίνοιν. V. 1284. ἰδρώωντα.
 V. 1287. φαίνει. V. 1289. ἤλυθον ἔρπ. V. 1293. ἄλω
 ἑκατέρω. V. 1295. ἐπὶ pro ὑπὸ. V. 1301. κινήσωσιν. V.
 1304. ἰάλεμον. V. 1308. ἐλέαιρον. V. 1312. ὀξύτατοι.
 V. 1315. καλιπεμπέ. V. 1316. αὐτὸν. V. 1321. † ἔργα
 κάμεσθε. V. 1331. γείνοντο supra ei i adscript. V. 1336.
 δῆωμεν. Ibid. δέ τι et ἀρίστη. V. 1339. † βαρείᾳ. V. 1340.
 οὔσσαι pro βῆσσαι. V. 1341. πιφρίκασσι. V. 1341. τις
 γῆρυσ. V. 1343. φίλῃ. V. 1353. τίσιν. V. 1355. δὴ pro
 κεν. V. 1357. τῆσγε. V. 1359. ῥ' ὅπως. Ibid. ὕγρη. V.
 1365. † Μινύησιν. V. 1373. αἰὲν ἔχασα pro ἄρμε φέρασα.
 V. 1374. ἡμέας pro νωλεμέ. V. 1379. σημενέειν. male.
 V. 1385. μεταχρονίην. Ibid. ὄσκα. V. 1386. ἐνδεμένους. V.
 1390. βεβημένοι. V. 1401. μίλιον. V. 1402. ἔρῃ ἐπὶ
 σκαίρεσκον. V. 1410. τὰς δέ σφι. V. 1412. ἐρκαίαι. V.
 1413. καταχθονίαις. V. 1415. δείξατε ἐλδομένοισιν. V.
 1422. † ἐλέαιρον ut Odysse. α, 19. V. 1425. τηλεθάοντα.
 Cf. Hom. Il. χ. 423. ρ, 55. V. 1429. ῥοικί. In margine
 adscriptum est: ῥοαὶ καὶ ῥοικί καὶ ῥοῖδα δένδρα εὐκάρπα.
 V. 1433. ἔμολεν. V. 1435. αἰρόμενος. V. 144. † Ἦδε δέ
 τις, monstrans rupem loquitur. V. 1447. σέρονδ. V.
 1453. γειοτόμοι μύρμακες, hoc male; illud idem esse
 videtur ac γειομόροι. V. 1455. μεμιάσιν. V. 1460.
 δῆωμεν. V. 1461. οἱ θ' ἄρμενοι gl. ἤρμωσμένοι. V. 1462.
 ἐρείεινον. Cf. Lib. I. 989. et 990. V. 1465. πεποιθότες. Cf.
 v, 1484. V. 1482. μασητέ. V. 1484. μοχθήσαντε. V.
 1487. ὅς ἐῷν et ὀφρ. V. 1489. μιν pro μιν. V. 1491.
 Ἀκακλίδος. V. 1495. † ἔπειτα μίγη. V. 1505. καῖθι. V.

V. 943. ῥόον. V. 946. κυθμῶνι pro πυθμένι. C. m.
V. 947. ἡρήρειντο δὲ pro ἡρήρειντ', ὅθι. Ibid. κῦμα; οἶδμα
gl. habet. V. 952. μεταχρονίην gl. eis ὕψος ἀειρομένη.
V. 957. ἐρύσας. V. 964. προτέρωθεν ὥκα — male. V. 976. †
ῆεν. Sic et Stéph. V. 978. χρυσέοισι c. m. V. 985. λόγος
pro ἔπος. V. 990. φιλαμένους. V. 999. ἱκελόν. V. 1014.
μηδὲ. Deest με. Ibid. Κόλχοισιν. V. 1017. κούφαισι. V.
1022. † δὲ με. V. 1029. † δακρυχέσαν ad Areten Cf.
1077 et 1078. V. 1034. κείρατε. V. 1045. † ἐπὶ ῥόον.
V. 1048. ἐπεὶ male. V. 1051. λάθεισθε pro μέθεισθε. V.
1052. † ἔασιν. V. 1053. γενάζοιο. V. 1057. γε pro κε.
V. 1064. σαλάσσει C. m. V. 1065. μνωμένη gl. μνησεν-
ομένη. V. 1072. καριδίη. V. 1086. † αὐτὸν ad Αἰσονίδην
refero. V. 1089. † Αἰέν pro Λίην. V. 1090. † ἐνώπιδα.
V. 1099. λέχας pro Κόλχας. V. 1100. ἀντιάσαι pro
ἀτίσαι C. m. V. 1103. Ἑλλάδι v. ἄγοιτο. V. 1107.
λέκτρα. V. 1108. νοσφίσομαι. V. 1111. βάλιν. V. 1115. †
ἐποτρυνέσκα ad ancillam refero. h. e. ut iubeat Jasonem,
rem habere cum Medea. V. 1120. ἀποτμήξας. V. 1122.
ἀγγεῖλοιεν. V. 1124. † εὔρεν. V. 1144. ἀμπεργόμεναι gl.
σορεύσαι. V. 1147. γλυκερὸν πόθον. V. 1154. τές τε pro
τέσγε. V. 1159. † ὑπαί. V. 1161. μενέαινε μιγῆναι pro
μενέην τελέσαι. Post vers. hunc desunt versus 1162
1163 et 1164. V. 1176. μετεβήσετό. V. 1186. πόρτην. V.
1194. ἐυκέρκτα gl. εὐήχα. V. 1196. μνήσαιντο. V. 1200. †
Ἀρήτη. V. 1201. † τὰ πρῶτα. V. 1205. ἀρήκτοισι. male.
Quae quidem orthographia demonstrat, quam ignarus
rei metricae fuerit Noster. V. 1209. † μιν pro δὴ.
Poëtae Alexandrini saepius μιν pro αὐτὲς ponunt. Ad
συνήμονας h. l. refero. V. 1210. † μειλίζαντο. V. 1217.
δὲ τ' ἐκεῖσε. V. 1228. † Ἀμβροκίῃων. V. 1230. σενάς.
V. 1233. πέλαγόςτε. Cf. v. 1270. ubi πέλαγόςδε le-
gitur. V. 1235. ἔν' pro ὅθ'. V. 1237. † μινόντα. V.
1238. † κωφῇ. V. 1242. Deest δὴ. V. 1243. ἐνέωσαν

619. πόρος pro πόθος *V.* 620. τέρπειν, pro τράπετο. *V.*
 621. † ἐπιβραῖ. *V.* 633. † πόντον pro κίλπον. *V.* 636.
 ἀθρόφατον. *V.* 637. ἐπέλασαν. Ibid. † ἀπορρώξ gl. interl.
 ἀπίρηγμα, ἀπίσπασμα. *V.* 643. πάλιν τρωπῶντο. *V.*
 644. δ' οἶμον. *V.* 648. νεισομένοισι. *V.* 652. † ἐπίκροι. *V.*
 656. ἄλιν *V.* 657. ἱκελαι male. *V.* 662. πείσματα ἡόνων.
 Ibid. † ἐνθα δέ. *V.* 668. πορφύρεσα, *V.* 673. † ὅλον pro
 ὁμόν. *V.* 676. προτέρως. *V.* 677. ἀρηγεμένως. *V.* 678.
 δαφιλίῳ. *V.* 679. βαλῆς. *V.* 680. ἥγαγ' αἰών. *V.* 685.
 πέμπεν *V.* 687. † καταβύβεσσα. Ibid. ἄνωγε. *V.* 691.
 κέλευεν. *V.* 693. αἶξαντε. *V.* 695. † ἀμφοτέρως. *V.* 700.
 χόλον pro θέμιν. *V.* 708. μείλισσεν. *V.* 709. † ἱκεσίῃσι ad
 ἀγκαλίσσας invocans supplicationibus. *V.* 710. † δέιματ'
 pro λύματ' Cf. Euripid. Iph. T. 931. Ἐρινύων δέιμα. *V.*
 712. μελίκρατά. *V.* 713. † καῖεν. *V.* 717. ἐμφύλιῳ male
 Cf. v. 725. et Odys. XV. 273. *V.* 720. μύθοις. *V.* 723.
 ἰδρύθησαν. *V.* 727. Ἡελίοιο. *V.* 738. † ἐλείπειν. Cf.
 1025. ubi et Brunkius hanc formam agnoscit: Ibid. δ'
 ἐπὶ τοῖον pro ἐπὶ τοῖσιν. *V.* 739. μήσατο. *V.* 745. συνοπαδὸς
 male. *V.* 746. ἀνευθεν. *V.* 747. † μηδὲ με. Ibid. γεννάσῃ
 supra η αἰ adscript. *V.* 753. † κοιμίσαι. *V.* 767. †
 ἀπολλύξειεν. *V.* 768. † τρηχύνει. Indic. saepius pro
 optativo E. g. Matth. XII. 34. aut pro imperat. Aristoph.
 Plut. 488. *V.* 775. † ἐβήσατο. Cf. 865. *V.* 778. κλυτὸν
 male. Ibid. αὐτῷ pro τῷ. c. m. *V.* 785. δ' ἄλλοι. *V.* 788.
 περικλίνει. *V.* 789. Deest μέγαν. *V.* 795. ἀθανάτοις —
 θνητοῖσιν male. Respicias enim ad κείνῳ vers. anteced.
V. 796. ἐμὲ τ'. *V.* 800. † ἔκασα pro ἅπαντα. *V.* 807.
 εἰς δαῖτα κάλεσσα. *V.* 810. † θυμηδέα pro θυμερτέα, *V.*
 825. ἐάσσης. *V.* 830. γενύσσει. *V.* 838. δολεχίν. *V.* 859. †
 πανσυδή. *V.* 865. ἐβήσατο. *V.* 871. χρέσκειν. *V.* 885.
 ἔβαλε male. *V.* 897. πορσένεσκον gl. ἔτερπον. *V.* 900.
 περισπῆς gl. ἀκρωρείας. *V.* 908. ἐπιβρομῶνται. *V.* 918.
 αἰτ' pro ἔτ'. Ibid. ἀνερεψατο. *V.* 937. πλαγκτῆσιν ἐνί.
 Ibid. ἐρύσσαι. *V.* 938. κέλευθεν. *V.* 939. † ἐνιχρίμψασθαι.

v. 320. Σίγννοι. v. 324. Καυκάσιοιο. v. 326. Ταλαύριον
 pro τὸ Λαύριον. v. 327. διεκπρομολόντες contr. metr. v.
 331. Τῶν δ' ἦτοι. v. 333. πολεῶν pro πολλῶν. v. 336. Deest
 δέ. v. 337. κεν λαγόνος pro Σαλαγκῶνος. v. 340. συνθεσίη
 supra adscript. συμβιβάσει † ἀλευάμενοι. v. 343. † εὐδοκίη
 gl. interl. θελήσει. v. 345. Deest δε post τὸ. v. 348.
 Post hunc versum, insertus, est v. 1186. lib. II. εἴτε
 μετ' ἀφνειά θεῖα πόλιν Ὀρχομενοῖο. Noster habet ἀφνειοῖο.
 v. 354. ἐνωπί male. v. 355. † συναρτύνεσθε. v. 358. χροιοῖ.
 v. 359. ὑποσχέσθαι. v. 363. λυγροῖσι. Attica ratione v.
 366. ἐπεὶ τ' ἐπαΐστος ἐτύχθη pro ἐφ' ἧ πλῆθος ὕμιν' ἐτύχθη.
 v. 367. μαντείη. v. 370. προφέρων. Ibid. † μηδέ με v.
 373. συνέρεσάμεν. v. 376. Deest κεν δή. v. 380. οἶα τ'
 ἔοργα. v. 381. δή κε pro κεν. v. 383. ἐπικυδαίεις. v. 385.
 σε pro τε πάτρ. v. 390. ἔσσεσθαι supra αι alia manu
 adscr. ε. Ibid. ἐκῆτοί supra adscript. alia manu legitur
 ἐνεκεν. v. 391. ἀνιάζεσθαι. v. 394. † ὑποδδείσας. v. 397.
 ἀμφιδέδωμαι supra αι adscript. ε. v. 399. μεμάκασιν. v.
 400. ἄγοιντο. v. 402. ὅτοι pro ὅπα. v. 405. ἀντιώσσι.
 v. 406. φέροντες. v. 408. † οὐδ'. v. 409. διεξίωσι. v.
 412. † τὸ πρῶτον. v. 415. ἐγωγε. v. 419. τὸ δ' ἔργ. v. 423.
 οἶσι. Deest καὶ et ἱερὸν. v. 425. † ἀμφιάλω Sic Codd.
 v. 427. † πολέσιν. v. 434. † ἐνι. v. 435. ἧ δ' ὄτε. Ibid.
 ἐπεξεινώσατο supra ει υ adscripto. v. 451. Ἀφύρτος. v.
 459. † οἶόθι. Ibid. πειρήσαιτο. v. 468. κεραλκία. v. 474.
 ἀργυρέην. Ibid. † ἐρύθηγεν. v. 480. Deest περ. v. 481.
 κείατ' ὁστέα. v. 486. Φῦλα τε c. m. v. 490. † ἤντησεν. v.
 497. † ἐκαθρήσαντες gl. interl. ἐπιβλέποντες. v. 500. διε-
 δίωνται. 532. ἰδρυθεῖεν. v. 534. † ὄγε. v. 546. πέλοιτο.
 v. 543. Νηῖδα. v. 546. † δ' ἄρ pro γάρ. v. 559. Αἰαίτης.
 v. 573. Κερωσσόν. v. 577. † βαρύν pro μέγαν. Ibid.
 ἐφράσσατο. v. 579. † τοίδ' pro ταῖς. v. 580. Ἠλεκτριάδος.
 v. 582. † τόββ'. v. 591. † δήκσιν. v. 600. † ἀνακηκίει
 gl. interl. ἀνακηδᾶ. v. 602. μεσηγύς. v. 604. † ἐφήμεναι.
 A. 606. βλιβιάδαι. v. 608. κλύζωσι. v. 609. ἡόνος. v.

V. 17. † πλητο. V. 26. ἀμφοτέρωθεν. V. 32. χαῖρε. V. 40. διεξέειπεν male. V. 43. ὕμνοισιν. V. 50. ἐφράσσατο. V. 57. † ἔρος. V. 59. † σεῖο. Ibid. δολίαισιν. V. 68. ἐντε-
 πύρῃ Ibid. ὄρεά. V. 72. ἐδὲ pro ὁδὲ. V. 73. † τεκμαίρετο.
 V. 74. ἦεν. V. 81. χαμαδῆς. V. 82. γῆνα. V. 85. ἐπὶ pro
 ἐν. V. 86. † τόνδε. V. 87. εὐνήσασθαι. V. 90. ἐκατέρω.
 V. 91. χήτει. V. 92. ἀκαχαμένη. V. 94. θάρσυνέ. V.
 97. σήσασθαι. V. 109. ἐβάλλοντο. V. 111. † ἀλευάμενοι.
 V. 115. καλῶνται. V. 117. νώτοισιν. V. 118. † πέλεν. V.
 120. † δέρας. V. 121. Ἑρμείας. V. 127. τείνετο. V. 129.
 νεισσομένους. V. 138. ροίβω. V. 140. ἐλίσσονται. V. 141. †
 δ' αὖψ. V. 143. † ἐλλίλιξε (male in Cod. ἐλέλιξε.) V. 145.
 ὀμματὸν male. V. 156. νόον pro νέον. V. 166. ἤνωγεν.
 Ibid. λίπεν. V. 169. ἐῶ, pro ἐανῶ. V. 171. ἀναείρετο.
 V. 172. παρηάσιν. V. 173. μαρμαρυγὴ γληναίων gl. interl.
 λαμπηδών. Ibid. ἔκελον. V. 178. νεισσομένοιο. V. 182.
 νοσφίσεται. V. 183. Deest μὲν. V. 184. † θάμβησαν. V.
 187. ἄλλας pro αὐτὰς. V. 189. ἔειπεν. V. 195. Ἀχέιδος.
 V. 196. γαίης αὐτῶν θ' ὑμῶν d. e. sic hic versus legitur.
 V. 204. ἐφετμή. V. 205. Deest. V. 208. σπάσαμενος.
 Ibid. ναὸς. V. 219. μαιμάωντες. V. 221. ἐρεϊδομένους. V.
 228. πολυπήμονας. V. 232. ἄξουσιν. V. 237. εἰρύσαντο. V.
 243. ἴκηται. V. 244. ἐν. V. 245. ἀκταῖσι. V. 248. πορσα-
 νέεσκ. V. 251. † ὄρεα. V. 257. Νεισόμεθ' Ὀρχ. Ibid.
 τῇ pro τήν. V. 259. Ἔσι. V. 260. ἐκγεγάασιν. V. 271.
 προχραῖσι. V. 274. σφωῖτέρω sine comina. V. 275.
 ἐπιυχόμενος gl. interl. κρατῶν, ergo ἐπισχόμενος legendum
 Ibid. ἔποθε pro ἤποθε. V. 279. γραπτῶς. Ibid. ἀνειρύνονται
 pro ἔθεν εἰρ. V. 280. ἔασσιν. V. 281. ἐπινεισσομένοισιν.
 V. 285. εἴως pro τείως gl. interl. αἰ. V. 286. προιαῖς. V.
 288. Θρηῖκων. V. 291. Τρίνακίς. V. 292. παραπέκληται.
 Ibid. γε pro δὴ. V. 293. ὑμετέρης γαίης. Ibid. ἐξανίναιν?
 V. 294. τοῖσιν. V. 297. μύρσιμον ἦεν (pro ἀμύρσιμον ἦε.)
 gl. interl. εἰμαρμένον. V. 302. μέμνην. V. 303. † δὴ τ'
 ἄλλοι Cf. 305. V. 308. παρέσχετον. V. 316. Εἰαμναῖσι.

δόμους. V. 1105. ἀλεγεῖναι. V. 1111. ἀπ' προσθεν. V.
 1113. † με pro γε. V. 1117. τόσσοισιν pro τότε σοῖσιν. V.
 1121. ἄλλον pro ἄγγελον. V. 1124. † οἶδέ V. 1131. ἐντοσθεν.
 V. 1135. ἱηται. V. 1137. ὀπιπτεύουσιν. V. 1142. αὔδα. V.
 1145. αὖθις. V. 1152. † Αὐτομάτοισι. Deest δέ. V. 1155.
 δ' ἄρ' ἔσαν. V. 1160. ἐρυσταμένη. V. 1175. Ἐρμείεο male.
 V. 1178. Ἀονία. c. m. V. 1179. Εὐρώπαν male. V. 1180.
 Ἀρητιάδη. V. 1186. Ante γηγενῇ desideratur ἐπὶ. V. 1188. †
 ἔπορεν. V. 1193. ἐβάλεν male. V. 1195. † εὐφειγγέος me-
 lius sonat. V. 1199. ἐκποθι. V. 1204. εὐαγέος. V. 1209.
 σαῖνε pro δαῖτε. V. 1214. ἱεροῖς. Contrah. ἱροῖς. V. 1215.
 σμερδαλέοις. V. 1218. πείσειά. V. 1219. ποταμητίδες. V.
 1221. † ἔλεν. V. 1231. † πολυῤῥινον. V. 1234. † πολέ-
 μιζε. V. 1238. ἀέθλων. V. 1243. † δῆδ' ἄμα. Ibid.
 νείσεται. V. 1250. περ pro πα. V. 1251. εὐαγές gl.
 interl. μίγα; agilis hasta. Versus 1254 1255 et 1256
 deest. V. 1279. βαῖνεν ἐς ἀέθλον. Legendum; ἄθλον.
 V. 1283. ἵκελος. Cf. I. 781. 636. Ibid. χρυσάωρ; recte;
 nam ὁ, ἡ, χρυσάωρ, ορος, et ὁ, ἡ, χρυσάωρος, &, obvium est.
 V. 1286. ἐπηῆξε. V. 1291. εἰλυμένα. V. 1299. εὐῤῥινοῖς
 χροάνοις. c. metr. V. 1300. ὁμάδῳ gl. interl. θορύβῳ. V.
 1310. † σφῆλε. V. 1312. Deest τῇ καί. V. 1317. λόφας gl.
 interl. τραχήλας. V. 1319. ὑπέρ pro ὑπ' ἐκ. V. 1320. ἐνθετο.
 V. 1321. ἐξόπισθεν κε γέγοντο. V. 1324. αὖ ἀραρυῖαν. V.
 1326. Οἱ δὲ τοι εἴωσ. V. 1330. Αθηναίων (gl. interl. πολὺ)
 pro Αθηρὸν. V. 1335. λαῖν pro βαθμὸν. V. 1340. λείχος.
 Ibid. ἀνυμέναιο. V. 1341. κεκηκότες. V. 1351. ἵκελος. V.
 1352. θηρευτῆρσιν. V. 1354. ἀνταχύεσκον. V. 1356. δόρασι.
 V. 1361. † πάντα φαάνθη. V. 1376. ἀνέμς male. V. 1384.
 πειλόμαι? V. 1386. † ἀγχ' ἔροισιν. Cf. 532. Lib. I. ubi et
 Dat. locum habet. V. 1391. ὁδᾶξ. Ibid. τετρηχότε. V.
 1396. Deest ἔχνος. V. 1399. πε τοι ὡς δὲ Διός. V. 1046.
 εἴ pro ἦ.

LIB. IIII. Versus 4. δυσίμορον. V. 13. ζυλόχοισι.

V. 859. † ἐν pro ἐνί. V. 860. αἰωνάοις. Cf. II. v. 1054. V. 863. † ἐν pro ἐνί; quod magis placet, quoniam litera saepius hoc versu repetitur. Ibid. ἐρφονάοις c. m. V. 867. † Τόν ρ' ἤγ' Attici in primis masculinis pro femininis utuntur. Videsis Fischeri Animadverss. ad Gr. Gr. Velleri III. a. p. 308. V. 870. δοιοί cf. v. 867. V. 886. † ἀλευάμενοι. V. 895. ἀγέρονται. V. 899. † ἀπονεισόμεθ'. Cf. Lib. III, 1061. 1243. II. 199. 825. 901. † συναρέσσεται ἡδε μενοιῆ. V. 909. Κατὰ σφίσιν. Ibid. ὀπάσσειν. V. 913. † ἀπονόσφιν. V. 930. κινήσασθαι. V. 942. ἐνεσίης. Ibid. συνάριθμιος, συνέριθος praefero Cf. Hom. Odys. VI. 32. V. 945. † ἐπεσσόμεθ'. Melius cum τῷδ' αὐτῷ ἐνί χώρῳ coniungitur, quam ἀπεσσ. Ἐπειμι insum, immineo; sensus: hunc locum tuebitur. V. 951. † μεταλλήγесκον. V. 962. † αὐτῆ. V. 968. ἐλδόμενοι male. V. 971. ἀπείρητον. V. 973. † περιπεπτηνῶν (male in Cod. περιπερίπ.); ἄτη, συμφοραῖς περιπίπτειν, usitata locutio est. V. 974. † ὑποσσαιῶν. V. 975. Τίπτέ με. V. 976. Οὐ τοι ἐγὼ. Ibid. ἔασσιν. V. 977. πάτερη, ἥ ἐνί v. Beckius cum Vrat. ἐνί v. V. 982. † μηδέ με. V. 983. † τὸ πρῶτον. V. 994. † πε ἡδη. V. 1002. † τέκμωρ. V. 1005. † σαώσης. V. 1007. ἐπητύησι gl. interl. συνεσίαις. V. 1020. περιβρόδεσσιν male; duae enim sunt voces, et ultima vocis περι ob caesuram producenda est. V. 1023. βάλον, male. V. 1029. μέσσην. male. V. 1035. μειλίσσοιο. V. 1037. ἔπειτα pro ἐπεὶ κε. V. 1046. πεπλαγμένον; gl. interl. μεμολυμένον. Homerus πεπαλαγμένον habet. II. ζ. 268. Odys. χ. 184. ψ. 48. — V. 1049. Deest γε. V. 1053. ἀρόσσεις supra ei η adscript. V. 1054. ἀνασυχύσσι. V. 1057. λάθρα. V. 1058. κάρχαλίοι. V. 1062. εἴτε pro ἥ τοι. V. 1065. ἐῴο. V. 1066. ἐπιπλάγξασθαι. V. 1067. μῦθόν. V. 1068. ἡδη pro δῆ. V. 1071. ἔασσι. V. 1076. Πασιφάνην. Ibid. ἐμείο. V. 1081. † μηδέ τιν' ἄλλον. V. 1083. † εἰ δέ τι. V. 1086. ἐὺρήνός Lego εὐρῆνός. V. 1089. † ἀθανάτων. Ibid. ἐμβασίλευσεν. V. 1091. Ἰαολκίς. Cf. v. 1109. V. 1097. Deest τε ante

V. 563. † υμμι. † πέλοιτο. V. 567. † ἀγόρευσεν.
 V. 571. πτήσσοντες contr. metr. V. 575. ἔλος Cf. II. XX.
 221. V. 577. et 578. deest. V. 579. κεν. Ibid. διαδηλῆ-
 σονται gl. interl. βλάψουσιν. V. 581. † ἀναβύβζας. V. 582.
 νήιος. V. 588. † Ἑρμείαν. Cf. v. 498. Noster saepius
 forma Attica utitur. Ibid. κεν. V. 594. † Νόσφιν δοῖ. V.
 595. † κακοῤῥέχτησιν. V. 601. τῷ κε καὶ male. V. 610.
 παρηγορέεσθ' ἐπέεσαι. V. 613. μειλίσσετο contr. metr. V.
 615. ἀνφιδόν. V. 618. ἀκαχεμένην. Cf. Lib. II. 190. III.
 1324. V. 627. ἀμφόριον. V. 628. ἐπέτρεπον. V. 634. †
 πᾶπτηνεν. Ibid. † μόγισ. Cf. I. 1233. V. 637. μή τι πῆμα
 φέρει, (supra ei η script.) κακόν. V. 648. † ἐνί. V. 649.
 αὖθις. V. 651. † τηύσιν gl. interl. ματαίαν. V. 654. αὖθις.
 V. 656. θαλάμοισιν. V. 657. ἦ pro ῥ. V. 672. ἀκαχεμένη.
 Cf. v. 1104. et 1156. Ibid. † δρύφεν. V. 673. † ὅσσα. Cf.
 Quint. Calab. I. 183. V. 679. † δῶμα τόδ'. V. 683. ἄλλοθεν
 μέν male. V. 684. ἄλλοτε δ' ἐκέρθε. male. V. 688. παραι-
 τέρω; hinc nos recepimus παραιτέρω. V. 691. † λείτσω.
 V. 692. φθειῖν pro θείη. V. 694. ἀμύνομένη male. V. 702. †
 διαβρῆαισθ' ἐντας. V. 704. Ἐρινός. V. 718. ἀμεΐβετο, a brevē
 contr. metr. V. 721. † κείνοιο. V. 723. † τόνδε. V. 729. †
 μηδέ μῃ. V. 630. † εἰ ἐτι σῆς ψ. V. 731. γεγάασσι. V.
 738. οἴσομαι. Versus 739 deest. V. 741. † μιν. Ibid.
 αὖθις. V. 751. † περ pro ἐπὶ. V. 754. φθειῖσαι gl. interl.
 φθείρειν. V. 761. θ' ἀραιάς. V. 765. † ἐνιχρίμψωσιν. gl.
 interl. πλησιάσωσι. V. 767. καταφθεισθαι. V. 777. κακῇ
 θ' ἀνίας. V. 778. φθεισθω. V. 779. Deest κεν. V. 789. †
 μελάθρῳ. Cf. Eurip. Fragm. Plinsh. T. II. Ed. Beckii p.
 468. Δήμῳ δὲ μήτε πῶν ἀναρτήσῃς κράτας. V. 805. † ἀργεῖς.
 Hesych. explicat. πολὺ καὶ λάβοον. V. 817. καὶ τὰ μὲν.
 V. 821. † ἀντήσειεν. V. 825. μέμναι. V. 828. † τὰ πρῶτα.
 V. 836. ἦεν. V. 840. † πορσύνχται gl. interl. εὐτρεπίζουσι.
 V. 843. ἐπλίσσσκον contr. metr. V. 845. ὄρρά. V. 846. †
 ἐννυχίαισιν. Deest τις. V. 848. † κ' εἰς ῥήκτος. metro con-
 venientius. V. 852. κνημοῖσιν c. m. V. 856. † καυλοῖσιν.

ubi et δαλλῃ legitur. V. 301. ποτῇ male. V. 303. ποῖσι. V. 307. σωομένοισι gl. interl. ὀρμημένοισι. Ibid. ἔμοιο. V. 310. κασιγνήτιν. V. 316. ὁπότε contr. metr. V. 318. † ὑποδείσας. V. 322. ἔμβαλε. V. 339 † Αἰολίδω Cf. v. 584. et Lib. II. 1141. et ΑἰολίδωΝ γενεῇΝ πρὶΝ male sonat, et difficile est pronuntiati. V. 341. ἴασσι. V. 342. ἀντοῦτῃ quod propter ἐπεκύρσαμεν nobis placet. V. 346. † ἐρεμοῖς Cf. II. XXIII. 430. V. 347. † ἀνεγειράμενοισι. V. 349. ὀπάσσαις. V. 351. βιησάμενοι. Ibid. † μέμονεν. V. 353. δαμάσσαι. V. 355. † γε pro κε. V. 359. κεν. V. 360. υἷος. V. 366. γεγάσσι. V. 369. μενέαινε. V. 370. ἐόλπει. More jon. V. 373. δόλοισ contr. metr. V. 375. † ὀμάρτησαντες. Ibid. † ἄφ' Ἑλλάδος, propere e Graecia cuntes, a Graecia comites estis. Ἀντίκα, s. ὡς ἀντίκα, quam celerissime e Graecia advehentes. V. 386. † χρεός Cf. Lib. I. 236. III. 530. σ. in fine positionem non efficit cf. v. 206. V. 396. † ὑποσσαιῶν. V. 401. † ἀγορεύει. Cf. II. XV. 53. XVI. 627. Poëtae distincte loqui solent. V. 412. ἐπιτέλεσσον pro ἐπὶ τέλσον. V. 413. ὀλκοῖσιν. Ibid. † ἀκτῇ gl. interl. καρπῷ. σπóρον et ἀκτῆν, ut synonyma reiicio ἀκτῇ i. e. dono. V. 419. εἰς. V. 424. πως pro πη. V. 430. † ἀνδρώποισι. Ibid. † ἐπικείσας, V. 435. † ὑποδδίσαις. V. 436. ἐλομένοιο male. V. 443. αὐτοκασιγνήτης. V. 446. σμύχασαν gl. interl. καίεσαν. V. 453. Deest οἱ. V. 454. ἦστο. V. 455. ἔφη θ' ὡς θ' ἔζ' ἐπὶ θρ. V. 464. † Τίπτέ με. V. 471. † αἰόλητο. gl. interl. πεποίκιλτο. V. 473. ἀνελήλυθον contr. m. V. 474. ἔπεισσι. V. 481. τό δε. V. 486. βιάσκει. gl. interl. πορεύε. V. 489. † μετεκίαθεν gl. interl. μετῆλθεν. V. 498. † ὄφως. V. 499. χαλκείοις ἔντεσιν. V. 506. χ' ἔρζομεν. V. 511. μῦλα πάγχυ θυμὸς ἦν ἐπέποιθεν. V. 518. Οἰνείδης. Ibid. αἰζηοῖσι. V. 531. αὐτμῇ gl. interl. πνοῇ. V. 537. αὐτοῖσιν. V. 542. Αἰσονίδω leg. Αἰσονίδω Ibid. † κῶλπη. V. 546. ποι pro πη. V. 548. † ἀδερῖζειν. V. 551. μάρον pro πότμον contr. metr. Cf. Lib. I. 140. 1030. 1350. Ibid. † δέ μοι. V. 559. † ἐπὶ ῥόδον. V. 561. βλέποντες pro λεύσσοντες.

ἀμφιβολίῃ contr. metr. V. 147. † ἔχεν. V. 152. † τοι pro
 σοι. V. 153. † ἐνισκίμψεις. Cf. Hom. Odys. XVI. 238. 254.
 V. 164. ἄλλοθι seq. v. 165. ἄλλοτε. V. 166. † αἰθέροι ut
 Homer. Il. I. 15. Odys. XI. 127. cum aëre p rquam
 agitato, vago. Latini saepius de aëre vago, circumfuso,
 agitabili, mobili, circumfluo loquuntur; quod nobis h. l.
 πολλὸν ἰὼν significare videtur. V. 167. εἴς. V. 168. ἕλλος.
 Cf. Pindar. Pyth. I. 101. μεταλλας. et Herm. ad h. l. Comici
 quidem et Lyrici poëtae saepius vocalem ante αλ corripiunt.
 Cf. et Hom. Il. XX. 221. V. 170. ἡρέμα. V. 173. ἑασσι.
 V. 175. † ἴσω. Hom. Il. VII. 411. X. 329. Brunkius ἴσο
 habet; quod metricae quidem convenit, Hom. Il. VII. 411.,
 minime tamen Grammaticae. V. 180. † εἴ κε θέλει,
 saepius cum indicat. Hom. Il. V. 183. Plat. Pol. IV. p.
 420. ἄθρει — εἰ τὸ ὅλον καλὸν ποιῶμεν. V. 184. † ἐπὶ ῥόδοις.
 V. 186. ἀπαμείρομεν supra ο ω adscr. et gl. interl. χωρί-
 ζώμεν. Ibid. πάροιθεν. V. 188. μόλις. V. 190. † ἔδεκτο
 pro ἔπεισε. V. 192. † Πάντες pro δέχθαι. V. 195. † πανσυνδή.
 Ibid. pro ὅτις legitur ὅπῃς gl. interl. ἐπισφ. φῆ. V. 198. ἀνά
 pro ἄρα. V. 201. πρόμαδοι. Ibid. ἐκπεφάσσι. V. 206. †
 κατελύσαντες. Saepius σ in fine vocis nullam efficit po-
 sitionem. E. g. ὤρη ἐσπερίῃ κρώζει πολύφωνος κορώνη. Arat.
 V. 209. † κε — τέτυκτο. V. 210. νεισσομένοις. V. 211. ἡέρεα.
 V. 213. ὥκα δ' ἐκ τε π. contr. metri. V. 217. ἀνεσχον —
 θριγγός. V. 218. χαλκείαις. V. 220. πετάλοισι. V. 222.
 αἰένουσι. Cf. v. 168. V. 225. ποθι. V. 239. † ἄλλων Constr.
 ὅτις τῶν ἄλλων ὡ. η. (ἐν τέτῳ aut τέτον) ναῖσκε A. Ibid.
 ἦεν. V. 241. † ἄλλον. Ibid. ναῖε. V. 248. † τῇ — οἶγε
 ibi aperit (et ipso ut vidit v. 253.) V. 254. Deest ποδῶν.
 V. 259. et 260. desunt. V. 275. ἦζεν. V. 276. † ὑπὸ φ.
 V. 277. πέλλεται. Fort. πύλλεται. V. 278. † προδόμφ
 deest ἐν. V. 281. † αὐτός. V. 287. ἱκελον. contr. metr.
 Cf. Il. v. 45. XIII. 688. V. 290. κατήγετο. V. 291. πυρί
 pro περί. Ibid. δαλλῶ. haud necessarium; prima enim
 semper producitur. Il. XV. 421. et apud Nostrum 295.

V. 1240. ἐνθ'. V. 1241. † ἄλλα δὲ et θεῶ leg. θῶ. Melius feceris, si δὲ deleas. V. 1249. χαλκείῃσιν. V. 1255. ἐϋξέτας supra α οἱ ad cript. ut ex colore apparet, alia manu. V. 1262. Deest καί. V. 1266. † ἔχων ad fluvium referendum. V. 1269. † ἰδρυτο. V. 1277. Deest δὲ. V. 1278. μητίσασθαι. V. 1281. Ἄργε δὲ, deest αὐτῇ. V. 1283. ἦεν. V. 1284. νεισομένῳ. Vox quoque Homericæ Odys. III. 701. v. 19. V. 1285. † ἐελομένοισι φαάνθη More Jon. ut Noster saepissime.

LIB. III. Versus 3. ὕπερ supra adscriptum est ὑπ' ἔρωτι Ibid. ἔτι σὺ γὰρ pro ὑπ' ἔρωτι (ὕπερ ἔτι σὺ γὰρ) V. 4. ἄμμορες gl. interl. ἀπέτυχες. Fortasse ἄμμορος. Neque tu (Erato) Veneris expers es. At vulgaris lectio nobis magis placet. V. 21. πολέας. V. 27. κέρη. V. 37. † ὄβρα. V. 38. † τὰ πρῶτα. V. 44. ἴσο. Cf. Lib. II. 1201. V. 45. † λευκοῖσιν. Facilius pronunciandum est. V. 47. παροιθεν contr. metr. V. 55. † προσέειπε. V. 58. ὅσσοι saepius Noster consonas σα, σθ, — geminat, ubi corripienda est syllaba. Metricæ haud gnarus fuisse videtur. V. 61. † εἰ καί. V. 64. ἐγγελάσση. Cf. v. 58. V. 68. ἀντεβόλησα. V. 70. ἦ (h. ē, aut ἦ aut ἦ). V. 72. εἰσαμένη. V. 73. προαλός. V. 75. † ὀπάσσεις. Postulat sensus indicat. ut II. XXI. 545. I. 40. V. 77. ἐνθεν; ἐνθ' optima nobis lectio videtur; venerata Junonem, quam ibi, hic, sibi supplicantem videbat. V. 81. χεῖρες contr. metr. V. 84. χατέσσα gl. interl. χρῆσσα Dual. ad Junonem et Minervam referendum. V. 95. μενένη gl. interl. προΐθυμήθη. V. 96. † αὐτοῖσιν; propter τόξοισι v adieciimus. V. 97. ἀμφαδίην Ibid. ἐπηπειλήσα. V. 101. † προσέειπεν. V. 109. † ἐρίδαινε. Qua forma Homer. semper fere utitur Odys. I. 79. II. 206. II. II. 342. — V. 110. † μεταλλήζει. Cf. Lib. II. 84. V. 119. ἐνίπλειον. V. 120. ἀγοσῶ gl. interl. ἀγκόνι. V. 123. ἔτ' αὐτως. V. 126. ἐνόησα. V. 129. ἐπιμειδιδαίας, corrupte. V. 137. † τέτυκται. V. 141. ὅς pro ὥς. V. 144.

XIII. 194. XXIII. 370. *ἔρῳ*, penultima longa, significat *tuor* cf. huius libr. v, 1208. et Heynii Excurs. III. ad Lib. I. II. pag. 177. V. 1051. † *ἐπὶ ῥόδον*. V. 1054. *πλωῖδας* Etym. M. “*Στυμφαλίδας ὄρνιθας, τὰς πλωῖδας*” habet. Ibid. *Στυμφαλίδας*. V. 1063. ἄρσεται gl. interl. *σπεπᾶσате*. V. 1064. † *πανσυδίη*. V. 1067. *ἰκώμεθα*. V. 1069. † *ἐπὶ ῥόδου*. V. 1070. *χαλκίας*. V. 1073. † *νῆα κάλυψαν*. More Jon. V. 1076. *ἐπαμοιβῆς*. V. 1078. τέλει pro πέλει. V. 1081. Οὐδέ τε. V. 1087. σφι. V. 1088. *μέλαθρον*. V. 1090. ἔατα γαίης. V. 1096. ἄρωνται. V. 1109. ὑπεξήρπαζεν contr. metr. V. 1126. πόλι τε γὰρ pro πόντῳ γ. V. 1127. δᾶρα. Post hunc versum, versus insertus est: ἦ ἔνα τειρόμενοι ἄμ' ἐπὶ χροῖς ἐμβεβαῦτες. V. 1145. Ἑρμείας. Ibid. ἰδησθε. Post hunc versum legitur: πεπτάμενον λασίοισιν ἐπὶ δρυὸς ἀκρεμόνεσσι. Cf. vers. 1273, Est quidam ratio Homericæ, quod iidem versus repetuntur. V. 1155. *Κετύσσωρος*. V. 1162. *γογάσσι*. V. 1165. † *ἐνυφομεν* gl. interl. *λέξομεν*. Cf. Hom. II. VII. 447. Odyss. II. 137. XI. 147. V. 1169. † *Πανσυδίη*. V. 1172. † *μέλας*. ob codd. fidem. V. 1175. τ' ἡδὲ βοῶν. V. 1177. † *δαῖτα* More Jon. ut saepissime. V. 1179. † *αἰτεῖ*. Vult hoc Jupiter. Optime respondet vers. 1181 et 1183. ut enim servavit — sic vos salvos rursus eripiet. Quam ob causam? Vult Jupiter! — V. 1181. ὕμῳ. V. 1182. ἀπερείσιον contr. metr. V. 1188. *Πηληϊάδας* contr. metr. Ibid. † *πέρι* Cf. Hom. Odyss. v, 68. *περὶ σπέρας* circa speluncam. V. 1193. † *ἐπὶ ῥόδοι*. V. 1194. *Φρίξ*. V. 1195. *Λίολιθσιν*. V. 1200. † *ἄρωγῆς*. Cf. II. IX. 651. *μάχης σχήσεσθαι* et Noster Lib. III. 1056. V. 1201. *σχίσεται*. i et η saepius Noster commutat. E. g. Lib. III. 44. V. 1207. † *μῆν*. V. 1210. † *Τυφασιν*. Cf. Etym. M. sub voce *Τυφῶς*. *Τυφασία*, *πέτρα ὑψηλὴ ἐν τῷ Καυκάσῳ*. V. 1214. *Νησῆιον*. V. 1222. *ἡμᾶς*. Ibid. † *οἶω*. V. 1227. *κατέδραθεν*. Contr. metr. Odyss. VII. 285. V. 1229. † *ὑπαί*. Hom. II. X. 279. XI. 417. V. 1231. † *ἐπιπλομένοι* ut Lib. III. 25. *advhentes*.

mentum super, etiam posteris visendum, ex nautico oleastro, phalanga et foliis viret, paululum infra promontorium Acherusium. V. 844. † δέ με. V. 847. Νεισαίοισι. Ibid. † ἐπιβήδην. V. 851. † ἐν αὐτίς. V. 854. γεν. V. 855. ἐκατέρω ut Lib. III. 90 et 1293. V. 857. † αἰσάκ' gl. interl. ἔως ἔ. Ibid. † Ἀβαντιάδαο. Ibid. † πτερίζεν. V. 871. ἰδριν ὄντα, V. 874. † ἄλλοι ut Brunk. et Beck. I. 910, 998. — Ibid. ἔκασσι. V. 875. τῶν τίνα. V. 877. † αἰθλων. Cf. I. 32. et v. 869. huius libri. V. 878. † ποῖσι δέ † αἰέτο. V. 881. ἔλαχον. Nos hic Brunkium secuti sumus, V. 882. † μὲν γάρ (ἔκασσι) cf. v. 887. Nobis propter καὶ πολέες v. 883. et propter κυβερνητῆρας melius placet. Amat Noster particc. μὲν γάρ Cf. v. 881, 887. V. 884. † ἀπορρίψαντες. V. 886, † πῇ δ' οἶδε i. e. quomodo, qua ratione; sensus: habemus adhuc κυβερνητῆρας, at quomodo sunt, quales sunt? V. 888. † πλόον. Jasonis causa haec navigatio fuit incepta — πλόον heroï indignum videtur, V. 890. ἐι δέ contr. metr. V. 897. † ὥρουντ', V. 900, † Ζέφυρα. Cf. III. 768. V. 903. † λαιφῶν spond. efficit † πεπταμένων. V. 904. Καλλιχόριοι. V. 928. † μῆλ' Cf. vers. 1170. V. 935. † εὐκήλοισιν. Cf. v. 251. Lib. I. V. 938. εἰσαναβαίνη. V. 939. ὑδάτοις. V. 945. ὁμῶς καὶ ἐπ'. V. 954. Deest ἐν. V. 957. ἀποπλαχθέντες ἄναιον, V. 963, † ἀγχίρροον. V. 965. λιμενήοχων supra w o adscr. Gl. interl. λιμένα ἔχασων contr. metr. V. 966. προμιλῶσαν. V. 972. ἐγαλίγγιος. V. 982. ἔκασιν. V. 983. † ἀπαύρας gl. interl. ἀφελεῖ Vertas: ipse autem (fluvius) aperte permixte abripiens (sc. fluxuosos meatus) in P.E. sub flexuosum eructatur promontorium. V. 984. Εὐζεινον. V. 994. † ἄκρην. V. 998. τῇσιν, V. 1000. Χαλδήσiai. V. 1002. Τοῖσι. V. 1015, τοῖσι κε abceat ὄρας. V. 1017. Deest hic versus. V. 1022. μεγάροισι contr. metr. V. 1028. Δειείας. V. 1029. τε pro τι. V. 1032. Ἀρτιάδος male. Cf. v. 1048. ubi Ἀρητιάς legitur. V. 1040. ἐξείρουσι; penultima brevis producenda est per σσ Cf. Hom. II.

Ibid. ἔασσιν. ut semper. V. 632. † τὸ πρῶτισον. V. 636. δεῖδεχ' ἐταίρων. V. 640. † ἐπιβρῆδην; (at v. 650. recte et Noster ὠκυρόην, antepenultima enim corripitur). V. 653. ὁμοιοσι. V. 656. ἐθέλαμὸς male. V. 657. συναίεσθην. v. geminandum est. V. 659. † βαθυρρέιοντά. V. 671. καλέσιν. V. 672. εἰσελάσσαντες. V. 676. ἐκάτερθεν. V. 677. βοτρίωντες, V. 680. κλύζε. V. 682. αὐγάσασθαι. V. 686. τοι ante δὴ. et deest μὲν. V. 691. † θύσομεν. V. 692. Νῦν δ' αὐτως λοιβῆσί τε μειλίζασθαι κνίσση. V. 698. † ἐκ δέ νυ. V. 705. πετραίη — δειράδι ut Hom. in Hymn. in Apoll. 281. V. 706. † Δελφύνην a Δελφὺς i. e. μήτρα, καὶ ὁ ἐν Δελφοῖς δράκων Hesych. Cf. et Schol. et Dionys. Alex. v. 438. V. 711. Deest δέ. V. 718. ἔμφρονος. Ibid. † ὄρῃ. V. 723. Μαρυανδυνῶν. V. 725. κάλωαι. gl. interl. σχοινία. V. 729. ἡλιβάτοισι. V. 730. † δερκομένη. V. 731. τοῖσι. V. 733. πεφύασσι. V. 735. κοίλην ὕπαιθα γάπην. V. 737. ὀκρίεντος. V. 745. ἡοίην. Ibid. φάρυγξ. V. 748. Μαρυανδυνῶν ut et 753. V. 749. † αὐτῇσιν. V. 755. deest γ'. V. 759. † πανσυδίη. V. 760. † πολίεθρον. V. 761. ἐπείσσι. V. 769. † θεοπροπίαν Attica forma saepius utitur Noster. V. 776. † ἐμεῖο. V. 779. χνοάοντας. V. 784. πάντεσσιν. V. 792. † Ἀλλά με. V. 794. γαίης. Ibid. ἐβάλλοντο. Cf. 672. 784. V. 795. † βαθυρρέιοντος. V. 796. ἔδωσκν. Ibid. ἔ pro γε. V. 797. ἐμπελάσαι. V. 799. † τῷ Cf. Beckii Edit. in Animadv. ad h. l. V. 804. δι' ἐξ ἁλὸς pro διαμπερές. V. 806. ἀκτῆς. V. 809. † σφιν propter metr. V. 823. † ποταμοῖο pro πεδίοιο. V. 827. † ἐγκλῆγξας, ἐν vim voci addit, ut ἐναίρω — aut habet vim minuendi ut ἐνδιδόναι, remittere; utrumque, prout vulneribus affectum fuisse vis, sensui h. l. convenit. V. 831. βεβρυχεὸς male. V. 832. † τοῖ pro τὸν partic. enclit. V. 833. † ψυχορράγοντα. V. 840. λαοτόμησαν. V. 842. δ' ἐνεπι; hinc nos ἐπι recepinus. V. 843. † φάλαγγι. Ibid. † θαλέει metri causa pronuncianum θαλεῖ. Hesych. θαλέει θάλλει, ἀνδεῖ, a θαλέω hinc θαλέω. Veritas: monu-

κάλλιμα καὶ πύργους ὑψηλέας οὐς καλέσσι
 μίσσυνας, καὶ δ' αὐτοὶ ἐπώνυμοι ἔνθεν ἔασσι.

Quibus post vers. 1015. (post ἄμειβον) recte Brunkius locum concessit. V. 387. † ὁπότε. V. 391. διηνεκέως c. m. V. 393. ἔασσι. V. 394. φῦλλα. V. 395. Σάφθαιρες supra φ π adscripto. c. metr. V. 399. Κυταῖδος. V. 404. † σκίοεν. Cf. v. 348. Ibid. Ἄρεως. V. 307. † ἀναιδέα plur. pro duali ponitur. Theocrit. Eidyll, XXII. 169. Odys. XVIII. 63. V. 411. διήκειο Cf. Il. XIX. 186. V. 413. δέ κεν. V. 414. ὑμῖν. V. 415. ἔσπαςως. gl. interl. ἀσμένως. V. 423. † θεῶ. Cf. Il. XIX. 394. I. 516. V. 425. † δέ με. V. 426. δύω. V. 432. † τάσδε. V. 434. ἐριπῶν. V. 437. † πέρι πολλόν, Ibid. μετέειπεν. V. 441. † πάρει. Cf. Cyropaed. Xenoph. III. 5, II. Amat Noster formam Atticam. V. 442. † γηθήσεις; nam ὄλω, s. οἴμαι, inclusum parenthesi, non minus ironice, quam serio usurpari solet, ut Latinorum credo, opinor. Exempla obvia Il. VIII. 536. XIII. 153. — V. 454. ἔχρα ἐνδυνέως male. V. 456. † τοῖσιν. Ibid. ἦεν. V. 457. ἀσπάσιν τε. V. 467. προσήδα supra προς adscript. μετ. V. 468. ἔασσιν. V. 471. μογήσῃ. V. 473. Τρώχασκεν. V. 474. τι pro τις. V. 479. ἐτι pro ἐπι. V. 483. ἐγὼ μὲν. V. 494. ἀνυμένιοι. V. 498. † ἐτήσιαι Cf. Lib. I. 251. V. 503. ἐτι pro ἐπι. V. 504. † χθονίης. V. 505. Μυρτώϊον. V. 507. † πολυλήϊον. V. 509. μακραίωσ. V. 512. θεοπροπίαν, τε ante θεοπροπίαν deest. V. 521. Παράσιον. V. 549. πόρον. V. 550. ἀμφοτέρωθεν. V. 575. † ἔλε (et v. 577. ἔλε.) Ibid. φόβος Cf. v. 607. Ibid. αὐτῆς (animadvertas αὐτῆς v. 474. αὐτὸς v. 475. αὐτῶν et cf. cum vv. 998 — 1000, ubi toties γόσφι repetitur. V. 581. ἀποτμήσῃ. V. 585. † ὑπέρ. V. 590. † δ' ἀνυπείκαθε. V. 601. ἀσφάλτοιο. V. 605. † νωλεμές. Sic omnes codd. V. 607. ὀκρίοντος, gl. interl. μισητῆ καὶ χαλεπῆ. V. 614. συνάροσσε, supra ο, α adscripto. gl. interl. συνήρμοσε. V. 619. προτέρωσεν. V. 622. † τιή pro τί δή ut I. 793. II. 390. V. 625. δέ καὶ contr. metr. V. 630 † βαινόμεν. Ut Homerus ἔομεν. Il. II. 440. IX. 621.

g. v. 1151. III. 952. 1568. —) legunt. *Μεταχρόνιος*, ὁ, ἡ, derivandum esse videtur a *χρόνος*, quod antiquitus *κρόνος* scribebatur, quorum origines sunt *κίω*, *κίρω*, *κίω* s. ut Etymologus (sub voc. *χρόνος*) *κίω*; (*παρὰ τὸ κίω*, *κρόνος* καὶ *χρόνος*) hinc *χρόνος* s. *κρόνος* (ut nostrum *Zeit*, *Tied* a ziehen, teien, et Latinorum tempus a Graec. *τέμνω*; videsis Praefation. ad Platonis Doctrin. de Deo a nobis Lips. editam p. XXXIII. et Voss. Etymolog.) notionem findendi, secandi et extendendi involvit; et *μεταχρόνιον*, ut *μεταχρόνιον* (quod a *χθών*, cuius origo est *κτίω*, *κτείνω*; s. ut Etym: *παρὰ τὸ διακτείνω καὶ χῶνινυσθαι*) suspensionem et sublimitatem, s. extensionem rei, significat; ergo sublime, et respondet τῷ διήριον v. 227. h. Libr. et Libr. III. 954. — Tale quid et Nostrum sensisse ex glossa interlineari patet. — V. 303. Deest τὰ. V. 309. ἐσχάτη. V. 312. ἀτρεκέως. contr. metr. V. 313. ὠφρα δῖοισιν. V. 316. † χατέκσι gl. interl. *χρήζωσι* Indicativus mihi propter *αὐτὸς βέλεται* melius placet; contra Jovis dignitatem est incerta oratio *χατέκσι*. V. 324. ἡμετέρης. V. 327. *ἰδύνει* et metro convenit Cf. *Odys.* XII. 82. II. XVI. 475. V. 333. *τέμνεσθ'* contr. metr. V. 339. † *ἐξαλλασθε* sic plures codd.; et auctoritati vatis magis convenit; vates enim, ut Dii (cf. v. 316.), haud mentiuuntur; vera pronunciant! V. 340. † *πέλει* Cf. *Odys.* XV. 238. *εἶκεν* si — quidem et 254. Si ferrea quidem est Argo; Deae quoque opus sit Argo. Vid. infra v. 1186. seqq. V. 342. *εἶκε* melius *κέν* propter metr. V. 348. † *ἐγγμῖνα* naturae et poëtae magis convenit. V. 352. *Μαρνανδυνῶν*. V. 354. † *ἄκτῃ*. Cf. v. 356. et 360. V. *παραινίσθε*, ut saepius Noster pro *εἰ*. V. 358. *Μενεδήιος*. In margine *Ἐνετήιος*. V. 359. † *Πέλοψ*, quod et rectum est. V. 362. *κην* pro *καί*. Ibid. *Βερέω* et *σχιζονται* contr. metr. V. 367. † *ἀγχιρροός*. V. 375. *ἔχοντες*. V. 376. *πολύρρηγες* ut II. IX. 154. 296. *Odys.* XI. 256. V. 380. † *ὑπώρειας τε* ut II. XX. 218. Post vers. 381. (post *τεντήναντες*) sequuntur hi duo versus

76. † αἰσῶν gl. interl. ὀρμῶν; optime ad μῆτιν referendum et cum νοήσας construendum. V. 77. ἄατος V. 78. † εἵ propter sequens καὶ omnino sic legendum. V. 82. ἀμφοτέρωθεν. V. 94. ἄχ' gl. interl. λύπη. V. 96. ἄμ'. V. 99. † σιγύνους. V. 104. † ἀμφοτέροισι κλεῖσθαι. More Jon. ut fere semper Noster scribit, V. 107. † βάλαν. V. 111. Βιαντίδαο. V. 119. μέλαν pro μάλα. V. 126. † μαίνονται. V. 132. † αἱ δὲ τοι. V. 135. † ἀλλὰ κέκασθεν. Cf. v. 104. V. 140. Μαρυανδυνῶν. V. 145. † ἀναλκίησιν. V. 146. κόμισσε. V. 148. πυγμαχίην. V. 150. † θεσμοῖσιν. V. 151. † ἀκήδεσον gl. interl. ἀνελεήμονα, ἀφρόντισον. Ibid. † τόνδε. V. 155. μὲν pro δὴ. V. 160. τῇ καὶ τῇ. Ibid. † ἀνῆπτον. V. 164. † δροσεράς. V. 170. ἀμφέρεται. gl. interl. ἀναφέρεται. Ibid. αἰσσαντι τοικῶς. V. 171. νεφέλων. V. 173. ὑπὲρ pro καθάπερ. V. 180. εἵνεκε. V. 181. † ὅσσαν gl. interl. θείαν φωνήν. Ibid. ὀπίζεται; contr. metr. Cf. Lib. I. 1160. V. 187. διὰ pro διὰ. V. 192. † καί, μὴ καί, pro καὶ μὴ, vel non, ut recte Beckius V. C. ad h. l. Ibid. λευκανίηνδε. V. 193. † ἐσῆώς. Ibid. ἀπέαντι. V. 195. † παριόντας. V. 203. ἐπαυλίσαιο. V. 205. ἀμβληχρῶ. V. 210. κρυεροῖο contr. metr. V. 214. καμάτοισι. V. 217. ἧς περιέλλα. V. 225. † ἐπὶ ῥέσθον. Ibid. ρεῖα. V. 227. θήρια male. V. 230. εἰδὲ τις. V. 231. ἐληλαμένος. V. 237. † δέ μ' ἐγ. V. 239. † Κλειοπάτρην † ἦγον ἄκοιτιν. V. 244. † συχερώτερον. gl. interl. μισητότερον. φοβερώτερον. V. 246. ἀτροπήσι gl. interl. κακουργίαις. V. 254. γέρων. V. 259. καὶ τότε δ' ὀφθ. V. 260. οἶδε pro ᾧδε. V. 266. δῆτα. V. 268. † καὶ πρόφατοι; ut ἀπρόφατος, improvisus i. q. ἀπροφανής, sic πρόφατος, i. q. προφανής, conspicuus, perspicuus; quod h. l. melius de fulminibus dici potest, quam ἀπρόφατοι, improvisae de H. Prius poëtico mori magis convenire mihi videtur. V. 275. ἐκ ἐνεπείσθην. V. 277. Φινῆα. V. 281. ἄκροισ Cf. Lib. I. 251. V. 300. μεταχρονίη gl. interlin. ἢ εἰς ὕψος φερομένη. Plerique codd. μεταχρονίη hic et aliis locis Apollonii (E.

adscripto. V. 1202. χειμερίης. V. 1203. ἐμπλήσασα. V. 1204. † αὐτεῖσιν. V. 1207. † χαλκίῃσι κάλπισι, et propter metr. in χαλκίῃσι adieci. V. 1208. † κρήνης. V. 1209. ἀφυσάμενος, iam animadversum est, λ, μ, ν, ρ, σ, in pronunciando saepius addenda esse. V. 1210. ἐπαρτίσειεν. Cf. vers. anteced. V. 1212. † τὰ πρῶτα. V. 1222. † ἀμφίγυοι. V. 1223. μέλεται pro μέλε contr. metr. V. 1226. ὄσσαι. V. 1227. ἀπόπροσθεν. V. 1232. βαλε. V. 1234. † τὰ πρῶτα. V. 1238. † κῦσσαι. V. 1244. ἀποπροσθεν. V. 1245. † ἐπίκερσε. gl. interl. ἐπέκοψε. V. 1247. κάμνησαν contr. metr. V. 1250. † νέεσθαι. V. 1251. † πέλοι. V. 1259. ἄγωσιν. V. 1265. μύοπι. V. 1266. πείσεα. V. 1267. † ἄσασος gl. interl. ἄγευσος. V. 1271. † μεταλλήγων. V. 1276. † ἐισβαινον. V. 1279. φορέοιντο. V. 1289. ἔλεν. V. 1292. κλέος pro κῦδος. V. 1295. γόνδε. V. 1302. οἱ τε σφιν. V. 1305. ἀμφιζέρύτη contr. metr. V. 1320. ἐξανύσαι. V. 1325. ἀποπλαγχθέντας. V. 1334. δεest τε. V. 1338. ἀλήτην. V. 1342. ἄλλον pro ἄλλω. V. 1343. δηρίσασθαι. V. 1344. ἔρμολέντες. V. 1351. ῥύσσι recte; at propter ὅπασσαν retinui orthograph. vulg. Ibid. ὅπασαν. V. 1353. † ἀπολλήξειν. V. 1359. † λάβρωι ἐμπνείων. V. 1363. Et hunc versum Codex noster habet.

LIB. II. Vers 1. † αὐλεις. V. 5. † αἰκίως, metri causa αἰκῶς legendum; gl. interlin. σκληρῶς. V. 8. καὶ δὲ τότε. V. 13. κε. V. 17. † κῦ. V. 23. † ὡς ἀγορ. V. 25. † ἐσέδραμεν gl. interl. ἔτρεχεν. V. 26. ὄρεσσι. V. 30. Φάρος. V. 31. λεπταλέον. V. 33. † αὐτῇσιν propter sonum. Ibid. καλάβροπά gl. interl. ῥάβδον. V. 38. † Τυφώως, trisyllabum. V. 46. εὐτρέχαιο male. V. 55. δὲ κεν — κ' ἐθέλοισθα. V. 60. † ἐρίδαιεν ut saepius Homerus. V. 61. † οἶοι ut sibi (caestus) ante pedes positi erant. V. 63. Βιαντίδης. V. 67. ἱμάσσι non necessarium, penultima enim longa est. Cf. Hom. II. κ. (X.) 262. V. 71. θοὴν ἐπὶ νῆα. Cf. Hom. II. δ. (III.) 424. V. 72. ἰμῖνε. V.

Ibid. *ναισταῖσι*, quod et tolerari potest Cf. enim Lib. II. 998, 999. et 1000. ubi *νοσφι* ter repetitur V. 947. † *δ' αὖ*. V. 952. τὰ πρῶτα cf. v. 168. et 1212. V. 959. † *Νηλεΐδαι*. V. 960. † *Ἰησονίης* — *Ἀθήνης*. V. 967. *στησάμενοι* pro *εἰσάμενοι*. V. 972. *Ἴσον* pro *νεῖον*. V. 975. *Μείοπος* pro *Μέροπος*. V. 978. † *ὅς*. V. 985. καὶ pro *κέν*. V. 990. † *πέτρης*. V. 993. *σφιν*. V. 995. † *ἀμφιβρῶγας*. Ibid. *ἐβαλον*. V. 1004. *σιχηδόν*. V. 1008. *ὑπερθεν*. V. 1015. † *ἐξεν*. V. 1017. *ἀντίαν*. V. 1020. *ἤπερ*. V. 1022. *ἂν ἀνιόντας*. V. 1032. *ἐοῖο*. V. 1035. *ἀνέπλησεν*. V. 1036. *θνητοῖς* contr. metr. V. 1037. *ἐκτοσθεν* male. V. 1046. *᾽Οινείδης* recte. V. 1073. *μυληφάτοιο* male. V. 1074. † *διαζώεσκον* more Jonum. Cf. v. 42. V. 1078. *τραχηταί*. V. 1097. *πεπόηται*. V. 1098. † *ἄνεμος*. V. 1100. *εἰσαναβαίνει*. V. 1105. † *ἐγρομένοισιν*. V. 1122. *ἐβρίζωνται* ut 1097. V. 1125. *ἐγκαλέοντες*. V. 1129. *Κρηταῖες*. V. 1132. *ἔωργας* gl. interl. *ὀργάς*. Cf. Lib. III. 1778. *ἐριωλαί* et gl. interl. ibid. *πνοαί*. Hesych. *ἐριωλαί* explicat *ἀνέμων συστροφαί*, *αὔραι*, *πνοαί*. V. 1133. *ἐπιλείγεον* gl. interl. *ὑμνῶν*. Ibid. *δὲ ἱερ*. V. 1134. *ἀριωγῆ*. V. 1142. *δένδρα μιν* Cf. II. ε. 358, ubi Eruesti, pronuntiando fuisse λ geminatum, autumat, ac si esset *πολλάλλισσομένη*. Vide is et quae supra v. 19. admonuimus. V. 1145. † *ἐρῆσιν* melius sonat propter seq. σ. V. 1146. † *νῶϊε*. V. 1148. † *ἄλληκτον*. V. 1154. † *ἀπολλήξειε*. V. 1157. *βίην*. V. 1159. *ἄγρομένοις* gl. interl. *ἀγειρομένοις*. V. 1160. *ἠερίθονται* ut v. 1097 et 1122. V. 1161. καὶ δὴ pro *καμάτῳ*. V. 1162. † *πανσυδίη*. Cf. v. 373. V. 1165. *ῥυνδακίτας*. V. 1166. † *παραμέτρεον*. V. 1167. † *τετρυχότος* gl. interl. *καταπονηθέντος τετρυχ*. Cf. II. β. 95. η. 346. V. 1170. † *παλιβρόδιοισι*. V. 1171. *αἴθεσον*. V. 1174. † *δὲ πρ*. Ibid. † *τετριμμένα*. V. 1177. *Κυανίδος*. V. 1180. *σφιν*. V. 1187. † *ἐταροισιν*. Ibid. *εἴ* *ἐπιτ*. Recepi *ἐοῖς* ex Brunkii *οῖς* *εἴ*. V. 1192. *πέλοι*. V. 1193. *Deest τε* ante καὶ. V. 1195. † *αὐτοῖσιν*. V. 1197. *λαβε* male. V. 1199. † *βαδιῆρριζόν*. V. 1200. *ναὶς* supra α η

quae falso contrahuntur. V. 442. ἔασσιν. Sic semper Noster. V. 443. συγερῆς. V. 445. Κακοῖσι contr. metr. aut *dedōs* pronunciand. cf. v. 333. V. 448. Θεοπροπίας. Noster Atticam formam saepius habet. V. 456. † ἀφυσσάμενων. Cf. v. 1209. et Lib. III. 669. ubi Beckius cum Brunkio aoristum retinent. Videsis et Il. I. 470. 471. III. 295. ἀφυσσάμενοι δεπᾶεσσιν. At et ἀφυσσομένων poni potest, ut Il. ψ. 220. si de re infecta et adhuc durante loquitur. V. 465. ἀτίζει. V. 467. οὐδέ μ'. V. 469. ἀκρόατον. V. 479. ἔασσι. Ibid. περ pro κεν. V. 487. ἐνίσπες. gl. interl. εἶπες. V. 492. deest κε. V. 494. κατερήτυθεν gl. interl. ἐκόλυθησε. Ibid. ἄν h. e. ἀνασᾶς. Vid. Schol. Mallem ἄν pro ἀνά ad πείραζεν; estque tmesis ut v. 1110 et 1111. ἄν—βαῖνον Odyss. XVII. 262. V. 496. Ἥειδεν. V. 502. † αὐτῆσιν propter Νύμφῃσι melius sonat. V. 503. † Ἥειδεν. V. 513. πλήξαντο gl. interl. ἐθαύμασαν Supra adscriptum est ἡ λήξαντος. V. 515. θίλκτην. V. 523. † ἀρτύνασθαι. Cf. Il. μ. (XII.) 43. 86. V. 526. Deest τό. V. 548. † γένος. V. 551. † Τριτωνίδος. Cf. v. 109 III. 260, 1311. 1391. V. 554. † Φιλλυρίδης. V. 558. † Πελεΐδην Cf. v. 58. Versus 561. et sequentes usque ad v. 861. deiderantur. V. 862. ἐλίννον. haud male. V. 863. ἀολλίσας gl. interl. συναθροίσας. V. 864. μετέειπε. V. 872. ἔκαστοι. V. 879. περιβρομέωσι gl. interl. ἤχῃσι. V. 881. † ἄλλοτ' ἢ ἄλλον. V. 882. † ἀμέργασιν propter sonum τὸ ν retinui. V. 883. ἐνδυκέως gl. interl. ἐπιμελῶς. V. 888. Νίσσεται supra i legitur ei. Ibid. ἀπήμοσιν. Sic et Steph. V. 891. † ἐμεῖο. Ibid. ἡ καί. V. 892. † ἐθέλης. V. 893. εἴοιο pro τοι. V. 895. τε ἐκτελέσθαι. V. 905. † σέκηαι. V. 909. σφίσιν. V. 912. σφιν pro σφίσιν. V. 918. † θαρσύτεροι. V. 926. σφιν. Ibid. † ἄητο. Cf. Corrigenda! Nam prior pes ut Il. φ. 124, (cf. et E, 567.) non est dactylus, et tertius anapaestus, ut Il. χ. 5, reiciendus est. In prima sede anapaestus tantum locum habere potest. V. 941. † Ἀρχτον. V. 942. τὰ pro τὸ.

Ἀελεΐσθαι — quod cum Brunkio et Beckio retinui — minime fut. exact. est; quod tironum gratia h. l. admoneo. Cf. quaeso Hom. II. ε. 238. γ. 138. p. 155. (ο, 140.) O, 215. ψ. 543. ω. 158. Plato Gorg. p. 506. Polit. Lib. v. p. 457. Thucyd. v. 71. in fine et 104. Simili iure fut. III. Activi substituendum esset. Cf. Hom. II. χ. 222. Aristoph. in Pac. 3180. Thesmophor. in fine Ody s. φ. 153. 170. ν. 358. ω. 313. Est enim mera Attica distractio, qua in omnibus, imprimis Attici, utuntur temporibus. V. 286. δυσάμωρος. V. 290. ὦ μοι, V. 301. θεοπροπίησιν. Cf. v. 487. et Steph. V. 306. ὦρτο. contr. metr. V. 316. ἀποπλαχθεῖς. V. 322. ἐπιδόντες. V. 323. πανσυδίη supra ν σ adscriptum est. At Noster semper πανσυδίη habet ut II, 759. 1064. etc. hinc nos, ut et Heyne et Wolf in Homero semper, eandem formam, quia facilius pronunciatur, retinimus. V. 332. ἐφοπλίσασθαι. Sic et Steph. Rectius σ duplicatur. II. IX. 66. VIII. 503. Odys. VI. 69. Cf. tamen adnotat. v. 267. in Corrigendis. V. 333. γάρ pro μάλ' Ibid. ἐπαρτέως quod contrahendum esset ut v. 887, 980. 1106. et saepius. V. 339. † ὑμείων ad ἔλυσθε refero, ut et Beckius V. C. monet. V. 341. νόον Cf. 382. V. 350. ἀγόρευσεν Cf. v. 475. et II. θ. 29. V. 364. πυθόμενοι gl. interl. μαθόντες. V. 372. ἔσω Steph. ἔσω cf. 332. V. 376. κλίναν. V. 378. Τψι δὲ ἔθθα. V. 379. σκαλμοῖσιν. V. 380. ἀμφοτέρωθεν, sic et Steph. V. 384. μίη. V. 389. † κήκτε. V. 393. ἐβάλλοντο. V. 395. κληῖδας, sic et Steph. Ibid. διμοιράσαντο. V. 399. κληῖδα. V. 401. ἐρύσασθαι contr. metr. V. 402. ἐπλίζοντες gl. interl. ἐτοιμάζοντες. V. 403. ἐπακτίε. V. 404. παρέτχεν. V. 413. χρωμένω contr. metr. V. 416. ἂν pro ἄρ. V. 427. μέτωπα. V. 431 † περιβρήδης gl. interl. περιφερής. Cf. Odys. χ. 84. Brunkius sibi ipse in hac scripturae ratione non constat; videsis Lib. II. 389. III. 71. IIII. 686. 1646. Quod ad vers. 1497 Lib. IIII, profert, nihil probat; nam ἐπὶ et ῥήνεσσω duae voces sunt,

Ἰφίτος supra adscript. Ἰφίλος. V. 87. ἀπηνέες. V. 98. †
 ἔχεν. V. 101. Ἐρεχθεΐδας. V. 103. † κεινὴν, supra εἰ οὐ
 adscripto. V. 105. Ἀγνυάδης εὐφαέα. V. 106. Θεσπεσίων.
 V. 110. ἐλδομένοισι. V. 115. Φιλίας. V. 116. Διωνύσοισι,
 male; nam antepenultima semper prodicitur. V. 119.
 Πυρῶ. Propert. II, 3, 53. Pero. V. 134. † ἢ ad γενέθλην
 referendum. V. 138. περὶ. V. 140. Οἶωνοῖσι. V. 144.
 ἐδίδαξε. V. 150. νεισομένοις, Sic et Steph. V. 155. † κατὰ.
 V. 157. † ὅσσοι Πύλω. Sic et Steph. Cf. vers. 1150 et 1174.
 V. 167. σφετερήσι. Ibid. ὅπασσεν. V. 170. ἐγκρυψε. V. 171.
 γ' ἐρρήτύσειε. V. 174. ἔτο sic et Steph. V. 179. Πολύφημος.
 V. 180. ποδωκηέστατον, quod Brunckii causa admoneo,
 qui hic legisse vult ποδωκειέστατον; quod de Medic. tan-
 tum valet. V. 183. † βάπτεν. V. 186. πολλοῖθρον. V. 188 †
 Παρθενίης. Cf. v. 768. et Scholiast. Ibid. ἔσπε. V. 190.
 Οἰνείδης cf. v. 58. V. 191. ἀλκήεις Cf. Brunk in Append.
 et v. 180. Erravit Vir summus. V. 197. νόσφι. Ibid.
 ἐπελθέμεν glossa interl. ἐπελθεῖν. V. 204. πόδα Sic et
 Steph. Ibid. & δέ τις pro οὐχ ἔ τις. V. 205. † ἦεν. et
 Steph. V. 211. Ζήτης αὖ. V. 213. ἐσχάταις gl. interl. ἐν
 τοῖς ὀρίσμασι. V. 214. ἀνεθρέψατο. V. 217. κλείσιν. V.
 219. ἐρυμνάς. V. 227. ἐνικριθῆναι; cf. v. 48. V. 230.
 πάντες. V. 234. † ἐπάρτεα. V. 251. Δειλός, Attici, poëtae
 in primis, masculino genere pro feminino utuntur V. c.
 Hom. II. 8, 455. Eurip. Suppl. 967. Bacch. 826. V. 253. †
 ἦεν quod et Steph. habet. V. 260. ὑπὸ προμολῆσι κiónτες
 gl. interl. προαυλίας καὶ προεξίδοις πορεύομενοι. V. 262.
 βεβολομένη. V. 268. τὰ πρῶτα sic ubique Noster habet;
 quem scribendi morem et nos paulo infra semper secuti
 sumus. — V. 273. ἐσυφέλιζε. V. 275. ὅσον ἐρεχθεῖ,
 prius contra metrum, posterius Homericum locutio est,
 ut in Hym. in Apoll. 358. II. 23, 317. At et ὄρεχθεῖω. II.
 23, 30. occurrit. Cf. Heyne in Observatt. ad h. l. V. 281.
 τάρχυσσα χέρεσσι. In margine adscriptum legitur τὸ σ
 ἐκβάλλεται τῷ μέτρῳ ἔνεκα. V. 285. κεν εἶσι γε λείψομαι.

VARIAE LECTIONES
GUELPHERBYTANI CUM BRUNKII
EDITIONE COLLATI CODICIS.

(Lectiones, cruce insignitas, in textum nostrae editionis
recepimus.)

LIB. I. Vers. 1. παλαιγενεά. V. 5. Πελλας. V. 8. τεῖν
gloss. interlin. ἰδίαν. V. 14. "Ηρας. V. 17. καὶ pro
κεν. V. 18. ἔτι κλ. V. 19. καμειν. Fortasse καμμειν pro-
nunciandum, Cf. Lib. III. 137. μὲν οἱ et Lib. I. 96. cum
Homer. Il. VI. 449. IIII. 165. — Ibid. leg. ὑποθη-
μοσύναισι. V. 29. † Ἀχτῆς Θρηϊκίας. Ibid. ἔτι τ. V. 37.
Περσείας. V. 39. ἀπόπροσθεν. Contr. metr. Steph. ἀπί-
προθεν. V. 40. Λάρισαν. V. 42. ἐπιθωρήσσοντο. Jonico
more, omisso augmento, ut saepius Noster. V. 48.
ἐνιτριθῆναι ut et vers. 227. Cf. Lib. IIII. v. 1595. V. 49.
ἐυβρῆνεσσιν sic omnino legendum! Vid. Praefat. nostr.
V. 51. πολυλήϊα. gl. interl. ποθὰ λήϊα ἔχοντος. V. 54.
Αἰολίδης. Ibid. Ἀμφείσοιο. Cf. Virg. Georg III. 2. V. 55.
Εὐπολέμια. V. 58. Κεινείδης sic ubique V. Praef. nostr.
V. 59. ἔτι κ. V. 60. σφόδρα pro σφείας. V. 61. † ἄριστων.
V. 62. ἐγκλίνει. V. 63. ἰδύσεται. Steph. ἰδύσσετο. V. 71.
et 73. Ἐρυβάτης. V. 74. ἦεν pro ἦκεν. Gl. interl. ὑπῆρχεν.
V. 76. δαίδισι Ibid. † κλίνωσι sens. hostes in fugam
verterint turmas. V. 82. † κακῶν sic et St. quod et no-
bis placet propter ἐπαυρεῖν. Cf. I, 677. II. 174. V. 86.

- 1770 Ἐνθ' ἔτι νῦν πληθόντας ἐπομμένον ἀμφιφοῖαν
ἀνδόμενοι κούφοισιν ἄφαρ κατ' ἀγῶνα πόδεσσι
κούροι Μυρμιδόνων νίκης πῆρι διοιούνται.
Ἴλατ', ἀριστῶν μακάρων γένος· αἶδε δ' αἰοδαὶ
εἰς ἔτος ἐξ ἔτους γλυκεριέτεραι εἴεν αἰεῖν
- 1775 ἀνθρώποις. Ἦδη γὰρ ἐπὶ κλυτὰ πεῖραθ' ἱκάνω
ὑμετέρων καμάτων· ἐπεὶ οὐ νῦν τις ὑμῖν ἄεθλος
αὐτὶς ἀπ' Αἰγίνηθεν ἀνερχομένοισιν ἐτύχθη,
οὔτ' ἀνέμων ἐριῶλαι ἐνίσταθεν· ἀλλὰ ἔκηλοι
γαίην Κεκροπίην, παρὰ τ' Αἰλῖδα μετρησαντες
- 1780 Εὐβοίης ἐντοσθεν, Οπούντιά τ' ἄστεα Λοκρῶν,
ἄσπασίως ἀκτὰς Παγασηίδας εἰσαπέβητε.
-

1735 ἄρδεσθαι λευκῇσιν ὑπὸ λιβάδεσσι γάλακτος,
 ἐκ δὲ γυνὴ βώλοιο πέλειν, ὀλίγης περ ἰούσης,
 παρθενικῇ ἐκίλη· μίχθη δὲ οἱ ἐν Φιλότῃ
 ἄσχετον ἱμερθεῖς· ὀλοφύρετο δ', ἥντε κούρη,
 ζευζάμενος τὴν αὐτὸς ἐφ' ἀτίτηλε γάλακτι·

1740 ἡ δὲ ἐμειλιχίοισι παρηγορίεσκεν ἔπεσσι·

“ Τρίτωνος γένος εἰμὶ, τεῶν τροφός, ὦ φίλε, παίδων,
 „ οὐ κούρη· Τρίτων γὰρ ἐμοὶ Λιβύη τε τοκῆς.

„ Ἀλλὰ με Νηρῆος παρακάτ' ἑο παρθενικῇσιν

„ ἀμπελάγος ναίειν, Ἀνάφης σχεδόν· εἴμι δ' ἐς αὐγὰς

1745 „ ἡελίου μετόπισθε, τεοῖς νέποδεσσιν ἑτοίμῃ.

Τῷ δ' ἄρ' ἐπὶ μνήστιν κραδίη βάλεν, ἐκ τ' ὀνόμηνον
 Αἰσονίδην· ὃ δ' ἔπειτα θεοπροπίας ἑκάτοιο,

δυμῷ πεμπάζων, ἀνενείκατο, φώνησέν τε.

“ ὦ πόποι, ἦ μέγα δὴ σε καὶ ἀγλαὸν ἔμμορε κῦδος.

1750 „ Βώλακα γὰρ τεύξουσι θεοὶ, πόντονδε βαλόντι,

„ νῆσον, ἣν ὀπλότεροι παίδων σέθεν ἐννάσσονται

„ παῖδες· ἐπεὶ Τρίτων ξεινήιον ἐλγυάριζε

„ τήνδε τοι ἡπείροιο Λιβυστίδος. Οὐδ' ὅ τις ἄλλος

„ ἀθανάτων, ἢ κεῖνος, ὃ μιν πόρην ἀντιβολήσας.

1755 “ ὣς ἔφατ'· οὐδ' ἀλίωσεν ὑπόκρισιν Αἰσονίδαο

Εὐφημος· βῶλον δὲ, θεοπροπίησιν ἰανθεῖς,

ἦκεν ὑποβρυχίην. Τῆς δ' ἔκτοθι νῆσος ἀέρθη,

Καλλίστη, παίδων ἱερὴ τροφός Εὐφήμοιο,

οἱ πρὶν μὲν ποτε δὴ Σιντηίδα Λῆμνον ἑναιον·

1760 Λήμνου δ' ἐξελαθέντες ὑπ' ἀνδράσι Τυρσηνοῖσι,

Σπάρτην εἰσαφίκανον ἐφέστιοι· ἐκ δὲ λιπόντας

Σπάρτην, Αὐτεσίωνος ὧς παῖς ἦγαγε Θήρας

Καλλίστην ἐπὶ νῆσον· ἀμείψατο δ' οὐνομα Θήρης

ἐξ ἔθεν. Ἀλλὰ τὰ μὲν μετόπισθ' ἔγενετ' Εὐφήμοιο.

1765 Κεῖθεν δ' ἀπτερίως, διὰ μυρίον οἶδμα λιπόντας,

Αἰγίης ἀκτῇσιν ἐπέσχεθον· αἶψα δὲ τοί γε

ἰδρεῖης πέρι θῆριν ἀμεμφέα θερίσαντο,

ὅς κεν ἀφυσσάμενος φθαιή μετὰ νῆαδ' ἰκίσθαι.

“ Ἀμφω γὰρ, χρειώ τε, καὶ ἄσπετος οὖρος ἔπειγον.

- 1700 ἡεῖδεν οὐδ' ὅσον· ἐπέτρεψαν δὲ θαλάσση
 νόστον, ἀμνηχνύοντες, ὅπῃ φέροι. Αὐτὰρ Ἰήσων
 χεῖρας ἀνασχόμενος μεγάλην ὀπί Φοῖβον αὔτει,
 ῥύσασθαι καλέων· κατὰ δ' ἔρρεεν ἀσχαλούοντι
 δάκρυα· ποταὰ δὲ Πυθοὶ ὑπέσχετο, ποταὰ δ' Ἀμύκλαις,
- 1705 ποταὰ δ' ἐς Ὀρτυγίην ἀπερείσια δῶρα κομίσσειν,
 Λητοῖδῃ, τὴν δὲ κατ' οὐρανοῦ ἔκτο πέτρας
 ῥίμφα Μελαντίους ἀρήκοος, αἱ τ' ἐνὶ πόντῳ
 ἦνται· δοιῶν δὲ μῆς ἐψύπερθεν ὁρούσας,
 δεξιτερῇ χρούσειον ἀνέσχεδες ὑπόθε τόξον·
- 1710 μαρμαρίην δ' ἀπέλαμψε βίος περὶ πάντοθεν αἴγλην.
 Τοῖσι δὲ τις Σποράδων βαιὴ ἀπὸ τόφρ' ἐφάνθη
 νῆσος εἰεῖν, ὀλίγης Ἰππουρίδος ἀντία νήσου,
 ἐνθ' εὐνάς ἐβάλλοντο καὶ ἔσχεθον· αὐτίκα δ' Ἥως
 φέγγεν ἀνερχομένη· τοὶ δ' ἀγλαὴν Ἀπόλλωνι
- 1715 ἄλσει ἐνὶ σκιερῷ τίμενος, σκίοεντά τε βωμόν
 ποίον· Αἰγλήτην μὲν, ἐυσκόπου εἵνεκεν αἴγλης,
 Φοῖβον κεκλόμενοι· Ἀνάφην δὲ τε, λισσάδα νήσον
 ἴσκον, ὃ δὲ Φοῖβος μιν αὐτοζομένοις ἀνέθηκε.
 ῥέζον δ' ὅσσα περ ἄνδρες ἐρημαίῃ ἐνὶ ῥέξειν
- 1720 ἀκτῇ ἐφοπλίσσειαν· ὃ δὲ σφέας ὁπότε δαλοῖς
 ὕδωρ αἰδομένοισιν ἐπιλείποντας ἰδόντο
 Μηδείης δμῳαὶ Φαιηκίδες, οὐκ ἔτ' ἔπειτα
 ἴσχειν ἐν στήθεσσι γέλων σθενον, οἳα θαμειᾶς
 κίεν ἐν Ἀλκινόοιο βοοκτασίας ὁρώσας.
- 1725 Τεὺς δ' αἰσχροῖς ἥρωες ἐπιστοβέεσκον ἔπεσσι,
 χλεῦν γηθόσυνοι· γλυκερὴ δ' ἀνεδαίετο τοῖσι
 περτομῆν, καὶ νεῖκος ἐπεσβύλον. Ἐκ δὲ νῦ κείνης
 μολπῆς ἥρώων, νήσῳ ἐνὶ τοῖα γυναῖκες
 ἀνδράσι δηριόωνται, ἔτ' Ἀπόλλωνα θυηλαῖς
- 1730 Αἰγλήτην Ἀνάφης τομήορον ἰλάσκονται.
 Ἄλ' ἔτε δὴ κακῆϊδον ὑπεύδρια πείσματ' ἔλυσαν,
 μνήσαςτ' ἔπειτ' Εὐφῆμος ὀνείρατος ἐννυχίοιο,
 αἰζόμενος Μαίης υἱὰ κλυτόν. Εἶσατο γάρ οἱ
 δαιμονίῃ βῶλαξ ἐπιμάστιγος ᾗ ἐν ἀγοστῷ

1665 Ἐνθα δ' αἰοῖσσι μελίσσεται, μέλπε δὲ Κῆρας
 θυμοῦρους, Ἄιδας θοᾶς κύνας, αἱ περὶ πᾶσαν
 ἡέρα διενέουσιν ἐπὶ ζωῶσιν ἄγονται.
 Τὰς γουναζομένη τρίς μὲν παρεκέκλητ' αἰοδαῖς,
 Τρίς δὲ λιταῖς· θεμένη δὲ κακὸν νόον, ἐχθροποῖσιν

1670 ὁμμασι χαλκείοιο Τάλῳ ἐμέγηρεν ὀπωπᾶς·

λευγαλέον δ' ἐπὶ οἱ πρὶς χόλον, ἐκ δ' αἰδῆλα
 δεικῆλα προῖαλεν, ἐπιζαφελὸν κατέουσα.

Ζεῦ πάτερ, ἥ μέγα δὴ μοι ἐνὶ φρεσὶ θάμβος αἵται,
 εἰ δὴ μὴ νοῦσοισι τυπῆσί τε λυγρὸς ὄλεθρος

1675 ἀντιάει, καὶ δὴ τις ἀπόπροθεν ἄμμε χαλῆται.

Ὡς ὅγε, χάλκειός περ ἔων, ὑπόειξε δαμῆναι
 Μηδείης βρίμη πολυφαρμάκου. Ἄν δὲ βαρείας
 ὀχλίζων λάϊγας, ἐρυκέμεν ὄρμον ἐκίσθαι,
 πετραίῳ στόνουχι χρίμψι σφυρόν· ἐκ δὲ οἱ ἰχώρ

1680 τηκομένην ἱκελος μολύβῳ ῥέει· οὐδ' ἔτι δηρὸν
 εἰστήκει προβλήτος ἐπεμδεδαῶς σκοπέλοιο,

Ἄλλ' ὥς τίς τ' ἐν ὄρεσσι πελωρίῃ ὑψόθι πύκνῃ,
 τήν τε θοοῖς πελέκασιν ἐθ' ἡμιπλήγα λιπόντες
 ὑλοτόμοι δρυμοῖα κατήλυθον· ἡ δ' ὑπὸ νυκτὶ

1685 ῥέπῃσι μὲν πρῶτα τινάσσεται, ὕστερον αὐτὴ
 κρυμνόμεν ἐξαγεῖσα κατήριπεν· ὥς ὅγε ποσσὶν
 ἀκαμάτοις τείως μὲν ἐπισταδὸν ἤωρεῖτο,
 ὕστερον αὖτ' ἀμενηνὸς ἀπείρονι κάππεσε δούπῳ.

Κοῖνο μὲν οὖν Κρήτη ἐνὶ δὴ κνέφας ὑλίζοντο

1690 ἥρωες· μετὰ δ' οἳ γε νέον Φαέθουσαν ἐς ἡῶ
 ἱρὴν Ἀθηναίης Μινωίδος ἰδρύσαντο,
 ὕδωρ τ' εἰσαφύσαντο καὶ εἰσέβαν, ὥς κεν ἔρετμοῖς
 παμπρώτιστα βάλοιν ἐπὲρ Σαλμωνίδος ἄκρης.

Αὐτίκα δὲ Κρηταῖον ὑπὲρ μέγα λαῖτμα θέοντες

1695 νύξ ἐφάβει, τήν περ τε Κατουλάδα κικλήσκουσι,
 νύκτ' ὀλοήν· οὐκ ἄστρα δίσσανεν, οὐκ ἄμαρυγᾶί
 μήνης· οὐρανὸν δὲ μέλαν χάος, ἥ τις ἄλλη
 ὠρώρει σκοτὶν μυχάτων ἀνιούσα βερέθρων.

Αὐτοὶ δ', εἴτ' Ἀΐδην, εἴτ' ὕδασι ἐμφορέοντο,

1630 αὔλιος, ὅς τ' ἀνέπαυσεν οἰζυροὺς ἀροτῆρας,
 δὴ τότε ἔπειτ', ἀνέμοιο κελαινῇ νυκτὶ λιπόντος,
 ἱστικά λυσάμενοι, περιμήκειά τε κλίναντες
 ἱστὸν, ἐϋξέστησιν ἐπεβρώοντ' ἐλάτῃσι
 παννύχιοι καὶ ἐπ' ἡμαρ, ἐπ' ἡματι δ' αὖτις ἰοῦσαν

1635 νύχθ' ἐτέρην. Ἐπέδεκτο δ' ἀπόπροθι καιπαλόεσσα
 Κάρπαθος· ἐνθεν δ' οἱ γε περαιώσεσθαι ἔμελλον
 Κρήτην, ἣ τ' ἄλλων ὑπερέπλετο εἰν ἀλὶ νήσων.

Τοὺς δὲ Τάλως χάλκειος, ἀπὸ στιβαροῦ σκοπέλου
 ῥηγνύμενος πέτρης, εἵργε χθονὶ πείσματ' ἀνάψαι,

1640 Δικταίην ὄρμοιο κατερχομένους ἐπιωγῇν.

Τὸν μὲν χαλκείης μελιηγενέων ἀνθρῶπων
 ῥίξῃς λοιπὸν ἔοντα μετ' ἀνδράσιν ἡμιθέοισιν
 Εὐρώπῃ Κρονίδης νήσου πόρεν ἔμμεναι οὖρον,
 τρεῖς περὶ χαλκείοις Κρήτην ποσὶ δινεύοντα.

1645 Ἀλλ' ἦτοι τὸ μὲν ἄλλο δέμας καὶ γυῖα τέτυκτο
 χάλκεος ἢ δ' ἄρρηκτος· ὑπαὶ δὲ οἱ ἔσκε τένοντος
 σύριγξ αἱματόεσσα κατὰ σφυρὸν· αὐτὰρ ὁ τῆς γε
 λεπτὸς ὕμην ζωῆς ἔχε πείρατα καὶ θανάτοιο.

Οἱ δὲ, δὴν μάλα περ δεδμημένοι, αἰψ' ἀπὸ χέρσου

1650 νῆα, περιδδείσαντες, ἀνεκρούεσκον ἑρεμοῖς.

Καὶ νύ κ' ἐπισμυγεῶς Κρήτης ἐκὰς ἤερθησαν,
 ἀμφοτέρων δίφῃ τε καὶ ἄλγεσι μοχθίζοντές,
 εἰ μὴ σφι Μῆδεια λιαζομένοις ἀγόρευσε.

“Κέκλυτέ μεν! Μοῦνη γὰρ ὀδομαι ὕμμι δαμάσσειν

1655 „ ἀνδρα τὸν, ὅστις ὅδ' ἐστὶ, καὶ εἰ παγχάλκεον ἴσχει

„ ὃν δέμας· ὁπότε μὴ οἱ ἐπ' ἀκάματος πέλοι αἰὼν.

„ Ἀλλ' ἔχειτ' αὐτοῦ νῆα θελήμονες ἐκτὸς ἑρῳῆς

„ πετράων, εἴως κεν ἱμοὶ εἴξειε δαμῆναι.

Ὡς αἶψ' ἔφη· καὶ τοὶ μὲν ὑπὲρ βελέων ἐρύσαντο

1660 νῆ' ἐπ' ἑρεμοῖσι, δεδοκήμενοι ἦν τινα ῥίξει

μῆτιν ἀνωϊστώς· ἡ δὲ πτύχα πορφυρέοιο

προσχομένη πέπλοιο παρειῶν ἐκάτερθε,

βῆσατ' ἐπ' ἰκρίοφιν· χεῖρὸς δὲ ἐ χειρὶ μεμαρπώς

Λίσονίδης ἐκόμιζε διὰ κληίδας ἰοῦσαν.

1595 ἈΨα δ' ὄγ' ἰσσυμένως ἐκρίνατο, καὶ μιν αἶψας
σφάζε κατὰ πρύμνη· ἐπὶ δ' ἔννεπεν εὐχολῆσι.

“ Δαῖμον, ὅ τις λίμνης ἐπὶ κείρασι τῆσδε Φαίανθης,
,, εἴτε σὶ γε Τρίταν, ἔλιον τέρας, εἴτε σε Φόρκον,
,, ἢ Νηρῆα θυγάτρες ἐπικλείουσ' ἄλοσύδναι,

1600 ,, ἴλαθε, καὶ νόστοιο τέλος θυμηδὲς ἦπαζε.

Ἦρ', ἅμα δ' εὐχολῆσιν ἐς οἴδματα λαιμοτομήσας
ῆκε κατὰ πρύμνης· ὃ δὲ βένθεος ἔξεφαάνθη
τοῖος ἦν, ὅς περ ἐτήτυμος ἦεν ἴδασθαι.

Ὡς δ' ὅτ' ἀνὴρ θοὸν ἵππον ἐκ' ευρέα κύκλον ἀγῶνος

1605 στίβῳ, ὀρεζόμενος λασέης ὑπείθεα χαίτης,
εἴθαρ ἐπιτροχάων· ὃ δ' ἐπ' αὐχένι γαῦρος ἀερθεῖς
ἴσπεται, ἀργιόεντα δ' ἐν στομάτεσσι χαλινὰ
ἄμφι· ὀδακτάζοντι παραβλήθην κροτέονται·
ὥς ὄγ' ἐπισχόμενος γλαφυρῆς ὀλκήιον Ἀργούς

1610 ἦγ' ἄλαδὲ προτέρωσι. Δέμας δέ οἱ ἐξ ὑπάτοιο
κράατος, ἄμφι τε νῶτα καὶ ἰξίας ἐς τ' ἐπὶ νηδύν,
ἀντικρὺς μακάρεσσι Φοῖνῃ ἐκπαγλὸν εἶκτο·
αὐτὰρ ὑπαὶ λαγίνων δίκηρ ῥά οἱ ἐνθα καὶ ἐνθα
κῆτος ὀλκαίῃ μηχανέτο· κόπτε δ' ἀκάνθαις

1615 ἄκρον ὕδωρ, αἶτε σκολιοῖς ἐπὶ νεῖοδι κέντροισι,
μήνης ὥς κεράεσσιν ἐειδόμεναι, διχόωντο.
Τόφρα δ' ἄγε, τείως μιν ἐπιπρόηκε θάλασση
νισσομένην· δὴ δ' ἈΨα μέγαν βύθον· οἱ δ' ὁμάδῃσιν
ἦρως, τέρας αἰνὸν ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἰδόντες.

1620 Ἐνθα μὲν Ἀργεῖός τε λιμὴν καὶ σήματα νηὸς,
ἠδὲ Ποσειδάωνος ἰδὲ Τρίτωνος ἕασι
βωμοί· ἐπεὶ κεῖν' ἤμαρ ἐπίσχεθον. Αὐτὰρ ἐς ἣν
λαΐφεισι πεπταμένοις αὐτὴν ἐπὶ δέξι' ἔχοντες
γαῖαν ἐρημαίην, πνοιῇ Ζεφύροιο θέεσκον.

1625 Ἦρι δ' ἔκειτ' αἰκῶνά δ' ὁμοῦ, μυχάτην τε θάλασσαν
κεκλιμένην ἀγκῶνος ὑπὲρ προῦχοντος, ἰδόντο.
Αὐτίκα δὲ Ζεφύρος μὲν ἐλώφειν, ἤλυθε δ' αὔρη
ἀργέσταο Νότου· χήραντο δὲ θυμὸν ἰωῇ.

Ἦμος δ' ἥλιος μὲν ἰδυ, ἀνὰ δ' ἤλυθεν ἀστήρ

1560 „ παρκλῆς, εἰ δὴ τιν' ἀκούετε νόσφιν ἔοντες

„ Εὐρύπυλον Λιβύῃ θηροτρόφον ἐγγεγαῶτα.

“Ὡς ἡῦδα· πρόφρων δ' ὑπερέσχεθε βώλακι χεῖρας
Εὐφημος, καὶ τοῖα παρκαλήδην προσέειπεν.

“ Ἀτθίδα καὶ πέλαγος Μινώϊον εἴ νύ που, “ Ἦρωε,

1565 „ ἐξεδάης, νημερτές ἀνειρομένοισιν ἐνίσπε.

„ Δεῦρο γὰρ οὐκ ἐθέλοντες ἰκάνομεν, ἀλλὰ βορείαις

„ χρίμψαντες γαίης ἐπὶ πείρασι τῆσδε θυέλλαις,

„ νῆα μεταχθονίην ἐκομίσσαμεν ἐς τόδε λίμνης

„ χεῦμα δὲ ἠπείρου βεβαρημένοι· οὐδέ τι ἴδμεν

1570 „ πῇ πλόος ἐξανέχει Πελοπηίδα γαῖαν ἰκέσθαι.

“Ὡς ἄρ' ἔφη· ὁ δὲ χεῖρα τανύσσατο, δεῖξε δ' ἄπωθε,
Φωνήσας, πόντον τε, καὶ ἀσχιβαδὲς στόμα λίμνης·

“ Κεῖνῃ μὲν πόντοιο διήλυσσι, ἐνθα μάλιστα

„ βένθος ἀκίνητον μελανεῖ· ἐκάτερθε δὲ λευκαὶ

1575 „ ῥηγμῖνες Φρίσσουσι διαυγέας· ἡ δὲ μεσηγὺ

„ ῥηγμίνων στενὴ τέλειθι ὁδὸς ἐκτὸς ἐλάσσαι.

„ Κεῖνο δ' ὑπὲριον θείην Πελοπηίδα γαῖαν

„ εἰσανέχει πέλαγος Κρήτης ὑπερ' ἀλλ' ἐπὶ χειρὸς

„ δεξιτερῆς, λίμνηθεν ὅτ' εἰς ἄλὸς οἶδμα βάλῃτε,

1580 „ τόφρ' αὐτὴν παρὰ χέρσον ἐργαμένοι ἰδύνεσθε,

„ ἐς τ' ἂν ἄνω τείγησι· περιῤῥήδην δ' ἐτέρωσε

„ κλινομένης χέρσοιο, τότε πλόος ὕμμιν ἀπήμων

„ ἀσκῶνος τετάυσται ἀπὸ προὔχοντες ἰούσιν.

„ Ἀλλ' ἴτε γηθόσυνε, καμάρτοιο δὲ μὴ τις ἀνίη

1585 „ γιγνέσθω νεότητι κεκασμένα γυῖα μογῆσαι.

“ Ἴσκειν εὐφρονέων· οἱ δ' αἰψ' ἐπὶ νηὸς ἔβησαν
λίμνης ἐκπρομολεῖν λελητημένοι εἰρεσίησι,

Καὶ δὴ ἐπιπρονέοντο μεμαότες· αὐτὰρ ὁ τείως

Τρίτων ἀνθέμενος τρίποδα μέγαν, εἰσατο λίμνην

1590 εἰσβαίνειν· μετὰ δ' οὐ τις ἐσέδρακεν, οἶον ἄφαντος

αὐτῷ σὺν τρίποδι σχεδὸν ἔπλετο. Τοῖσι δ' ἰάνθη

θυμὸς, ὃ δὴ μακάρων τις ἐναΐσιμος ἀντεδύλησε.

Καὶ ῥά οἱ Λισονίδην μῆλ' ὅ τι φέρτατος ἄλλων

ἦνωγον ῥέξαι, καὶ ἐκαυφημῆσαι ἔλόντα.

1525 λυσιμελές, πολλή δὲ κατ' ὄφθαλμῶν χιετ' ἀχλὺς.

Αὐτίκα δὲ κλίνας δαπέδῳ βεβαρηότα γυῖα
ψύχεται ἀμνηχανή· ἔταροι δὲ μιν ἀμφαγέροντο,
ἥρως τ' Αἰσονίδης, ἀδινῇ περιθαμβέες ἄτῃ.

Οὐδὲ μὲν οὐδ' ἐπὶ τυτθὸν ἀποφθίμενός περ ἔμελλε

1530 κεῖσθαι ὑπ' ἡελίῳ. Πύθεσκε γὰρ ἔνδοθι σάρκα
ἰὸς ἄφαρ, μυδώσα δ' ἀπὸ χροῶς ἔρρεεν ἄχνη.

Αἷψα δὲ χαλκείῃσι βαθὺν τάφον ἐξελάχαινον
ἱσσυμένως μακέλησιν· ἐμοιρήσαντο δὲ χαίτας
αὐτοὶ ὁμῶς κοῦραί τε, νέκυν ἔλγεινὰ παθόντα

1535 μυρόμενοι· τρίς δ' ἀμφὶ σὺν ἔντεσι δινηθέντες
εὐπτερέων ἴσχοντα, χυτὴν ἐπὶ γαίαν ἔθεντο.

Ἄλλ' ὅτε δὴ ῥ' ἐπὶ νηὸς ἔβαν, πρήθοντος ἀήτεω
ἀμπέλαιος νοτίοιο, πόρους τ' ἀποτεκμήραντο
λίμνης ἐκπρομολεῖν Τριτωνίδος, οὐ τινα μῆτιν

1540 δὴν ἔχον, ἀφραδέως δὲ πανημέριοι φορέοντο.

Ὡς δὲ δράκων σκολιὴν εἰλιγμένος ἔρχεται οἶμον,
εὐτέ μιν ὀξίτατον θάλλει σέλας ἡλίοιο·
ῥοῖζψ δ' ἔνθα καὶ ἔνθα κάρη στρέφει, ἐν δὲ οἱ ὄσσε
σπινθαρυγέσσι πυρὸς ἐναλίσκια μαιμώνοντι

1545 λάμπεται, ὄφρα μυχόνδε διὰ ῥωχμοῖο δύνῃται·

ὥς Ἀργῶ λίμνης στόμα ναύπορον ἐξερέουσα
ἀμφεπόλει δηναῖον ἐπὶ χρόνον. Αὐτίκα δ' Ὀρφεὺς
κέκλετ' Ἀπόλλωνος τρίποδα μέγαν ἔκτοθι νηὸς
δαίμοσιν ἐγγενέταις νόστῳ ἐπὶ μείλια θῆσθαι.

1550 Καὶ τοὶ μὲν Φοῖβου κτέρκε ἴδρουον ἐν χθονὶ βάντες·

τοῖσιν δ' αἰζήψ ἐναλίσκιος ἀντεβόλησε
Τρίτων εὐρυβίης, γαίης δ' ἀνὰ βῶλιν αἰέρας,
ζεῖνι ἀριστήεσσι προῖσχετο, Φώνησέν τε.

“ Δέχθε, φίλοι· ἐπεὶ οὐ περιώσιον ἐγναλίσκῃ

1555 ” ἐνθάδε νῦν παρ' ἐμοὶ ζεινήϊον ἀντομνέουσιν.

” Εἰ δέ τι τῆσδε πόρους μαίεσθ' ἄλως, οἷά τε πολλαῖ

” ἄνθρωποι χατέουσιν ἐν ἁλὸς ἀπὸ πῆ πρὸ ὧντες,

” ἐξερέω. Δὴ γάρ με πατὴρ ἐπιύστορα πόντον

” θῆκε Ποσειδάων τοῦδ' ἐμμεναί. Αὐτὰρ ἀνάστῃ

- 1490 υἱὸν δὲ Φοῖβοιο Λυκωρεΐοιο Κάφαιρος
 κούρης τ' αἰδοίης Ἀκακαΐδης, ἣν ποτε Μίνως
 ἐς Λιβύην ἀπένασσε, θεοῦ βαρὺ κῦμα φέρονσαν,
 θυγατέρα σφετέρην· ἥ δ' ἀγλαὴν υἷα Φοῖβον
 τίκτεν, ὃν Ἀμφίδεμιν Γαράμαντά τε κικλήσκουσιν.
- 1495 Ἀμφίδεμις δ' ἄρ' ἔπειτα μῆγ' Ἐλπίδι Νύμφῃ
 ἥ δ' ἄρα οἱ Νασάμωνα τέκε, κρατερόν τε Κάφαιρον,
 ἐς τότε Κάνθον ἔπεφνεν ἐπὶ ῥήνεσσιν ἑοῖσιν.
 Οὐδ' ὅγ' ἀριστήων χαλπαὺς ἠλείατο χεῖρας,
 ὥς μάθον οἷον ἔρεξε. Νέκιν δ' ἀνάειραν οπίσσω
- 1500 πευδόμενοι Μινύαι, γαίῃ τ' ἐνὶ ταρχύσαντο
 μυρόμενοι· τὰ δὲ μῆλα μετὰ σφέας οἱ γ' ἐκόμισσαν.
 Ἐνθα καὶ Ἀμπυκίδην αὐτὴν ἐνὶ ἡματι Μῆφον
 νηλεῆς ἔλε πότμος· ἀδευκέα δ' οὐ φύγεν αἶσαν
 μαντοσύναις· οὐ γάρ τις ἀποτροπὴ θανάτοιο.
- 1505 Κεῖτο δ' ἐπὶ φαρμάδοισι μεσημερινὸν ἦμαρ αλύσκων
 δεινὸς ὄφης, νωθῆς μὲν ἐκὼν αἰκοντα χαλῆφαι·
 οὐδ' ἂν ὑποτρέσαντος ἐνωπαδὶς ἀΐξειεν.
 Ἀλλ' ἄ κεν ἦ τὰ πρῶτα μελαίχιμον ἰὼν ἐνείη
 ζώντων, ὅσα γαῖα φερέεβις ἐμπνοα βόσκει,
- 1510 οὐδ' ὅσων πῆχυιον ἐς Ἄϊδα γίγνεται οἶμος,
 οὐδ' εἰ Παιήων, εἴ μοι θέμις ἀμφαδὸν εἰπεῖν,
 Φαρμάσσοι, ὅτε μοῖνον ἐνιχρίμψῃσιν ὁδοῖσιν.
 Εὖτε γάρ ἰσότητος Λιβύην ὑπερέπτατο Περσεύς
 Εὐρυμέδων (καὶ γάρ τὸ κάλεισκέ μιν οὐνομα μήτηρ)
- 1515 Γοργόνος ἀρτίτομον κεφαλὴν βασιλῆι κομίζων,
 ὅσσοι κυανέου ἀτάγες αἵματος οὐδας ἵκοντο,
 αἱ πᾶσαι κείνων ὀφίων γένος ἐβλάστησαν.
 Τῷ δ' ἄκρην ἐκ' ἄκανθαν ἐνιστηρίξατο Μῆφος,
 λαϊὸν ἐπιπροφέρων ταρσὸν ποδὸς· αὐτὰρ ὁ μέσσην
- 1520 κερκίδα καὶ μυῶνα, περίξ' ὀδύνησιν ἐλίχθει,
 σάρκα δακνὼν, ἐχάραξεν. Ἀτὰρ Μῆδεια καὶ ἄλλαι
 ἔτρεσαν ἀμφίπολοι· ὁ δὲ Φοῖνιον ἔλκος ἄφασσε
 θαρσαλέως, ἐνέκ' οὐ μιν ὑπέρβιον ἔλκος ἔτειρε·
 σχέτλιος· ἥ τέ οἱ ἤδη ὑπὸ χροῖ δύστο κῶμα

- 1455 ἄπλητον μεμάασιν ἐπήτριμοι· ὥς τότε ἄολλοις
 πετραίῃ Μινίαι περὶ πίδακι δινεύεσκον.
 Καὶ που τίς διεροῖς ἐπὶ χεῖλεσιν εἶπεν ἰανθεῖς.
 «ὦ πόποι, ἣ καὶ νόσφιν ἔων ἐσάωσεν ἐταῖρους
 Ἡρακλῆος, δίψῃ κεκμηότας. Ἀλλὰ μιν εἴ πως
 1460,, δῆοιμιν στείχοντα δι' ἡπείροιο κίοντες.
 Ἡ, καὶ ἀμειβομένων, οἳ τ' ἄρμενοι ἐς τόδε ἔργον
 ἔκριθεν, ἄλλουδ' ἄλλος ἐπαΐξας ἐρεείνον.
 Ἴχνη γὰρ νυχίοισιν ἐπηλίνδητ' ἀνέμοισι,
 κινυμένης ἀμάθου. Βορέαο μὲν ὠρμήθησαν
 1465, ὣτε δύνω, πετρυγέσσι πεποιδότε· ποσσὶ δὲ κούφοις
 Εὐφρημος πύσσνος, Λυλκεὺς γε μὲν ὀξεία τηλοῦ
 ὅσσε βαλεῖν· πέμπτος δὲ μετὰ σφίσιν ἔσσυτο Κάνθος.
 Τὸν μὲν ἄρ' αἴσα θεῶν κείνην ὁδὸν, ἡνορήη τε
 ὤρσεν, ἵν' Ἡρακλῆος ἀπηλεγέως πεπύθοιτο,
 1470 Εἰλατίδην Πολύφημον ὅπη λίπε· μέμβριτο γὰρ οἱ
 οὐ ἔθεν ἀμφ' ἐτάροιο μεταδῆσαι τὰ ἔκαστα.
 Ἀλλ' ὁ μὲν οὖν Μυσοῖσιν ἐπικλεῖς ἄστν πολίσσας,
 νόστου κηδοσύνησιν ἔβη διζήμενος Ἀργῶ
 τῆλε δι' ἡπείροιο· τίως δ' ἐξίκετο γαίαν
 1475 ἀσχιαίων Χαλύβων· τόθι μιν καὶ Μοῖρ' ἐδάμασσε,
 καὶ οἱ ὑπὸ βλωθρὴν ἀχερωίδα σῆμα τέτυκται
 τυτθὸν ἀλὸς προπάροιθεν. Ἀτὰρ τότε γ' Ἡρακλῆα
 μοῦνον ἀπειρεσίνης τηλοῦ χθονὸς εἶσατο Λυλκεὺς
 τῶς ἰδέειν, ὥς τίς τε νέψ' ἐνὶ ἡματι μήνην
 1480 ἦ ἰδεν, ἦ ἰδόκησεν ἐπαχλύουσιν ἰδέσθαι. —
 Ἐς δ' ἐτάρους ἀνιὼν μυθήσατο, μή μιν ἔτ' ἄλλον
 μαστῆρα στείχοντα κιχησέμεν· ὥς δὲ καὶ αὐτοὶ
 ἦλυθον, Εὐφρημὸς τε πόδας ταχύς, ὣτε τε δοῖω
 Θρηικίου Βορέω, μεταμώνια μοχθήσαντες.
 1485 Κάνθε, σὲ δ' οὐλόμεναι Λιβύῃ ἐνὶ Κῆρις ἔλοντο.
 Πῶσσι φερεσόμενοις συνήντες· εἶπετο δ' ἀνὴρ
 αὐλείτης, ὃ σ' ἔων μῆλων πέρι, τόφρ' ἐτάροισι
 δνομένοις κομίσειας, ἀλεξόμενος κατέπεφνε,
 λαῖ βαλάν· ἐπεὶ οὐ μὲν ἀφαυρότερός γ' ἐτίτυκτο

- 1420 „ δὴ τότε μυρία δῶρα μετὰ πρώτῃσι θεῶων,
 „ λοβῶας τ' εἰλαπίνας τε παρέζομεν εὐμενέοντες,
 „ ὧς φάτο λισσόμενος ἀδινῇ ὀπί· ταὶ δ' ἐλείαιρον
 „ ἐγλύφον ἀχνυμένους· καὶ δὴ χθονὸς ἐξανέτειλαν
 „ ποίην πάμπρωτον· ποίης γε μὲν ὑψόθι μακρῶι
 1425 βλάστεον ὄρπηκες· μετὰ δ' ἔρρεα τηλεθώοντα
 „ πολλὴν ὑπὲρ γαίης ὀρθοστάδων ἤεζοντο·
 „ Ἐσπέρη, αἵγειρος· πετλήη δ', Ἐρυθρῆς ἔγεντο·
 „ Αἴγλη δ', ἰτεῖς ἱερὸν στύπος. Ἐκ δὲ νυ κείνων
 „ δενδρέων, οἵαι ἔσαν, τοῖαι πάλιν ἔμπεδον αὐτως
 1430 ἐξέφανε, θάμβος περιώσιον· ἐκφατο δ' Αἴγλη,
 „ μελιχίους ἐπέεσσιν ἀμειβομένη χατέοντας.
 „ Ἡ ἄρα δὴ μέγα πάμπαν ἐφ' ὑμετέροισιν ἔνεαρ
 „ δεῦρ' ἔμολε καμάτοισιν ὁ κύντατος, ὅστις ἀπούρας
 „ Φρουρὸν ὄφιν ζωῆς, παλ' ἤρυσσε μῆλα θεῶων
 1435 „ οἷχετ' αἰεράμενος· στυγερόν δ' ἄχος ἄμμι λέλειπται.
 „ Ἦλυθε γάρ χθιζὸς τις ἀνὴρ οἰωτάτος ὕβριν
 „ καὶ δέμας — ἔσσε δὲ οἱ βλοσυρῷ ὑπέλαμπε μετώπῳ —
 „ νηλής· ἀμφὶ δὲ δέρμα πελωρίου ἔστο λέοντος
 „ ὦμόν, ἀδέφητον· στήθερόν δ' ἔχεν ὄζον ἐλαίης,
 1440 „ τόξα τε, τοῖσι πέλωρ τόδ' ἀπέφθισεν ἰοβολήσας.
 „ Ἦλυθε δ' οἷν κακ' εἶνος, ἅτε χθόνα περὶς ὀδεύων,
 „ δίφῃ καρχαλέος· παίφασσε δὲ τόνδ' ἀνὰ χῶρον,
 „ ὕδωρ ἐξερέων, τὸ μὲν οὐ ποθι μέλειν ἰδέσθαι.
 „ Ἦδε δὲ ἄρα τις πέτρῃ Τριτωνίδος ἐγλύφει λίμνης,
 1445 „ τὴν ὄγ' ἐπιφρασθεῖς, ἥ καὶ θεοῦ ἐννεσίῃσι,
 „ λάξ ποδὶ τύφεν ἔνερθε· τὸ δ' ἀθρόον ἔβλυσεν ὕδωρ.
 „ Αὐτὰρ ὄγ' ἄμφω χεῖρε πέδῳ καὶ στέρνον ἐρείσας
 „ ῥωγάδας ἐκ πέτρης πῖεν ἄσπετον, ὅφρα βαθεῖαν
 „ νηδὺν, φορβᾷ ἴσος ἐπιπροπεσῶν, ἐκορέσθη.
 1450 „ ὧς φάτο· τοὶ δ' ἀσπαστὴν, ἵνα σφίσι πίφραδεν Αἴγλη
 „ πίδακα, τῇ θῖον αἶψα κεχαρμένοι, ὅφρ' ἐπέκυσσαν.
 „ ὧς δ' ἐπότε στενὴν περὶ χηραμὸν εἰλίσσονται
 „ γειομόροι μύρμηκες ὀμιλαδὸν, ἥ ἔτε μῦται
 „ ἀμφ' ὀλίγην μέλιτος γλυκεροῦ λίβα πιπτηνῆαι

- 1385 νῆα μεταχθονίην, ὅσα τ' ἔνδοθι νηὶς ἄγεσθε,
 ἀνθεμένους ὤμοισι, φέρειν δυοκαίδεκα πάντα
 ἡμαθ' ὁμοῦ νύκτας τε. Δύην γὰρ μὲν ἦ καὶ αἰεὶ
 τίς κ' ἐνέποι, τὴν κείνοι ἀνέπλησαν μογέοντες;
 Ἐμπεδὸν ἀθανάτων ἔσαν αἵματος, οἷον ὑπέρσταν
- 1390 ἔργον, ἀναγκαίῃ βεβωλημένοι. Αὐτὰρ ἐπιπρὸ
 τῆλε μάλ' ἀσπασίως Τριτωνίδος οἴδμασι λίμνης
 ὡς φέρον, ὡς εἰσθάντες ἀπὸ στιβαρῶν θέσαν ὤμων.
 Λυσσαλίοις δ' ἤπειτ' ἱκελοὶ κυσὶν αἰσσοντες
 πίδακα μαστρεύεσκον· ἐπὶ ξηρῇ γὰρ ἔκειτο
- 1395 δίψα δυπηαδίῃ τε καὶ ἄλγεσιν. Οὐδ' ἐμάτησαν
 πλαζόμενοι· ἔχον δ' ἱερὸν πέδον, ἧ ἔνι Λαδῶν
 εἰσέτι που χθιζὸν παλχοῦσεα ρύετο μῆλα
 χώρῳ ἐν Ἀτλαντος, χθόνοισι ὄφιοι· ἀμφὶ δὲ Νύμφαι
 Ἑσπερίδες ποίπνυν, ἐψόμερον αἰέδουσαι.
- 1400 Δὴ τότε γ' ἤδη κείνοι ἴφ' Ἡρακλῆϊ δαίχθεις
 μήλειον βέβλητο ποτὶ στύπος· οἴοθι δ' ἄκρη
 οὐρῇ ἐτι σπαίρεσκεν· ἀπὸ κρατὸς δὲ κελεινήν
 ἄχρῳ ἐπ' ἀκνηστὶν κεῖτ' ἀπνοοι· ἐκ δὲ λιπόντων
 ὕδρης Λερναίης χόλον αἵματι πικρὸν οἰστῶν,
- 1405 μυῖαι πυθομένοισιν ἴφ' ἔλκεσι τερσαίνοντο.
 Ἀλχοῦ δ' Ἑσπερίδες κεφαλῆς ἐπὶ χεῖρας ἔχουσαι
 ἀργυφέας ξανθῆσι, λίγ' ἔστενον· οἱ δ' ἐπέλασσαν
 ἄφνω ὁμοῦ· ταὶ δ' αἰψὰ κόνις καὶ γαῖα, κιόντων
 ἔσσυμένως, ἐγένοντο καταυτόθι. Νώσατο δ' Ὀρφεύς
- 1410 θεῖα τέρα, στάς δὲ σφε παρηγορήσχε λιτῆσι.
 “ Δαίμονες ὦ καλαὶ καὶ εὐφρονες, ἴλατ' ἀνασσαι,
 „ εἴτ' οὖν ουρανίης ἐναρίθμιοι ἐστέ θεῆσιν,
 „ εἴτε καταχθονίης, εἴτ' οἰόπολοι καλέεσθε
 „ Νύμφαι· ἔτ' ὦ Νύμφαι, ἱερὸν γένος Ὠκεανοῖο,
 1415 „ δειξάτ' ἐλδομένοισιν, ἐνωπιδίς ἄμμι φανείσαι,
 „ ἢ τίνα πετραίην χύσιν ὕδατος, ἢ τίνα γαίης
 „ ἱερὸν ἐκβλύοντα, θεαί, ῥέον, ἧ ἀπὸ δίψαν
 „ αἰδομένην ἄμοτον λωφήσομεν. Εἰ δὲ κεν αὐτῆς
 „ δὴ ποτ' Ἀχαιῖδα γαῖαν ἐκωμεθα ναυτιλίῃς,

- 1350 „ ἔσταν ὑπὲρ κεφαλῆς μάλ' ἐπισχεδόν· ἐκ δ' ἐκάλυψαν,
 „ πέπλον ἐρυσσάμεναι κούφῃ χειρὶ, καὶ μ' ἐκέλοντο
 „ αὐτόν τ' ἐγρεσθαι, ἀνά θ' ἱμέας ὕρσαι ἰόντα·
 „ μητέρι δὲ σφετέρῃ μενοεικέα τίσαι ἀμοιβήν,
 „ ὣν ἔκαμε, δὴρ' ἐν κατὰ νηδύος ἄμμε φέρουσα,
- 1355 „ ὁπότε κεν λύσῃσιν εὐτροχὸν Ἀμφιτρίτη
 „ ἄρμα Ποσειδάωνος. Ἐγὼ δ' οὐ πάσῃ νοῆσαι
 „ τῆσδε θεοπροπίης ἴσχω πέρι. Φάν γε μὲν εἶναι
 „ ἡρῶσαι, Λιδύης τιμήτοροι ἠδὲ θυγάτρες,
 „ καὶ δ' ὅσος αὐτοὶ πρόσθεν ἐπὶ χθονός, ἡ δ' ὅσ' ἐφ' ὕβριν
- 1360 „ ἔτλημεν, τὰ ἕκαστα δαΐδμεναι εὐχετόωντο.
 „ Οὐδ' ἔτι τάσδ' ἀνὰ χῶρον ἐσέδρακον, ἀλλὰ τις ἀχλὺς
 „ ἥ νεφὸς μετσηγὺ φαεινομένας ἐκάλυψεν.
 „ Ὡς ἔφαθ'· οἱ δ' ἄρα πάντες ἐδάμψον εἰσαΐοντες.
 „ Ἐνθα τὸ μήκιστον τεράων Μινύησιν ἐτύχθη.
- 1365 Ἐξ ἀλὸς ἡπειρόνδε πελώριος ἐκθόρεν ἵππος,
 „ ἀμφιλαφὴς, χρυσέῃσι μετόχοις αὐχένα χαίταις·
 „ ῥίμφα δὲ σεισάμενος γυῖων ἀπο νήχυτον ἄλμην
 „ ὤρτο θέειν, πνοιῇ ἱκελὸς πόδας. Αἴψα δὲ Πηλεὺς
 „ γηθήσας ἐτάροισιν ὁμηγερέεσσι μετηύδα.
- 1370 „ Ἄρματα μὲν δὴ Φημί Ποσειδάωνος ἔγωγε
 „ ἥδη νῦν ἀλόχοιο Φίλης ὑπὸ χειρὶ λελύσθαι·
 „ μητέρα δ' οὐκ ἄλῃην προτιόσσομαι, ἥ περ αὐτὴν
 „ νῆα πέλειν· ἥ γὰρ κατὰ νηδύος ἄμμε φέρουσα
 „ νωλεμέσ ἀργαλέοισιν ὀϊζύνει καμάτοισιν.
- 1375 „ Ἀλλὰ μιν ἀστεμφεῖ τε βίη καὶ ἀτειρέσιν ὤμοις
 „ ὑψόθεν ἀνδρέμενοι, φαρμαδώδεος ἐνδοθεὶ γαίης
 „ οἴσομεν, ἥ προτέρωσσε ταχὺς πόδας ἤλασεν ἵππος.
 „ Οὐ γὰρ ὅ γε ξηρὴν ὑποδύσεται· ἰχθία δ' ἡμῖν
 „ σημανέειν τιν' ἐολπὰ μυχὸν καθύπερθε θαλάσσης.
- 1380 „ Ὡς ἦνδ'· πάντεσσι δ' ἐπήθελος ἦνδανε μῆτις.
 „ Μουσῶν ὅδε μῦθος· ἐγὼ δ' ὑπακούους αἰείδω
 „ Πιερίδων, καὶ τήνδε πανατρεκέεσ ἐκλυον ὁμφήν,
 „ ἱμέας, ὧ περὶ δὴ μέγα φέρτατοι νῆες ἀνέκτων,
 „ ἥ βίη, ἥ τ' ἀρετὴ Λιδύης ἀνὰ θῖνας ἐρήμους

1315 Αὐτὰρ ὅγ' εἰς ἐτέρωσέ παλιμπετὲς ἕμματ' ἔνεικε,
δαίμονας αἶδεσθαι· αὐταὶ δέ μιν ἀμφαδὺν οἶον
μειλιχίοις ἐπέεσσιν ἀτυζόμενον προσέειπον.

“Κάμορε, τίπτ' ἐτι τόσσον ἀμηχανίῃ βεβόλησαι;
,, ἴθμεν ἐποιχομένους χρύσειον δέρας· ἴθμεν ἕκαστα
1320 ,, ἐμετέρων καμμάτων, ἵσ' ἐπὶ χθονός, ὅσσα τ' ἐφ' ὕγρην
,, πλαζόμενοι κατὰ πόντον, ὑπέρβια ἔργα κάμεσθε.
,, Οἰοπόλοι δ' εἰμὲν χθόνιαί θεαὶ αὐδῆσαι,
,, ἡρᾶσαι, Λιδύης τιμήρορι ἠδὲ Δύγατρες.
,, Ἀλλ' ἄνα· μὴδ' ἐτι τοῖον οἰζύνων ἀκάχησο·
1325 ,, ἀνστησον δ' ἐτάρους. Εὖτ' ἂν δέ τοι Ἀμφιτρίτῃ
,, ἄρμα Ποσειδάωνος εὐτροχον αὐτίκα λύσῃ,
,, δὴ ῥα τότε σφετέρῃ ἀπὸ μητέρι τίπτ' ἀμοιβήν,
,, ὣν ἕκαμε, δῆρὸν κατὰ νηδύος ἕμμε φέρουσα·
,, καὶ κεν ἔτ' ἠγαθήν ἐς Ἀχαιίδα νοστήσαιτε.

1330 “Ὡς ἄρ' ἔφην, καὶ ἄφαντοι, ἴν' ἕσταδεν, ἐνθ' ἄρα ταί γε
φθογῇ ὁμοῦ ἐγένοντο παρασχεδόν. Αὐτὰρ Ἰήσων
παπτήνας ἀνά ῥ' ἔζετ' ἐπὶ χθονός, ὧδέ τ' εἶπεν.

“Ἴλατ' ἐρημονόμοι κυδραὶ θεαί· ἀμφὶ δὲ νόστιον
,, οὔτε μάλ' ἀντικρυς νοέω φάτιν. Ἦ μὲν ἐταίρους
1335 ,, εἰς ἐν ἀγειράμενος μυθήσομαι, εἴ νύ τι τέκμωρ
,, δόιοιμεν κομιδῆς· πολέων δέ τε μῆτις ἀρείων.
Ἦ, καὶ ἀναΐξας ἐτάρους ἐπὶ μακρὸν αὐτεῖ,
αὐσταλέος κοινήσι, λέων ὥς, ὅς ῥα τ' ἂν ὕλην
σύννομον ἦν μεθέπων ὠρύεται· αἱ δὲ βαρεῖα

1340 φθογῇ ὑποτρομέουσιν ἂν οὔρεα τηλόθι βῆσαι·
δείματι δ' ἄγραυλοί τε βόες μέγα πεφρίκασσι,
βουπελάται τε βοῶν· τοῖς δ' οὔ νύ τι γῆρὺς ἐτύχθη
ῥυγεδανὴ ἐτάριοιο φίλους ἐπικεκλομένωιο.

Ἀλχὺ δ' ἠγερέθοντο κατηφέες· αὐτὰρ ὁ τοὺς γε
1345 ἀχνυμένους ὄρμοιο πέλας μίγα θηλυτέρῃσιν
ιδρύσας, μυθεῖτο πιφασκόμενος τὰ ἕκαστα.

“Κλῦτε, φίλοι· τρεῖς γάρ μοι ἀνιάζοντι θεῶων,
,, στέρφεσιν αἰγείοις ἐξωσμέναι ἐξ ὑπάτοιο
,, αὐχίνος ἀμφὶ τε νῶτα καὶ ἰξῦας, ἥ τε κοῦραι,

- 1280 Οἷον δ' ἀψύχοισιν ἱοικότες εἰδώλοισιν
 ἄνδρες εἰλίσσονται ἀνὰ πτόλιν, ἣ πολέμοιο
 ἢ λοιμοῖο τέλος ποτιδέγμενοι, ἥε τιν' ὄμβρον
 ἄσπετον, ὅστε βῶν κατὰ μυρία ἔκλυσεν ἔργα,
 ἣ ὅταν αὐτόματα ξύαντα ῥέη ἰδρώοντα
- 1285 αἵματι, καὶ μυκαὶ σηκοῖς ἐνὶ φαντάζονται,
 ἔξ καὶ ἥελιος μέσῳ ἤματι νύκτ' ἐπάγῃσιν
 οὐρανόθεν, τὰ δὲ λαμπρὰ δὲ ἥερος ἄστρα φαείνη·
 ὡς τότε ἀριστῆες δολιχοῦ πρόπαρ αἰγιαλοῖο
 ἦλυν ἐρπύζοντες. Ἐπήλυθε δ' αὐτίκ' ἔρεμνῃ
- 1290 ἔσπερος· οἱ δ' ἐλκεῖνὰ χερσὶν σφέας ἀμφιβαλόντες
 δακρυόειν ἀγάπαζον, ἵν' ἀνδιχα δῆθεν ἕκαστος
 θυμὸν ἀποφθίσειαν ἐνὶ ψαμάθοισι πεσόντες.
 Βάν δ' ἵμεν ἄπλυν ἀπὸς ἑκαστέρῳ αὐλὴν ἐλίσσαι·
 ἐν δὲ κάρη πέπλοισι καλυψάμενοι σφετέρουσιν
- 1295 ἄκμηνοι καὶ ἄπαστοι ἐκείατο νύχθ' ὑπὸ πᾶσαν
 καὶ φάος, οἰκτίστῳ θανάτῳ ἔπι. Νόσφι δὲ κοῦραι
 ἄθρ' αἶ Αἰήταο παρεστενάχοντο θυγατρί.
 Ὡς δ' ὅτ' ἐρημαῖοι πεπτηότες ἔκτοθι πέτρης
 χηραμοῦ ἀπτήνες λιγέα κλάζουσι νεοσσοί·
- 1300 ἣ ὅτε καλὰ νάοντος ἐπ' ὀφρύσι Πακτωλοῖο
 κύκνοι κινήσουσιν ἐὼν μέλος, ἀμφὶ δὲ λειμῶν
 ἐρσήεις βρέμεται, ποταμοῖό τε καλὰ ῥέεθρα·
 ὡς αἰ' ἐπὶ ξανθὰς θεμεναι κονίῃσιν ἐτάρως
 παννύχια ἐλκεῖνόν ἐήλεμον ὠδύροντο.
- 1305 Καὶ νύ κεν αὐτοῦ πάντες ἀπὸ ζωῆς ἐλίσσθεν
 γώνυρα καὶ ἄφαντοι ἐπιχθονίοισι δαῖνας
 ἡρώων οἱ ἄριστοι ἀννύστῳ ἐπ' ἀέθλῳ·
 ἀλλὰ σφέας ἐλέηρ' ἀμηχανίῃ μινύθοντας
 ἡρῶσαι, Λιδύης τιμήοροι, αἱ ποτ' Ἀθήνην,
- 1310 ἦμος ὅτ' ἐκ πατρὸς κεφαλῆς θόρε παμφαίνουσα,
 ἀντρίμενα Τροίωνος ἐφ' ὕδασι χυτλώσαντο,
 Ἐνδιον ἦμαρ ἦν, περὶ δ' ὀξύταται θέρον αὐγαὶ
 ἡελίου Λιδύην· αἱ δὲ σχεδὸν Αἰονίδας
 ἔσταν, ἔλυν δ' ἀπὸ χερσὶ καρήατος ἡρέμα πέπλον.

1245 Οἱ δ' ἀπὸ νηὸς ὄρουσαν, ἄχος δ' ἔλεν εἰσορόωντας
 ἡέρα, καὶ μεγάλης νῶτα χθονός, ἡέρι δ' ἴσα
 τηλοῦ ὑπερτείνοντα διηνεκές· οὐδὲ τιν' ἀρδμόν,
 οὐ πάτον, οὐκ ἀπάνευθε καταυγάσαντο βοτῆρα
 αὐλίον, εὐκλήῳ δὲ κατείχετο πάντα γαλήνη.

1250 Ἄλλος δ' αὖτ' ἄλλον τετιημένος ἐξηρέεινε.

“Τίς χθὼν εὐχεται ἦδε; πόθι ζυνέωσαν αἶψαι
 „ ἡμέας; αἰὲτ' ἔτλημεν, ἀφειδέες οὐλομένοιο
 „ δείματος, αὐτὰ κέλευθα διαμπερές ὁρμηθῆναι
 „ πετράων. Ἦτ' ἂν καὶ ὑπὲρ Διὸς αἴσαν ἰούσι

1255 „ βέλτερον ἦν μέγα δῆ τι μενοινώνοντας ὀλέσθαι,
 „ νῦν δὲ τί κε μέζαιμεν, ἐρυκόμενοι ἀνέμοισιν
 „ αὐθι μένειν τυτθὸν περ ἐπὶ χρόνον, οἷον ἐρήμη
 „ πέτρα διωλυγίης ἀναπέπταται ἠπείροιο;

Ὡς αἶψ' ἔφη· μετὰ δ' αὐτὸς ἀμνηχανίη κακότητος

1260 Ἰδυντὴρ Αἰκαῖος ἀκηχέμενος ἀγόρευσεν·

“Ὀλόμεθ' αἰνότατον σῆθεν μόρον, οὐδ' ὑπάλυξίς
 „ ἔστ' αἵτης· πάρα δ' ἄμμι τὰ κύντατα πημανθῆναι
 „ τῇδ' ὑπ' ἐρημαίῃ πεπτηότας, εἴ κεν αἴται
 „ χερσούθεν ἀμπνεύσειαν· ἐπεὶ τεναγώδεα λεύσσω,

1265 „ τῇλε περισκοπέων, ἄλλα πάντοθεν· ἦλιστα δ' ὕδωρ
 „ ξαινόμενον πολιῆσιν ἐπιτροχάει ψαμάδοισι.
 „ Καί κεν ἐπισμυγεῶς διὰ δὴ πάλαι ἦδε κεάσθῃ
 „ νηὺς ἱερὴ χέρσου ποσσὸν πρόσω· ἀλλὰ μιν αὐτῇ
 „ πλημμυρίς ἐκ πόντοιο μεταχθονίην ἐκόμισσε.

1270 „ Νῦν δ' ἡ μὲν πέλαγόςδε μετέσσεται, οἶόςδε δ' ἄλμη
 „ ἀπλοὸς εἰλεῖται, γαίης ὑπὲρ ὅσον ἔχουσα.
 „ Τοῦνεκ' ἐγὼ πᾶσαν μὲν ἀπ' ἐλπίδα Φημὶ κεκόφθαι
 „ ναυτιλίας νόστου τε. Δαημοσύνην γέ τις ἄλλος
 „ φήνειεν· πάρα γάρ οἱ ἐπ' οἴηκεσι θάσσειν

1275 „ μαιομένῳ κομιδῆς. Ἄλλ' οὐ μάλα νόστιμον ἦμαρ
 „ Ζεὺς ἐτ' ἔλει καμάτοισιν ἐφ' ἡμετέροισι τελέσσαι.

Ὡς φάτο δακρυόεις· σὺν δ' ἔννεπον ἀσχαλόντι,
 ὅσσοι ἔσαν νηῶν δεδαημένοι· ἐν δ' ἄρα πᾶσι
 παχνύθῃ κραδίη, χύτο δὲ χλόος ἀμφὶ παρειάς.

- 1210 δέχθαι μειλίζαντο συνήμονες· αὐθι δὲ νήσω
 δὴν μάλα Φαιήκεσσι μετ' ἀνδράσι ναυετάασκον,
 εἰσότε Βακχιάδαι, γενεὴν Ἐφύρηθεν ἰόντες,
 ἄνδρες ἐννάσαντο μετὰ χρόνον· οἱ δὲ περαίνῃ
 νῆσον ἔβαν· κείθεν δὲ Κεραύνια μέλλον Ἀβάντων
- 1215 οὔρεα, Νεσταίους τε, καὶ Ὀρίκον εἰσαφικέτθαι·
 ἅλλα τὰ μὲν στείχοντος ἄδην αἰῶνος ἐτύχθη.
 Μοιράων δ' ἔτι κεῖσε θύη ἐπέτεια δέχονται
 καὶ Νυμφίων, Νομίοιο κατ' ἱερὸν Ἀπόλλωνος
 βωμοί, τοὺς Μήδεια κατίσσατο. Πολλὰ δ' ἰούσιν
- 1220 Ἀλκίνοος Μινύαις ξεινήια, πόλλα δ' ὅπασσεν
 Ἀρήτη· μετὰ δ' αὐτὲ δωδέκα δῶκεν ἐπεσθαι
 Μηδείῃ δμῳᾷ Φαιηκίδας ἐκ μεγάρου.
 Ἡματι δ' ἐβδόματι Δρεπάνην λίπον· ἤλυθε δ' εὖρος
 ἀκράης ἥωθεν ὑπὲρ Διός· οἱ δ' ἀνέμοιο
- 1225 πνοιῇ ἐπειγόμενοι προτέρῳ θέον. Ἀλλὰ γὰρ αὖτις
 αἰσίμον ἦν ἐπιβῆναι Ἀχαιῖδος ἡρώεσσιν,
 ὅφρ' ἔτι καὶ Λιδύης ἐπὶ πείρασιν ὀτλήσειαν.
 Ἦδὴ μὲν τότε κόλπον ἐπώνυμον Ἀμβρακιῶν,
 ἦδὴ Κουρῆτιν ἔλιπον χθίνα πεπταμένοισι
- 1230 λαίφεσι, καὶ στεινὰς αὐταῖς σὺν Ἐχινάσι νήσους
 ἐξείης, Πέλοπος δὲ νέον κατεφαίνετο γαῖα·
 καὶ τότε ἀναρπάγδην ὅλοῃ Βορέαο θύελλα
 μεσσηγὺς πέλαγόςδε Λιβυτικὴν ἐννέα πάσας
 νύκτας ὁμῶς καὶ τόσσα φέβ' ἡμάτα, μέχρις ἵκοντο
- 1235 προπρὸ μάλ' ἐνδοθεὶ Σύρτιν, ὅθ' οὐκέτι νόστος ὀπίσσω
 νηυσὶ πέλει, ὅτε τὸν γε βιῶατο κόλπον ἰκέσθαι.
 Πάντῃ γὰρ τέναγος, πάντῃ μινιόντα βυθοῖο
 τάρφεα· κωφῇ δὲ σφιν ἐπιβλύει ὕδατος ἄχνη·
 ἡερίῃ δ' ἅμαδος παρακίηλται· οὐδὲ τι κεῖσε
- 1240 ἐρπετὸν οὐδὲ ποτητὸν αἰέρεται. Ἐνθ' ἄρα τοὺς γε
 πλημμυρὶς — (καὶ γάρ τ' ἀναχάζεται ἡπείροιο
 ἢ θαμὰ δὴ τότε χεῦμα, καὶ ἅψ' ἐπαρεύγεται ἄκταις
 λάβρον ἐποικόμενον) — μυχάτῃ ἐνέωσε τάχιστα
 ἧϊόνι, τρώπιος δὲ μάλ' ὕδασι παῦρ ἐλέλειπτο.

- 1175 Κόλχοι Μακροδίδης ἐνὶ πείρασιν χερνήσιοι.
 Αὐτίκα δ' Ἀλκινόος μετεθήσατο συνθεσίσσων
 ὃν νόον ἐξερέων κοίρης ὕπερ· ἐν δ' ὄγε χειρὶ
 σκῆπτρον ἔχε χρυσοῦ δικάσπόλον, ἧ ὕπο ποταί
 ἰθεΐας ἀνὰ ἄστν διεκρίνοντο θέμιστας.
- 1180 Τῷ δὲ καὶ ἐξείης πολεμῆϊα τεύχεα δύντες
 Φαιήκων οἱ ἄριστοι ὁμιλαδὸν ἐστιχώντο.
 Ἡρώας δὲ γυναῖκες ἄλλες ἔκτοθι πύργων
 βαίνον ἐποφόμεναι· σὺν δ' ἀνέρες ἀγροῖῳται
 ἦντεον εἰσαῖοντες, ἐπεὶ νημερτέα βάζιν
- 1185 Ἦρῃ ἐπιπροέηκεν. Ἄγην δ' ὁ μὲν ἔκκριτον ἄλλων
 ἀρνείειν μῆλων, ὃ δ' ἀεργηλὴν ἔτι πόρτιν·
 ἄλλοι δ' ἀμφιφορῆας ἐπισχεδὸν ἴστασαν οἶνον
 κίρνασθαι· θυέων τ' ἀπὸ τηλόθι κήκιε λιγύν.
 Αἱ δὲ πολυκμήτους ἑκνοὺς φέρον, οἷα γυναῖκες,
- 1190 μέλιά τε χρυσοῖο, καὶ ἄλλοιήν ἐπὶ τοῖσιν
 ἀγλαίην, οἷήν τε νεόζυγες ἐντύνονται·
 θάμβεον δ' εἰτορώσασι ἀριπρεπέων ἡρώων
 εἶδεα καὶ μορφάς, ἐν δὲ σφίσιν Οἰάγροιο
 υἱὸν ὑπαὶ Φόρμιγος εὐκρέκτου καὶ αἰοιδῆς
- 1195 ταρφέα σιγαλόεντι πέδον κροτέοντα πεδίλῳ.
 Νύμφαι δ' ἄμμιγα κῦσαι, ὅτε μνήσαιο γάμοιο,
 ἱμερόενθ' ὑμέναιον ἀνήπυν· ἄλλοτ' δ' αὐτὲ
 οἶόνθεν οἷαι ἄειδον ἐλίσσόμεναι περὶ κύκλον,
 Ἦρῃ, σείδ' ὃ γ' ἐκῆτι· σὺ γάρ καὶ ἐπὶ φρεσὶ θῆκας
- 1200 Ἀρήτῃ, πυκινὸν φάσθαι ἔπος Ἀλκινόοιο.
 Αὐτὰρ ὅγ' ὥς τὰ πρῶτα δίκης ἀνὰ πείρατ' εἶπεν
 ἰθεΐης, ἥδη δὲ γάμου τέλος ἐκλήϊστο,
 ἔμπεδον ὥς ἀλέγυνε διαμπερές· οὐδέ ἐ τάρβος
 οὐλοῦν, οὐδέ βαρεῖται ἐπήλυτον Αἰήταιο
- 1205 μῆνιες, ἀρρήκτοισι δ' ἐνιζεύζας ἔχεν ὄρκοις.
 Τῷ καὶ ὅτ' ἡλέματ' ὡς Κόλχοι· μάθον ἀντιόωντες,
 καὶ σφέας ἢ θέμιστας εἰς εἴρυσθαι ἄνωγεν,
 ἢ λιμένων γαίης τ' ἀπὸ τηλόθι νῆας ἐέργειν,
 δὴ τότε μιν, βασιλῆος ἐοῦ τρομέοντες ἐνιπᾶς,

- 1140 νᾶσσατο, καὶ πόρεν ὕλθον ἄθρόφατον ἱνναίτησιν.
 "Εἶθα τότε ἑστώρεσαν λίκτρον μέγα· τοῖο δ' ὑπερθε
 χεύσειον αἶγλην κῶας βάλλον, ὅφρα πέλοιτο
 τιμήεις ὁ γάμος καὶ αἰδίμος. "Ανθεα δὲ σφι
 Νύμφαι ἀμεργόμεναι λευκοῖς ἐνὶ ποικίλᾳ κόλποις
- 1145 ἐσφόρεον· πάσαι δὲ, πυρὶς ὥς, ἄμφεπεν αἶγλη·
 τοῖον ἀπὸ χρυσεῶν θυσάνων ἀμαρύσσετο φέγγος.
 Δαΐε δ' ἐν ὀφθαλμοῖς γλυκερὸς πόθος· ἴσχε δ' ἐκάστην
 αἰδῶς, ἱεμένην περ ὁμῶς ἐπὶ χεῖρα βαλέσθαι.
 Αἰ μὲν τ' Αἰγαίου ποταμοῦ καλέοντο θύγατρες·
- 1150 αἱ δ' ὄρεας κορυφαῖς Μελιτηῆς ἀμφενέμοντο·
 αἱ δ' ἔσαν ἐκ πεδίων ἀλσιήδες. Ωρσε γὰρ αὐτῇ
 "Ἥρη Ζηνὸς ἄκοιτις, Ἰήσωνα κυδαίνουσα.
 Κεῖνο καὶ εἰσέτι νῦν ἱερὸν κληίζεται ἄντρον
 Μηδείης, ὅτι τούσγε σὺν ἀπῆλοισιν ἔμιζαν,
- 1155 τεινόμεναι ἑανοὺς ἐνώδεας. Οἱ δ' ἐνὶ χερσὶ
 δούρατα νωμήσαντες ἀρήϊα, μὴ πρὶν ἐς ἀλκὴν
 δυσμενέων αἰδήλος ἐπιβρίσειεν ὅμιλος,
 κράατα δ' εὐφύθοις ἐστεμμένοι ἀκρεμόνεσσιν,
 ἐμμελῆς, Ὀρφῆος ὑκαὶ λίγα φορμίζοντος,
- 1160 νυμφιδίαις ὑμέναιον ἐπὶ προμολῇσιν ᾄδον.
 Οὐ μὲν ἐν Ἀλκινόοιο γάμον μεμένητε τελέσσαι·
 ἦρος Αἰσονίδης, μεγάροις δ' ἐνὶ πατρὶς ἑοῖο,
 νοστήσας ἐς Ἰωλκὸν ὑπότροπος· ὥς δὲ καὶ αὐτῇ
 Μῆδεια φρονέεσκε· τότε αὖ χρεὼ ἦγε μιγῆναι.
- 1165 Ἀλλὰ γὰρ οὐ ποτε φῦλα δηπαθέων ἀνδρῶπων
 τερπωλῆς ἐπέβημεν ὕλῃ ποδὶ· σὺν δὲ τις αἰεὶ
 πικρὴ παρμέμεδλωκεν εὐφροσύνησιν ἀνίη.
 τῇ καὶ τοὺς γλυκερῇ περ ἰαινομένους φιλότῃ
 δαῖμ' ἔχεν, ἥ τελέοιτο διάκρισις Ἀλκινόοιο.
- 1170 Ἦως δ' ἀμειροσίοισιν ἀνερχομένη φαέεσσι
 λῦε κελκινὴν νύκτα δὲ ἥερος· αἱ δ' ἐγέλασσαν
 ἥιονες νῆσοιο καὶ ἐρσήεσσαι ἄπωθεν
 ἀτραπιτοὶ πεδίων· ἐν δὲ θρόος ἔσκεν ἀγυιαῖς·
 κίνυντ' ἱνναίται μὲν ἀνὰ πτόλιν, οἱ δ' ἀπὸ τηλοῦ

- 1105 ἔσσεται ἀνθρώποισι, δικάζομεν, οὐδέ σε κεύσω.
 Παρθενικὴν μὲν ἐοῦσαν, ἐῷ ἀπὸ πατρὶ κομίσσασθαι
 ἰθύνω· λέκτρον δὲ σὺν ἀνέρι παρσαίνουσαν,
 οὐ μιν ἐοῦ πόσιος νοσφίσσομαι· οὐδὲ, γενέθλην
 εἴ τιν' ὑπὸ σπλάγχνοισι φέρει, δηϊοσιν ὑπᾶσσω.
- 1110 Ὡς ἄρ' ἔφη· καὶ τὸν μὲν ἐπισχεδὸν εὐνάσεν ὕπνος.
 Ἡ δ' ἔπος ἐν θυμῷ πυκινὸν βάλετ'· κῦτίκα δ' ἄρτε
 ἐκ λεχέων ἀνὰ δῶμα. Συνήϊξαν δὲ γυναῖκες
 ἀμφίπολοι, δέσποιναν ἐὼν μεταποιπνύουσαι.
 Σίγα δ' ἐὼν κήρυκα καλεσσαμένη προσέειπεν,
- 1115 ἥσιν ἔφημοσύνησιν ἐποτρυνέουσα μιγῆναι
 Αἰσονίδην κούρη· μηδ' Ἀλκίνοον βασιλῆα
 λίσσεσθαι· τὸ γὰρ αὐτὸς ἰὼν Κόλχοισι δικάσσει,
 παρθενικὴν μὲν ἐοῦσαν, ἐοῦ ποτὶ δῶματα πατρὸς
 ἐκδώσει· λέκτρον δὲ σὺν ἀνέρι παρσαίνουσαν,
- 1120 οὐκέτι κουριδῆς μιν ἀποτμήξειν φιλόπτης.
 Ὡς ἄρ' ἔφη· τὸν δ' αἴψα πόδες φέρον ἐκ μεγάρου,
 ὡς κεν Ἰήσωνι μῦθον ἐναίσιμον ἀγγελίην
 Ἀρήτης, βουλὰς τε θεοῦδ' Ἀλκινόου.
 Τοὺς δ' εὗρεν παρὰ νηὶ σὺν ἔντεσιν ἐγρήσσοντας
- 1125 Τηλεκῶ ἐν λιμένι, σχεδὸν ἄστας· ἐκ δ' ἄρα πᾶσαν
 πέφραδεν ἀγγελίην· γήθησε δὲ θυμὸς ἐκάστου
 ἡρώων· μάλα γάρ σφιν ἐαδότα μῦθον ἔειπεν.
 Αὐτίκα δὲ κρητῆρα κερασσάμενοι μακάρεσσιν,
 ἢ θέμις, εὐαγέως ἐπιβώμια μῆλ' ἐρύσαντες,
- 1130 αὐτονοχὶ κούρη θαλαμῆιον ἔντυον εὐνὴν
 ἄντρῳ ἐν ἡγαθέῳ, τόθι δὴ πῶτα Μάκρης ἔναιε,
 κούρη Ἀρισταίοιο μελίφρονος, ὅς ῥα μελισσέων
 ἔργα, πολυκμήτοιο τ' ἀνέυρατο πῖαρ ἐλαίης.
 Κεῖνη δὲ πᾶμπρῶτα Διὸς Νυσηίου υἱὰ
- 1135 Εὐβοίης ἔντοσθεν Ἀθαντίδος ᾧ ἐνὶ κόλπῳ
 δέξατο, καὶ μέλιτι ξηρὸν περὶ χεῖλος ἔδυσεν,
 αὐτὴ μιν Ἑρμείης φέρεν ἐκ πυρὸς· ἑδράκα δ' Ἦρη,
 καὶ ἑχολωσαμένη πάσης ἐξήλασε νήσου.
 Ἡ δ' ἄρα Φαιήκων ἱερῷ ἐνὶ τηλόθεν ἄντρῳ

- 1070 Ἀρήτη ἄλοχος, κούρης πέρι μητιάσσκον
 οἷσιν ἐνὶ λεχέεσσι διὰ κνέφας· οἷα δ' ἀκοίτην
 κουρίδιον θαλεροῖσι δάμαρ προσπύσσετο μύθοις·
 “Ναὶ φίλος, εἰ δ' ἄγε μοι πολυκηδέα ῥύεο Κόλχων
 ,, παρθενικὴν, Μινύαισι φέρων χάριν. Ἐγγύθε δ' Ἄργος
- 1075 ,, ἡμετέρης νήσοιο, καὶ ἄνδρες Αἰμυνηῖες·
 ,, Αἰήτης δ' οὐτ' ἄρ ναίει σχεδὸν, οὐδέ τε ἴδμεν
 ,, Αἰήτην, ἅψ' ὅσον ἀκούομεν· ἡ δὲ νυ κούρη
 ,, αἰνοπαθῆς κατὰ μαι νόον ἐκλασεν ἀντιώσσα.
 ,, Μὴ μιν, ἄναξ, Κόλχοισι πύροις ἐς πατρὸς ἄγεσθαι.
- 1080 ,, ἁάσθη, ὅτε πρῶτα βοῶν θελκτῆρια δῶκε
 ,, φάρμακά οἱ· σχεδόνθεν δὲ κακῷ κακὸν — οἷά τε ποῦλα
 ,, ῥέζομεν ἀμπλακίῃσιν — ἀκειομένη, ὑπάλυζε
 ,, πατρὸς ὑπερφιάλοιο βαρὺν χόλον. Αὐτὰρ Ἴησων,
 ,, ὡς αἶψα, μεγάλοισιν ἐνίσχεται ἐξ ἔθεν ὄρκοις,
- 1085 ,, κουριδίην θῆσσεσθαι ἐνὶ μεγάροισιν ἀκοίτην.
 ,, Τῷ, φίλε, μήτ' οἷν αὐτὸν ἐκὼν ἐπιόρκον ὁμῶσαι
 ,, θείης Αἰσονίδην, μήτ' ἄσχετα σείῃ ἐκῆτι
 ,, παῖδα πατὴρ θυμῷ κεκοτηότι δηλήσαιτα.
 ,, Αἰὲν γὰρ δύσζηλοι ἐῆς ἐπὶ παισὶ τοκῆες·
- 1090 ,, οἷα μὲν Ἀντιόπην ἐυώπιδα μῆσατο Νυκτεὺς·
 ,, οἷα δὲ καὶ Δανάη πόντῳ ἐνὶ πῆματ' ἀνέτλη,
 ,, πατρὸς ἀτασθαλίῃσι· νέον γε μὲν, οὐδ' ἀπὸ τηλοῦ,
 ,, ὑβριστῆς Ἑχέτος γλήναις ἐνὶ χάλκεα κέντρα
 ,, πῆξε θυγατρὸς ἐῆς· στονόεντι δὲ κάρφεται οἷψ
- 1095 ,, ὄσφραϊν ἐνὶ χαλκὸν ἀλετρεύουσα καλιῇ.
 ,, Ὡς ἔφατ' ἀντομένη· τοῦ δὲ φρένες ἰαίνοντο
 ,, ἥς ἀλόχου μύθοισιν, ἔπος δ' ἐπὶ τοῖον ἔειπεν.
 ,, “Ἀρήτη, καὶ κεν σὺν τεύχεσιν ἐξελάσσαιμι
 ,, Κόλχους, ἡρώεσσι φέρων χάριν, εἴνεκα κούρης.
- 1100 ,, Ἀλλὰ Διὸς δέιδοικα δίκην ἰθεῖαν ἀτίσσαι.
 ,, Οὐδὲ μὲν Αἰήτην ἀφεριζέμεν, ὡς ἀγορεύεις,
 ,, λῶιον· οὐ γάρ τις βασιλεύτερος Αἰήταο.
 ,, Καί κ' ἐθέλων, ἑκάθεν περ, ἐφ' Ἐλλάδα νεῖκος ἄροιο.
 ,, Τῷ μὲ ἐπέεικε δίκην, ἥτις μετὰ πᾶσιν ἀρίστη

- 1035 ὡς χρύσειον αὐτίκα κῶας ἀνάξετε νοστήσαντες.
 ὦδ' ἐγὼ, ἢ πάτρην τε καὶ οὖς ὤλεσσα τοκῆας,
 ἢ δόμον, ἢ σύμπασαν ἐυφροσύνην βίότῳ·
 ὑμῖν δὲ καὶ πάτρην καὶ δώματα ναίεμεν αὖτις
 π' ἥνυσα· καὶ γλυκεροῖσιν ἐτ' εἰσύψετε τοκῆας
- 1040 ὄμμασιν· αὐτὰρ ἐμοὶ ἀπὸ δὴ βαρὺς εἴλετο δαίμων
 ἀγλαΐας· στυγερὴ δὲ σὺν ὀφνείοις ἀλάλημαι.
 δεῖσατε συνδραστήας τε καὶ ὄρκια, δεῖσάτ' Ἐρινύν
 Ἰκυσίην, νέμεσίν τε θεῶν, ἐς χεῖρας ἰϋσαν
 Αἰήτω, λῶβῃ πολυπήμονι δηωθῆναι.
- 1045 Οὐ νηὺς, οὐ πύργον ἐπὶ ῥοδον, οὐκ ἀλεωρὴν
 ἄλῃην, οἷότι δὲ προτιβάλλομαι ὑμῖν αὐτοῖς.
 Σχέτλιοι ἀτροπῆς καὶ ἀηλῆες· οὐδ' ἐνὶ θυμῷ
 αἰδεῖσθε ξείνης μ' ἐπὶ γούνατα χεῖρας ἀνάσσης
 δερκόμενοι τείνουσαν ἀμήχανον· ἄλλὰ κε πᾶσι,
- 1050 κῶας ἐλεῖν μεμαῶτες, ἐμίξτε δούρατα Κόλχοις,
 αὐτῷ τ' Αἰήτῃ ὑπερήνορι· νῦν δὲ μέθεσθε
 ἡγορέης, ὅτε μοῦνοι ἀποτμηγέντες ἔασι.
 ὣς φάτο λισσομένη· τῶν δ' ὄντινα γουνάζοιτο,
 ὅς μιν θαρσύνεσκεν ἐρητύων ἀχέουσαν.
- 1055 Σεῖον δ' ἐχέας ἐυήκεας ἐν παλάμῃσι,
 φάσγανά τ' ἐκ κολεῶν· οὐδὲ σχήσεσθαι ἀρωγῆς
 ἔννεπον, εἴ γε δίκης ἀλιτήμονος ἀντιάσειε.
 Στρευγομένοις δ' ἂν ὄμιλον ἐπήλυθεν εὐνήτειρα
 Νύξ' ἔργων ἀνδρεσσι, κατευκλήλησε δὲ πᾶσαν
- 1060 γαῖαν ὁμῶς· τὴν δ' οὐ τι μίνυνδά περ εὔνασεν ὕπνος.
 ἄλλὰ οἱ ἐν στέροισι κχείων εἰλίσσεται θυμός.
 Οἷον ὅτε κλωστήρα γυνὴ ταλαεργὸς ἐλίσσει
 ἐννουχίῃ· τὴν δ' ἄμφι κινύρεται ὄρφανὰ τέκνα
 χηροσύνη πόσιος· σταλάει δ' ὑπὸ δάκρυ παρειᾷς
- 1065 μνωομένης, οἷή μιν ἐπὶ σμυγερῇ λάβεν αἴσα·
 ὡς τῆς ἐκμαίνοντο παρηίδες· ἐν δὲ οἵητορ
 ὀξείης εἰλεῖτο πεπαρμένον ἄμφ' ὀδύνῃσι.
 Τῷ δ' ἐντοσθε δόμοιο κατὰ πτόλιν, ὡς τοπάρσειθε,
 κρείων Ἀλκίνοος, πολυπύρην τ' Ἀλκινόοιο

- 1000 Αἰμονίη· μέλαινα δὲ βοῇ ἐνὶ θυρήξεσθαι·
 ὧδε μάλ' ἀλχίμολον στρατὸς ἄσπετος ἐξεφαάνθη
 Κόλχων, οἳ Πόντιοι κατὰ στόμα, καὶ διὰ πέτρας
 Κυανέας μαστῆρες ἀριστῶν ἐπέρησαν.
 Μήδειαν δ' ἔξαιτον ἰοῦ ἐς πατρὸς ἄγεσθαι
- 1005 ἔντ' ἀπροφάτως, ἥ στυγέεσσαν αὐτὴν
 νωμῆσειν χαλεπῆσιν ὁμόκλεον ἀτροπίησιν,
 αὐτὴν τε, καὶ μετέπειτα σὺν Αἰήταο κελεύθῳ.
 Ἄλλ' αὖ σφέας κατέρυκεν ἐπειγομένους πολέμοιο
 κρείων Ἀλκίνοος. Περίητο γὰρ ἀμφοτέροισι
- 1010 δηιοτήτος ἀνευθεν ὑπέρβια νείκεα λῦσαι.
 Κούρη δ' οἴλομένῳ ὑπὸ δείματι ποῦν μὲν αὐτοὺς
 Αἰσονίδειω ἐτάρους μειλίσσετο, ποῦν δὲ χερσὶν
 Ἀρήτης γούνων ἀλόχου θίγεν Ἀλκινόοιο.
 "Γουνοῦμαι, βασίλει'· σὺ δ' ἴλασθαι, μηδὲ με Κίλχοις
- 1015 "ἐκδῶης, ὣς πατρὶ κομιζέμεν, εἴ νυ καὶ αὐτὴ
 "ἀνθρώπων γενεῆς μία φέρβεται, οἷσιν ἐς ἄτην
 "ὠκύτατος κούφῃσι θίξει νόος ἀμπλακίησιν.
 "Ὡς ἐμοὶ ἐκ πυκιναῖ ἐπεσον φρένες, οὐ μὲν ἔκητι
 "μαργοσύνης. Ἰστω δ' ἱερὸν Φάος Ἡελίοιο,
- 1020 "ἴστω νυκτιπόλου Περσηίδος ὄργια Κούρης,
 "μὴ μὲν ἐγὼν ἐθέλουσα σὺν ἀνδράσιν ἀποδοαποῖσι
 "κεῖθεν ἀφορμήθην· στυγερὸν δὲ με τάρβος ἐπέισε
 "τῇσδε Φυγῆς μνήσασθαι, ὅτ' ἤλιτον· οὐδέ τις ἄλλα
 "μῆτις ἔην. Ἔτι μοι μήτηρ μένει, ὡς ἐνὶ πατρὸς
- 1025 "δῶμασιν, ἄχραντος καὶ ἀκήρατος. Ἄλλ' ἑλέαιρε,
 "πότνα, τέον τε πόσιν μειλίσσει'· σοὶ δ' ὀπάσειαν
 "ἀθάνατοι βίον τε τελεσφόρον, ἀγλαίην τε,
 "καὶ παῖδας, καὶ κῦδος ἀπορρήτοιο πόλλης.
 Τοῖα μὲν Ἀρήτην γουνάζετο δακρυχέουσιν·
- 1030 τοῖα δ' ἀριστῶν ἐναμοιβὰς ἀνδρὰ ἕκαστον.
 "Γμέων, ὣς περὶ δὴ μέγα φέρεται, ἀμφὶ τ' αἰθέροισι
 "οὐνεκεν ὑμετέροισιν ἀτύξομαι, ἥς ἴότητι
 "ταύρους τ' ἐζεύξασθε, καὶ ἐκ θέρους οὐλοὺν ἀνδρῶν
 "κείρετε γηγενέων· ἥ δ' εἵνεκ' Αἰμονίηνδε

- 965 Θρινακίης λειμῶνα, βοῶν τροφὴν Ἥελίοιο.
 "Ενθ' αἱ μὲν κατὰ βέητος ἀλίςκλαι αἰθύνῃσι
 δύνον, ἐπεὶ β' ἀλόχοιο Διὸς πόρσυνον ἐφετμάς.
 Τοὺς δ' ἄμυδις βληχὴ τε δὲ ἥερος ἵκετο μήλων,
 μυκηθμός τε βοῶν αὐτοσχεδὸν οὐατ' ἔβαλλε.
- 970 Καὶ τὰ μὲν ἐρσήεντα κατὰ δρία ποιμαίνεσκειν
 ὀπλοτέρη Φαέδουσα θυγατρῶν Ἥελίοιο,
 ἀργύρεον χαῖον παλάμη ἐνὶ πηχύνουσα·
 Λαμπετὴ δ' ἐπὶ βουσὶν ὀρειχάλοιο Φαεινοῦ
 πάλῃεν ὀπηδεύουσα καλαύροπα. Τὰς δὲ καὶ αὐτοὶ
- 975 βοσκομένας ποταμοῖο παρ' ὕδασι εἰσορόωντο
 ἀμπεδίον καὶ ἔλος λειμῶνιον· οὐδέ τις ἦεν
 κυανὴ μετὰ τῇσι δέμας, πᾶσαι δὲ γάλακτι
 εἰδόμεναι, χρυσεῖς κεράεσσιν κυδιάσσκον.
 Καὶ μὲν τὰς παράμειβον ἐπ' ἥματι· νυκτὶ δ' ἰούσῃ
- 980 πεῖρον ἄλῃς μέγα λαῖττρα κεχαρμένοι, ὄφρα καὶ αὐτὶς
 Ἦως ἡριγενὴς φέλγος βάλε νισσομένοισιν.
 "Εστὶ δὲ τις πορθμοῖο παροιτέρη Ἰονίοιο
 ἀμφιλαφὴς πίειρα Κεραυνίη εἰν ἀλὶ νῆσος,
 ἥ ὑπο δὴ κεῖσθαι δρέπανον Φάτις — ἴλατε Μοῦσαι,
- 985 οὐκ ἐθέλων ἐνέπω προτέρων ἔπος — ᾧ ἀπὸ πατρὸς
 μῆδεα νηλεῖως ἔταμε Κρόνος· (οἱ δὲ ἐ Διὸς
 κλείουσι χθονὶς καλαμνητόμον ἔμμεναι ἄρπην.
 Δηὼ γὰρ κείνη ἐνὶ δὴ ποτε νάσσατο γαίῃ,
 Τιτῆνας δ' ἔδαι στάχυν ὄμπνιον ἀμήσασθαι,
- 990 Μάκριδα φιλαμένη.) Δρεπάνῃ τόθεν ἐκλήϊσται
 οὔνομα, Φαίηκων ἱερὴ τροφός· ὥς δὲ καὶ αὐτοὶ
 αἵματος Οὐρανίοιο γένος Φαίηκες ἔασι.
 Τοὺς Ἀργῶ πολέεσσιν ἐνισχομένη καμάτοισι
 Θρινακίης αὖρης ἵκετ' ἐξ ἁλός· οἱ δ' ἀγανῆσιν
- 995 Ἀλκίνοος λαοὶ τε θυηπολήσιν ἰόντας
 δεῖδέχατ' ἀσπασίως· ἐπὶ δὲ σφίσι κατχαλάσσκε
 πᾶσα πόλις· Φαίης κεν ἑοῖς ἐπὶ παισὶ γάνυσθαι.
 Καὶ δ' αὐτοὶ ἥρωες ἀνὰ πληθύν κεχάροντο,
 τῷ ἱκέλοι, οἷον τε μεσαιτάτῃ ἐμβεβαῶτες

- 930 Ἐνθα σφιν κοῦραι Νηρηίδες ἄλλοθεν ἄλλαι
 ἦντεαν· ἥ δ' ὅπιθε πτέρυγος θίγε πηδαλίοιο
 δῖα Θέτις· πλαστῆσι δ' ἐνὶ σπιλάδεσσιν ἔρυσσαν.
 Ὡς δ' ὅπῳταν δελφῖνες ὑπὲξ ἀλός εὐδιώοντες
 σπερχομένην ἀγέληδὸν ἐλίσσωνται περὶ νῆα,
 935 ἄλλοτε μὲν προπάρουθεν ἑρώμενοι, ἄλλοτ' ὅπισθεν,
 ἄλλοτε παρθολάδην, ναύτησι δὲ χάρμα τέτυκται·
 ὡς αἱ ὑπεκπροθέουσαι ἐπήτριμοι εἰλίσσοντο
 Ἀργῶν περὶ νηῖ, Θέτις δ' ἴθυνε κελεύθους.
 Καί γ' ὅτε δὴ Πλαστῆσιν ἐνιχρίμψασθαι ἔμελλον,
 940 αὐτίκ' ἀνασχόμεναι λευκοῖς ἐπὶ γούνασι πέζας,
 ὑψοῦ ἐπ' αὐτῶν σπιλάδων καὶ κύματος ἀγῆς
 ῥέοντ' ἔνθα καὶ ἔνθα διασταδὸν ἀπῆλθον.
 Τὴν δὲ παρηγορίην κόπτε ῥόος· ἀμφὶ δὲ κύμα
 λάβρον ἀειρόμενόν πέτραις ἐπικαχλάζεσκεν.
 945 Αἱ δ' ὅτε μὲν προημνοῖς ἐναλίγκιαι ἥερι κύρον,
 ἄλλοτε δὲ βρύχαι νεάτῳ ὑπὸ πυθμένι πόντου
 ἠρήρειντο, ὅθι ποσσὶν ὑπείρεχεν ἄγριον οἶδημα.
 Αἱ δ', ὥστ' ἡμαθόεντος ἐπισχεδὸν αἰγιαλοῖο
 παρθενικαί, δίχα κόλπον ἐπ' ἑξῆς εἰλίξασαι,
 950 σφαίρῃ ἀθύρουσι περιηγεῖ· τὴν μὲν ἔπειτα
 ἄλλῃ ὑπ' ἐξ ἄλλης δέχεται, καὶ ἐς ἡέρα πέμπει
 ὕψι μεταχθονίην· ἥ δ' οὔποτε πίνυται οὔδεις·
 ὡς αἱ νῆα θέουσιν ἀμοιβὰς αἰδομένης ἄλλῃ
 πέμπει διηερίην ἐπὶ κύμασιν, αἰὲν ἄπωθε
 955 πετράων· περὶ δὲ σφιν ἐρευνγόμενον ζέεν ὕδωρ.
 Τὰς δὲ καὶ αὐτὸς ἀναξ· κορυφῆς ἐπὶ λισσάδος ἄκρῃ
 ὄρθος ἐπὶ στελεῇ τυπίδος βαρὺν ὤμον ἐρείσας
 Ἥφαιστος θηεῖτο, καὶ αἰγλήεντος ὑπερθεῖν
 οὐρανοῦ ἐσθνηῖα Διὸς δάμαρ· ἀμφὶ δ' Ἀθήνη
 960 βάλλε χέρας· τοῖόν μιν ἔχεν δέος εἰσδρόωσαν.
 Ὅσση δ' εἰαρινῷ μηκύνεται ἥμκτος αἴσα,
 τοσσάτιον μογέεσκον ἐπὶ χρόνον, ὀχλίζουσαι
 νῆα διὰ πέτρας πόλυηχέας· οἱ δ' ἀνέμοιο
 αὐτίς ἐπαυρόμενοι προτέρῳ θέον· ὥκα δ' ἄμειβον

- 895 Τὰς μὲν ἄρ' εὐειδὴς Ἀχελῷῳ εὐνηθεῖσα
 γείνατο Τερψιχόρῃ, Μουσέων μία· καὶ ποτε Διὸς
 θυγατὶρ Ἰφιδίμην ἀδμήτ' ἔτε πορσαίνεσκον
 ἄμμιγα μελπόμεναι· τότε δ' ἄλλο μὲν οἰωνοῖσιν,
 ἄλλο δὲ παρθενικῆς ἐναλίσκται ἔσκον ἰδέσθαι.
- 900 Αἰεὶ δ' εὐόρμου δεδοκημέναι ἐκ περιωπῆς
 ἦ θαμὰ δὴ πολέων μελιηδέα νόστον ἔλοντο,
 τηκεδόνι φθινύθουσαι· ἀπηλεγέως δ' ἄρα καὶ τοῖς
 ἴεσαν ἐκ στομάτων ὅπα λείριον. Οἱ δ' ἀπὸ νηὸς
 ἦδη πείσματ' ἔμελλον ἐπ' ἠϊόνεσσι βαλέσθαι,
- 905 εἰ μὴ ἄρ' Οἰάγροιο πάϊς Θρηήκιος Ὀρφεὺς
 Βιστονίην ἐνὶ χερσὶν ἑαῖς Φόρμιλῃα τανύσσαις
 κραίπνῳ ἐυτροχάλοιο μέλος κανάχῃσεν αἰοιδῆς,
 ὅφρ' ἄμυδις κλονέοντος ἐπιβρομέοιντο ἀκουαὶ
 κρηγμῶ· παρθενικὴν δ' ἐνοπὴν ἐβίβαστο Φόρμιγξ.
- 910 Νῆα δ' ὁμοῦ Ζέφυρός τε καὶ ἠχῆεν φέρε κῆμα
 πρυμνόθεν ὀρνύμενον· ται δ' ἀκριτον ἴεσαν αὐδὴν.
 Ἀλλὰ καὶ ὥς Τελέοντος εὖς πάϊς, οἷος ἐταίρων
 προφθάμενος, ξεστοῖο κατὰ ζυγοῦ ἐνδορε πάντη
 Βούτης, Σειρήνων λιγυρῇ ὅπῃ θυμὸν ἰανθεῖς·
- 915 νῆχε δὲ πορφυρέοιο δι' αἵματος, ὅφρ' ἐπιθαίῃ,
 σχέτλιος. Ἦ τέ οἱ αἶψα καταυτόδι νόστον ἀπηύρων·
 ἀλλὰ μιν οἰκτεῖρασα θεὰ Ἐρυνος μεδέουσα
 Κύπρις ἔτ' ἐν δῖναις ἀνερείψατο, καὶ ῥ' ἐσάωσε
 πρόφρων ἀντομένη Λιλυθηίδα ναίεμεν ἄκρην.
- 920 Οἱ δ' ἄχρ' ἐσχόμενοι τὰς μὲν λίπον, ἄλλα δ' ὅπαζον
 κύντερα μιζοδίῃσιν ἄλῳς βαιστήρια νηῶν.
 Τῇ μὲν γὰρ Σκύλλης λισσὴ προῦφαίνετο πέτρῃ·
 τῇ δ' ἄμοτον βοάσκειν ἀναβλύζουσα Χάρυβδις·
 ἄλλοθι δὲ πλασκαὶ μεγάλῃ ὑπὸ κύματι πέτραι
- 925 ῥόχθρον, ἦχι πάροιδεν ἀπέπτυνεν αἰδομένη Φλόξ
 ἄκρων ἐκ σκοπέλων, πυριθαλπέος ὑφ' ὅθι πέτρῃς.
 Καπνῷ δ' ἀχλυρεῖς αἰθήρ πέλεν· οὐδέ κεν αὐγὰς
 ἔδρακες ἡελίοιο. Τότ' αὖ λήξαντος ἀπ' ἔργων
 Ἠφαίστου, θερμὴν ἔτι κήκιε πόντος αὐτμήν.

- 860 ἢ νῆα διέκ πέτρας, αἷ τε Πλάτκται καλέονται,
 ἢ ῥυσόμεναι. Κεῖνη γὰρ ἐναΐσιμος ὕμμι κέλευθος.
 ἢ Ἀλλὰ σὺ μὴ τῷ ἐμὶν δείξης δέμας, εὖτ' ἂν ἴδῃαι
 ἢ ἀντομένην σὺν τῇσι· νόψ δ' ἔχε, μὴ με χολώσῃς
 ἢ πλεῖον ἔτ', ἢ τοπάρουθεν ἀπηλεγέως ἐχόλωσας.
- 865 Ἦ, καὶ ἔπειτ' αἰδῆλος ἐδύσατο βένθεα πόντου·
 τὸν δ' ἄχος-αἰὼν ἔτυψεν, ἐπεὶ πάρος οὐκέτ' ἰούσαν
 ἔδρακεν, ἐξότε πρῶτα λίπεν θάλαμύν τε καὶ εὐνὴν,
 χωσαμένην Ἀχιλῆος ἀγαυοῦ νηπιάρχοντος.
 Ἦ μὲν γὰρ βροτέας αἰεὶ περὶ σάρκας ἔδαιε
- 870 νύκτα διὰ μέσσην φλογμῷ πυρός· ἤματα δ' αὐτὰ
 ἀμβροσίῃ χρίσκε τέρην δέμας, ὅφρα πέλοιτο
 ἀθάνατος, καὶ οἱ στυγερόν χροὶ γῆρας ἀλάλκοι.
 Αὐτὰρ ὃ γ' ἐξ εὐνῆς ἀνεπάλμενος εἰσενόησε
 παῖδα φίλον σπαίροντα διὰ φλογός· ἦκε δ' αὐτὴν
- 875 σμερδαλίην ἐσιδὼν, μέγα νήπιος· ἦ δ' αἶνυσα
 τὸν μὲν ἄρ' ἀρπάγδην χαμύδις βάλε κεκληγῶτα·
 αὐτὴ δὲ πνοιῇ ἰκέλη δέμας, ἡγύτ' ὄνειρος,
 βῆ ὃ ἔμμεν ἐκ μεγάροιο θοῶς, καὶ ἐσήλατο πόντον
 χωσαμένη· μετὰ δ' οὐ τι καλίσσυτος ἵκετ' ὀπίσσω.
- 880 Τῷ μὲν ἀμηχανίῃ δῆσε φρένας· ἀλλὰ καὶ ἔμπερ
 πᾶσαν ἐφημοσύνην Θέτιδος μετέειπεν ἑταίροις.
 Οἱ δ' ἄρα μεσσηγὺς λῆξαν καὶ ἐπαυσαν αἰθλούς,
 ἔσσυμένως δόρπον τε χαμεύνας τ' ἀμφεπέοντο,
 τῆς ἐνὶ δαιδάμενοι νύκτ' ἄσαν, ὡς τοπάρουθεν.
- 885 Ἦμος δ' ἄκρον ἔβαλε φαεσφόρος οὐρανὸν Ἠώς,
 δὴ τότε λαίψηροιο κατηλυσίῃ Ζεφύροιο
 βαῖνον ἐπὶ κληίδας ἀπὸ χθονός· ἐκ δὲ βυθοῖο
 εὐναίας εἴλκον περιγηθείες, ἅλλα τε πάντα
 ἄρμενα μηρύοντο κατὰ χρέος· ὕψι δὲ λαῖφος
- 890 εἵρυσταν τανύσαντες ἐν ἱμάντεσσι κεραίῃς.
 Νῆα δ' ἐνκραῆς ἄνεμος φέρεν. Αἶψα δὲ νῆσον
 καλὴν, ἀνθεμόεσσαν ἐσέδρακον, ἐνθα λ' ἔγεια
 Σειρῆνες σίνοντ' Ἀχελωίδες, ἠδείησι
 θίλγουσαι μολπῇσιν, ὅτις παρὰ πείσμα βάλοιτο.

- 825 „Μηδὲ σύ γ' ἡὲ Χάρυβδιν ἀμνηχανέοντας ἐάσῃς
 „ ἐσβαλέειν, μὴ πάντας ἀναερόζασσα Φέρῃσιν,
 „ ἡὲ παρὰ Σκύλλης στυγερὸν κευθμῶνα νέεσθαι,
 „ Σκύλλης Αὖσονίης ὀλοόφρονος, ἣν τέκε Φόρκῃ
 „ νυκτιπόλος Ἑκάτη, τὴν τε κλείουσι Κράταιϊν,
- 830 „ μήπως σμερδαλέῃσιν ἐπαΐζασσα γένουσι
 „ λεκτοὺς ἥρώων δηλήσεται. Ἄλλ' ἔχε νῆα
 „ κείσ', ὅθι περ τυτθὴ γε παραιβασίς ἔσσετ' ἐλέθρου.
 „ Ὡς φάτο· τὴν δὲ Θέτις τοίῳ προσελέξατο μύθῳ·
 „ Εἰ μὲν δὴ μαλεροῖο πυρὸς μέγας, ἥδ' εὖναιαι,
- 835 „ ζαχρηεῖς λήξουσιν ἐτήτυμον, ἧτ' ἂν ἐγὼ γε
 „ θαρσαλέῃ φαίην, καὶ κύματος ἀντιώωντος,
 „ νῆα σαώσμεναι, Ζεφύρου λίγα κινυμένοιο.
 „ Ἄλλ' ὤρῃ δολιχὴν τε καὶ ἄσπετον οἶμον ἰδέειν,
 „ ὅφρα κασιγνήτας μετελεύσομαι, αἷ μοι ἀρωγῶ
 „ ἔσσονται, καὶ νηὸς ὅθι πρυμνήσι ἀνῆπται,
- 840 „ ὥς κεν ὑπὲρ οἱ μνησαίατο νόστον ἐλέσθαι.
 „ Ἦ, καὶ ἀναΐζασσα κατ' αἰθέρος ἔμπεσε δίναω
 „ κυανέου πόντοιο· κάλει δ' ἐπαμυνέμεν ἄλλας
 „ αὐτοκασιγνήτας Νηρηίδας· αἱ δ' αἶδουσαι
 „ ἦντεον ἀπλήλῃσι· Θέτις δ' ἀγόρευεν ἱφειμῆς
- 845 „ Ἥρης· αἵψα δ' ἔαλλε μετ' Αὖσονίην ἄλα πάσας.
 „ Αὐτὴ δ' ὠκυτῆρ' ἀμαρύγματος, ἡὲ βολῶν
 „ ἡελίου, ὅτ' ἀνεισι περαιῆς ὑπόθι γαίης,
 „ σέυατ' ἴμεν λαίψηρά δι' ὕδατος, ἔς τ' ἀφίκανεν
- 850 „ ἀκτὴν Αἰαίην Τυρσηνίδος ἠπειροῖο.
 „ Τοὺς δ' εὖρε παρὰ νηῖ, σόλῳ ῥιπῆσί τ' οἰστῶν
 „ τερπομένους· ἡ δ' ἄσπον ὀρεζαμένη χερὸς ἄκρης
 „ Αἰακιδεῷ Πηλῆος· ὃ γάρ ῥά οἱ ἦεν ἀκοίτης,
 „ οὐδέ τις εἰσίδειν δύνατ' ἔμπεδον· ἄλλ' ἄρα τῷ γε
- 855 „ οἶῳ ἐν ὀφθαλμοῖσιν εἰσατο, φώνησέν τε.
 „ „Μηκέτι νῦν ἀκταῖς Τυρσηνίσιν ἦσθε μένοντες·
 „ ἡῶθεν δὲ θοῆς πρυμνήσια λύετε νηὸς,
 „ Ἥρη κειθόμενοι ἐπαρηγόι. Τῆς γὰρ ἱφειμῆς
 „ πανσυδὴ κοῦραι Νηρηίδες ἀντιώωσι,

- 790 „ δεινὸν ἐρευγομένην, δέχεται ὁδός. Ἄλλ' αὖτε γὰρ δὴ
 „ ἐξέτι νηπυτὴς αὐτὴ τρέφον, ἥδ' ἀγάπηται
 „ ἔξοχον ἁλῶν, αἵ τ' εἰν ἄλλ' καίεταουσιν,
 „ οὐνεκεν οὐκ ἔτλης εὐνῇ Διὸς ἐμμένειο
 „ λέξασθαι. Κεῖν' γὰρ αἰεὶ τὰδε ἔργα μέμνηται,
- 795 „ ἥε σὺν Ἀθανάτῃ, ἥε θνητῶσιν ἰαίειν.
 „ Ἄλλ' ἐμὲ αἰδομένη καὶ ἐνὶ Φρεσὶ δειμαίνουσα,
 „ ἤλεύω· ὁ δ' ἔπειτα πολῶριον ὅρκον ἔμοσσε,
 „ μήποτέ σ' Ἀθανάτοιο θεοῦ καλέεσθαι ἕκοιτιν.
 „ Ἐμψ δ' οὐ μεδέσκειν ὀπιπτεύων ἀέκουσαν,
- 800 „ εἰσότε οἱ πρέσβειρα Θέμις κατέλεξεν ἕκαστα,
 „ ὥς δὴ τοι πέπρωται ἀμείνονα πατὴρ ἐοῖο
 „ παῖδα τεκεῖν· τῇ καὶ σε λιλαϊόμενος μηδέηκε,
 „ δέματι, μή τις εὖ ἀντάξιος ἄλλος ἀνάσσοι
 „ Ἀθανάτων, ἅλλ' αἰὲν εὖν κράτος εἰρύοιτο.
- 805 „ Αὐτὰρ ἐγὼ τὸν ἄριστον ἐπιχθονίων πόσιν εἶναι
 „ δῶκ' αὖτε, ὅφρα γάμου θυμηδέος ἀντιάσῃας,
 „ τέκνα τε Φιτύσαιο· θεοὺς δ' ἐς δαῖτ' ἐκάλεσσα
 „ πάντας ὁμῶς· αὐτὴ δὲ σέλας χεῖρεσσιν ἀνέσχοι
 „ νυμφίδιον, κείνης ἀγανόφρονος εἵνεκα τιμῆς.
- 810 „ Ἄλλ' ἄγε, καὶ τινά τοι θυμηδέα μῦθον ἐνίψω.
 „ εὖτ' ἂν ἐς Ἠλύσιον πεδῖον τεὸς υἱὸς ἵκηται,
 „ ὃν δὴ νῦν Χείρωνος ἐν ἡθεσὶ Κενταύροιο
 „ Νηιάδες κομέουσι, τεοῦ λίπτοντα γάλακτος,
 „ χρεῖώ μιν κούρης πόσιν ἔμμεναι Διήταο
- 815 „ Μηδείης· σὺ δ' ἄρῃγε νυφ' ἐκυρὴ περ εὐσοῖα,
 „ ἥδ' αὐτῇ Πηλῇ. Τί τοι χόλος ἐσθῆρκεται;
 „ Ἀάσθῃ. — Καὶ γάρ τε θεοὺς ἐπινίσσεται ἄτη. —
 „ Ναὶ μὲν ἐφημοσύνησιν ἑμαῖς Ἡφαιστον οἶω
 „ λωφῆσειν πρήσοντα πυρὸς μένος, Ἴπποτάδην δὲ
- 820 „ Αἰόλον ὠκείας ἀνέμων αἶκας ἐρύξειν,
 „ νόσφιν ἐῖσταθός Ζεφύρου, τείως κεν ἴκωνται
 „ Φαιήκων λιμένας· σὺ δ' ἀκηδέα μῆδεο νόστον.
 „ Δεῖμα δὲ τοι πέτραι καὶ ὑπέρβια κύματ' ἔασσι
 „ μοῦνον, ἃ κε τρέψαιο κασιγνήτησι σὺν ἁλῆαις.

- 755 αὐτὴ γὰρ μιν ἄνωγε δοκεύμεν, ὁππότε νῆα
 στείχοιεν, τὸ καὶ αὖτις ἐποτρύνουσι ἀγόρευεν.
 „ Ἐῖς Ἴρι Φίλη, νῦν, εἴ ποτ' ἐμὰς ἐτέλεισας ἐφειμάς,
 „ εἰδ' ἄγε, λαιψήρῃσι μετοιχομένη πτερύγεσσι,
 „ δεῦρο Θέτιν μοι ἀνωχθεὶ μολεῖν ἄλως ἐξανιούσαν.
- 760 „ Κεῖνης γὰρ χρεῖώ με κιχάνεται. Αὐτὰρ ἔπειτα
 „ ἐλθεῖν εἰς ἅπτας, ὅθι τ' ἄκμονες Ἡφαιστοιο
 „ χάλκαιοι στιβαρῇσιν ἀράσσονται τυκίδεσσιν.
 „ εἰπέ δὲ κοιμίσαι Φύσας πυρὸς, εἰσέκην Ἀργῶ
 „ τάσγε παρεξελάσῃσιν. Αὐτὰρ καὶ ἐς Αἰόλον ἐλθεῖν,
- 765 „ Αἰόλον, ὅσθ' ἐνέμοις αἰδρηγενέεσσιν ἀνάσσει.
 „ καὶ δὲ τῇ εἰπέμεναι τὸν ἐμὸν νόον, ὥς κεν αἴτας
 „ πάντας ἀπολλήξειεν ὑπ' ἡέρι, μηδὲ τις αὖρη
 „ τερχίνοι πύλαγος. Ζεφύρου γε μὲν οὖρος αἴτω,
 „ ὅφρ' οἱ γ' Ἀλκινόου Φαιήκιδα νῆσον ἱκῶνται.
- 770 „ Ὡς ἔφατ'· αὐτίκα δ' Ἴρις ἀπ' Οὐλύμποιο θοροῦσα
 τέμνε, τανυσσαμένη κοῦφα πτερὰ. Δῦ δ' ἐνὶ πόντῳ
 Αἰγαίῳ, τόθι πέρ τε δόμοι Νηρῆος ἔασι.
 Πρώτην δ' εἰσαφίκανε Θέτιν, καὶ ἐπέφραδε μῦθον
 „ Ἦρης ἐνεσίης, ὥρσέ τέ μιν εἰς ἐνέσσαι.
- 775 Δεύτερα δ' εἰς Ἡφαιστον ἐβήσατο· παῦσε δὲ τὸν γὰρ
 ῥίμφα σιδηρείων τυκίδων· ἔσχοντο δ' αὐτμῆς
 αἰεταλίοι πρηστῆρες. Ἀτὰρ τρίτον εἰσαφίκανεν
 Αἰόλον ἱππότῳ παῖδα κλυτόν. Ὄφρα δὲ καὶ τῇ
 ἀγγελίῃ φαιμένη θοὰ γούνατα παῦσεν ὁδοῖο,
- 780 τόφρα Θέτις, Νηρῆα κασιγνήτας τε λιπούσα,
 ἐξ ἄλως Οὐλυμπίνδε θεῶν μετεκίαθεν Ἥρην.
 ἥ δέ μιν ἄσπον ἐῖο παρεῖστέ τε, φαῖνέ τε μῦθον.
 „ Κέκλυθε νῦν, Θέτι δῖα, τά τοι ἐπιέλδομαι ἐνίσπειν.
 „ Οἶσθα μὲν, ὅσπον ἐμῇσιν ἐνὶ φρεσὶ τίεται ἥρως
- 785 „ Αἰσονίδης, οἱ τ' ἄλλοι ἀσπληστῆρες ἀέθλου,
 „ οἷως τέ σφ' ἐσάωσα διὰ πλαγκτάς περὶ νῶντας
 „ πέτρας, ἐνθα πυρὸς δεινὰ βρομέουσι δύνελλαι,
 „ κύματά τε σκληρῇσι περιβλύει σπιλάδεσσιν.
 „ Νῦν δὲ παρὰ Σκύλλης σκόπελον μέγαν, ἥ δὲ Χάρυβδις

- 720 καὶ δ' αὐτὴ πέλας ἔξεν ἐνωπαδῖς. αἶψα δὲ μύθη
 χροῖω, ναυτιλίην τε, διακριδὼν ἐξερέεινεν,
 ἥδ' ὀπόθεν μετὰ γαῖαν ἔην καὶ δώματ' ἰόντας
 αὐτως ἰδρύνθησαν ἐφέστιοι. Ἦ γὰρ ὀνείρων
 μνηστῖς ἀεικελίῃ δύνε φρένας ὀρμαίνουσιν·
- 725 ἴετο δ' αὖ κούρης ἐμφύλιον ἰδμεναι ὀμφήν,
 αὐτίχ' ὅπως ἐνόησεν ἀπ' οὔδεος ὅσσε βαλοῦσαν.
 Πᾶσα γὰρ Ἡελίου γενεὴ ἀρίδης ἰδέσθαι
 ἦεν, ἐπεὶ βλεφάρων ἀποτηλόδι μαρμαρυγῇσιν
 οἶον τε χρυσὴν ἀντώπιον ἴεσαν αἴγλην.
- 730 Ἦ δ' ἄρα τῇ τὰ ἕκαστα διειρομένη κατέλεξε,
 Κολχίδα γῆρυν ἱεῖσα, βαρύφρονος Αἰήταο
 κούρῃ μελιχίως, ἡμὲν στόλον, ἥδ' ἐκελεύθους
 ἡρώων, ὅσα τ' ἀμφὶ θοοῖς ἐμίγησαν ἀέθλοις·
 ὥς τε κασιγνήτης πολυκηδέος ἦλιντε βουλαῖς,
- 735 ὥς τ' ἀπονόσφιν ἄλυζεν ὑπέρβια δέματα πατρὸς
 σὺν παισὶ Φρίξοιο· Φόνον δ' ἀλέεινεν ἐνίσπειν
 Ἀψύρτου. Τὴν δ' οὔ τι νόψ λάθον· ἀλλὰ καὶ ἔμπεσ
 μυρομένην ἐλέαιρεν, ἔπος δ' ἐπὶ τοῖον ἔειπε.
 “Σχετλὴ, ἥ ῥα κακὸν καὶ ἀεικέα μῆσας νόστον.
- 740 “Ἐλπομαι οὐκ ἐπὶ δὴν σε βαρὺν χόλον Αἰήταο
 “ἐκφυγείν· τάχα δ' εἴσι καὶ Ἐθιάδος ἥδεα γαίης
 “τισόμενος Φόνον υἱός, ὅτ' ἄσχετα ἔργ' ἐτέλεσσας.
 “Ἄλλ' ἐπεὶ οὖν ἱκέτις καὶ ὀμύγιος ἐπλευ ἐμεῖο,
 “ἄλλο μὲν οὔ τι κακὸν μητίσομαι ἐνθάδ' ἰούσῃ·
- 745 “ἔρχεο δ' ἐκ μεγάρων ξείνῃ συνοπηδὸς εὐῶσα,
 “ὄντινα τοῦτον αἶστον αἰεραὸ πατρὸς ἀνευδε·
 “μηδὲ με γουνάσσαιο ἐφέστιος, οὐ γὰρ ἔγωγε
 “αἰνήσω βουλαῖς τε σέθεν καὶ ἀεικέα φύζιν.
 “Ὡς φάτο· τὴν δ' ἀμέγαρτον ἄχος λάβεν· ἀμφὶ δὲ πέπλον
- 750 ὀφθαλμοῖσι βαλοῦσα, γόον χέεν, ὅφρα μιν ἦρως,
 χεῖρὸς ἐπισχόμενος, μεγάρων ἐξῆγε θύραζε
 δαίματι παῖδομένην· λείπον δ' ἀπο δάματα Κίρκης.
 Οὐδ' ἄλοχον Κρονίδαο Διὸς λάθον· ἀλλὰ οἱ Ἴρις
 πύφραδεν, εὖτ' ἐνόησεν ἀπὸ μεγάρου κίοντας.

- 685 Ἴη δ' ὅτε δὴ νυχίων ἀπὸ δαίματα πέμψεν ὀνείρων
αὐτίκ' ἔπειτ' ἀφοῖρόν ἀπέστιχε· τοὺς δ' ἅμ' ἔπεσθαι,
χειρὶ καταβρέξασα, διλοφροσύνησιν ἄνωγεν.
Ἐνθ' ἦτοι πληθὺς μὲν ἐφ' ἑτμαῖς Αἰσονίδαο
μῖμνον ἀπηλεγέως· ὃ δ' ἐρύσσατο Κολχίδα κούρην.
- 690 Ἀμφω δ' ἐπέσθην αὐτὴν ὁδόν, ἔστ' ἀφίκοντο
Κίρκης ἐς μέγαρον· τοὺς δ' ἐν λιπαροῖσι κέλευσεν
ἢ γε θρόνοις ἔζεσθαι, ἀμηχανέουσκα κόντων.
Τῷ δ' ἄνευ καὶ ἀναυδοὶ ἐφ' ἐστίῃ αἵξαντες
ἴξανον, ἢ τε δίκη λυγροῖς ἐκέτησι τέτυκται,
- 695 ἢ μὲν ἐπ' ἀμφοτέρῃς θεμένη χεῖρεσσι μέτωπα,
αὐτὰρ ὁ κοπῆεν μέγα φάσγανον ἐν χθονὶ πῆξας,
ᾧ πέρ τ' Αἰήταο παῖν κτάνεν· οὐδέ ποτ' ὅσσε
ἰδὺς ἐνὶ βλεφάροισιν ἀνέσχεθον. Αὐτίκα δ' ἔγνω
Κίρκη φύζιον οἶτον, ἀλιτροσύνας τε φόνοιο.
- 700 τῷ καὶ ὀπιζομένη Ζηνὸς θέμιν Ἰκεσίοιο,
ὃς μέγα μὲν κατέει, μέγα δ' ἀνδροφόνοισιν ἀρήγει,
ῥέξε θυηπολίην, οἷη τ' ἀπολυμαίνονται
νηλειεῖς ἐκέται, ὅτ' ἐφ' ἐστίοι ἀντιώωσι.
Πρῶτα μὲν ἀτρέπτοιο λυτήριον ἢ γε φόνοιο
- 705 τειναμένη καθύπερθε σὺς τέκος, ἥς ἔτι μαζοῖ
πλήμμυρον λοχίης ἐκ νηδύος, αἵματι χεῖρας
τείγην, ἐπιτμήγουσα δέρην· αὐτίς δὲ καὶ ἄλλοις
μείλισσε χίτλοισι, καθάρσιον ἀσκαλέουσα
Ζῆνα, παλαμναίων τιμήορον, ἱεσῖησι.
- 710 Καὶ τὰ μὲν ἀθρόα πάντα δόμων ἐκ δαίματ' ἐνείκαν
Νηιάδες πρόπολοι, καὶ οἱ κύρσυνον ἕκαστα.
Ἴη δ' εἴσω πελάνους μείλικτρά τε νηφαλίσσι
καῖεν ἐπ' εὐχολῇσι παρέστιος, ὅφρα χόλοιο
σμερδαλέας παύσειεν Ἑριννύας, ἡδὲ καὶ αὐτὸς
- 715 εὐμειδὴς τε πέλοιτο καὶ ἥπιος ἀμφοτέροισιν,
εἴτ' οὖν ὀδνεῖω μεμιασμένοι αἵματι χεῖρας,
εἴτε καὶ ἐμφύλῳ προσκηδέες ἀντιώωσιν.
Αὐτὰρ ἐπεὶ μάλα πάντα πονήσατο, δὴ τότε ἔκλιτε
εἶεν ἐπὶ ξιστοῖσιν ἀναστήσασα θρόνοισι,

- 650 Στοιχάδας εἰσαπέβαν νήσους σήπαι, εἵνεκα κούρων
 Ζηγῶς· ὃ δὲ βωμοί τε καὶ ἱερὰ τοῖσι τέτυκται
 ἔμπεδον· οὐδ' ὅσον κείνης ἐπίουροι ἔποντο
 ναυτιλίας· Ζεὺς δὲ Φι καὶ ὤψιγόνων πόρε νῆας.
 Στοιχάδας αὐτὰ λιπόντες ἐς Αἰθαλίην ἐπέρησαν
- 655 νῆσον, ἵνα ψηφῆσιν ἀπωμόρξαντο ναυμόντες
 ἰδρῶ ἄλλης· χροῖ δὲ κατ' αἰγιαλοῖο κέχυνται
 εἰκελαιοί· ἐν δὲ σόλοι καὶ τεύχεα θέκελα κείνων·
 ἐν δὲ λιμὴν Ἀργεῖος ἐπωνυμίην πεφάτισται.
- Καρκαλίμως δ' ἐνθένδε δι' ἐξ ἁλὸς οὗδμα νέοντο,
- 660 Λύσονίης ἄκτας Τυρσηνίδας εἰσορώνοντες·
 ἴζον δ' Αἰαίης λιμένα κλυτόν· ἐκ δ' ἄρα νηὸς
 πείσματ' ἐπ' ἠϊόνων σχεδόθεν βαλόν· ἔνθα δὲ Κίρκην
 εὖρον ἁλὸς νοτίδεσσι κάρη ἐπιφαιδρύνουσαν.
 Τοῖον γὰρ νυχίοισιν ἀνείρασιν ἐποίητο.
- 665 αἵματι οἱ θαλαμοὶ τε καὶ ἔρκεα πάντα δόμοιο
 μύρεσθαι δόκεον· φλόξ δ' ἀθρόα φάρμακ' ἔδαπτεν,
 οἷσι πάρος ξείνους θέλγ' ἀνέρας, ὅστις ἴκοιτο·
 τὴν δ' αὐτὴ φονίῳ σέβεν αἵματι πορφύρουσαν,
 χερσὶν ἀφυσσαμένη· λῆξεν δ' ἰλοοῖο φόβοιο.
- 670 τῷ καὶ ἐπιπλομένης ἡοῦς νοτίδεσσι θαλάσσης
 ἐγρομένη πλοκάμους τε καὶ εἵματα φαιδρύνεσκε.
 Θῆρες δ', οὐ θήρεσσιν ἑοικότες ὠμηστῆσιν,
 οὐδὲ μὲν οὐδ' ἀνδρεσσιν ὅλον δέμας, ἄλλο δ' ἀπ' ἄλλων
 συμμιγέες μελέων, κίον αἰθροί, ἥτε μῆλα
- 675 ἐκ σταδμῶν ἄλλης εἶσιν ὀπηδεύοντα νομῇ.
 Τοίους καὶ προτέρης ἐξ ἰλῦος ἐβλάστησε
 χθρὼν αὐτὴ μικτοῖσιν ἀρηραμένους μελέεσσιν,
 οὔπω διψαλέῳ μάλ' ὑπ' ἥρι πιληθεῖσα,
 οὐ δὲ πω ἀζαλέοιο βολαῖς τόσον ἡελίοιο
- 680 ἰκμάδας αἰνυμένη· τὰ δ' ἐπὶ στίχας ἤγαγεν αἰὼν
 συκρίνας· τὼς οἱ γὰρ Φυὴν αἰδηλοὶ ἔποντο. —
 Ἥρωας δ' ἔλε θαμβος ἀπείριτον· αἴψα δ' ἕκαστος
 Κίρκης εἰς τε Φυὴν, εἰς τ' ὄρματα παπταίνοντες,
 εἶτα κασιγνήτην φάσαν ἔμμεναι Διήτα.

- 615 οὐρανὸν αἰγλήεντα λιπὼν ἐκ πατρὸς ἐνιπῆς,
 χαόμενος περὶ παιδί, τὸν ἐν λίπαρῃ Λακερσίῃ
 διὰ Κορωνίς ἔτικτεν ἐπὶ προχοῆς Ἀμύροιο.
 Καὶ τὰ μὲν ὥς κείνοισι μετ' ἀνδράσι κεκλήϊσται.
 Τοὺς δ' οὔτε βρώμης ἤρει πόθος, οὔ τε ποτοῖο,
 620 οὔτ' ἐπὶ γηθοσύνας τράπετο νόος. Ἄλλ' ἄρα τοίγε
 ἤματα μὲν στρεύγοντο περὶ βληχρὸν βαρύθοντες
 ὁδμῇ λευγαλήῃ, τὴν ῥ' ἄσχετον ἐξανίσκον
 τυφομένου Φαίδοντος ἐπιβροαὶ Ἡριδανοῖο.
 νυκτὸς δ' αὖ γόον ἐξὺν ὀδυρομένων ἐσάκουον
 625 Ἰλιάδων λιγέως· τὰ δὲ δάκρυα μυρομένησιν,
 οἷον ἐλαϊηραὶ στάγες, ὕδασιν ἐμφορέοντο.
 Ἐκ δὲ τίθεν Ῥοδανοῖο βαθὺν ῥόον εἰσανέβησαν,
 ὅστ' εἰς Ἡριδανὸν μετανίσσεται· ἄμμιγα δ' ὕδωρ
 ἐν ξυνοχῇ βέβρυχε κυκώμενον. Αὐτὰρ ὃ γαίης
 630 ἐκ μυχάτης, ἵνα τ' εἰσὶ πύλαι καὶ ἐδῆλ' ἱα Νυκτὸς,
 ἐνθεν ἀπορρέμενος, τῇ μὲντ' ἐπερεύγεται ἀκτὰς
 Ὀκεανοῦ, τῇ δ' αὖτε μετ' Ἰονίην ἅλα βόαι, κει,
 τῇ δ' ἐπὶ Σαρδόνιον πέλαγος, καὶ ἀπείρονα κέληπον,
 ἑπτὰ διὰ στομάτων ἴει ῥέον. Ἐκ δ' ἄρα τοῖο
 635 λίμνας εἰσέλασαν δυσχεύμονας, αἵ τ' ἀνὰ Κελτῶν
 ἤπειρον πέπτανται ἀδέσφαται· ἐνθα κεν οἱ γε
 ἄτῃ ἀεικελίῃ πέλασαν. Φέρε γάρ τις ἀπορρώξ
 κέληπον ἐς Ὀκεανοῖο, τὸν οὐ προδαίντες ἐμεῖλον
 εἰσβαλέειν, τόθεν οὔ κεν ὑπότροποι ἐξεσάωθην.
 640 Ἄλλ' Ἥρῃ σκοπέλοιο κατ' Ἐρκυνίου ἰκχήσεν,
 οὐρανόνθεν προδοροῦσα· φέβῳ δ' ἐτίναχθεν αὐτῆς
 πάντες ὁμῶς· δεινὸν γὰρ ἐπὶ μέγας ἔβραχεν αἰθήρ.
 Ἀφ' δὲ καλιντροπόωντο θεῶς ὕπο, καὶ ῥ' ἐνόησαν
 τὴν οἶμον, τῇ πέρ τε καὶ ἐπλετο νόστος ἰοῦσι.
 645 Δηναῖοι δ' ἀκτὰς Ἀλιμυρῆας εἰσαφίκοντο,
 Ἥρης ἐννεσίῃσι, δι' ἔθνεα μυρία Κελτῶν
 καὶ Λιγύων περόωντες ἀδήϊοι. Ἀμφὶ γὰρ αἰνὴν
 ἤερα χεῦε θεὰ πάντ' ἤματα νισσομένοισι.
 Μεσσήτατον δ' ἄρα τοί γε διὰ στόμα νηὶ βαλόντες

- 580 νήσου ἐπὶ κραναῆς Ἡλεκτρίδος. Αὐτίκα δ' ἄφνω
ἶαχεν ἀνδρομέη ἐνοπῇ μεσσηγὺ θεόντων
αὐδῆεν γλαφυρῆς νηὶ δόρυ, τόξ' ἀνὰ μέσσην
στεῖραν Ἀθηναίη Δωδωνίδος ἤρμοσε Φηγοῦ.
Τοὺς δ' ὅλοον μεσσηγὺ δέος λάβειν εἰσαΐοντας
- 585 Φθογῆν τε, Ζηνός τε βαρὺν χόλον. Οὐ γὰρ ἀλύξαι
ἔννεπεν οὔτε πόρους δολιχῆς ἀλός, οὔτε θυέλας
ἀργαλίας, ὅτε μὴ Κίρκη φόνον Ἀφύρτοιο
νηλέα νίψει· Πολυδεύκεα δ' εὐχετάσθαι
Κάστορά τ' ἀθανάτοισι θεοῖς ἤτωγε κελεύθου
- 590 Αὔσονίης ἔμπροσθε πορεῖν ἀλός, ἣ ἐνὶ Κίρκην
δήουσιν, Πέρσης τε καὶ Ἡλίοιο θυγάτρα.
Ὡς Ἀργὼ ἰάχησεν ὑπὸ κνέφας· οἱ δ' ἀνόρουσαν
Τυνδαρίδαι, καὶ χεῖρας ἀνέσχεθον ἀθανάτοισιν,
εὐχόμενοι τὰ ἕκαστα· κατηφείη δ' ἔχεν ἄλλους
- 595 ἦρως Μινύας. Ἡ δ' ἔσσυτο πολλὸν ἐπιπρὸ
λαΐφεισιν, ἔς τ' ἔβαλον μύχατον ῥόον Ἡριδανοῖο·
ἐνθα ποτ' αἰθαλόεντι τυπεῖς πρὸς στέρνα κεραυνῷ
ἡμιδαῆς Φαίδων πέσεν ἄρματος Ἡλίοιο
λίμνης ἐς προχοᾶς πολυθεντέος· ἣ δ' ἐτι νῦν περ
- 600 τραύματος κίθομένοιο βαρὺν ἀνακηκίει αἰτμόν.
Οὐδέ τις ὕδωρ κεῖνο διὰ πτερὰ κοῦφα τανύσσας
εἰωνὸς δύναται βαλέειν ὑπερ' ἄλλα μεσσηγὺ
φλογμῷ ἐπιθρῶσκει πεποτημένος. Ἀμφὶ δὲ κοῦραι
Ἡλιάδες, ταναῆσιν ἐφήμεναι αἰγείροισι,
- 605 μύρονται κινυρὸν μέλαι γόνι· ἐκ δὲ Φαιναῖς
ἠλέκτρον λιθάδας βλεφάρων προχέουσιν ἔραζε·
αἱ μὲν τ' ἠελίῳ ψαμάθοις ἐπὶ τερσαίνονται·
αὐτ' ἂν δὲ κλύζησι κελαϊνῆς οἰδματι λίμνης
ἠϊόνας πνοῇ πολυχηέος ἐξ ἀνέμοιο,
- 610 δὴ τότε ἔς Ἡριδανὸν προκυλίνδεται ἄθροα πάντα
κυμαίνοντι ῥίψι. Κελτοὶ δ' ἐπὶ βάζειν ἔβητο,
ὡς ἄρ' Ἀπόλλωνος τάδε δάκρυα Λητοῖδαο
συμφέρεται δίναις, ἃ τε μυρία χεῖρε πάροισιν,
ἥμος Ἰπριβορέων ἱερὸν γένος εἰσαφίκανεν.

- 545 τυτθὸς ἰὼν ποτ' ἴναιεν· ἀτὰρ λίπε νῆσον ἔπειτα.
 Οὐ δ' ἄρ' ὄγ' ἠδῆσας αὐτῇ ἐγὶ ἔλδετο νήσω
 ναίειν, κοιρανέοντος ἐπ' ὀφρύσι Ναυσιδόοιο·
 βῆ δ' ἄλαδ' Κρονίην, αὐτόχθονα λαὸν ἀγείρας
 Φαιήκων· σὺν γάρ οἱ ἀναξ πόρσυνε κέλευθον
 550 ἦρως Ναυσιδόος· τόθι δ' εἵσατο, καὶ μιν ἐπεφνον
 Μέντορες, ἀγραύλοισιν ἀλεζόμενον περὶ βουσίη.
 Ἄλλ' αἰ, θεαί, πῶς τῆσδε παρέξ ἄλος, ἀμφὶ τε γαῖαν
 Αὔσονίην, νήσους τε Λιγυστίδας, αἱ καλέονται
 Στοιχάδες, Ἀργῆς περιώσια σήματα νηὸς
 555 νημερτὲς πέφатаι; τίς ἀπόπροθι τόσσον ἀνάσκη
 καὶ χρειώ σφ' ἐκόμισσε; τίνες υφείας ἤγαγον αὔραι;
 Αὐτὸν που μεγαλῶστί, δ' ἐδουπότος Ἀφύρτοιο,
 Ζῆνα, θεῶν βασιλῆα, χόλος λάβεν, ὅον ἐρεξαν.
 Αἰαίης δ' ὀλοὸν τεκμήρατο δῖνεσι Κίρκης
 560 αἰμὶ ἀπονιφασμένους, πρό τε μυρῖα πημανθέντας,
 νοστήσειν. Τὸ μὲν οὐ τις ἀριστήων ἐνόησεν·
 ἀλλ' ἔθεον, γαίης Ἰθακίδος ἔξανιόντες,
 τηλόθι· τὰς δ' ἀπέλειπον, ὅσαι Κόλχοισι πάροιθεν
 ἐξείης πλήθοντο Λιβυρινίδες εἰν ἀλὶ νῆσοι,
 565 Ἴσση τε, Δυσκέλαδες τε, καὶ ἱμερτὴ Πιτύεια.
 Αὐτὰρ ἔπειτ' ἐπὶ τῇσι παρὰ Κέρκυραν ἴκοντο,
 ἔνθα Ποσειδάων Ἀσωπίδα νάσσατο κούρην,
 ἠύκομον Κέρκυραν, ἐκὰς Φλιουντίδος αἴης,
 ἀρπάξας ὑπ' ἔρωτι· μελαινομένην δὲ μιν ἄνδρες
 570 ναυτίλοι ἐκ πόντοιο κελαινῇ πάντοθεν ὕλη
 δερκόμενοι, Κέρκυραν ἐπικλείουσι Μέλαιναν.
 Τῇ δ' ἐπὶ καὶ Μελίτην, λιαρῷ περιγητῆες οὔρω,
 αἰπαινὴν τε Κερωσσόν, ὑπερθε δὲ ποδῶν ἐούσαν
 Νυμφαίην παρὰ μείθοι, ἵνα κρείουσα Καλυψὶ
 575 Ἀτλαντὶς ναίεσκε· τὰ δ' ἡρωεῖδ' ἀλυσσείν
 οὔρεα δοιάζοντο Κερκύνη. Καὶ τότε βουλαῖς
 ἀμφ' αὐτοῖς Ζηνὸς τε βαρὺν χόλον ἐφράσατο Ἥρη.
 Μηδομένη δ' ἄνυσιν τοῖο πλοοῦ, ὥρσεν αἰετὰς
 ἀντικρὺ· τοὶ δ' αὖτις ἀναρπάγδην φορέοντο

- 510 Ἦρῃ σμερδαλέῃσι κατ' αἰθέρος ὑστεροπῆσιν.
 Ὑστατον αὐτοὶ δ' αὖτε Κυπαϊδὸς ἦθεα γαίης
 στύξαν, ἀτυζόμενοι χόλον ἄγριον Αἰήταο,
 ἔμπεδα δ' ἄλλυδις ἄλλοι ἐφορμηθέντες ἐνέσθεν.
 Οἱ μὲν ἐπ' αὐτῶν νήσων ἔβαν, ἦσιν ἐπέσχον
 515 ἦρωες, ναίουσι δ' ἐπ' ὠνυμοὶ Ἀφύρτοιο·
 οἱ δ' ἄρ' ἐπ' Ἰθυρικοῖο μιλαμδαθέος ποταμοῖο,
 τύμβος ἴν' Ἀρμονίης Κάδμοιό τε, πύργον ἔδειμαν,
 ἀνδράσιν Ἐλχελέεσσιν ἐφέστιοι· οἱ δ' ἐν ὄρεσσιν
 ἐνναίουσιν, ἅπερ τε Κεραύνια κικλήσκονται,
 520 ἔκτοφεν, ἐξέτε τούσγε Δι' ἑς Κρονίδαο κεραυνοὶ
 νῆσιν ἐς ἀντιπέραιαν ἀπέτραπον ὁρμηθῆναι.
 Ἦρωες δ', ὅτε δὴ σφιν εἰσατο νόστος ἀπῆμων,
 δὴ ῥα τότε προμολόντες, ἐπὶ χθονὶ πείσματ' ἔδησαν
 Ἑλλήων. Νῆσοι γὰρ ἐπιπροὔχοντο θυμειαί,
 525 ἀργαλήν πλώουσιν ὁδὸν μεσσηγὺς ἔχουσαι.
 Οὐδέ σφιν, ὥς καὶ πρὶν, ἀνάρσια μητιάσκειν
 Ἑλλῆες· πρὸς δ' αὐτοὶ ἐμηχανόωντο κίλευθον,
 μισθὸν ἀειράμενοι τρίποδα μίγαν Ἀπόλλωνος.
 Διοιὺς γὰρ τρίποδας τηλοῦ πόρε Φοῖβος ἄγεσθαι
 530 Αἰσανίδῃ περὶ ὧντι κατὰ χρέος, ὅππότε Πυθῶ
 ἱρὴν πευσόμενος μετεκίαδε τῆσδ' ὑπὲρ αὐτῆς
 ναυτιλίας· πέπρωτο δ', ὅπῃ χθονὸς ἰδρυνθεῖεν,
 μή ποτε τὴν διήδισιν ἀναστήσεσθαι ἰούσι.
 Τοῦνεκεν εἰσέτε νῦν κείνῃ ὄγε κεύθεται αἶψα
 535 ἀμφὶ πόλιν ἀγανὴν Ἑλλήϊδα, πόλιν ἐνερθεν
 οὐδέος, ὥς κεν ἄφαντος αἰεὶ μερόπεσσι πέληται.
 Οὐ ρέν ἔτι ζῶοντα καταυτόθι τέτμον ἄνακτα
 Ἑλλῶν, ὃν εὐειδὴς Μελίτη τέκεν Ἡρακλῆϊ,
 δῆμῳ Φαιήκων. Ὁ γὰρ εἰκία Ναυσιτόοιο
 540 Μάκριν τ' εἰσαφίκανε, Διωνύσοιο τιθήνην,
 νηρόμενος παίδων ὅλοον φόνον· ἐνθ' ὅ γε κούρη
 Αἰγαίου ἐδάμασσεν ἐρασσάμενος ποταμοῖο
 Νηϊάδα Μελίτην· ἥ δὲ σθενάρην τέκεν Ἑλλῶν
 δῆμῳ Φαιήκων. Οἱ μὲν οἰκία Ναυσιτόοιο

- 475 Ὄξυ δὲ πανδαμάτωρ λαβὼν ἶδεν οἷον ἔρεξαν
 ὄμματι νηλεῆς ὀλοφώϊον ἔργον Ἑριννύς.
 Ἦρωες δ' Αἰσονίδης ἐξάρματα τάμνε θανόντες,
 τρίς δ' ἀπέλειξε φόνου, τρίς δ' ἐξ ἄγος ἔπτυσ' ὀδόντων,
 ἢ θέμις αὐθέντησι δολοκτασίας ἰλάεσθαι.
- 480 Ἵγρὸν δ' ἐν γαίῃ κρύψε νέκυν, ἐνθ' ἔτι νῦν περ
 κείται ὅστιά κείνα μετ' ἀνδράσιν Ἀψυρτεῦσιν.
 Οἱ δ' ἄμυδις πυρσοῖο σέλας προπάρουθιν ἰδόντες,
 τό σφιν παρθενικὴ τέκμαρ μετιούσιν ἄειρε,
 Κολχίδος ἀλχόθι νηὸς ἐν παρὰ νῆα βάλλοντο
- 485 ἦρωες· Κόλχων δ' ἔλεγον στόλον, ἥτε κίρκαι
 Φῦλα πελειαῶν, ἡέ μέγα πῶυ λείοντες
 ἀγρότεροι κλονέουσιν ἐνὶ σταθμοῖσι θορόντας.
 οὐδ' ἄρα τις κείνων θάνατον φύγε, πάντα δ' ὁμίλον,
 πῦρ ἄτε, δηιῶντες ἐπέδραμον· ὅψε δ' Ἰήσων
- 490 ἦντησεν, μεμαῶς ἐπαμυνέμεν εὐ μάλ' ἀρωγῆς
 δευομένοις· ἦδη δὲ καὶ ἄμφ' αὐτοῖο μέλοντο.
 Ἐνθα δὲ ναυτιλίας πυκινὴν πέρι μητιάσκειν
 ἰζόμενοι βουλήν· ἐπὶ δὲ σφίσιν ἤλυθε κούρη
 Φραζόμενοις· Πηλεὺς δὲ παροίτατος ἔκφατο μῦθον.
- 495 “Ἦδη νῦν κέλομαι νύκτωρ ἔτι νῆ' ἐπιβάντας
 „ εἰρεσὴν περὶ ἅν πλὸν ἀντίον, ᾧ ῥ' ἐπέχουσι
 „ δῆιοι· ἠῶθεν γὰρ ἐπαθρήσαντας ἕκαστα
 „ ἔλπομαι οὐχ ἓνα μῦθον, ὃ τις προτέρως διεσθαι
 „ ἡμέας ὀτρυνέει, τοὺς πεισέμεν· οἷα δ' ἀνακτος
- 500 „ εὐνίδες, ἀργαλέησι διχοστασίῃς κεδῶνται.
 „ Ῥηιδίῃ δὲ κεν ἄμμι, κεδασθέντων δίχα λαῶν,
 „ ἥδ' εἴη μετέπειτα κατερχομένοισι κέλευθός.
 “Ὡς ἔφατ'· ἦνῃσαν δὲ νέοι ἔπος Αἰακίδαο.
 Ῥίμφα δὲ νῆ' ἐπιβάντες ἐπεβῶνόντ' ἐλάτῃσι
- 505 νωλεμέες, ὅφρ' ἱερὴν Ἥλεκτρίδα νῆσεν ἵκοντο,
 ἀδῶάν ὑπάτην, ποταμοῦ σχεδὸν Ἡριδαντοῖο.
 Κόλχοι δ' ἐπ' ἐπ' ἔλεδρον ἐπιφράσθησαν ἀνακτος,
 ἦτοι μὲν δίξεσθαι ἐπέχραον ἐνδοθι πάσης
 Ἀργῶ καὶ Μινύας Κρονίης ἀλόε. Ἀδ' ἀκίρυκον

- 440 βαίη ἐς Αἰήταο δόμους· πέρι γάρ μιν ἀνάβη
 νῆες Φρίξιο δόσαν ζείνοισιν ἄγεσθαι·
 τοῖα παραιφαιμένη, θελκτῆρια φάρμακ' ἐπασσεν
 αἰθέρι καὶ πνοιῇσι, τὰ κεν καὶ ἄπωθεν ἶοντα
 ἄγριον ἤλιθ' αἰτοιο κατ' οὖρεος ἤγαγε θῆρα.
- 445 Σχέτλι' Ἔρως, μέγα πῆμα, μέγα στύγος ἀνθρώποισιν,
 ἐκ σέθεν οὐλόμεναί τ' ἔριδες, στοναχαὶ τε, γόοι τε,
 ἄλγεά τ' ἄλ' ἐπὶ τοῖσιν ἀπείρονα τετρήχασι·
 δυσμενέων ἐπὶ παισὶ κορύσσειο, δαῖμον, ἀερθεῖς,
 οἷος Μηδείη στρυγερὴν φρεσὶν ἔμβαλες ἄτην.
- 450 Πῶς γὰρ δὴ μετιόντα κακῶ ἰδάμασσαν ὀλέθρου
 Ἄψυρτον; τὸ γὰρ ἡμῖν ἐπισχερῶ ἦεν αἰοιδῆς.
 Ἦμος ὅτ' Ἀρτέμιδος νήσῳ ἐνὶ τήν γ' ἐλίποντο
 συνθεσίῃ, τοί μὲν ῥα διάνδιχα νηυσὶν ἐκελσαν
 σφωϊτέραις κρινθέντες· ὁ δ' ἐς λόχον ἦεν Ἰήσων
- 455 δέγμενος Ἄψυρτόν τε, καὶ οὖς ἐξαὔτις ἐταίρους.
 Αὐτὰρ ὁ γ' αἰνοτάτησιν ὑποσχεσίῃσι δολωθεῖς
 καρπαλίμως ἢ νηὶ διέξ' ἅλως οἶδμα περήσατο,
 νύχθ' ὑπὸ λυγαίῃν ἱερῆς ἐπεθήσατο νήσου·
 οἴοθι· ἀντικρὺ μετιῶν περήσατο μύθοις
- 460 εἰς κασιγνήτης, (ἄταλός παῖς οἷα χαράδρης
 χειμερίης, ἣν οὐδὲ δι' αἰζήοι περῶσιν)
 εἶκε δόλον ζείνοισιν ἐπ' ἀνδράσι τεχνήσαιο.
 Καὶ τῷ μὲν τὰ ἕκαστα συνήνεον ἀπλήλοισιν·
 αὐτίκα δ' Αἰσονίδης πυκινοῦ ἐξᾶλτο λόχοιο,
- 465 γυμνὸν ἀνασχόμενος παλάμη ξίφος· αἶψα δὲ κούρη
 ἔμπαλιν ὄμματ' ἐνεῖκε, καλυψαμένη ὀδόνῃσι,
 μὴ φόνον ἀδρήσειε κασιγνήτοιο τυπέντος.
 Τὸν δ' ὄγε, βουτύπος ὥστε μέγαν κερεαλκία ταῦρον,
 πλῆξεν ἐπιπτεύσας νηοῦ σχεδόν, ὅν ποτ' ἔδειμαν
- 470 Ἀρτέμιδι Βρυγοὶ περιναίεται ἀντιπέρηνθεν.
 Τοῦ ὁ γ' ἐνὶ προδόμῳ γνῦξ ἤριπε· λοίσθια δ' ἦρως
 θυμὸν ἀναπνεῖων χερσὶ μέλαν ἀμφοτέρησιν
 αἶμα κατ' ὠτειλὴν ὑπόσχετο· τῆς δὲ καλύπτρῃ
 ἀργυφῆν καὶ πέπλον ἀλευομένης ἐρύθηναν.

- 405 „ βήσομεν. Οὐδ' ἂν ὁμῶς περυναίεται ἀντίοῦντες
 „ Κόλχοις ἦρα φέροιεν ὑπὲρ σέο, νόσφιν ἀγκυτός,
 „ ὅς τοι ἀσάσητ' ἢ τε κασίγνητός τε τέτυκται·
 „ οὐδ' ἂν ἐγὼ Κόλχοισιν ὑπείζομαι πτολεμίζειν
 „ ἀντιδίσην, ὅτε μὴ με διεξείργωσι νέεσθαι.
- 410 Ἴσκεν ὑποσκαίνων· ἡ δ' οὐλοὺν ἐκφατο μῦθον.
 „ Φράζεό νυν. Χρεῖά γάρ ἀεικελίοισιν ἐπ' ἔργοισι
 „ καὶ τόδε μητιάσθαι, ἐπεὶ τὸ πρῶτον ἀάσθην
 „ ἀμπλακίῃ, θεόθεν δὲ κακὰς ἤνυσσα μενοινάς.
 „ Τύνη μὲν κατὰ μῶλον ἀλέξεο δούρατα Κόλχων·
- 415 „ αὐτὰρ ἐγὼ κείνον γε τεῖας ἐς χεῖρας ἱκέσθαι
 „ μειλίξω· σὺ δέ μιν Φαιδροῖς ἀγαπάξω δώροισι·
 „ εἴ κεν πως κήρυκας ἀπερχομένους πεπίθοιμι
 „ οἴοθεν οἷον ἐμοῖσι συναρθμῆσαι ἐπέεσσιν.
 „ Ἐνθ' εἴ τοι τόδε γ' ἔργον ἐφανδάνει, οὔ τι μεγαίρω,
- 420 „ κτεῖνε τε, καὶ Κόλχοισιν αἰερεο δηϊοτῆτα.
 „ Ὡς τῷ γε ζυμῶντε μέγαν δόλον ἤρτυναντο
 „ Ἀφύρτῳ, καὶ ποῖα πόρον ζεινήϊα δῶρα,
 „ οἷς μετὰ καὶ πέπλον δόσαν ἱερὸν Ἴφικυλεῖης
 „ πορφύρεον. Τὸν μὲν ἔρα Διωνίσῳ κάμον αὐταὶ
- 425 Δίῃ ἐν ἀμφιάλῳ Χάριτες θεαί· αὐτὰρ ὁ παιδί
 „ δῶκε Θόαντι μεταῦτις· ὁ δ' αὖ λίπεν Ἴφικυλεῖ·
 „ ἡ δ' ἐποῦ Αἰσονίδῃ πολέσιν μετὰ καὶ τὸ φέρεσθαι
 „ γλῆνεσιν εὐεργέες ζεινήϊδν. Οὔ μιν ἀφάσσων,
 „ οὔτε κεν εἰσορόων, γλυκὺν ἥμερον ἐμπλήσειας.
- 430 Τοῦ δὲ καὶ ἀμβροσίῃ ὀδμῇ πέλεν, ἐξέτι κείνου,
 „ ἐξ οὗ ἀναξ αὐτὸς Νυσηῖος ἐκκατέλεκτο
 „ ἀκροχάλιζ οἶνῳ καὶ νέκταρι, καλὰ μεμαρκῶς
 „ στήθεα παρθενηκῆς Μινωίδος, ἣν ποτὲ Θησεύς
 „ Κνωσὸθεν ἐσπομένην Δίῃ ἐνὶ κάλλιπε νήσῳ·
- 435 ἡ δέ γε κηρύκεσσιν ἐπεξυνώσατο μύθους,
 „ θελγέμεν, εὖτ' ἂν πρῶτα θεῶς περὶ νηὸν ἵκηται
 „ συνθεσίῃ, νυκτός τε μέλαν κνέφας ἀμφιβάλλησιν,
 „ ἐλθέμεν, ὅφρα δόλον συμφράσσεται, ὥς κεν ἐλοῦσα
 „ χρύσειον μέγα κῶας, ἐπότρουπος αὐτὶς ὀπίσσω

- 370 „ Πάντη γυν πρόφρων ὑπερίστασο, μηδέ με μούνην
 „ σείῃ λίπης ἀπάγειθεν, ἐποιχόμενος βασιλῆας.
 „ Ἄλλ' αὐτως εἰρύσο· δίκη δέ τοι ἔμπεδος ἔστω,
 „ καὶ Θέμις, ἣν ἄμφω συναρέσσαμεν· ἥ σὺ γ' ἔπειτα
 „ Φασγάνῃ αὐτίκα τόνδε μέσον διὰ λαιμὸν ἀμῆσαι,
- 375 „ ὅφρ' ἐπὶ ἤρα φέρωμαι ἰοικότα μαργουσύνῃσι.
 „ Σχέτλιε, εἴ κεν δὴ με κασιγνήτοιο δικάσῃ
 „ ἔμμεναι οὗτος ἄναξ, τῷ ἐπίσχετε τάσδ' ἀλεγεινάς
 „ ἄμφω συνθερίας, πῶς ἴξομαι ὄμματα πατρός;
 „ ἢ μάλ' εὐκλειής; τίνα δ' οὐ τίσιν, ἢ βαρείαν
- 380 „ ἄτην οὐ σμυγεῶς, δεινῶν ὑπερ οἷα ἔργα,
 „ ὀτλήσω; οὐ κεν θυμηδεά νόστον ἔλοιο.
 „ Μὴ τόγε καμβασίλεια Διὸς τελέσειεν ἄκοιτες,
 „ ἢ ἐπικυδιάεις. Μνήσαιο δέ κεν ποτ' ἐμείο,
 „ ὅτρευγόμενος καμάτοισι· δέρος δέ τοι ἴσον ὀνείροισ
- 385 „ οἴχοιτ' εἰς ἔρεβος μεταμώνιον. Ἐκ δέ τε πατρίης
 „ αὐτίκ' ἐμαί σ' ἐλάσειαν Ἐριννύες· οἷα καὶ αὐτὴ
 „ σῇ πάθον ἀτροπή. Τὰ μὲν οὐ Θέμις ἀκράαντα
 „ ἐν γαίῃ πεσέειν. Μάλα γὰρ μέγαν ἤλיתες ὄρκον,
 „ νηλεές· ἃ δ' οὐ θῆν μοι ἐπιθίζοντες ὀπίσσω
- 390 „ δὴν ἔσσεσθ' εὐκηλοὶ ἐκητί γε συνθεσιάων.
 „ Ὡς Φάτ' ἀναζείουσα βαρὺν χόλον· ἴετο δ' ἦ γο
 „ νῆα καταφλέξει, διὰ τ' ἔμπεδα πάντα κείασσαι,
 „ ἐν δέ πεσεῖν αὐτὴ μαλερῷ πυρί. Τοῖα δ' Ἰήσων
 „ μελιχίοις ἐπέεσσιν ὑποδδείσας προσέειπεν.
- 395 „ Ἴσχειο, δαιμονίη· τὰ μὲν ἀνδάνει οὐδ' ἐμοὶ αὐτῷ.
 „ Ἄλλ' αὖτις ἀμβολίην διζήμεθα δημοῖητος,
 „ ὅσπον δυσμενέων ἀνδρῶν νέφος ἀμφιδέδθεν
 „ εἵνεκα σεῦ. Πάντες γάρ, ὅσοι χθόνα τήνδε νέμονται,
 „ Ἀφύρτῳ μεμάασιν ἀμυνέμεν, ὕφρα σε πατρί,
- 400 „ οἷά τε ληίσθεισαν, ὑπότροπον οἰκαδ' ἄγοιτο.
 „ Αὐτοὶ δέ στυγερῷ κεν ὀλοίμεθα πάντες ὀλέθρῳ,
 „ μίξαντες δαὲ χεῖρας· ὅ τοι καὶ ῥίγιον ἄλγος
 „ ἔσσεται, εἴ σε θανόντες ἔλωρ κείνοισι λίποιμεν.
 „ Ἦδε δὲ συνθεσίῃ κρῖνται δόλον, ᾧ μιν ἐς αὐτὴν

- 335 στείνόμεναι Κόλχοισι, πόρους εἵρυντο θαλάσσης.
 ὧς δὲ καὶ εἰς ἄλλας πληθύν' λίπον ἀσχύδι νήσους
 μέσφα Σαλαγκῶνος ποταμοῦ καὶ Νέστιδος αἰῆς.
 Ἐνθα κε λευγαλὴ Μινύαι τότε δηϊοτῆτι
 παυρότεροι πλεόνεσσιν ὑπείκαθον· ἀλλὰ πάροιθι
 340 συνθεσίας, μέγα νείκος ἀλευάμενοι, ἐτάμοντο.
 Κῶας μὲν χρύσειον, ἐπεὶ σφίσιν αὐτὸς ὑπέστη
 Αἰήτης, εἰ κεῖνοι ἀναπλήσειαν αἰέθλους,
 ἔμπειδον εὐδοκίῃ σφέας ἐξέμεν, εἴτε δόλοισιν,
 εἴτε καὶ ἀμφοδὴν αὐτῶς ἀέκοντος ἀπηύρων·
 345 αὐτὰρ Μήδειαν — τότε γὰρ πέλεν ἀμφήριστον —
 παρθέναι κόρη Ληταΐδε νόσφιν ὀμίλου,
 εἰσέκε τις δικάσῃσι θεμιστοῦχων βασιλῆων,
 εἴτε μιν εἰς πατρὸς χρεῖω δόμον αὐτὶς ἰκάνειν,
 εἴτε μεθ' Ἑλλάδα γαῖαν ἀρίστησιν ἔπειθαι.
 350 Ἐνθα δ' ἐπεὶ τὰ ἕκαστα νόῳ περπάσσαντο κῆρυ,
 δὴ ῥά μιν ὀξεῖαι κραδίην ἐλέλιζαν ἀνίκαι
 νωλεμές· αἶψα δὲ νόσφιν Ἰήσονα μόνον ἐτκίρων
 ἐκπροκαλεσσαμένη ἄγεν ἄλκυδις, ὅφρ' ἐλίσσεν
 ποδὸν ἑκάς, στονόεντα δ' ἐνωπαδὶς ἐκφατο μῦθον.
 355 “ Αἰσονίδη, τίνα τήνδε συναρτύνεσθε μενοινῆν
 „ ἀμφ' ἐμοί; ἢ ἐσὶ πάσῃ λαθεφροσύναις ἐνέηκται
 „ ἀγλαΐαι, τῶν δ' οὐ τι μετατρέπη, ὅσσ' ἀγόρευε
 „ χρεῖοι ἐνισχύομενος; ποῦ τοι Διὸς Ἰκεσίοιο
 „ ὄρκια; ποῦ δὲ μελιχραὶ ὑποσχέσεις βεβῆκασιν;
 360 „ ἦς ἐγὼ οὐ κατὰ κόσμον, ἀναιδήτῃ ἰότητι,
 „ πάτρην τε, κλέα τε μεγάρων, αὐτοὺς τε τοκῆας
 „ νοσφισάμην, τὰ μοι ἦεν ὑπέρτατα· τηλόθι δ' οἴῃ
 „ λυγρῇσι κατὰ πόντον ἄμ' ἀλκυόνεσσι φορεῦμαι,
 „ σὺν ἔνεκεν καμάτων, ἵνα μοι σόος ἀμφὶ τε βουσίη,
 365 „ ἀμφὶ τε Γηγενέσσι, ἀναπλήσειας αἰέθλους.
 „ Τόσσον αὖ καὶ κῶας, ἐφ' ᾧ πλοῖος ὕμμιν ἐτύχθη,
 „ εἴλες ἐμῇ ματίῃ· κατὰ δ' οὐλοῶν αἰσχος ἔχεναι
 „ θηλυτέραις. Τῷ φημι τῇ κούρῃ τε, δάμαρ τε,
 „ αὐτοκασιγνήτη τε μεθ' Ἑλλάδα γαῖαν ἔπειθαι.

300 οὐρεα Παφλαγόνων θηεύμενοι. Οὐδὲ Κάρρα μιν
γνάμψαν, ἐπεὶ πνοιαί τε καὶ οὐρανίου πυρὸς αἶγλη
μεῖνεν, ἕως Ἰστριοιο μέγαν ῥέον εἰσαφίκοντο.

Κόλχοι δὴ τ' ἄλλοι μὲν, ἐτώσια μαστεύοντες,
Κυανέας Πόντοιο δὲ ἐκ πέτρας ἐπέρησαν·

305 ἄλλοι δ' αὖ ποταμὸν μετεκίασαν, οἷσιν ἄνασσαν
Ἄψυρτος, Καλὸν δὲ διὰ στόμα πείρε λιασθεῖς.
Τῷ καὶ ὑπέσθη τοὺς γε, βαλὼν ὑπὲρ αὐχένα γαίης,
κόλπον ἔσω πόντοιο πανέσχατον Ἰονίοιο.

Ἰστρῷ γάρ τις νῆσος ἐέργεται οὐνομα Πεύκη,
310 τριγλώχιν, εὖρος μὲν ἐς αἰγιαλούς ἀνέχουσα
στεινὸν δ' αὖτ' αἰκῶνα ποτὶ ῥέον· ἀμφὶ δὲ δοαὶ
σχίζονται προχοαί. τὴν μὲν καλέουσι Νάρηκος·
τὴν δ' ὑπὸ τῇ νεάτῃ, Καλὸν στόμα. τῇδε διαπρὸ
Ἄψυρτος Κόλχοι τε θωώτερον ὠρμήθησαν·

315 οἱ δ' ὑφ' οὐ νήσοιο κατ' ἀκρωτάτης ἐνέοντο
τηλόθεν. Εἰαμενῆσι δ' ἐν ἔσπετα πῶεα λείπον
ποιμένες ἄγραυλοι, νηῶν φόβῳ, οἳα τε θῆρας
ὁσόμενοι πόντου μεγακήτεος ἐξανιόντας.

Οὐ γάρ πω ἀλίας γε πάρος ποτὲ νῆας ἴδοντο,
320 οὗτ' οὖν Θρήξι μιγάδες Σκύθαι, οὔτε Σίγυνοι,
οὗτ' οὖν Γραυκένιοι, οὗθ' οἱ περὶ Λαύριον ἤδη
Σίνδοι ἐρημαῖον πεδίον μέγα ναιετάοντες.

Αὐτὰρ ἐπεὶ τ' Ἀλγούρου ὄρεος, καὶ ἄπωθεν ἐόντος
Ἀλγούρου ὄρεος σκόπελον παρὰ Καυλιακοῖο,
325 ᾧ περὶ δὴ σχίσων Ἰστρος ῥέον ἐνθα καὶ ἐνθα
βάλλει ἄλός, πεδίον τε τὸ Λαύριον ἡμεΐψαντο,
δὴ ῥα τότε Κρονίην Κόλχοι ἄλαδ' ἐκπρομαλόντες,
πάντῃ, μὴ σφε λάθοιεν, ὑπετμήξαντο κελεύθους.
Οἱ δ' ὅπιθεν ποταμοῖο κατήλυθον, ἐκ δ' ἐπέρησαν

330 δοιὰς Ἀρτέμιδος Βρυγηίδας ἀλχόθι νήσους.
Τῶν ἦτοι ἐτέρῃ μὲν ἐν ἱερὸν ἔσκεν ἔδεθλον·
ἐν δ' ἐτέρῃ, πληθύν πεφυλαγμένοι Ἀψύρτοιο,
βαῖνον· ἐπεὶ κείνας παλῶν λίπον ἐνδοθ' ἡήσους
αὐτίως, ἀζόμενοι κούρην Διός· αἱ δὲ δὴ ἄλλαι,

- 265 „ ζῶειν, φηγὲν ἔδοντες ἐν οὐρεσιν· οὐδὲ Πελασγίς
 „ χθρὼν τότε κυδαλίμοισιν ἀνάσσετο Δευκαλίδῃσιν,
 „ ἥμος ὅτ' ἠερίη πολυλήϊος ἐκλήϊστο
 „ μήτηρ Αἴγυπτος προτερηγενέων αἰζηῶν,
 „ καὶ ποταμὸς Τρίτωνος ἐνέροος, ᾧ ὑπο πᾶσα
 270 „ ἄρδεται ἠερίη· Διόθεν δέ μιν οὐ ποτε δέψει
 „ ὄμβρος· ἄλῃς προχοῇσιν ἀνασταχέουσιν ἄρουραι,
 „ Ἐνθεν δὴ τινα Φασὶ περίξ δια πᾶσαν ὀδεῦσαι·
 „ Εὐρώπην Ἀσίην τε, βίη καὶ κάρτει λαῶν
 „ σφωιτέρων, θάρσει τε πεποιθότα· μυρία δ' ἄσθῃ
 275 „ νάσσατ' ἐποیحόμενος, τὰ μὲν ἥ ποδι ναιετάουσιν,
 „ ἡὲ καὶ οὐ· πουλὺς γὰρ ἄδην ἐπενήνοθεν αἰὼν.
 „ Αἰτὰ γε μὴν ἔτι νῦν μένει ἔμπεδον, νύωνοί τε
 „ τῶνδ' ἀνδρῶν, οὓς ὅς γε καθίσσαστο ναιέμεν Αἴαν,
 „ οἱ δὴ τοι γραπτῷ πατέρων ἔθεν εἰρόνται,
 280 „ κύρβιας, οἷς ἐνὶ πᾶσαι ὁδοὶ καὶ πείρατ' ἔασιν
 „ ὑγρῆς τε, τραφερῆς τε, περίξ ἐπινισσομένοισιν.
 „ Ἔστι δέ τις παταμός, ὕπατον κέρας Ὀκεανοῖο,
 „ εὐρύς τε, προβαθύς τε, καὶ ὀλκᾷδε νηὶ περῆσαι·
 „ Ἴστρον μιν καλέοντες ἐκὰς διετεκμήραντο·
 285 „ ὅς δὴ τοι τείως μὲν ἀπείρονα τέμνεται ἄρουραν
 „ εἷς οἷος· πηγαὶ γὰρ ὑπὲρ πνοιάς Βορέιο
 „ Ῥιπαίοις ἐν ὄρεσιν ἀπόπροθι μορμύρουσιν.
 „ Ἀλλ' ὅπῃται Θρηκῶν Σκυθέων τ' ἐπιθήσεται οὐρους,
 „ ἔνθα διχῇ τὸ μὲν ἔνθα μετ' Ἰονίην ἄλλα βῆξει
 290 „ τῇδ' ὕδωρ, τὸ δ' ὀπίσθε βαθύν δια κόλπον ἵησι
 „ σχιζόμενος πόντου Τρινακρίου εἰσανέχοντα,
 „ γαίῃ ὃς ὑμετέρῃ παρακέχλινται, εἰ ἔτεον δὴ
 „ γαίης ὑμετέρης Ἀχελώϊος ἐξανήσιν.
 „ Ὡς ἄρ' ἔφη· τοῖσι δὲ θεὰ τέρας ἐλγυάλεξεν
 295 αἴσιον, ᾧ καὶ πάντες ἐπευφύμησαν ἰδόντες,
 „ στέλλεσθαι τήνδ' οἶμον. Ἐπιπρὸ γὰρ ὀλκός ἐτύχθη
 „ οὐρανίης ἀκτίνος, ὅπῃ καὶ ἀμείσιμον ἦε.
 „ Γηθίσουνοι δὲ Λύκαιο κατ' αὐτόθι παῖδα λιπόντες
 „ λαίφεσι πεπταμένοισιν ὑπεῖρ ἄλλα ναυτίλῳοντο,

- 230 κέκλειτο· δεινὰ δὲ παντὶ παρασχεδὸν ἤπνε λαῶ·
 “ εἰ μὴ οἱ κούρην αὐτάγρετον, ἥ ἀνὰ γαῖαν,
 „ ἡ πλωτῆς εὐρόντες ἔτ’ εἰν ἄλός οἰδματι νῆα,
 „ ἄξουσι, καὶ θυμὸν ἐνιπλήσει, μενεαίνων
 „ τίσασθαι, τάδε πάντα δαήσονται κεφαλῇσι,
 235 „ πάντα χόλον καὶ πᾶσαν ἐὴν ὑποδέγμενοι ἄτην.
 “Ὡς ἔφατ’ Αἰήτης· αὐτῷ δ’ ἐνὶ ἡματι Κόλχοι
 νῆας τ’ εἰρύσαντο, κα’ ἕρμενα νηυσὶ βάλοντο,
 αὐτῷ δ’ ἡματι πόντον· ἀνήιον· οὐδέ κε φαίης
 τόσσον νηῖτην στόλον ἔμμεναι, ἀλλ’ οἰωνῶν
 240 ἱλαδὸν ἄσπετον ἔθνος ἐπιβρομέειν πελάγεσσιν.
 Οἱ δ’ ἀνέμου λαίψηρά, θεῆς βουλῇσιν, αἴντος,
 “Ἦρης, ὅφρ’ ἔκιστα κακὸν Πελῖο δόμοισιν
 Αἰαίῃ Μήδεia Πελασγίδα γαῖαν ἴκοιτο,
 ἧοι ἐνὶ τριτάτῃ προμνήσια νηὶς ἔδῃσαν
 245 Παφλαγόνων ἀκτῇσι, πάροιθ’ “ Ἄλυος ποταμοῖο.
 “Ἡ γάρ σφ’ ἐξαποδάντας ἀρέσσασθαι θυέεσσιν
 ἠνώγει Ἑκάτην. Καὶ δὴ τὰ μὲν, ὅσσα θυελὴν
 κούρη πορσανέουσα τιτύσκετο, μήτε τις ἴστωρ
 εἴη, μήτ’ ἐμὲ θυμὸς ἐποτρύνειεν αἰεΐειν.
 250 ἄζομαι αὐδῆσαι· τὸ γέ μιν ἔδος ἐξέτι κείνου,
 ὄβρα θεῶ ἥρωες ἐπὶ ῥηγμῶσιν ἔδειμαν,
 ἀνδράσιν ὀφιγόνοισι μένει καὶ τῆμος ιδέσθαι.
 Λυτίκα δ’ Αἰσονίδης ἐμνήσατο, σὺν δὲ καὶ ὦλοι
 ἥρωες, Φινῆος, ὃ δὴ πλόον ἄλλον ἔειπεν
 255 ἐξ Αἴης ἔσσεσθαι· ἀνώιστος δ’ ἐτέτυκτο
 πᾶσιν ὁμῶς. “ Ἀργος δὲ λιλαιομένοις ἀγόρευσε.
 “ Νεύμεθ’ ἐς Ὀρχομενὸν, τὴν ἔχραεν ὕμμι περῆσαι
 „ νημερτῆς ὁδε μάχτις, ὅτῳ ξυνέβητε πάροιθεν.
 „ Ἔστιν γὰρ πλόος ἄλλος, ὃν ἀθανάτων ἱερῆες
 260 „ πέφραδον, οἱ Θήβης Τριτωνίδος ἐκγεγάασιν.
 „ Οὐπω τείρεα πάντα, τά τ’ οὐρανῷ εἰλίσσονται,
 „ οὐδέ τι πω Δαναῶν ἱερὸν γένος ἦεν ἀκοῦσαι
 „ πευθομένοις· οἷοι δ’ ἔσαν Ἀρκάδες Ἀπιδανῆες,
 „ Ἀρκάδες, οἱ καὶ πρόσθε Σεληγκαίης ὕδονται.

- 195 „κουριδίην· ἀτὰρ ὕμμα, Ἀχαιῖδός οὔα τε πάσης
 „αὐτῶν θ' ὕμειων ἐσθλὴν ἐπαρωγὸν ἐοῦσαν,
 „σώετε. Δὴ γάρ που, μάλ' οἶμαι, εἴσιν ἐρύξων
 „Αἰήτης ὁμάδῃ πόντονδ' ἔμειν ἐκ ποταμοῖο.
 „Ἄλλ' οἱ μὲν διὰ νηὸς, ἀμοιβαδὶς ἀνέρος ἀνήρ.
 200 „ἔζόμενος, πηδοῖσιν ἐρέσσετε· τοῖ δὲ βοείας
 „ἀσπίδας ἡμίσεις, δῆϊων θοὸν ἔχμα βολάων,
 „προσχόμενοι, νόστῳ ἐπαμύνετε. Νῦν ἐνὶ χερσὶ
 „παῖδας εὐούς, πάτρην τε φίλην, γελαροὺς τε τοκῆας
 „ἴσχομεν· ἡμετέρῃ δ' ἐπερείδεται Ἑλλάς ἐφορμῇ
 205 „ἥ ἐ κατηφείην, ἥ καὶ μέγα κῦδος ἀρεῖσθαι.
 „Ὡς φάτο, δυνέ τε τεύχε' ἀρήϊα· τοὶ δ' ἰάχυσαν
 „θεσπέσιον μεμαῶτες. Οὔδ' ἐξίφος ἐκ κολεοῖο
 „σπασσάμενος, πρυμναῖα νεὼς ἀπὸ πείσματος ἔκοψεν.
 „Ἄλχι δὲ παρθενικῆς κεκορυθμένος ἰθύντῃρι
 210 Ἀλκαίῳ παρέβασκεν· ἐπείγετο δ' εἰρεσίῃ νηῦς,
 „σπερχομένων ἄμοτον ποταμοῦ ἄφαρ ἐκτὸς ἐλάσσαι.
 „Ἦδη δ' Αἰήτη ὑπερήνορι πᾶσι τε Κόλχοις
 „Μηδείης περίπυστος ἔρως καὶ ἔργ' ἐτέτυκτο.
 „Ἔς δ' ἀγορὴν ἀγέροντ' ἐνὶ τεύχεσιν· ὅσσα τε πίνον
 215 κύματα χειμερίοιο κορύσσεται ἐξ ἀνέμοιο,
 „ἥ ὅσα φύλλα χαμᾶζε περικλαδέος πέσεν ὕλης
 „φυλλοχοφὸν ἐνὶ μνηί· — τίς ἂν τὰδε τηκμήραιτο; —
 „ὥς οἱ ἀπειρέσιοι ποταμοῦ παρεμέτρεον ὄχθας,
 „κλαῖ' γῇ μαιμῶντες· ὁ δ' εὐτίκτω ἐνὶ δίφρῳ
 220 Αἰήτης ἵπποισι μετέπρεπεν, οὗς οἱ ὅπασσεν
 „Ἥελιος, πνοιῇσιν ἐειδομένους ἀνέμοιο·
 „σκαίῃ μὲν θ' ἐνὶ χειρὶ σάκος δινωτὸν αἰείρων,
 „τῇ δ' ἐτέρῃ πεύκην περιμήκεια· παρ δὲ σὺν ἔλχος
 „ἀντικρὺ τετάνυστο πελώριον. Ἠνία δ' ἵππων
 225 γέντο χερσὶν Ἀψυρτος. Ἵπεκπρὸ δὲ πόντον ἔταμνε
 „νηὺς ἥδη, κρατεροῖσιν ἐπειγομένη ἐρέτῃσι,
 „καὶ μεγάλου ποταμοῖο καταβλώσκοντι βεῖθρῳ.
 „Αὐτὰρ ἀναξ' ἄτη πυλυπήμονι χεῖρας αἰείρας,
 „Ἥελιον καὶ Ζῆνα, κακῶν ἐπιμάρτυρας ἔργων,

- 160 θῆκεν ἔρεισάμενος· τὰ δ' ἀπείρουνα ποτλὸν ἐπίσω
κύνελα πολυπρέμενοιο διεξ ὕλης τεταίνυστο.
Ἔνθα δ' ἔμην χρύσειον ἀπὸ δρυὸς αἰνυτο κῶας,
κοίρης κεκλομένης· ἡ δ' ἔμπεδον ἐστηυῖα
φαρμάκῃ ἐψηχε θηρὸς κάρη, εἰσόκε δὴ μιν
- 165 αὐτὸς ἐὼν ἐπὶ νῆα παλιντροπάσθαι Ἰήσων
ἦνωγε, λείπεν δὲ πολύσκιον ἄλσος Ἀρσος.
Ὡς δὲ σεληναίην διχομήνιδα παρθένος αἰγλήν
ὑπόθεν ἐξανέχουσαν ὑπωρόφιος θαλάμοιο
λαπταλίῳ ἐανῶ ὑποίσχεται· ἐν δὲ οἱ ἦτορ
- 170 χαίρει δερκομένης καλὸν σέλας· ὥς τοτ' Ἰήσων
γηθόσυνος μέγα κῶας ἑαῖς ἐναεῖρατο χερσὶ·
καὶ οἱ ἐπὶ ξανθῇσι παρησίῃσι ἠδὲ μετώπῳ
μαρμαρυγῇ ληνέων φλογὶ εἴκελον ἵζεν ἔρευθος.
Ὅσση δὲ ρινὸς βοὸς ἦνιος, ἥ ἐλάφοιο
- 175 γίννεται, ἣν τ' ἀγρῶσται ἀχαιινέην καλέουσι,
τόσσον ἐὼν πάντῃ χρύσειον ἐφύπερθεν ἄωτον.
Βεβρίθει λήνεσσιν ἐπηρεφές· ἥλιθα δὲ χθών
αἰὲν ὑπὸ πρὸ ποδῶν ἀμαρύσσετο νισσομένεοιο.
Ἦιε δ' ἄλλοτε μὲν λαιῶ ἐπιειμένος ὤμφ
- 180 αὐχένος ἐξ ὑπάτοιο ποδηνεκές, ἄλλοτε δ' αὐτε
εἴλει ἀφασσόμενος· πέρι γάρ διεν, ὅφρα ἔμῃ τις
ἀνδρῶν ἢ θεῶν νοσφίσσεται ἀντιβολήσας.
Ἦὼς μὲν ὃ ἐπὶ γαῖαν ἐκίδνατο, τοὶ δ' ἐς ὅμιλον
ἵζον· θάμνησαν δὲ νέοι μέγα κῶας ἰδόντες
- 185 λαμπόμενον, στεροπῇ ἵκελον Διός. Ὄρτο δ' ἕκαστος
φαῦσαι ἐελδόμενος, δέχθαι τ' ἐνὶ χερσὶν ἐῆσιν.
Αἰσονίδης δ' αὐτοὺς μὲν ἐρήτυε, τῷ δ' ἐπὶ φᾶρος
κάεβαλε νηγάτεον· πρύμνῃ δ' ἐνεείσατο κούρην
ἀνθέμενος, καὶ τοῖον ἔπος μετὰ πᾶσιν εἶπε.
- 190 “Μηκέτι νῦν χάζεσθε, φίλοι, πάτρηνδε νέεσθαι.
,, Ἢδὴ γάρ χρεῖώ, τῆς εἵνεκα τήνδ' Ἀλεγεινὴν
,, ναυτιλίην ἐτλημεν, οἰζυὶ μοχθίζοντες,
,, εὐπαλέως κούρης ὑπὸ δῆνεσι κεκράανται.
,, Τὴν μὲν ἐγὼν ἐθάλευσαν ἀνάξομαι οἴκαδ' ἄποιτιν

- 125 βίβλητο, νεφέλη ἐναλίσκιον, ἥ τ' ἀνιόντος
 ἡελίου φλογερῇσιν ἐρέυδεται ἀκτίνεσσιν.
 Αὐτὰρ ἔγ' ἀντικρὺ περιμήκεα τεύατο δειρὴν
 ὄξυς αὐπνοῖσι προιδὼν ὕφης ὀφθαλμοῖσι
 νισσομένους, ῥοῖζει δὲ πελώριον· ἀμφὶ δὲ μακραί
- 130 ἥρνες ποταμοῖο, καὶ ἄσπετον ἶαχεν ἄλσος.
 Ἔκλυον οἱ καὶ ποτλὸν ἐκὰς Τιτηνίδος Αἴης
 Κολχίδα γῆν ἐνέμοντο, παρὰ προχοῇσι Λύκοιο,
 ὥς τ' ἀποκιδιάμενος ποταμοῦ κελάδοντος Ἀράξειω
 Φάσιδι· συμφέρεται ἱερὸν ῥόν· οἱ δὲ συνάμφω
- 135 Καυκασίην ἄλαδ' εἰς ἐν ἐλαυνόμενοι προχέουσι.
 Δείματι δ' ἐξέγγροντο λεχωίδες, ἀμφὶ δὲ παισὶ
 νηπιάχοις, οἵτε σφιν ὑπ' ἀγκαλίδεσσιν ἴανον,
 ῥοῖζω παῖδομένοισι, χεῖρας βάλλον ἀσχαλώωσαι.
 Ὡς δ' ὅτε τυφωμένης ὕλης ὑπερ αἰθαλόεσσαί
- 140 καπνοῖο στροφάλιγγες ἀπείριτοι εἰλίσσονται,
 ἄλλῃ δ' αἰψ' ἐτέρῃ ἐπιτίθεται αἰὲν ἐπιπρὸ
 νεύθεν εἰλίσγοισιν ἐπήορος ἔξανιούσα·
 ὥς τότε ἐκείνο πέλωρον ἀπειρεσίας ἐλέλιξε
 βυμβόνας ἀζαλέησιν ἐπηρεθεῖας φολίδεσσι.
- 145 Τοῖο δ' ἐλίσσομένοιο κατ' ὄμματος εἶσατο κούρη,
 ὕπνον ἀοσσητῆρα, θεῶν ὕπατον, καλέουσα
 ἠδελή ἐνοπῇ, θέλξαι τέρας· αὖε δ' ἀνασσαν
 νυκτιπόλον, χθονίην, εὐαντέα δοῦναι ἑφορμήν.
 Εἶπετο δ' Αἰσονίδης πεφοβημένος. Αὐτὰρ ὁ γ' ἦδη
- 150 οἶρῃ θελγόμενος δολιχὴν ἀνελύετ' ἄκανθαν
 γηγενέος σπείρης, μήκυε δὲ μυρία κύκλα,
 οἷον ὅτε βληχροῖσι κυλινδόμενον πελάγεσσι
 κῦμα μέλαν κωφὸν τε καὶ ἄβρομον· ἄλλὰ καὶ ἑμπερ
 ὕφου σμερδαλέην κεφαλὴν μενέαιεν ἀείρας
- 155 ἀμφοτέρους ὀλοῇσι περιπτύξαι γενέεσσιν.
 Ἦ δέ μιν ἀρκεύθοιο νέον τετμήοτι θαλάῳ,
 βάπτουσ' ἐκ κυκεῶνος ἀκήρατα φάρμακ' αἰδαῖς,
 ῥαῖνε κατ' ὀφθαλμῶν· περὶ τ' ἀμφὶ τε νήριτος ὁδμῇ
 φαρμάκου ὕπνον ἔβαλε· γένυν δ' αὐτῇ ἐνὶ χώρῃ

- 90 „ ποιῆσαι· μηδ' ἐνθεν ἐκαστέρῳ ὀρμηθεῖσαν
 „ χήτει κηδεμόνων ἐνοτὴν καὶ αἰκία θείης.
 Ἴσκεν ἀκηχεμένη· μέγα δὲ φρένες Αἰσονίδαο
 γήθεον· αἵψα δὲ μιν περὶ γούνασι πεπτηυῖαν
 ἦκ' ἀνκειρόμενος προσπτύζατο, θάρσυνέν τε·
- 95 “ Δαιμονίη, Ζεὺς αὐτὸς Ὀλύμπιος ὄρκιος ἔστω,
 „ Ἦρῃ τε Ζυγίῃ, Διὸς εὐνέτις, ἥ μὲν ἐμοῖαι
 „ κουριδίην σὲ δόμοισιν ἐνὶ θήσεσθαι ἄκοιτιν,
 „ εὐτ' ἂν ἐς Ἑλλάδα γαῖαν ἰκώμεθα νοστήσαντες.
 “ Ὡς ἤνδα, καὶ χεῖρα παρὰσχεδὸν ἤραρε χεῖρι
 100 δεξιτερὴν· ἥ δέ σφιν ἐς ἱερὸν ἄλσος ἀνώγει
 νῆα θοὴν ἐλάαν αὐτοσχεδόν, ὅφρ' ἐτι νύκτωρ
 κῶας ἐλόντες ἄγοιντο παρὲκ νόον Αἰήταο.
 “ Ἐνθ' ἔπος ἠδὲ καὶ ἔργον ὁμοῦ πέλεν ἐσσυμένοισιν.
 εἰς γάρ μιν βῆσαντες, ἀπὸ χθονὸς αὐτίκ' ἔωσαν
- 105 νῆα· πολὺς δ' ὀρυμαγδὸς ἐπείγομένων ἐλάτῃσιν
 ἦεν ἀριστήων· ἥ δ' ἔμπαλιν αἰσσοῦσα
 γαίῃ χεῖρας ἔτεινεν ἀμήχανος. Αὐτὰρ Ἴησων
 θάρσυνέν τ' ἐπέεσσι, καὶ ἴσχανεν ἀσχαλώσασιν.
 “ Ἥμος δ' ἀνέρες ὕπνον ἀπ' ὀφθαλμῶν ἐβάλοντο
- 110 ἀγρόται, οἳ τε κίνεσσι πεποιδύτες οὐ ποτε νύκτα
 ἄλκαυρον κνώσσουσιν, ἀλευάμενοι φάος ἡοῦς,
 μὴ πρὶν ἀμαλδύνη θηρῶν στίβον, ἠδὲ καὶ ὀδμὴν
 θηρείην, λευκῇσιν ἐνισκίμψασα βολῇσι·
 τῆμος ἄρ' Αἰσονίδης κούρη τ' ἀπὸ νηὸς ἔβησαν
- 115 ποιήεντ' ἀνὰ χῶρον, ἵνα κριοῦ καλέονται
 εὐναί, ὅτε πρῶτον κεκμηότα γούνατ' ἐκαμψε,
 νώτοισι φορέων Μινυήιον υἱ' Ἀθάμαντος.
 Ἐλγύθι δ' αἰθαλόεντα πίλεν βωμοῖο θέρμεθλα,
 ὅν ῥά ποτ' Αἰολίδης Διὶ Φυξίῳ εἷσατο Φρίξος,
- 120 ἐξῶν κεῖνο δέρας παλχοῦσεον, ὥς οἱ ἔειπεν
 “ Ἑρμείης πρόφρων ζυμβλήμενος — ἐνθ' ἄρα τοὺς γε
 “ Ἀργοῦ φραδμοσύνησιν ἀριστῆες μεθέηκαν.
 Τῷ δὲ δι' αἰτραπιτοῖρ μεθ' ἱερὸν ἄλσος ἵκοντο,
 φηγὸν ἀπειρεσίην διζημένῳ, ἥ ἔπει κῶας

- 55 Φοιταλέην ἐσιδοῦσα θεὰ ἐπεχέρατο Μῆνη
 ἄρπαλέως, καὶ τοῖα μετὰ φρεσὶν ἦσιν ἔειπεν.
 “Οὐκ ἄρ’ ἐγὼ μούνη μετὰ Λάτμιον ἔρος ἀλύσκω,
 „ οὐδ’ οἷη καλῶ περιδαίομαι Ἐνδυμίωνι·
 „ ἢ θαμὰ δὴ καὶ σείο κίον δολίησιν αἰοδαῖς
- 60 „ μνησασμένη Φιλότητος, ἵνα σκοτίῃ ἐνὶ νυκτὶ
 „ Φαρμάσσης εὐκηλός, ἃ τοι φίλα ἔργα τέτυκται.
 „ Νῦν δὲ καὶ αὐτὴ δῆθεν ὁμοίης ἔμμορες ἄτης·
 „ δῶκε δ’ ἀνιηρόν τοι Ἰήσωνα πῆμα γενέσθαι
 „ δαίμων ἀλγινόεις. Ἄλλ’ ἔρχεο, τέτλαθι δ’ ἔμψης,
- 65 „ καὶ πινυτή περ ἐοῦσα, πολύστονον ἄλγος αἰερεῖν.
 “Ὡς ἄρ’ ἔφη· τὴν δ’ αἶψα πόδες φέρον ἔκκονουσάν.
 ἀσπασίως δ’ ὄχθησιν ἐπήρθη ποταμοῖο,
 ἀντιπέτρην λεύσσουσα πυρὸς σέλας, ὄβρ’ αὖ τ’ αἰέθλου
 παννύχιοι ἥρωες ἐϋφροσύνησιν ἔδαιον.
- 70 Ὀξεῖη δ’ ἤπειτα διὰ κνέφας ὄρθια φωνῇ
 ὀπλότατον Φρίξοιο περαιόθεν ἤπυε παίδων,
 Φρόντιν· ὃ δὲ ζὺν ἐοῖσι κασιγνήτοις ὅπα κούρης
 αὐτῷ τ’ Αἰσονίῃ τεκμαίρατο· σῖγα δ’ ἐταῖροι
 θάμβεον, εὖτ’ ἐνόησαν ὃ δὴ καὶ ἐτήτυμον ἦε.
- 75 Τρεῖς μὲν ἀνήυσε, τρεῖς δ’, ὀτρύνοντος ὁμίλου,
 Φρόντις ἀμοιβήδην ἀντίαχεν· οἱ δ’ ἄρα τείως
 “Ἦρωες μετὰ τήνγε θοοῖς ἐλάασκον ἔρετμοῖς.
 Οὐ πῶ πείσματα νηὸς ἐπ’ ἠπείροιο περαιῆς
 βῆλ’ ἔβαν, ὃ δὲ κραιπνοὺς χέρσῳ πόδας ἦκεν Ἰήσων
- 80 ὑψοῦ ἀπ’ ἰκρίοφιν· μετὰ δὲ Φρόντις τε καὶ Ἄργος,
 υἱὲ δ’ ἄρα Φρίξου, χαμαῖς θύρον· ἢ δ’ ἄρα τούς γε,
 γούνων ἀμφοτέρησι περισχομένη, προσέειπεν.
 “Ἐκ με, φίλοι, ῥύσασθε δυσάμμορον, ὥς δὲ καὶ αὐτοῖς
 „ ὑμέας, Αἰήταο· πρὸ γὰρ τ’ ἀναφανδὰ τέτυκται
- 85 „ πάντα μάλ’, οὐδέ τι μῆχος ἰκάνεται. Ἄλλ’ ἐνὶ νηὶ
 „ φεύγωμεν, πρὶν τόνδε θοῶν ἐπιβήμεναι ἵππων.
 „ Δώσω δὲ χρύσειον ἐγὼ δέρος, εὐνήσασα
 „ φρουρὸν ὄφιν· τύνῃ δὲ θεοῦς ἐνὶ σοῖσιν ἐταῖροις,
 „ ζεῖνε, τεῶν μύθων ἐπιείστορας, οὓς μοι ἐπέστης,

- 20 Καί νύ καν αὐτοῦ τῆμος ὑπὲρ μύρον ὤλετο κούρη,
 Φάρμακα πασσαμένη, Ἥρης δ' ἀλίωσε μενοινάς,
 εἰ μή μιν Φρίξοιο θεὰ σὺν παισὶ φέβεσθαι
 ὤρσεν ἀτυζομένην· πτερόεις δέ οἱ ἐν φρεσὶ θυμός
 ἰάνθη· μετὰ δ' ἤγε παλίσσυτος ἀθρόα κύλπων
- 25 Φάρμακα πάντ' ἄμυδ' ἐκατεχέυατο Φωριαμοῖο.
 Κύσσε δ' εἶν τε λέχος, καὶ δικλίδας ἀμφοτέρωθεν
 σταθμούς, καὶ τοίχων ἐπαφήσατο, χερσὶ τε μακρὸν
 ῥηζαμένη πλόκαμον, θαλάμῳ μὴ μῆϊα μητρὶ
 κάθηπε παρθενίης, ἀδινῇ δ' ὀλοφύρατο Φωνῇ.
- 30 “ Τόνδε τοὶ ἀντ' ἐμέθεν ταναὸν πλόκον εἴμι λιπούσα,
 „ μήτερ ἐμὴ, χαίροις δὲ καὶ ἀνδράχ' ἀποδὼν ἰούσῃ·
 „ χαίροις Χαλκίοπῃ, καὶ πᾶς δόμοι. — Αἴθε σε πόντος,
 „ ζεῖνε, διέτ' ἔραϊσε, πρὶν Κολχίδα γαῖαν ἐκέσθαι!
 “ Ὡς ἄρ' ἔφη· βλεφάρων δὲ κατ' ἀθρόα δάκρυα χεῖεν.
- 35 Οἷη δ' ἀφνειοῖο διεκλυσθεῖσα δόμοιο
 ληϊάς, ἣν τε νέον πάτρης ἀπενόσφισεν αἴσα,
 οὐδέ νύ πω μογεροῖο πεπειρηται καμάτοιο,
 ἣ δ' ἔτ' ἀηδέσσουσα δῖης, καὶ δούλια ἔργα
 εἶσιν ἀτυζομένη χαλεπὰς ὑπὸ χεῖρας ἀνάσσης·
- 40 τοίη ἄρ' ἱμερόεσσα δόμων ἐξέσσυτο κούρη.
 Τῇ δὲ καὶ αὐτόματοι θυρῶν ὑπόειξαν ὀχῆες,
 ὠκείαις ἄφ' ὀβροῖ ἀναθρόσκοντες αἰοδαῖς.
 Γυμνοῖσι δὲ πόδεσσιν ἀνὰ στεινὰς θέεν οἶμους,
 λαίῃ μὲν χερὶ πέπλον ἐπ' ὀφρύσιν ἀμφὶ μέτωπα
- 45 στείλαμένη καὶ καλὰ παρήϊα, δεξιτερῇ δὲ
 ἄκρην ὑφ' ὅθι πέζαν ἀετράζουσα χιτῶνος.
 Καρπαλίμως δ' αἰδηλὸν ἀνὰ στίβον ἔκτοθε πύργῳ
 ἄστεος εὐρυχόροιο φόβῳ ἵκετ'· οὐδέ τις ἔγνω
 τήνδε φυλακτῆρων, λάθε δὲ σφέας ὄρμηθεῖσα.
- 50 Ἔνθεν ἔμην νηόνδε μάλ' ἐφράσατ'· οὐ γὰρ αἰδρὶς
 ἦεν ὁδῶν, θαμὴ καὶ πρὶν ἀλωμένη ἀμφὶ τε νεκρούς,
 ἀμφὶ τε δυσπαλέας ῥίζας χθονός, οἷα γυναῖκες
 Φαρμακίδες· τρομερῷ δ' ὑπὸ δείματι πάθητο θυμός.
 Τὴν δὲ νέον Τιτηνὴς ἀνερχόμενη περὰ τῆθεν

ΑΠΟΛΛΩΝΙΟΥ
ΑΡΓΟΝΑΥΤΙΚΩΝ
ΒΙΒΛΙΟΝ Δ.

- Αὐτὴ νῦν κάματόν γε, θεῶ, καὶ δήνεα κούρης
 Κολχίδος ἔννεπε, Μοῦσα, Διὸς τέκος. Ἡ γὰρ ἔμοιγε
 αμφασίη νόος ἔνδον ἐλίσσεται, ὄρμαίνοντι,
 ἢ μιν ἄτης πῆμα δυσίμερον, ἢ τό γ' ἐνίσπω
 5 Φύζαν αἰκελίην, ἣ κάλλιπεν ἔθνεα Κόλχων.
 Ἦτοι ὁ μὲν δῆμοιο μετ' ἀνδράσιν, ὅσσοι ἄριστοι,
 παννύχιος δόλον αἰπὺν ἐπὶ σφίσι μητιάσκειν
 οἶσιν ἐνὶ μεγάροισι, στυγερῶ ἐπὶ θυμὸν ἀέθλω
 Λιήτης ἄμοτον κεχολωμένος· οὐδ' ὅ γε πάμπαν
 10 θυγατέρων τάδε νόσφιν ἔων τελέεσθαι ἐώλπει.
 Τῇ δ' ἀλγεεινότατον κραδίη φόβον ἔμβαλεν Ἥρη.
 Τρέσσειν δ', ἥντε τις κούφη κεμᾶς, ἣν τε βαθεῖης
 τάρφεσιν ἐν ζυλόχοιο κυνῶν ἐφόβησεν ὁμοκλή.
 Αὐτίκα γὰρ νημερτές οὔσατο, μὴ μιν ἀρωγὴν
 15 ληθέμεν, αἵψα δὲ πᾶσαν ἀναπλήσειν κακότητα.
 Τάρβει δ' ἀμφιπόλους ἐπιϊστορας· ἐν δὲ οἱ ὄσσε
 πλῆτο πυρὸς, δεινὸν δὲ περιβρομέσκον ἀκουαί.
 Πυκνὰ δὲ λαυκανίης ἐπεμάσσατο, πυκνὰ δὲ κουριζέ
 ἱλκομένη πλοκάμους γοερῇ βρυχήσατ' ἀνίη.

- 1385 τοὺς δ', ἥδη καὶ ποσσὶν ἐπείγομένους ἐς ἄρηα.
 Ὡς δ' ὅπ' ἐστ', ἀγχ' οὖροισιν ἐγειρομένου πολέμοιο,
 δείσας γειομόρος, μὴ οἱ προτάμωνται ἀρούρας,
 ἄρπην εὐκαμπῇ νεοδηγέα χερσὶ μεμαρπώς,
 ὦμόν ἐπισπεύδων κείρει στάχυν, οὐδὲ βολῆσι
- 1390 μέμνει ἐς ὥραίν τερσήμεναι ἡελίοιο·
 ὥς τότε Γηγενέων κείρει στάχυν· αἵματι δ' ὄλκοι
 ἦν τε κρηναῖαι ἀμάραι πλήθοντο ῥοῇσι.
 Πίπτον δ', οἱ μὲν ὀκλάζ, τετρηχότα βῶλον ὁδοῦσι
 λαζόμενοι πρηνεῖς· οἱ δ', ἔμπαλιν· οἱ δ', ἐπ' ἀγοστῷ
- 1395 καὶ πλευροῖς, κήτεσσι δομὴν ἀτάλανται ἰδέσθαι.
 Ποῖοι δ' οὐτάμενοι, πρὶν ὑπὸ χθονὸς ἔχνος αἶραι,
 ὅσσον ἄνω προὔτυψαν ἐς ἥρα, τόσσον ἔραζε
 βριθόμενοι πλαδαροῖσι καρήκασιν ἡρήρειντο.
 Ἔρνεά που τοίως, Διὸς ἄσπετον ὁμδρῆσαντος,
- 1400 φυταλιῇ νεόθρεπτα κατημύουσιν ἔραζε,
 κλασθέντα ῥίζηθεν, ἀλωήτων πόνος ἀνδρῶν·
 τὸν δὲ κατηφείη τε καὶ οὐλοὸν ἄλγος ἰκάνει
 κλήρου σημαντῆρα φυτοτρόφον· ὥς τὸτ' ἀνακτος
 Αἰήταο βαρεῖαι ὑπὸ φρένας ἦλθον ἀνία.
- 1405 Ἦϊε δ' ἐς πτολίεθρον ὑπότροπος ἄμμιγα Κόλχοις,
 πορφύρων, ἥ κέ σφι θώτερον ἀντιόωτο.
 Ἦμαρ ἔδν, καὶ τῷ τετελεσμένος ἦεν αἰθλος.

- 1350 γνάμψε δὲ γούνῃτ' ἐλαφρὰ μέγαν δ' ἐνεπλήσατο θυμὸν
 ἀλκῆς, μαιμῶων συὶ' εἵκελος, ὅς ῥά τ' ὀδόντας
 θήγει θηρευτῆσιν ἐπ' ἀνδράσιν· ἄμφι δὲ πολλὰς
 ἀφρὸς ἀπὸ στόματος χαμαΐδς ῥέε χωρμένοιο.
 Οἱ δ' ἤδη κατὰ πᾶσαν ἀνασταχύνεσκον ἄρουραν
- 1355 Γηγενέες· Φρίξεν δὲ περὶ στιβαροῖς σακέεσσι,
 δούρασί τ' ἀμφιγούρις, κορύθεσσι τε λαμπομένησιν
 Ἄρης τέμενος Φθισιμυρότου· ἔκετο δ' αἶγλη
 νεῖοθεν Οὐλυμπόνδε δι' ἡέρος ἀστράπτουσα.
 Ὡς δ' ὅπῳτ' ἐς γαίαν πολέας νεφετοῖο πεσόντος
- 1360 ἄψ ἀπὸ χειμερίας νεφέλας ἐκτάσσαν αἴηται
 λυγαίη ὑπὸ νυκτὶ, τὰ δ' ἄθρ' αἶα πάντα φαάνθη
 τείρεα λαμπετόωντα διὰ κνίφας· ὥς ἄρα τοίγε
 λάμπον ἀναλδήσκοντες ὑπὲρ χθονός. Αὐτὰρ Ἴησων
 μνήσατο Μηδείης πολυκερδέος ἐννεσίαιων·
- 1365 λάζετο δ' ἐκ πεδίοιο μέγαν περιηγέα πέτρον,
 δεινὸν Ἐνυαλίου σόλον Ἄρεος· οὐ κέ μιν ἄνδρες
 αἰζήοι πίσυρες γαίης ὑπὸ τυτθὸν ἄειραν
 τὸν ῥ' ἀνὰ χεῖρα λαβὼν μάλα τηλόθεν ἔμβαλε μέσσοις
 αἰζῶς· αὐτὸς δ' ὑφ' ἐν σάκος ἔζετο λάθρη
- 1370 θαρσαλέως. Κόλχοι δὲ μέγ' ἴαχον, ὥς ὅτε πόντος
 ἴαχεν ἰζείησιν ἐπιβρομέων σπιλάδεσσι·
 τὸν δ' ἔλεν ἀμφασίῃ ῥιπῇ στιβαροῖο σόλοιο
 Αἰήτην. Οἱ δ', ὥστε θοοὶ κύνες, ἀμφιθορόντες,
 ἀπλήλους βρυχηδὸν ἐδήιον· οἱ δ' ἐπὶ γαῖαν
- 1375 μητέρα πίπτον ἑοῖς ὑπὸ δούρασιν, ἥυτε πεῦκαι
 ἢ δρύες, ὥς τ' ἀνέμοιο κατὰίκες δονέουσιν.
 Οἷος δ' οὐρανὸν πυρὸς ἀναπάλλεται ἀστήρ,
 ὀλκὸν ὑπαυγάζων, τέρας ἀνδράσιν, οἱ μιν ἰδῶνται
 μαρμαρυγῇ σκοτίοιο δι' ἡέρος αἰζάντα·
- 1380 τοῖος ἄρ' Αἰέονος υἱὸς ἐπέσσυτο Γηγενέεσσι.
 Γυμνὸν δ' ἐκ κολεοῖο φέρε ξίφος· οὐτα δὲ μίγδην
 αἰμών, πολέας μὲν ἐτ' ἐς νηδὺν λαγόνας τε
 ἡμίσεας ἀνέχοντας ἐς ἥερα· τοὺς δὲ, καὶ ἄχρη
 ὤμων τελλομένους· τοὺς δὲ, νέον ἐστηῶτας·

- 1315 Τυνδαρίδαι — δὴ γὰρ σφι πάλαι προπεφραδμένον ἦεν —
 ἀγχίμολον ζυγά οἱ πεδόθεν δόσαν ἀμφιβαλέσθαι.
 Αὐτὰρ ὅγ' εὖ ἐνέδησε λόφοις· μεσσηγὺ δ' αἰέρας
 χάλκειον ἰστοβοῆα, δοῇ συνάρασσε κορώνη
 ζεύγληθεν. Καὶ τῷ μὲν ὑπ' ἐκ πυρὸς ἄψ ἐπὶ νῆα
- 1320 χαζέσθην. Οἱ δ' ἄρ' αὖτις ἐλὼν σάκος ἀνέτετο νῶτα
 ἐξόπιθεν, καὶ γέντο βοῶν ἐμπλειον ὀδόντων
 πῆληκα βριαρὴν, δόρυ τ' ἄσχετον, ᾧ δ' ὑπὸ μίσσαι
 ἐργατίνης ὡς τίς τε Πελασγίδι νύσσειν ἀκαίην
 οὐτάζων λαγόνας· μάλα δ' ἐμπεδον εὖ ἀραρυῖαν
- 1325 τυκτὴν ἐξ ἀδάμαντος ἐπιθύνεσκεν ἐχέτλην.
 Οἱ δὲ τέως μὲν δὴ περὶώσια θυμαίνεσκον,
 λάβρον ἐπιπνέοντε πυρὸς σέλας· ὦρτο δ' αὐτμή,
 ἥτε βυκτάων ἀνέμων βρόμος, οὗς τε μάλιστα
 δειδιότες μέγα λαῖφος ἀλίπλοοι ἐστεῖλαντο.
- 1330 Διὸν δ' οὐ μετέπειτα κελευόμενοι ὑπὸ δουρὶ
 ἦσαν· ὀκρίεσσα δ' ἐρείκετο νεὶὸς ὀπίσσω,
 σχιζομένη ταύρων τε βίη κρατερῶ τ' ἀροτῆρι.
 Δεινὸν δ' ἐσμαράγευν ἄμυδις κατὰ ὦλκας ἀρότρου
 βύλακες ἀγνύμεναι ἀνδραχθεῖς· εἶπετο δ' αὐτὸς
- 1335 βαθμόν ἐπὶ στιβαρῶ πῖσας ποδί· τῇλε δ' εἰὼ
 βάλλεν ἀρηρομένην αἰεὶ κατὰ βῶλον ὀδόντας,
 ἐντροπαλιζόμενος, μή οἱ πάρος ἀντιάσειε
 Γηγενέων ἀνδρῶν ὀλοὸς στάχυσ· οἱ δ' ἄρ' ἐπιπρὸ
 χαλκείης χηλῆσιν ἐρειδόμενοι πονέοντο.
- 1340 Ἦμος δὲ τρίτατον λάχος ἡματος ἀναμένοιο
 λείπεται ἐξ ἡοῦς, καλέουσι δὲ κεκμηῶτες
 ἐργατῖναι γλυκερόν σφιν ἄφαρ βουλευτὸν ἰκέσθαι,
 τῆμος ἀρήροτο νεὶὸς ὑπ' ἀκαμάτῳ ἀροτῆρι,
 τετραγυῖς περ ἰούσα· βοῶν τ' ἀπελύετ' ἀροτρα,
- 1345 καὶ τοὺς μὲν πεδίονδε διεπτοίησε φέβεσθαι·
 αὐτὰρ ὅγ' ἄψ ἐπὶ νῆα πάλιν κίεν, ὅφρ' ἔτι κεινὰς
 Γηγενέων ἀνδρῶν ἴδεν αὐλακας. Ἀμφὶ δ' ἐταῖροι
 θάρσυνον μύθοισιν. Οἱ δ' ἐκ ποταμοῖο ῥοάων,
 κίτῃ ἀφυσσάμενος κυνὴ, σβέσειν ὕδατι δίψαν·

1280 νηὸς ἀποπροθορῶν· ἄμυδις δ' ἔλε παμφανόωσαν
χαλκείην πῆληκα θοῶν ἐμπλειον ὁδόντων,
καὶ ξίφος ἄμφ' ὤμοις, γυμνὸς δέμας, ἄλλα μὲν Ἄρει
εἴκελος, ἄλλα δὲ που χρυσάορι Ἀπόλλωνι.

Παπτήνας δ' ἀνὰ νειὸν, ἴδε ζυγὰ χάλκεα ταύρων,
1285 αὐτόγυόν τ' ἐπὶ τοῖς στιβαροῦ ἀδάμαντος ἄροτρον.
Χρίμψε δ' ἔπειτα κιῶν, παρὰ δ' ὄβριμον ἔλχος ἐπηξεν
ὀρθὸν ἐπ' οὐρίκῃ, κυνέην δ' ἀποκάττειτ' ἐρείσας.
Βῆ δ' αὐτῇ προτέρωσθε σὺν ἀσπίδι νήριτα ταύρων
ἰχνια μαστεύων· οἱ δ' ἐκποθεν ἀφρώστοιο

1290 κευθμῶνος χθονίου, ἵνα τε σφίσιν ἔσκε βόαυλα
καρτερὰ, λιγνυόεντι πέριξ εἰλυμένα καπνῷ,
ἄμφω ὁμοῦ προγέγοντο, πυρὸς σέλας ἀμπειόντος.
Ἔδδειςαν δ' ἤρωες ὅπως ἴδον — αὐτὰρ ὁ τοῦσγε,
εὖ διαβὰς, ἐπιόντας, ἅτε σπιλὰς εἰν ἀλὶ πέτρῃ

1295 μίμνει ἀπειρεσίῃσι δονεύμενα κύματ' αἰθέλαις.
πρὶς δὲ οἱ σάκος ἔσχεν ἐναντίον· οἱ δὲ μιν ἄμφω
μυκηθμῷ κρατεροῖσιν ἐνέπληξαν κεράεσσιν·
οὐδ' ἄρα μιν τυτθὸν περ ἀνώχλισαν ἀντίωπτες.
Ὡς δ' ὅτ' ἐνὶ τρητοῖσιν εὐβρύνοι χοάνοισι

1300 φῦσαι χαλκῆων ὅτε μὲν τ' ἀναμορμύρουσι,
πῦρ ὁλοὸν πιμπρᾶσαι, ὅτ' αὖ λήγουσιν αὐτμῆς,
δεινὸς δ' ἐξ αὐτῶν πέλεται βρόμος, ὅπποτ' αἶψῃ
νειόθεν· ὥς ἄρα τῷγε θοὴν φλόγα φυσιόωντες
ἐκ στομάτων ὁμάδουν, τὸν δ' ἄμφι τε δῆιον αἶθος

1305 βάρβαν ἅτε στεροπή· κούρης δὲ ἐφάρμακ' ἔρυτο.
Καὶ ῥ' ὅγε δεξιτεροῖο κέρας βοὸς ἄκρον ἐρύσας
εἶλκεν ἐπικρατέως παντὶ σθένει, ὅφρ' ἐπέλασσε
ζεύγλῃ χαλκείῃ, τὸν δ' ἐν χθονὶ κάεβαλεν ὀκλαῆς,
ῥίμφα ποδὶ κρούσας πόδα χάλκεον· ὥς δὲ καὶ ἄλλον

1310 σφῆλε γυνῆ ἐπιόντα, μὴ βεβωλημένον ὄρμῃ.
Εὐρύ δ' ἀποπροβαλὼν χαμάδις σάκος, ἐνθα καὶ ἐνθα
τῇ καὶ τῇ βεβαῶς ἄμφω ἔχε πεπτηῶτας
γούνασιν ἐν προτέρωσι, διὰ φλογὸς εἶδαρ ἐλυσθεῖς.
Θαύμασε δ' Αἰήτης σθένος ἀνέρος. Οἱ δ' ἄρα τείως

1245 τοῖος ἄρ' Αἰήτης Κίλχων ἀγὸς ἦεν ἰδέσθαι.

Τόφρα δὲ Μηδείης ὑποδημοσύνησιν Ἰήσων
Φάρμακα μυθήνας, ἡμὲν σάκος ἀμφεπάλυνεν,
ἠδὲ δόρυ βριαρὸν, περὶ δὲ ξίφος· ἀμφὶ δ' ἑταῖροι
πείρησαν τευχέων βεβημένοι, οὐδ' ἐδύναντο

1250 κεῖνο δόρυ γνάμψαι τυτθὸν γέ που· ἄλλα μάλ' αὐτῶς
ἀάγες κρατερεῖσιν ἐνεσκήκει παλάμησιν.

Αὐτὰρ ὁ τοῖς ἄμοτον κοτέων Ἀφαρξήϊος Ἰδας
κόψε παρ' οὐρίαχον μεγάλῳ ξίφει· ἄλτο δ' ἀκωκῇ,
βραίστηρ ἄκμονος ὥστε, παλιντυπεί· οἱ δ' ὀμάρησαν
1255 γηθόσυνοι ἥρωες, ἐπ' ἐλπωρῇσιν αἰέθλου.

Καὶ δ' αὐτὸς μετέπειτα παλύνετο· δῦ δὲ μιν ἀλκῇ
σμερδαλή, ἄφατός τε καὶ ἄτρομος· αἱ δ' ἐκάτερθε
χεῖρες ἐπεβρώσαντο περὶ σθένει σφριγώσσαι.
ὣς δ' ὅτ' ἀρήϊος ἵππος ἐελδόμενος πολέμοιο

1260 σκαρθμῷ ἐπιχρεμέδων κρούει πέδον, αὐτὰρ ὕπερθε
κυδιῶν ὀρθοῖσιν ἐπ' οὐασιν αὐχέν' αἰερεῖ·

τοῖος ἄρ' Αἰσονίδης ἐπαγαίετο κάρτει γυνίων.
πόδα δ' ἄρ' ἐνθα καὶ ἐνθα μετάρσιον ἵχνος ἐπαΐεν,
ἀσπίδα χαλκείην μελίην τ' ἐνὶ χερσὶ τινάσσων.

1265 Φαίης κε ζοφεροῖο κατ' αἰθέρος αἰτθουσας
χειμερίην στεροπὴν θαμινὸν μεταπαΐφασσίσσαι
ἐκ νεφέων, ὅτ' ἔπειτα μελάντατον ὄμβρον ἄγωνται.
Καὶ τότε ἔπειτ' οὐ δηρὸν ἐτι σχήσεσθαι αἰέθλων
μέδων· ἀτὰρ κληῖσιν ἐπισχερῶ ἰδρυνθέντες

1270 εἰμυφα μάλ' ἐς πεδίον τὸ Ἀρήϊον ἠπείγοντο.
Τόσσον δὲ προτέρῳ πέλεν ἄστεος ἀντιπέρηθεν,
ὅσσον τ' ἐκ βαλβίδος ἐπήβολος ἄρματι νύσσα
γίγνεται, ἐπὶ τὸ αἰέθλα καταφθιμένοιο ἄνακτος
κηδεμόνες πεζοῖσι καὶ ἱππῆεσσι τίθενται.

1275 Τέτμον δ' Αἰήτην τε καὶ ἄλλων ἐθνεα Κίλχων,
τοὺς μὲν Καυκασίοισιν ἐφισταάτας σκοπέλοισι,
τὸν δ' αὐτοῦ παρὰ χεῖλος ἐλίσσόμενον προταμοῖα.
Αἰσονίδης δ', ὅτε δὴ πρυμνήσια δῆσαν ἑταῖροι,
δὴ δα τότε ζῦν δουρὶ καὶ ἀσπίδι βαῖν' ἐς αἰέθλον,

- 1210 πῦρ ὑπένερθεν ἰεῖς, ἐπὶ δὲ μιγάδας χεῖρ' ἰοῦσας,
 Βριμῶ κικλήσκων Ἐκάτην ἐπαρωγὸν ἀέθλων.
 Καί γ' ὁ μὲν ἀλκαλέσας πάλιν ἔστιχεν· ἡ δ' αἰθούσα
 κευθμῶν ἐξ ὑπάτων δεινὴ θεὸς ἀντεβόλησεν
 ἱροῖς Αἰσονίδαο· περίξ δέ μιν ἔστεφάνωντο
- 1215 σμερδαλέοι δρυῖνοισι μετὰ πτόρδοισι δράκοντες·
 στράπτε δ' ἀπειρέσιον δαίδων σέλας· ἀμφὶ δὲ τήν γε
 ὀξεῖη ὑλακῇ χθόνιοι κύνες ἐφθέγγοντο.
 Πίσσα δ' ἔτρεμε πάντα κατὰ στίβον· αἱ δ' ὀλόλυξαν
 Νύμφαι ἑλειονόμοι ποταμηίδες, αἱ περὶ κείνῃ
- 1220 Φάσιδος εἰαμένην Ἀμαραντίου εἰλίσσονται.
 Αἰσονίδην δ' ἦτοι μὲν ἔλεν δέος, ἀλλὰ μιν οὐδ' ὥς
 ἐντροκαλιζόμενον πόδες ἔκφερον, ὅφρ' ἐτάροισι
 μίκτο κίων· ἦδη δὲ Φόως νιφόντος ὑπερθε
 Καυκάσου ἠριγενῆς Ἡὼς βάλεν ἀντέφουσα.
- 1225 Καὶ τότε ἄρ' Αἰήτης περὶ μὲν στήθεσσιν ἔειστο
 Δῶρηκα στάδιον, τὸν οἱ πόρην ἐξεναρίζας
 σφωίτερης Φλεγραῖον Ἄρης ὑπὸ χερσὶ Μίμαντα·
 χρυσεῖν δ' ἐπὶ κρατὶ κόρυν θέτο τετραφάληρον,
 λαμπομένην, οἷον τε περίτροχον ἔπλετο φέλλος
- 1230 ἡελίου, ὅτε πρῶτον ἀνέρχεται Ὠκεανοῖο.
 Ἄν δὲ πολὺρρῖνον νώμα σάκος, ἂν δὲ καὶ ἔσχος
 δεινὸν, ἀμαιομάκετον· τὸ μὲν οὐδέ τις ἄλλος ὑπέστη
 ἀνδρῶν ἡρώων, ὅτε κἀλλίπον Ἡρακλῆα
 τῆλε παρέξ, ὃ κεν οἶος ἐναντίβιον πολέμιζε.
- 1235 Τῷ δὲ καὶ ὠκυπόδων ἵππων εὐπηγέα δίφρον
 ἔσχε πέλας Φαέθων ἐπιβήμεναι· ἂν δὲ καὶ αὐτὸς
 βῆσατο, ῥυτήρας δὲ χερσὶν ἔχεν· Ἐκ δὲ πόλῃος
 ἤλασεν εὐρεῖαν κατ' ἀμαξιτὸν, ὥς κεν αἰέθλῳ
 παρστακίῃ· σὺν δὲ σφιν ἀπείριτος ἔσσυτο λαὸς.
- 1240 Οἷος δ' Ἰσθμίων εἴσι Ποσειδάων ἐς ἀγῶνα
 ἄρμασιν ἐμβεβαῖος, ἢ Ταίναρον, ἢ ὅγε Λέρνης
 ὕδωρ, ἢ κατ' ἄλσος Ἰαντίου Ὀλχιστοῖο,
 καὶ τε Καλαῦρειαν μετὰ δῆθ' ἅμα νίσσεται ἵπποις,
 πέτρην δ' Αἰμονίην, ἢ δένδρηντα Γεραιστόν·

- 1175 σὺν δὲ καὶ Αἰθαλίδην, ὅτ' αὖ κλυτὸν Ἑρμείας.
 Ἐὰν δ' ἴμεν, οὐδ' ἀλίωσαν ὁδὸν· πόρε δέ σφιν ἰούσαι
 κρείων Αἰήτης χαλεπὸν ἐς ἄεθλον ὁδόντας
 Ἄονιοιο δράκοντος, ὃν Ὀγγυγὴ ἐνὶ Θήβῃ
 Κάδμος, ὅτ' Εὐρώπην διζήμενος εἰσαφίκανε,
- 1180 πέφνεν, Ἀρητιάδι κρήνη ἐπίουρον ἔοντα,
 ἔνθα καὶ ἐννάαθη, πομπῇ βοῶν, ἣν οἱ Ἀπόλλων
 ὤπασε μαντοσύνησι προηγήμεραν ὁδοῖο.
 Τοῖς δὲ θεῶ Τριτωνίς, ὑπὲρ γενύων ἐλάσασα,
 Αἰήτη πόρε δῶρον ὁμῶς, αὐτῷ τε Φονήϊ.
- 1185 Καὶ ῥ' ὁ μὲν Ἄονιοισιν ἐνισκείρας πεδίοισι
 Κάδμος Ἀγηνορίδης ἐπὶ γηγενῇ εἵσατο λαόν,
 Ἄρεος ἀμύωντος ὅσοι ὑπὸ δαυρὶ λίποντο·
 τοὺς δὲ τίτ' Αἰήτης ἔπορεν μετὰ νῆα φέρεσθαι
 προφρονέως, ἔπει οὐ μιν οὔσατο πείρατ' ἄεθλου
- 1190 ἐξανύσειν, εἰ καὶ περ ἐπὶ ζυγὰ βουσί βάλαιτο.
 Ἥελιος μὲν ἄπωθεν ἔρεμνὴν δύνετο γαίαν
 ἐσπέριος, νεάτας ὑπὲρ ἄκρις Αἰθιοπῶν·
 Νυξ δ' ἔπποισιν ἔβαιβεν ἐπὶ ζυγὰ· τοὶ δὲ χαμεύνας
 ἔντυον ἥρωες παρὰ πείσμασιν. Αὐτὰρ ἴησων
- 1195 αὐτίκ', ἔπει ῥ' Ἑλίκης ἐϋφειγέος ἄστέρες ἄρκτον
 ἔκλιθεν, οὐρανὸν δὲ πανεύκηνος γένετ' αἰθήρ,
 βῆ ῥ' ἐς ἐρημαίην κλωπήϊος, ἥντε τις φῶρ,
 σὺν πᾶσι χρήεσσι· πρό γάρ τ' ἀλέγνυνεν ἑκαστα
 ἡμάτιος· θῆλυν μὲν οἶν, γάλα τ' ἔκτοθι ποίμνης
- 1200 Ἄργος ἰὼν ἤνεικε· τὰ δ' ἐξ αὐτῆς ἔλε νηός.
 Ἄλλ' ὅτε δὴ ἶδε χῶρον, ὅτις πάτου ἔκτοθεν ἦεν
 ἀνθρώπων, καθαρῇσιν ὑπεύδιος εἰαμένῃσιν,
 ἐνθ' ἦτοί πάμπρωτα λοίσσατο μὲν ποτάμοιο
 εὐαγέως θείοιο τέρεν δέμας· ἀμφὶ δὲ φᾶρος
- 1205 ἔσσατο κυάνεον, τὸ μὲν οἱ πάρος ἐγνυάλιζε
 Λημνιαῖς Ἰψικύλῃ, ἀδινῆς μνημήμιον εὐνῆς.
 Πηχύιον δ' ἄρ' ἔπειτα πέδῳ ἐνὶ βόθρον ὀρύξας
 νήησε σχίζας, ἐπὶ δ' ἀρνειοῦ τάμε λαιμόν,
 αὐτόν τ' εὖ καδύπερθε ταnúσσατο· δαΐε δὲ Φιτρονός,

- 1140 Η δ' οὐκ ἔτι κομιδῆς μιμήσκειτο, — τέρπετο γάρ οἱ
 θυμὸς ὁμῶς μορφῇ τε καὶ αἰμυλίοισι λόγοισιν, —
 εἰ μὴ ἄρ' Αἰσονίδης πεφυλαγμένος ὤφει περ ἠΐδα·
 “Ὀρῇ ἀποβλύσκειν, μὴ πρὶν Φάος ἡελίοιο
 „ δύνῃ ὑποφθάμενον, καὶ τις τὰ ἕκαστα νοήσῃ·
 1145 „ ὀδυρόμενος· αὐτὶς δ' ἀβολήσομεν ἐνθάδ' ἱόντες.
 “Ὡς τῷ γ' ἀπαλίων ἀγαναῖς ἐπὶ τόσσον ἔπεσσι
 πείρηθεν· μετὰ δ' αὖτε διέτμαγον· ἦτοι Ἰήσων
 εἰς ἐτάρους καὶ νῆα κεχαρμένους ὥρτο νέεσθαι·
 ἡ δὲ μετ' ἀμφιπόλους· αἱ δὲ σχεδὸν ἀντεβόλησαν
 1150 πᾶσαι ὁμοῦ· τὰς δ' οὐ τι περιπλομένας ἐνόησε.
 ψυχὴ γὰρ νεφέεσσι μεταχθονίῃ πεπότητο.
 Αὐτομάτοισι πόδεςσι θοῆς ἐπεβήσατ' ἀπήνης,
 καὶ ὃ ἑτέρῃ μὲν χειρὶ λάβ' ἠνία, τῇ δ' ἄρ' ἰμάσθλην
 δαιδαλέην, οὐρῆας ἐλαυνέμεν· οἱ δὲ πόλινδε
 1155 θύκον ἐπειγόμενοι ποτὶ δώματα. Τὴν δ' ἀνιοῦσαν
 Χαλκίειν περὶ παισὶν ἀκηχεμένη ἐρέεινεν·
 ἡ δὲ παλιντροπήσιν ἀμύχανος οὔτε τι μύθων
 ἔκλυεν, οὔτ' ἀνδῆσαι ἀνειρομένη λελήιτο.
 “Ἰξε δ' ἐπὶ χθαρμαλῶ σφέλαι κλιντῆρος ἐνερθε,
 1160 λέχρῃς ἐρρευσάμενῃ λαιῇ ἐπὶ χειρὶ παρειῇ·
 ὕγρα δ' ἐνὶ βλεφάροισι ἔχεν ὕμματα, πορφύρουσα
 οἷον ἔη κακὸν ἔργον ἐπιζυνύσατο βουλή.
 Αἰσονίδης δ' ὅτε δὴ ἐτάροισι ἐξαῦτις ἔμικτο
 ἐν χώρῃ, ὅθι τοῖσγε καταπρολιπὼν ἐλιάσθη,
 1165 ὥρτ' ἔναι σὺν τοῖσι, πίφαισκόμενος τὰ ἕκαστα,
 ἡρώων ἐς ἔμιλον· ὁμοῦ δ' ἐπὶ νῆα πέλασσαν.
 Οἱ δέ μιν ἀμφαγάπαζον, ὅπως ἴδον, ἐκ τ' ἐρέοντο.
 Αὐτὰρ ὃ τοῖς πάντεσσι μετένεπε δῖνεα κούρης,
 δεῖξέ τε φάρμακον αἰνόν· ὃ δ' οἶδεν οἷος ἐταίρων
 1170 Ἰδας ἦσ' ἀπάνευθε δακύν χόλον· οἱ δὲ δὴ ἄλλοι
 γηθόσυνοι, τῆμος μὲν, ἐπεὶ κλέφας ἐργαθε νυκτός,
 εὐκῆλοι ἐμέλοντο περὶ σφίσιν. Αὐτὰρ ἄμ' ἠοῖ
 πέμπον ἐς Αἴήτην ἵεναι, σπέρρον αἰτήσοντας
 ἄνδρες δύο, πρὸ μὲν αὐτὸν ἀρήφριλον Τελαμῶνα,

- 1105 “Ἐκτάδῃ που τάδε καλά, συνημοσύνας ἀλεγύνειν·
 „ Λιήτης δ’ οὐ τοῖος ἐν ἀνδράσιν, οἷον ἔειπας
 „ Μίνω Πασιφάης πόσιν ἔμμεναι· οὐδ’ Ἀριάδνῃ
 „ ἰσοῦμαι· τῷ μὴ τι φιλοξενίην ἀγόρευε.
 „ Ἀλλ’ οἷον τύνη μὲν ἔμευ, ὅτ’ Ἴωλκὸν ἵκηαι,
 1110 „ μνώεο· σείτο δ’ ἐγὼ, καὶ ἐμῶν ἀέκητι τοκήων,
 „ μνήσομαι. Ἐλθοι δ’ ἡμῖν ἀπόπροθεν ἢ τις ὅσσα,
 „ ἢ τις ἄγγελος ὄρνις, ὅτ’ ἐκλελάθοιο ἐμεῖο·
 „ ἢ αὐτὴν με ταχεῖαι ὑπὲρ πόντοιο φέροιεν
 „ ἔνθεν εἰς Ἴωλκὸν ἀναρπάξασαι ἄεθλαι,
 1115 „ ὄφρα σ’, ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἐλεγχείας προφέρουσα,
 „ μνήσω ἐμῇ ἰότητι πεφυγμένον. Αἶψα γὰρ εἶην
 „ ἀπροφάτως τότε σοῖσιν ἐφέστιος ἐν μεγάροισιν.
 „ Ὡς ἄρ’ ἔφη, ἔλεεινά καταπροχέουσα παρειῶν
 „ δάκρυα· τὴν δ’ ὅ γε δῆθεν ὑποβλήδην προσέειπε·
 1120 „ Δαιμονίη, κενεὰς μὲν ἔα πλάζεσθαι ἀέθλας,
 „ ὥς δὲ καὶ ἄγγελον ὄρνιν, ἐπεὶ μεταμῶνια βάζεις.
 „ Εἰ δέ κεν ἦθεα κεῖνα καὶ Ἐκτάδα γαῖαν ἵκηαι,
 „ τιμήσσω γυναῖξί καὶ ἀνδράσιν, αἰδοίη τε,
 „ ἔσσαι, οἷδὲ σε πάλιν θεὸν ὡς πορσάνεουσιν,
 1125 „ οὔνεκα τῶν μὲν παῖδες ὑπότροποι οἴκαδ’ ἵκοντο
 „ σῇ βουλῇ, τῶν δ’ αὖτε κασίγνητοί τε ἔται τε
 „ καὶ θαλεροὶ κακότητος ἄδην ἐσάωθεν ἀκοῦται,
 „ ἡμέτερον δὲ λέχος θαλάμοις ἐνὶ κουριδίῳσι
 „ πορσανέεις· οὐδ’ ἄμμε διακρινέει φιλότητος
 1130 „ ἄλλο, πάρος θάνατόν γε μεμορμένον ἀμφικαλύψαι.
 „ Ὡς φάτο· τῇ δ’ ἔντοσθε κατείδετο θυμὸς ἀκουῇ.
 „ Ἐμπης δ’ ἔργ’ αἰδήλα κατεβρίγῃσεν ἰδέσθαι.
 „ Σχετλίη! οὐ μὲν δηρὸν ἀπαρνήσεσθαι ἐμεῖον
 „ Ἐκτάδα ναιετάειν· ὥς γὰρ τότε μῆδετο Ἥρη,
 1135 „ ὄφρα κακὸν Πελλίῃ ἱερῇ ἐς Ἴωλκὸν ἵκοιτο
 „ Αἰαίῃ Μήδεια, λιποῦσά γε πατρίδα γαῖαν.
 „ Ἦδ’ ἂν ἀμφίπολοι μὲν ὀπιπτεύουσιν ἄκωδον
 „ σιγῇ ἀνιάζουσιν· ἐδεύετο δ’ ἡμεῖος ὥρη
 „ ἀφ’ οἴκονδε νέεσθαι ἐν μετὰ μητέρα κόρυνη.

- 1070 „ οὐνομα Μηδείης· ὦ δ' αὐτ' ἐγὼ ἄμφις ἰόντος
 „ μνήσομαι. Εἰπέ δέ μοι πρόφρων τόδε, πῇ τοι ἔασι
 „ δώματα, πῇ νῦν ἔνθεν ὑπεῖρ ἄλλα νηὶ περήσειε·
 „ ἢ νύ που ἄφνειοῦ σχεδὸν ἵζειαι Ὀρχομενοῖο,
 „ ἥ ἐ καὶ Αἰαίης νήσου πέλας; εἰπέ δέ κούρην,
 1075 „ ἦν τινα τήνδ' ὀνόμηνας ἀριγνώτην γεγαυῖαν
 „ Πασιφάης, ἣ πατρὸς ὁμόγυνος ἐστὶν ἱμοῖο.
 „ Ὡς φάτο· τὸν δέ καὶ αὐτὸν ὑπῆλπε δάκρυσι κούρης
 „ οὖλος Ἔρως, τοῖον δέ παραβλήδην ἔπος ἤυδα·
 „ Καὶ λήν οὐ νύκτας ὄδομαι, οὐδέ πώτ' ἤμαρ,
 1080 „ σεῦ ἐπιλήσσεσθαι, προφυγῶν μόνον, εἰ ἔτείν γε
 „ Φεύξομαι ἀσκηθῆς ἐς Ἀχαιῖδα, μηδέ τιν' ἄλλον
 „ Αἰήτης προβάλλῃσι κακώτερον ἅμμιν ἄεθλον.
 „ εἰ δέ τι ἡμετέρεην ἐξίδμεναι εὐαδε πάτρην,
 „ ἐξερέω· μάλα γάρ με καὶ αὐτὸν θυμὸς ἀνάγει.
 1085 „ Ἔστι τις αἰπεινοῖσι περιδρομος οὔρεσι γαῖα,
 „ κάμπαν ἐυβρῆνός τε καὶ εὐδοτος, ἔνθα Προμηθεὺς
 „ Ἰαπετιονίδης ἀγαθὸν τέκε Δευκαλίωνα,
 „ ὅς πρῶτος ποίησε κύλεις καὶ ἰδεῖματο νηοὺς
 „ ἀθανάτων, πρῶτος δέ καὶ ἀνθρώπων βασίλευσεν.
 1090 „ Αἰμονίην δὴ τήνγε περικτίονες καλέουσιν.
 „ Ἐν δ' αὐτῇ Ἰαωλκός, ἐμὴ πόλις, ἐν δέ καὶ ἄλλαι
 „ πολλαὶ ναιετάουσιν, ἵν' οὐδέ περ οὔνομ' ἀκούσαι
 „ Αἰαίης νήσου· Μινύην γε μὲν ἐρμηθέντα,
 „ Αἰολίδην Μινύην, ἔνθεν φάτις Ὀρχομενοῖο
 1095 „ δὴ ποτε Καδμείοισιν ὁμόριον ἄστνυ πολίσσαι.
 „ Ἀλλὰ τίη τάδε τοι μεταμῶνια πάντ' ἀγορεύω,
 „ ἡμετέρους τε δόμους, τηλεκλείτην τ' Ἀριάδην,
 „ κούρην Μίνωος, τόπερ ἀγλαὸν οὔνομα κείνην
 „ παρθενικὴν καλέεσκον ἐπῆρατον, ἦν μ' ἐρρεῖνεις;
 1100 „ Αἶθε γάρ, ὡς Θησῆι τότε ξυναρέσασατο Μίνω.
 „ ἄμφ' αὐτῆς, ὡς ἅμμι πατήρ τεός ἄρθμιος εἴη.
 „ Ὡς φάτο, μελιχίοισι καταφήχων ἑάροισι·
 „ τῆς δ' ἀλγεινόταται κραδίην ἐρέεσκον ἀνίαι,
 „ καὶ μιν ἐκκηχεμένη ἀδινῷ πρὸς πτόξατο μύθη.

- 1035 „ μουνογενῇ δ' Ἑκάτην Περσηίδα μελίσσειο,
 „ λείδων ἐκ δέπας σιμβλήϊα ἔργα μελίσσων.
 „ Ἐνθα δ' ἐπεὶ κε θεῶν μεμνημένος ἰλάσσηαι,
 „ ἄψ' ἀπὸ πυρκαϊῆς ἀναχάξῃ· μὴδὲ σε δοῦπος
 „ ἡ ἐποδῶν ὄρησι μεταστρεφθῆναι ὀπίσσω,
 1040 „ ἡ ἐκυνῶν ὕλακῃ, μὴ πως τὰ ἕκαστα κολουσας
 „ οὐδ' αὐτὸς κατὰ κόσμον εἰς ἐτάροισι πελάσσης.
 „ Ἦρι δὲ μυθήνας τόδε φάρμακον, ἧτ' ἀλοιφῇ,
 „ γυμνωθεὶς Φαίδρυε τεὸν δέμας· ἐν δὲ οἱ ἀλκῇ
 „ ἔσσειτ' ἀπειρεσίῃ, μέγα τε σθένος, οὐδὲ κε φαίης
 1045 „ ἀνδράσιν, ἀλλὰ θεοῖσιν ἰσαξίμεν ἀθανάτοισι.
 „ Πρὸς δὲ καὶ αὐτῷ δουρὶ σάκος πεπαλαγμένον ἔστω,
 „ καὶ ξίφος. ἔνθ' οὐκ ἂν σε διατμήξειαν ἀκῶκαί
 „ γηγενέων ἀνδρῶν, οὐδ' ἄσχετος αἵσσουσα
 „ φλόξ ὀλοῶν ταύρων. Τοῖός γε μὲν οὐκ ἐπὶ θηρὸν
 1050 „ ἔσσειαι, ἀλλ' αὐτῇμαρ ὅμως σύγε μὴ ποτ' ἀέθλου
 „ χάξῃ. Καὶ δέ τοι ἄλλο πυρὲξ ὑποθήσομ' ὄνειαρ.
 „ Αὐτίκ' ἐπὴν κρατεροὺς ζεύξης βόας, ὧκα δὲ πᾶσαν
 „ χερσὶ καὶ ἡγορῇ στυφελίῃ διὰ νειὸν ἀρόσσης,
 „ οἱ δ' ἤδη κατὰ ὦλκας ἀνασταχίωσι Γίγαντες,
 1055 „ σπειρομένων ὄφις ὄνοφερὴν ἐπὶ βῶλον ὀδόντων,
 „ αἳ κεν ὀρινομένους πολέας νειοῖρ δοκεύτης,
 „ λαῖδρη λαῶν ἄφες στιβαρώτερον· οἱ δ' ἂν ἐπ' αὐτῷ,
 „ καρχαρίαὶ κύνες ὥστε περὶ βρώμης, ὑλέκοιεν
 „ ἀπλήλους· καὶ δ' αὐτὸς ἐπείγῃο δημοτῆτος
 1060 „ ἰθῦσαι· τὸ δὲ κῶας ἐς Ἑλλάδα τοῖό γ' ἐκῆτι
 „ οἴσειαι ἐξ Αἴης τηλοῦ ποτὶ· νίσσεο δ' ἐμπης,
 „ ἢ φίλον, εἴ τι ἕαδεν ἀφορμηθέντι νέεσθαι.
 „ Ὡς ἂν ἔφη, καὶ σῖγα ποδῶν πάρος ὅσσε βαλοῦσα
 „ θεσπίσιον λιαροῖσι παρηίδα δάκρυσι δεῖε,
 1065 „ μυρομένη, ὅτ' ἔμελλεν ἀπὲρ ποδὶ ποδὸν εἶο
 „ πόντον ἐπιπλάγξασθαι· ἀνιερῷ δὲ μιν ἄντην
 „ ἐξαυτίς μύθῳ προσεφώνεεν, εἰλέ τε χειρὸς
 „ δεξιτερῆς· δὴ γάρ οἱ ἀπ' οἴθαλμούς λιπεν αἰδώς.
 „ Μνώεο δ', ἦν ἄρα δὴ ποδ' ὑπέρτροπος οἴκαδ' ἵκηαι.

- 1000 „ Ἄλλ' ἢ μὲν καὶ νηὸς, ἐπεὶ χόλον εὖνασε Μίνως,
 „ σὺν τῷ ἐφεζομένη, πάτρην λίπε· τὴν δὲ καὶ αὐτοὶ
 „ ἄθάνατοι φίλαντο, μέσῳ δὲ νῆϊ αἰθέρι τέκμων
 „ ἄστερές τε στέφανος, τὸν τε κλείουσ' Ἀριάδνης,
 „ πάννουχος οὐρανόισιν ἐλίσσεται εἰδώλοισιν —
- 1005 „ ὥς καὶ σοὶ θεόθεν χάρις ἔσσεται, εἴ κε σωθήης
 „ τόσσον ἀριστῶν ἀνδρῶν στόλον. Ἥ γὰρ ἔοικας
 „ ἐκ μορφῆς ἀγανῆσιν ἐπητείησι κεκάσθαι.
 „ Ὡς φάτο κυδαίνων· ἡ δ' ἔγκλιδ' ὅσσε βαλοῦσα
 νεκτάρειον μείδῃσ'· ἐχύθη δὲ οἱ ἐνδοθι θυμὸς
- 1010 αἰὲν ἀειρομένης, καὶ ἀνέδρακεν ὄμμασιν ἄντην·
 οὐδ' ἔχεν, ὅττι πάροιθεν ἔπος προτιμυθήσκητο,
 ἀλλ' ἄμυδις μενέαιεν αὐθάδ' ἀπ' ἀγορεύσαι.
 Πρὸς δ' ἀφειδήσασα θυώδεος ἔξελε μήτρη
 φάρμακον· αὐτὰρ ὅ γ' αἶψα χερσὶν ὑπὲρδεκτο γεγηθώς.
- 1015 Καὶ νῦν κέ οἱ καὶ πᾶσαν ἀπὸ στηθῶν ἀρύσασα
 ψυχὴν ἐλγυάλιξεν ἀγαλλομένη χατέοντι·
 τοῖος ἀπὸ ξανθοῦ καρήατος Αἰσονίδαο
 στρώπτεν Ἔρως ἠδ' αἶαν ἀπὸ φλόγα· τῆς δ' ἀμαρυγὰς
 ὀφθαλμῶν ἤρπαζεν· ἰαίνεται δὲ φρένας εἴσω
- 1020 τηκομένη, οἷον τε περὶ ῥοδέεσσιν ἑέρση
 τήκεται ἠήοισιν ἱαινομένη φαέεσσιν.
 „ Ἀμφ' αὖ δ' ἄλλοτε μὲν τε κατ' οὐδὲς ὄμματ' ἔρειδον
 αἰδόμενοι, ὅτε δ' αὖτις ἐπὶ σφίσι βάλλον ὀκωπὰς,
 ἱμνέον φαιδρῆσιν ὑπ' ὀφρύσι μειδιῶντες.
- 1025 ὥς δ' ἐπὶ δὴ τοίοισι μόλις προσπύζατο κόρυς.
 „ Φράζω νῦν, ὥς κέν τοι ἐγὼ μητίσομ' ἀρωγὴν.
 „ Εὖτ' αἶν δὴ μετιόντι πατὴρ ἔμους ἐλγυαλίξῃ
 „ ἐξ ὄφιοις γενῶν ὀλοοὺς σπείρασθαι ὀδόντας,
 „ δὴ τότε μέσσην νύκτα διαμοιρηδὰ φυλάξας,
- 1030 „ ἀκαμάτοιο ῥοῇσι λοισσάμενος ποταμοῖο,
 „ οἷος ἀνευθ' ἄλλων ἐνὶ φάρεσι κυανέοισι
 „ βόθρον ὀρύξασθαι περιγέα· τῷ δ' ἐνὶ θῆλυν
 „ ἀνεῖον σφάζειν, καὶ ἀδαίετον ὠμοτῆσαι,
 „ αὐτῷ πυρκαϊὴν εὖ νηήσας ἐπὶ βόθρῳ.

- 965 ἔσθενεν, ἅλ' ὑπένερθε πάγῃ πόδας. Αἱ δ' ἄρα τείως
ἀμφίπολοι μάλα πῦσαι ἀπὸ σφείων ἰλίαςθεν.
Τῷ δ' ἄνεψ' ἀναυδοὶ ἐφέστασαν ἀλλήλοισιν,
ἢ δρυσὶν, ἢ μακρῇσιν ξειδόμενοι ἐλάττησιν,
αἷ τε παρᾶσσον ἔκηλοι ἐν οὔρεσιν ἐρύζωνται,
970 νηνεμίη· μετὰ δ' αὖτις ὑπὸ ῥίπῃς ἀνέμοιο
κινύμεναι ὁμάδῃσαν ἀπείριτον· ὥς ἄρα τῷ γε
μέλῃον ἄλῃς φέγγεσθαι ὑπὸ πνοιῇσιν Ἑρωτος.
Γινῶ δέ μιν Αἰσονίδης ἄτῃ περιπεπτηυῖαν
θευμορίῃ, καὶ τοῖον ὑποσσαίνων φάτο μῦθον.
975 “Τίπτέ με, παρθενική, τόσον ἄξειαι, οἷον ἔντα;
,,οὐ τι ἐγὼν, οἳοί τε δυσανχέες ἅλῃοι ἔασιν
,,ἀνέρες, οὐδ', ὅτε περ πάτρη ἐνὶ ναιετάασκον,
,,ἦα πάρος. Τῷ μὴ με λίην ὑπεραίδω, κόυρη,
,,ἢ τι παρεξερέσθαι, ὅ τοι φίλον, ἢ τι φάσθαι.
980 “Ἄλ' ἔπει ἀλλήλοισιν ἰκάνομεν εὐμένεοντες
,,χώρῳ ἐν ἡγαθέῳ, ἵνα τ' οὐ θέμις ἔστ' ἀλιτέσθαι,
,,ἀμφοδὴν ἀγόρευε καὶ εἶρεο· μηδὲ με τερπνοῖς
,,Φηλιάσῃς ἐπέεσσιν, ἐπεὶ τ' ἰ πρῶτον ὑπέστης
,,αὐτοκασιγνήτῃ μενοεικέα φαρμακα δώσειν.
985 “Πρὸς σ' αὐτῆς Ἑκάτης μειλίσσομαι, ἠδὲ τοκῆων,
,,καὶ Διὸς, ὅς ξείνοισι ἰκέτῃσι τε χεῖρ' ὑπερίσχει·
,,ἀμφότερον δ', ἰκέτης ξεινός τέ τοι ἐνθάδ' ἰκάνω,
,,χρειοῖ ἀναγκαίῃ γοννούμενος. Οὐ γάρ ἄνευθεν
,,ὑμείων στονόνεντος ὑπέρτερος ἔσσομ' ἀέθλου.
990 “Σοὶ δ' ἂν ἔγωγ' ἵσταιμι χάριν μετόπισθεν ἀρωγῆς,
,,ἢ θέμις, ὥς ἐπέοικε διάνδιχα ναιετάοντας,
,,οὐνομα καὶ καλὸν τεύχων κλέος· ὥς δὲ καὶ ἅλῃοι
,,ἥρωες κλήσουσιν ἐς Ἑλλάδα νοστήσαντες,
,,ἥρώων τ' ἄλοχοι καὶ μητέρες, αἷ νύ που ἦδη
995 “ἡμέας ἠϊόνεσσιν ἐφεζόμεναι γούουσι,
,,τάων ἀργαλίας κεν ἀποσκαδάσειας ἀνίας.
,,Δὴ ποτε καὶ Θησῆα κακῶν ὑπελύσατ' ἀέθλων
,,παρθενική Μινωῖς εὐφρονέουσ' Ἀριάδνη,
,,ἣν ῥά τε Πασιφάη κόυρη τέκεν Ἥπυρίοιο.

- 930 τάν τις μεσσηγύς ἀνά πτερὰ κινήσασα
 ὕψου ἐπ' ἀκρεμόνων Ἦρης ἠνίκαπε βουλάς.
 “ Ἀκλειὴς ὁδε μάντις, ὅς οὐδ' ὅσα παῖδες ἴσασιν
 „ οἷδε νόψ φράσσασθαι, ὅθ' οὐνεκ οὔτε τι λαρὸν
 „ οὐτ' ἐρατὸν κούρη κεν ἔπος προτιμυθῆσαιτο
- 935 „ ἡϊθέω, εὐτ' ἂν σφιν ἐπήλυδες ἄλλοι ἔπωνται.
 „ Ἐγροῖς, ὧ κακόμαντι, κακοφραδές· οὐδέ σε Κύπρις,
 „ οὐτ' ἀγανοὶ φιλέοντες ἐπιπνέουσιν Ἑρωτες.
 „ Ἴσκειν ἀτεμβομένη· μεῖδῃσε δὲ Μύψος ἀκούσας
 ὁμφὴν οἰωνοῖο θεήλατον, ὧδέ τ' ἔειπε·
- 940 “ Τύνη μὲν νηὸνδε θεῶς ἴθι, τῷ ἐνὶ κούρῃ
 „ δῆεις, Αἰσονίδῃ· μάλα δ' ἠπὶ ἀντιβολήσεις,
 „ Κυπρίδος ἐννεσίης, ἥ τοι συνέριδος ἀέθλων
 „ ἔσσεται, ὡς δὴ καὶ πρὶν Ἀγηνορίδης φάτο Φινεύς.
 „ Νῶϊ δ', ἐγὼν Ἄργος τε, δεδεδυμένοι εὐτ' ἂν ἵκηαι,
- 945 „ τῷδ' αὐτῷ ἐνὶ χώρῳ ἐπισσόμεθ'· οἴοθι δ' αὐτὸς
 „ λίσσέ μιν πυκινόισι παρατροπέων ἐπέεσσιν.
 Ἦ ῥα περιφραδέως, ἐπὶ δὲ σχεδὸν ἦνεον ἄμφω.
 Οὐδ' ἄρα Μηδείης θυμὸς τράπετ' ἄλλα νοῆσαι,
 μελπομένης περ ἕμῳ· πᾶσαι δέ οἱ, ἦν τιν' ἀδύρου
- 950 μολπὴν, οὐκ ἐπὶ δῆρὸν ἐφῆνδανον ἐψιάσθαι.
 Ἀλλὰ μεταλλήγεσκεν ἀμήχανος, οὐδέ ποτ' ὕσσιν
 ἀμφιπόλων μεθ' ὅμιλον ἔχ' ἀτρέμας· ἐς δὲ κελεύθου
 τηλόσε πάπταινεσκε, παρακλίνουσα παρειάς.
 Ἦ θαμὰ δὴ στηθέων ἐάγη κέαρ, ὅπότε δοῦπον
- 955 ἦ ποδὸς ἦ ἀνέμοιο παραθρέξαντα δοᾶσαι. —
 Αὐτὰρ ὅγ' οὐ μετὰ δῆρὸν ἐλδομένη ἐφαάνθη,
 ὕψος ἀναδρώσκων, ἄτε Σείριος Ὠκεανῶϊ,
 ὅς δὴ τοι καλὸς μὲν, ἀρίζηλός τ' ἐσιδέσθαι
 ἀντέθει, μήλοισι δ' ἐν ἄσπετον ἦκεν οἷζύν·
- 960 ὡς ἄρα τῇ καλὸς μὲν ἐπήλυθεν εἰσορῆσθαι
 Αἰσονίδης, κάματον δὲ δυσίμερον ὥρσε Φαανδεῖς.
 Ἐκ δ' ἄρα οἱ κραδίη στηθέων πέσεν, ὄμματα δ' αὐτῇ
 ἔχλυσαν· θερμὸν δὲ παρηΐδας εἴλεν ἔρευθος.
 Γοῖνατα δ' οὐτ' ὀπίσω, οὔτε προπάροιθ' αἶραι

- 895 „ τάων, αἱ τοπάρουθεν ἐπημάτιαι ἀγέροντο.
 „ Ἀλλ' ἐπεὶ οὖν ἰκόμεσθα, καὶ οὐ νύ τις ἄλλος ἐπεισιν,
 „ εἰ δ' ἄγε, μολπῇ θυμὸν ἀφειδείως κορέσωμεν
 „ μειλίχῃ, τάδε καλὰ τερείνης ἄνθεα ποίης
 „ λεζάμεναι· τότ' ἐκείτ' αὐτὴν ἀπονεισόμεθ' ὥρην.
- 900 „ Καὶ δέ κε σὺν πολέεσσιν ὀνείασιν οἴκαδ' ἰκοσθε
 „ ἤματι τῷ, εἴ μοι συναρέσσεται ἥδε μενοινή.
 „ Ἀργος γάρ μ' ἐπέεσσι παρατρέπει, ὥς δέ καὶ αὐτὴ
 „ Χαλκιοῖα· — τὰ δὲ σῖγα νόψ' ἔχειτ' εἰσαΐδυσται
 „ ἐξ ἐμέθεν, μὴ πατρὸς ἐς οὐατα μῦθος ἵκηται. —
- 905 „ Τὸν ξεινὸν με κέλονται, ὅτις περὶ βουσίην ὑπέστη,
 „ δῶρ ἀποδεξαμένην, ὀλοῶν ῥύσασθαι ἀέθλων.
 „ Αὐτὰρ ἐγὼ τὸν μῦθον ἐπήνεον, ἥδε καὶ αὐτὸν
 „ κέκλωμαι εἰς ὤπην, ἐτάρων ἀπο μῦνον, ἰχέσθαι,
 „ ἔφρα τὰ μὲν δασόμεσθα μετὰ σφίσιν, εἴ κεν ὀπάσσοι
- 910 „ δῶρα φέρων, τῷ δ' αὖτε κακώτερον ἄλλο πόρωμεν
 „ Φαρμακον. Ἀλλ' ἀπογόσφι πέλεσθ' ἐμοί, εὖτ' ἂν ἵκηται.
 „ Ὡς ἡνῦδα· πάσῃσι δ' ἐπὶ κλωπος ἦνδανε μῆτις.
 „ Αὐτίκα δ' Αἰσονίδην ἐτάρων ἀπονόσφιν ἐρύσσαι
 „ Ἀργος, ὅτ' ἤδη τήνδε κασιγνήτων ἐσάκουσεν
- 915 „ ἡερίην Ἑκάτης ἱερὸν μετὰ νηὸν ἰούσαν,
 „ ἦγε διὲν πεδίου· ἅμα δὲ σφίσιν εἶπετο Μόψος
 „ Ἀμπυκίδης, ἐσθλὸς μὲν ἐπιπροφανέντας ἐνίσπειν
 „ οἰωνούς, ἐσθλὸς δὲ συνευφράσασθαι ἰούσιν.
 „ Ἐνθ' οὐπω τίς τοῖος ἐπὶ προτέρων γένετ' ἀνδρῶν,
- 920 „ οἷθ' ὅσοι ἐξ αὐτοῦ Διὸς γένος, οὔθ' ὅσοι ἄλλων
 „ ἀθανάτων ἦρωες ἀφ' αἵματος ἐβλάστησαν,
 „ οἷον Ἰήσωνα θῆκε Διὸς δάμαρ ἤματι κείνῳ,
 „ ἡμῖν ἐσάντα ἰδεῖν, ἥδε προτιμυθήσασθαι.
 „ Τὸν καὶ παπταίνοντες ἐθάμβεον αὐτοὶ ἐταῖροι
- 925 „ λαμπόμενον χαρίτεσσιν· ἐγήθησεν δὲ κελεύθῳ
 „ Ἀμπυκίδης, ἥδη που οἰσάμενος τὰ ἕκαστα.
 „ Ἔσθε δέ τις πεδίοιο κατὰ στίβον ἐγλύθε νηοῦ
 „ αἰγείρος φύλλοισιν ἀπειρεσίοις κομώσας,
 „ τῇ δαμά δὴ λακέρυζαι ἐπηνλίζοντο κορῶναι.

- 860 ἑπτά μὲν ἀενάοισι ληεσσαμένη ὑδάτεσσιν,
 ἑπτάκι δὲ Βριμῷ κουροτρόφον ἀκαλέσασα,
 Βριμῷ νυκτιπόλον, χθονίην, ἐνέροισιν ἀνάσσαν,
 λυγαίῃ ἐν νυκτὶ, σὺν ὀρφναίοισι φάρεσσι.
 Μυκηθμῷ δ' ὑπένερθεν ἱερμνὴ σείετο γαῖα,
- 865 ῥίξῃς τεμνομένης Τιτηνίδος· ἔστανε δ' αὐτὸς
 Ἰαπετοῖο πάϊς ὀδύνη πέρι θυμὸν ἀλύων.
 Τὸν ὃ' ἦγ' ἔξανελούσα θυώδει κάτθετο μήτηρ,
 ἣ τε οἱ ἀμβροσίοισι περὶ στήθεσσιν ἔερτο.
 ἐκ δὲ θύραζε κιοῦσα θοῆς ἐπεβήσατ' ἀπῆνης·
- 870 σὺν δὲ οἱ ἀμφίπολοι δοῖαι ἐκάτερθεν ἔβησαν.
 Αὐτὴ δ' ἠνί' ἔδεκτο, καὶ εὐποίητον ἱμάσθλην
 δεξιτερῇ, ἔλαεν δὲ δι' ἄστεος· αἱ δὲ δὴ ἄλλαι
 ἀμφίπολοι, πείρινθες ἐφαπτόμεναι μετ' ἅπισθε,
 τρώχων εὐρεῖαν κατ' ἀμαξίτον· ἂν δὲ χιτῶνας
- 875 λεπταλέους λευκῆς ἐπιγουνίδος ἄχρῃς ἄειρον.
 Οἷη δὲ λιαροῦσιν ἐφ' ὕδασι Παρθενίῳ,
 ἥ καὶ Ἀμνισοῖο ληεσσαμένη ποταμοῖο,
 χρυσεῖοις Λητωῖς ἐφ' ἄρμασιν ἔστηνῦα,
 ὑπείαις κεμάδεσσι διεξελάσῃσι κολῶνας,
- 880 τηλόθεν ἀντιόωσα πολυκνίσσου ἐκατόμῃς·
 τῇ δ' ἄρμα Νύμφαι ἔπονται ἀμορβέδες, αἱ μὲν ἐπ' αὐτῆς
 ἀγρόμεναι πηγῆς Ἀμνισίδος, αἱ δὲ δὴ ἄλλαι
 ἄλσεα καὶ σκοπιάς πολυπίδακας· ἀμφὶ δὲ θῆρες
 κνυζηθμῷ σάινουσιν ὑποτρομέοντες ἰοῦσαν·
- 885 ὥς αἱ γ' ἐσσεύοντο δι' ἄστεος· ἀμφὶ δὲ λαοὶ
 εἶκον, ἀλευάμενοι βασιλῆϊδος ὄμματα κούρης.
 Αὐτὰρ ἔπει πύλιος μὲν εὐδμήτους λίπ' ἀγυιάς,
 γῆν δ' εἰσαφίκανε διέκ πεδίων ἐλάουσα,
 δὴ τότε εὐτροχάλοιο κατ' αὐτόθι βῆσατ' ἀπῆνης
- 890 ἱεμένη, καὶ τοῖα μετὰ δμῳῇσιν ἔειπεν.
 «ὦ φίλαι, ἧ μέγα δὴ τι παρήλιτον, οὐδ' ἐνόησα
 ,, μὴ ἴμεν ἀλλοδαποῖσι μετ' ἀνδράσιν, οἷτ' ἐπὶ γαῖαν
 ,, ἡμετέρεην στρωφῶσιν. Ἀμῆχανίη βεβόληται
 ,, πᾶσα πόλις· τὸ καὶ οὐ τις ἀνῆλυθε δεῦρο γυναικῶν

- 825 Ἐνθα κασιγνήτους μὲν ἔτ' αὐτόθι μείναι ἀνώγει
 Ἄργος, ἵνα Φράζονται νόον καὶ μῆδεα κούρης·
 αὐτὸς δ' αὖτ' ἐπὶ νῆα κίε προπάραιδε λιασθεῖς.
 Ἥ δ' ἐπεὶ οὖν τὰ πρῶτα φαινομένην ἶδεν ἥω
 παρ'Θενική, ξανθὰς μὲν ἀνήφατο χερσὶν ἐδείρας,
- 830 αἱ οἱ ἄτρημελή καταειμέναι ἡερίζοντο,
 αὐσταλέας δ' ἔψησε παρηΐδας· αὐτὰρ ἄλοιοι
 νεκταρὴν Φαιδρύνει' ἐπὶ χρεῖα· δύνε δὲ πέπλον
 καλὸν, εὐγνάμπτουσιν ἀρηράμενον περόνησιν·
 ἀμβροσίῳ δ' ἐφύπερθε καρήατι βῆκε καλύπτρην
- 835 ἀργυφέν. Αὐτοῦ δὲ δόμοις ἐνὶ δινεύουσα
 στεῖβε πέδον, λήθη ἄχέων τὰ οἱ ἐν ποσὶν ἦε
 θισπέσι, ἅλλα τ' ἔμελλεν ἀεζήσεσθαι ὀπίσσω. —
 Κέκλετο δ' ἀμφικόλοισιν, αἱ οἱ δυοκαίδεκα πᾶσαι
 ἐν προδόμῳ θαλάμοιο θυώδεος ὑλίζοντο,
- 840 ἥλικες, οὐπω λέκτρα σὺν ἀνδράσι πορσύνουσαι,
 ἑσσυμένως οὐρῆας ὑποζεύξασθαι ἀπήνη,
 οἳ κέ μιν εἰς Ἑκάτης περικαλλέα νηὸν ἄγοιεν.
 Ἐνθ' αὖτ' ἀμφίπολοι μὲν ἐφοπλίζεσκον ἀπήνην·
 ἡ δὲ τέως γλαφυρῆς ἐξείλετο Φωριαμοῖο
- 845 φάρμακον, ὅρρά τε φασὶ Προμήθειον καλέεσθαι·
 τῷ εἴ κ' ἐννυχίοισιν ἀρεσσάμενος θυέεσσι
 Δαίρην μουχογένειαν, ἶόν δέμας ἐκμαίνοιο,
 ἦτ' ἂν ὄγ' οὔτε κ' εἴοι ῥηκτὸς χαλκοῖο τυπῆσιν,
 οὔτε κεν αἰδομένῳ πυρὶ εἰκάδοι· ἀλλὰ καὶ ἀλκῇ
- 850 λωϊτέρος κεῖν ἤμαρ ὁμῶς κάρτει τε πέλοιτο.
 Πρωτοφύες τέ γ' ἀνέσχε, καταστάζαντος ἔραζε
 αἵματοῦ ὤμηστέω κνημαῖς ἐνὶ Καυκασίοισιν
 αἵματόεντ' ἰχῶρα Προμηθεῖος μογεροῖο.
 Τοῦ δ' ἦτοι ἄνδρος μὲν ὅσον πήχυιον ὑπερθε,
 855 χοροῖη Κωρυκίῳ ἱκελον πρόκω, ἐξεφαάνθη,
 καυλοῦσιν διδύμοισιν ἐπήγορον· ἡ δ' ἐνὶ γαίῃ
 ταρκὶ νεοτμήτῳ ἐναλιζίῃ ἔπλετο ῥίζα.
 Τῆς, οἷν τ' ἐν ὄρεσσι κελαινὴν ἐκμάδα φηγοῦ,
 Κασπῇ ἐν κόχλῳ ἀμήσατο φαρμάσσεσθαι,

- 790 „ ἥ καὶ πασσαμένη φαιστήρια φάρμακα θυμοῦ.
 „ Ἀλλὰ καὶ ὡς φθιμένη μοι ἐπιπλήζουσιν ὀπίσσω
 „ κερτομίας· τηλοῦ δὲ πόλιν περὶ πᾶσα βοήσει
 „ πότμον ἐμόν· καὶ κεν με διὰ στόματος φορέουσαι
 „ Κολχίδες ἄλλυδις ἄλλαι αἰεκέα μωμήσονται·
- 795 „ ἥ τις κηδομένη τόσον ἀνέρος ἀλλοδαποῖο
 „ κάτθανεν, ἥτις δῶμα καὶ οὐς ἥσχυε τοκήας,
 „ μαργοσύνη εἶξασα. Τί δ' οὐκ ἐμόν ἔσσεται αἴσχος;
 „ Ὡς μοι ἐμῆς ἄτης! Ἦτ' ἂν πολὺ κέρδιον εἴη
 „ τῇδ' αὐτῇ ἐν νυκτὶ λιπεῖν βίον ἐν θαλάμοισι
- 800 „ πότμῳ ἀνωίστω, κάκ' ἐλέγχεα πάντα φυγοῦσαν,
 „ πρὶν τάδε λωθήεντα καὶ οὐκ ὀνομαστὴν τελέσσαι.
 „ Ἦ, καὶ φωριαμὸν μετεκίαθεν, ἥ ἐνὶ ποσσὶ
 „ φάρμακά οἱ, τὰ μὲν ἐσθλά, τὰ δὲ φαιστήρι, ἔκειτο.
 „ Ἐνθιμένη δ' ἐπὶ γούνατ' ὀδύρετο. Δεῦτε δὲ κόλπους
- 805 „ ἄλληκτον δακρύοισι, τὰ δ' ἔρρεεν ἀστεγὲς αὐτως,
 „ αἶν' ἐλαφυρομένης τὸν ἐόν μόρον. Ἴετο δ' ἦγε
 „ φάρμακα λέξασθαι θυμοφθόρα, ὅφρα πάσαιτο.
 „ Ἦδὴ καὶ δεσμούς ἀνελύετο φωριαμοῖο,
 „ ἐξελέειν μεμανυῖα δυσάμμορος· αἰπὰ οἱ ἄφνω
- 810 „ οὐκ ἐλποῖν στυγεροῖο κατὰ φρένας ἤλαθ' Αἶδα.
 „ Ἦσχετο δ' ἀμφασίῃ δηρὸν χρόνον, ἀμφὶ δὲ πᾶσαι
 „ θυμηδεῖς βιότοιο μεληδόνες ἰνδάλλοντο.
 „ Μνήτατο μὲν τερπνῶν, ὅσ' ἐνὶ ζωῷσι πέλονται,
 „ μνήσασθ' ὀμηλικίης περιγητέος, οἷά τε κούρη·
- 815 „ καὶ τέ οἱ ἥελιος γλυκίων γένετ' εἰσοράσσαι,
 „ ἥ πάρος, εἰ ἐτεόν γε νόῳ ἐπεμαίεθ' ἔκαστα.
 „ Καὶ τὴν μὲν ῥα πάλιν σφετέρων ἀποκαίψετο γούνων,
 „ Ἦρης ἐννεσίῃσι μετάρτρος, οὐδ' ἔτι βουλαῖς
 „ ἄλῃ δοιάζεσκεν· ἐέλδετο δ' αἶψα φανῆναι
- 820 „ ἥω τελομένην, ἵνα οἱ θελκτήρια δαίη
 „ φάρμακα συνθεσίῃσι, καὶ ἀντήσειεν ἐς ὤπην.
 „ Πυκνὰ δ' ἀνὰ κληῖδας ἑὼν λύεσκε θυράων,
 „ αἰγλήν σκεπτομένη· τῇ δ' ἀσπάσιον βάλε φέλος
 „ Ἥριγενῆς, κίνυντο δ' ἀνὰ πτολίεθρον ἕκαστοι.

- 1105 "Ἐλλάδι που τὰδε καλά, συνημοσύνας ἀλεγύνει·
 ,, Λήτης δ' οὐ τοῖος ἐν ἀνδράσιν, οἷον ἔειπας
 ,, Μίνω Πασιφάης πόσιν ἔμμεναι· οὐδ' Ἀριάδην
 ,, ἰσοῦμαι· τῷ μὴ τι φιλοξενίην ἀγόρευε.
 ,, Ἄλ' οἷον τύνη μὲν ἐμεῦ, ὅτ' Ἴωλκὸν ἵκηαι,
 1110 ,, μνώεο· σείο δ' ἐγὼ, καὶ ἐμῶν ἀέκητι τοκήων,
 ,, μνήσομαι. Ἐλθοι δ' ἡμῖν ἀπὸπροθεν ἢ τις ὄσσα,
 ,, ἢ τις ἄγγελος ὄρνις, ὅτ' ἐκλελάθοιο ἐμεῖο·
 ,, ἢ αὐτὴν με ταχεῖαι ὑπὲρ πόντοιο φέροιεν
 ,, ἐνθενδ' εἰς Ἴαωλκὸν ἀναρπάξασαι ἄελλαι,
 1115 ,, ὄφρα σ', ἐν ὀφθαλμοῖσιν ἐλεσχείας προφέρουσα,
 ,, μνήσω ἐμῇ ἰότητι πεφυγμένον. Αἴθε γὰρ εἴην
 ,, ἀπροφάτως τότε σοῖσιν ἱφίστιος ἐν μεγάροισιν.
 ,, Ὡς ἄρ' ἔφη, ἐλσεινὰ καταπροχέουσα παρειῶν
 δάκρυα· τὴν δ' ὅ γε δῆθεν ὑποβλήδην προσέειπε·
 1120 "Δαιμονίη, κενεὰς μὲν εἰς πλάζεσθαι ἀέλλας,
 ,, ὥς δὲ καὶ ἄγγελον ὄρνιν, ἐπεὶ μεταμῶνια βάζεις.
 ,, Εἰ δὲ κεν ἦθεα κεῖνα καὶ Ἐλλάδα γαῖαν ἵκηαι,
 ,, τιμήεσσα γυνάκιζι καὶ ἀνδράσιν, αἰδοίη τε,
 ,, ἔσσεαι, ἰοιδέ σε πάσῃσι θεὸν ὡς πορσανέουσιν,
 1125 ,, οὔνεκα τῶν μὲν παῖδες ὑπὸτροποι οἴκαδ' ἵκοντο
 ,, σῇ βουλῇ, τῶν δ' αὖτε κασίγνητοί τε ἔται τε
 ,, καὶ θαλεροὶ κακότητος ἄδην ἐσάωθεν ἀκοῖται.
 ,, ἡμέτερον δὲ λέχος θαλάμοις ἐνὶ κουριδίοισι
 ,, πορσανέεις· οὐδ' ἄμμε διακρινέει φιλότῃτος
 1130 ,, ἄλλο, πάρος θάνατόν γε μεμορμένον ἀμφικαλύψαι.
 ,, Ὡς φάτο· τῇ δ' ἔντοσθε κατεΐθετο θυμὸς ἀκουῇ.
 ,, Ἐμπης δ' ἔργ' αἰδέηλα κατεβρίγησεν ἰδέσθαι.
 Σχετλίη! οὐ μὲν δηρὸν ἀπαρνήσεσθαι ἐμεῖον
 Ἐλλάδα ναιετάειν. ὥς γὰρ τότε μῆδετο Ἥρη,
 1135 ὄφρα κακὸν Πελίῃ ἱερὴν εἰς Ἴωλκὸν ἵκοιτο
 Αἰαίῃ Μήδεϊα, λιποῦσά γε πατρίδα γαῖαν.
 ,, Ἦδη δ' ἀμφίπολοι μὲν ὀπιπτεύουσαι ἄπωθεν
 σιγῇ ἀνιάζεσκον· ἐδέετο δ' ἡμαρτος ὥρη
 ἄψ οἰκόνδε νέεσθαι ἐνν' μετὰ μητέρα κόρην.

- 1070 „ οὐνομα Μηδείης· ὦ, δ' αὐτ' ἐγὼ ἀμφὶς ἔντος
 „ μνήσομαι. Εἰπέ δέ μοι πρόφρων τόδε, πῇ τοι ἔασι
 „ δάματα, πῇ νῦν ἔνθεν ὑπεῖρ ἄλλα νηὶ περήσεις·
 „ ἥ νύ που ἀφνειοῦ σχεδὸν ἵζεαι Ὀρχομενοῖο,
 „ ἔε καὶ Αἰαίης νήσου πέλας; εἰπέ δέ κούρην,
 1075 „ ἥν τινα τήνδ' ὀνόμηνας ἀριγνώτην γεγαυῖαν
 „ Πασιφάης, ἥ πατὸς ὁμόγυνος ἐστὶν ἐμοῖο.
 „ Ὡς φάτο· τὸν δέ καὶ αὐτὸν ὑπῆλτε δάκρυσι κούρης
 „ οὔλος Ἔρως, τοῖον δέ παραβλήδην ἔπος ἤνδα·
 „ Καὶ λίην οὐ νύκτας οὔμαι, οὐδέ ποτ' ἤμαρ,
 1080 „ σεῦ ἐπιλήσασθαι, προφυγὼν μῆρον, εἰ ἔτεόν γε
 „ φεύξομαι ἀσκηδῆς ἐς Ἀχαιῖδα, μηδέ τιν' ἄλλον
 „ Αἰήτης προβάλησι κακώτερον ἅμμιν ἄεθλον.
 „ εἰ δέ τι ἡμετέρην ἐξιδμέναι εὐαδε πάτρην,
 „ ἐξερέω· μάλα γάρ με καὶ αὐτὸν θυμὸς ἀνάγει.
 1085 „ Ἔστι τις αἰπεινοῖσι περιδρομος οὔρεσι γαῖα,
 „ κάμπαν ἐυβρηνός τε καὶ εὐβότος, ἔνθα Προμηθεὺς
 „ Ἰαπετιονίδης ἀγαθὸν τέκε Δευκαλίωνα,
 „ ὅς πρῶτος ποίησε πόλεις καὶ ἐδείματο νηοὺς
 „ ἀθανάτων, πρῶτος δέ καὶ ἀνθρώπων βασίλευσεν.
 1090 „ Αἰμονίην δὴ τήν γε περικτίονες καλέουσιν.
 „ Ἐν δ' αὐτῇ Ἰαωλκός, ἐμὴ πόλις, ἐν δέ καὶ ἄλλαι
 „ ποταὶ ναιετάουσιν, τῶν οὐδέ περ οὔνομ' ἀκοῦσαι
 „ Αἰαίης νήσου· Μινύην γε μὲν ἔρμηξέντα,
 „ Αἰολίδην Μινύην, ἔνθεν φάτις Ὀρχομενοῖο
 1095 „ δὴ ποτε Καδμείοισιν ἑμοῦριον ἄστν πολίσσαι.
 „ Ἀλλὰ τίη τάδε τοι μεταμῶνια πάντ' ἀγορεύω,
 „ ἡμετέρους τε δόμους, τηλεκλείτην τ' Ἀριάδην,
 „ κούρην Μίνως, τόπερ ἀγλαὸν οὔνομα κείνην
 „ παρθενικὴν καλέεσκον ἐπήρατον, ἥν μ' ἔρεεινεις;
 1100 „ Αἶθε γάρ, ὥς Θησῆϊ τότε ξυναρέσσατο Μίνως.
 „ ἀμφ' αὐτῆς, ὥς ἅμμι πατήρ τεὸς ἄρθμιος εἴη.
 „ Ὡς φάτο, μιλχιλοῖσι καταψήχων ἑάροισι·
 „ τῆς δ' ἀλεγεινόταται κρηδὴν ἔρζεσκον ἀνία,
 „ καὶ μιν ἀκηχεμένη ἀδιν' προσπτόξατο μύθη.

- 1035 „μουνογενῇ δ' Ἑκάτην Περσηίδα μελίσσειο,
 „λείβων ἐκ δέπας σιμβλήϊα ἔργα μελισσῶν.
 „Ἐνθα δ' ἐπεὶ κε θεῶν μεμνημένος ἰλάσσηται,
 „ἄψ' ἀπὸ πυρκαϊῆς ἀναχάξω· μὴδ' σε δοῦπος
 „ἢ ποδῶν ὄρσησι μεταστρεφθῆναι ὀπίσω,
 1040 „ἢ κυνῶν ὕλακῃ, μὴ πως τὰ ἕκαστα κολουῖσας.
 „οὐδ' αὐτὸς κατὰ κόσμον ἐοῖς ἐτάροισι πελάσσης.
 „Ἦρι δὲ μυθήνας τόδε φάρμακον, ἦντ' ἀλοιφῇ,
 „γυμνωθεὶς φαίδρυε τεὸν δέμας· ἐν δέ οἱ ἀλκῇ
 „ἔσσετ' ἀπειρεσίῃ, μέγα τε σθένος, οὐδέ κε φαίης
 1045 „ἀνδράσιν, ἀλλὰ θεοῖσιν ἰσαζέμεν ἀθανάτοισι.
 „Πρὸς δὲ καὶ αὐτῷ δουρὶ σάκος πεπαλαγμένον ἔστω,
 „καὶ ξίφος. ἔνθ' οὐκ ἂν σε διατμήξειαν ἀκῶκαί
 „γῆγενέων ἀνδρῶν, οὐδ' ἄσχετος αἵψουσα
 „φλόξ' ὀλοῶν ταύραν. Τοῖός γε μὲν οὐκ ἐπὶ δῆρὸν
 1050 „ἔσσεαι, ἀλλ' αὐτῇμαρ· ὅμως σύγε μὴ ποτ' ἀέθλου
 „χάξω. Καὶ δέ τοι ἄλλο παρὲξ ὑποθήσομ' ὄνειαρ.
 „Αὐτίκ' ἐπὴν κρυτεροῦς ζεύξης βόας, ὧκα δὲ πᾶσαν
 „χερσὶ καὶ ἡνιόχῃ στυφελίῃ δια νειὸν ἀρόσσης,
 „οἱ δ' ἤδη κατὰ ὠλκας ἀνασταχίωσι Γίγαντες,
 1055 „σπειρομένων ὄφις δυοφερὴν ἐπὶ βῶλον ὀδύντων,
 „αἳ κεν ὀρινόμενους πολέας νειοῖο δοκεύσης,
 „λαῖσθῃ λαῶν ἄφες στιβαρώτερον· οἱ δ' ἂν ἐπ' αὐτῷ,
 „καρχαρέει κύνες ὥστε περὶ βρώμης, ὀλέκοιεν
 „ἀλλήλους· καὶ δ' αὐτὸς ἐπείγῃο δημοτῆτος
 1060 „ἰθῦσαι, τὸ δὲ κῶας ἐς Ἑλλάδα τοῖό γ' ἐκῆτι
 „οἴσεται ἐξ Αἴης τηλοῦ ποδί· νίσσοο δ' ἐμπης,
 „ἢ φίλον, εἴτε ἕαδεν ἀφορμηθέντι νέεσθαι.
 „Ὡς αἶψ' ἔφη, καὶ σῖγα ποδῶν πάρος ὕσσε βαλοῦσα
 „θεσπίσιον λιαροῖσι παρηίδα δάκρυσι δέυει,
 1065 „μυρομένη, ὅτ' ἔμελλεν ἀπὸ προδὶ ποδῶν ἐεῖο
 „πόντον ἐπιπλάγξασθαι· ἀνιρῷ δὲ μιν ἄντην
 „ἐξαυτίς μύθῳ προσεφώνεεν, εἰλέ τε χειρὸς
 „δεξιτερῆς· δὴ γάρ οἱ ἀπ' οὐθαλμούς λῖπεν αἰδώς.
 „Μένωο δ', ἦν ἄρα δὴ ποδ' ὑπέρτερος οἰκᾷδ' ἔκῃαι.

- 1000 „ Ἄλ' ἡ μὲν καὶ νηὸς, ἐπεὶ χόλον εὖναισε Μίνως,
 „ σὺν τῷ ἐφεζομένη, πάτρην λίπε· τὴν δὲ καὶ αὐτοὶ
 „ ἀθάνατοι φίλαντο, μέσῳ δὲ νῆι αἰθέρι τέκμων
 „ ἀστερόεις στέφανος, τόν τε κλείουσ' Ἀριάδνης,
 „ πᾶννυχος οὐρανίοισιν ἐλίσσεται εἰδώλοισιν —
- 1005 „ ὥς καὶ σοι θεοῖσιν χάρις ἔσσεται, εἴ κε σωῶσης
 „ τόσσον ἀριστήων ἀνδρῶν στόλον. Ἥ γὰρ εἰκας
 „ ἐκ μορφῆς ἀγανῆσιν ἐπητείησι κεκάσθαι.
 „ Ὡς φάτο κυδαίνων· ἡ δ' ἐκκλιδὼ ὅσσε βαλοῦσα
 „ νεκτάρειον μείδῃσ'· ἐχύθη δὲ οἱ ἐνδοθι θυμὸς
- 1010 αἶψα αἰερομένης, καὶ ἀνέδρακεν ὄμμασιν ἄντην·
 „ οὐδ' ἔχεν, ὅ ττι πάροιθεν ἔπος προτιμυθήσασκε,
 „ Ἄλ' ἄμυδις μενέαιεν ἀοιδέα πάντ' ἀγορεύσαι.
 „ Προπρὸ δ' ἀφειδήσασα θυώδεος ἔξελε μήτρης
 „ Φάρμακον· αὐτὰρ ὅ γ' αἶψα χεροῖν ὑπέδεκτο γεγηθῆαι.
- 1015 Καὶ νῦν κέ οἱ καὶ πᾶσαν ἀπὸ στηθεῶν ἀρύσασα
 „ ψυχὴν ἐγυάλιζεν ἀγαλλομένη χατέοντι·
 „ τοῖος ἀπὸ ξανθοῖο καρήματος Αἰσονίδαο
 „ στράπτειν Ἔρως ἠδέϊαν ἀπὸ φλόγα· τῆς δ' ἀμαρυγῆς
 „ ὀφθαλμῶν ἤρπασεν· ἰαίνεται δὲ φρένας εἴσω
- 1020 τηκομένη, οἷον τε περὶ ῥοδέεσσιν ἱέρση
 „ τήκεται ἠέροισιν ἱαινομένη φαέεσσιν,
 „ Ἀμφ' ὃ δ' ἄλλοτε μὲν τε κατ' οὐδὲος ὄμματ' ἔρειδον
 „ αἰδόμενοι, ὅτε δ' αὖτις ἐπὶ σφίσι βάλλον ὀπωπᾶς,
 „ ἱμερόεν Φαιδρῆσιν ὑπ' ὀφρύσι μειδιῶντες,
- 1025 ὥς δ' ἔθ' δὴ τοίοισι μόλις προσπτύζατο κόρυς.
 „ Φράζεο νῦν, ὥς κέν τοι ἐγὼ μητίσομ' ἀρωγὴν.
 „ Εὖτ' ἂν δὴ μετιόντι πατὴρ ἑμὸς ἐγυάλιξῃ.
 „ ἐξ ὅφιος γενῶν ὀλοοὺς σπεύρασθαι ὀδόντας,
 „ δὴ τότε μέσσην νύκτα διαμοιρηδὰ φυλάξας,
- 1030 „ ἀκαμάτοιο ῥῶσιν λοισσάμενος ποταμοῖο,
 „ οἷος ἀνευθ' ἄλλων ἐνὶ φάρεσι κυανέοισι
 „ βρόττον ὀρύξασθαι περιηγέα· τῷ δ' ἐνὶ θῆλυν
 „ ἀγνεῖον σφάζειν, καὶ ἀδαίετον ὠμοτετῆσαι,
 „ αὐτῷ πυρκαϊὴν εὖ νηήτας ἐπὶ βρότῳ.

- 965 ἔσθενεν, ἅλ' ὑπέρειθε πάγῃ πόδας. Αἶ δ' ἄρα τείως
ἁμφίπολοι μάλα πᾶσαι ἀπὸ σφείων ἤλκασθεν.
Τῷ δ' ἄνεω καὶ ἀναυδοὶ ἐφέστασαν ἀλλήλοισιν,
ἣ δρυσὶν, ἣ μακρῇσιν ἐειδόμενοι ἤλαττησιν,
αἶ τε παρᾶσσον ἔκηλοι ἐν οὐρεσιν ἐβρίζωνται,
- 970 νηνεμῆ· μετὰ δ' αὖτις ὑπὸ ῥίπῃς ἀνέμοιο
κινύμεναι ὁμάδῃσαν ἀπείριτον· ὥς ἄρα τῷ γε
μέλῳ ἄλῃς φθίγγασθαι ὑπὸ πνοιῇσιν Ἔρωτος.
Γυνὴ δέ μιν Αἰσονίδης ἄτῃ περιπεπτηυῖαν
θευμορίῃ, καὶ τοῖον ὑποσσαίνων φάτο μῦθον.
- 975 “Τίπτε με, παρθενικῇ, τόσον ἄξειαι, οἷον ἔοντα;
,,οὐ τι ἐγὼν, οἷοί τε δυσανχέες ἄλῃοι ἔασιν
,,ἀνέρες, οὐδ', ὅτε περ πάτρη ἐνὶ ναιετάασκον,
,,ἦα πάρος. Τῷ μὴ με λῆν ὑπεραίδεο, κούρη,
,,ἣ τι παρεξερέσθαι, ὅ τοι φίλον, ἥ τι φάσθαι.
- 980 ,,Ἄλ' ἐπεὶ ἀλλήλοισιν ἐκάνομεν εὐμενέοντες
,,χῶρῳ ἐν ἡγαθέῳ, ἵνα τ' οὐ θέμις ἔστ' ἀλιτέσθαι,
,,ἁμφαδίην ἀγόρευε καὶ εἶρεο· μηδὲ με τερπνοῖς
,,Φηλιάσῃς ἐπέεσσιν, ἐπεὶ τὶ πρῶτον ὑπέστης
,,αὐτοκασιγνήτῃ μανοεικέα φαρμακα δάσειν.
- 985 ,,Πρὸς σ' αὐτῆς Ἐκάτης μειλίσσομαι, ἥδὲ τοκήων,
,,καὶ Διὸς, ὅς ξείνοισι ἐκέτησ' ἑοῖα χεῖρ ὑπερίσχει·
,,ἁμφοτέρων δ', ἐκέτης ξεινός τέ τοι ἐνθάδ' ἐκάνω,
,,χρειοῖ ἀναγκαίῃ γονοῦμένος. Οὐ γάρ ἄνευθεν
,,ὑμείων στονόεντος ὑπέρτερος ἔσσομ' ἀέθλου.
- 990 ,,Σοὶ δ' ἂν ἔγωγ' εἰσαίμι χάριν μετόπισθεν ἀρωγῆς,
,,ἣ θέμις, ὥς ἐπέοικε διάνδιχα ναιετάοντας,
,,οὐνομα καὶ καλὸν τεύχων κλῆος· ὥς δὲ καὶ ἄλλοι
,,ἥρωες κλήσουσιν ἐς Ἑλλάδα νοστήσαντας,
,,ἥρώων τ' ἄλοχοι καὶ μητέρες, αἶ νύ που ἤδη
- 995 ,,ἡμέας ἠϊόνεσσιν ἐφελζόμεναι γοάουσι,
,,τάων ἀργαλίας κεν ἀποσκαδάσειας ἀνίας.
,,Δὴ ποτε καὶ Θησῆα κακῶν ὑπελύσατ' ἀέθλων
,,παρθενικῇ Μινωῖς εὐφρονέουσ' Ἀριάδνῃ,
,,ἣν ῥά τε Πασιφάῃ κούρῃ τέκεν Ἠεῖάιο.

930 τάων τις μεσσηγὺς ἀνὰ πτερὰ κινήσασα
ὑψοῦ ἐκ' ἀκρεμόνων Ἥρης ἠνίπαπε βουλάς.

“ Ἀκλειὴς ὅδε μάντις, ὃς οὐδ' ὅσα παῖδες ἴσασιν
,, οἶδε νόῳ φράσσασθαι, ὃθ' οὔνεκεν οὔτε τι λαρὸν
,, οὔτ' ἐρατὸν κούρη κεν ἔπος προτιμυθήσαιο

935 ,, ἡϊθέρι, εὐτ' ἂν σφιν ἐπήλυδες ἄλλοι ἔπωνται.

,, Ἐβροῖς, ὧ κακόμαντι, κακοφράδες· οὐδέ σε Κύπρις,
,, οὔτ' ἀγανοὶ φιλέοντες ἐπιπνεύουσιν Ἑρωτες.

Ἴσκειν ἀτεμβομένη· μείδησε δὲ Μίψος ἀκούσας
ὁμφὴν οἰωνοῦ θεήλατον, ὥδε τ' ἔειπε·

940 “ Τύνη μὲν νηόνδε θεᾶς Ἴδι, τῷ ἐνὶ κούρῃν

,, δήεις, Αἰσονίδῃ· μάλα δ' ἠπὶ ἀντιβόλῃσεις,

,, Κυπριδὸς ἐννεσίης, ἥ τοι συνέριδος ἀέθλων

,, ἔσσεται, ὥς δὴ καὶ πρὶν Ἀγηνορίδης φάτο Φινεύς.

,, Νῶϊ δ', ἐγὼν Ἀργος τε, δεδηγμένοι εὐτ' ἂν ἴκηαι,

945 ,, τῷ δ' αὐτῷ ἐνὶ χώρῳ ἐπεσσόμεθ'· οἴοι δ' αὐτὸς

,, λίσσιό μιν πυκινόισι παρατροπέων ἐπέεσσιν.

Ἦ ῥα περιφραδέως, ἐπὶ δὲ σχεδὸν ἦνεον ἄμφω.

Οὐδ' ἄρα Μηδείης θυμὸς τράπετ' ἄλλα νοῆσαι,
μελπομένης περ ὄμως· πᾶσαι δὲ οἱ, ἦν τιν' ἀδύρῃς

950 μολπὴν, οὐκ ἐπὶ δηρὸν ἐφῆνδανον ἐψιάσθαι.

Ἀλλὰ μεταλλήγεσκεν ἀμήχανος, οὐδέ ποτ' ὅσσιν
ἀμφιπόλων μεθ' ὁμίλον ἔχ' ἀτρέμας· ἐς δὲ κελεύθου
τηλόσε παπταίνεσκε, παρακλίνουσα παρειάς.

Ἦ θαμὰ δὴ στηθέων ἐάγῃ κέαρ, ὑπότε δαῦπον

955 ἢ ποδὸς ἢ ἀνέμοιο παραθρέξαντα δοᾶσαι. —

Ἀυτὰρ ὅγ' οὐ μετὰ δηρὸν ἐελδομένη ἐφάανθη,

ὑψὺς ἀναθρώσκων, ἅτε Σείριος Ὠκεανοῖο,

ὃς δὴ τοι καλὸς μὲν, ἀρίζηλός τ' ἐσιδέσθαι

ἀντίκειται, μήλοισι δ' ἐν ἄσπετον ἦκεν οἰζύν·

960 ὥς ἄρα τῇ καλὸς μὲν ἐπήλυθεν εἰσοράσθαι

Αἰσονίδης, κάματον δὲ δυσήμερον ὥρσε φανθεῖς.

Ἐκ δ' ἄρα οἱ κραδίη στηθέων πέσεν, ὅμματα δ' αὐτῇ
ἔχλυσαν· θερμὸν δὲ παρηγίδας εἶλεν ἔρευθος.

Γοῖατα δ' οὐτ' ὀπίσω, οὔτε προπάρειδεν αἶραι

- 895 „ τᾶων, αἱ τοπάραιθεν ἐπημῆται ἀγέροντο.
 „ Ἀλλ' ἐπὶ ὅν ἰκόμεσθα, καὶ οὐ νύ τις ἄλλος ἐπείσιν,
 „ εἰ δ' ἄγε, μολπῇ θυμὸν ἀφειδέως κορέσωμεν
 „ μελιχίῃ, τὰδε καλὰ τρεῖνης ἀνθεα ποίης
 „ λεξάμεναι· τὸτ' ἐπεὶ αὐτὴν ἀπονεισόμεθ' ὥρην.
- 900 „ Καὶ δέ κε σὺν πολέεσσιν ὀνείασιν οἴκαδ' ἰκοισθε
 „ ἥματι τῷ, εἴ μοι συναρέσσεται ἥδε μενοινῇ.
 „ Ἄργος γάρ μ' ἐπέσσι παρατρέπει, ὥς δέ καὶ αὐτὴ
 „ Χαλκιοπῆ· — τὰ δὲ σῖγα νόψ' ἔχετ' εἰσαΐδουσαι
 „ ἐξ ἐμέθεν, μὴ πατὴρ ἐς οὔατα μῦθος ἵκηται. —
- 905 „ Τὸν ξεινὸν με κέλονται, ὅτις περὶ βουσὶν ὑπέστη,
 „ δῶρ ἀποδεξαμένην, ὀλοῶν ῥύσασθαι ἀέθλων.
 „ Αὐτὰρ ἐγὼ τὸν μῦθον ἐπήνεον, ἠδὲ καὶ αὐτὸν
 „ κέλομαι εἰς ὤπην, ἐτάρων ἀπο μῶνον, ἰέεσθαι,
 „ ὅφρα τὰ μὲν δασόμεσθα μετὰ σφίσιν, εἴ κεν ὀπάσσοι
- 910 „ δῶρα φέρων, τῷ δ' αὖτε κακίωτερον ἄλλο πόρωμεν
 „ φάρμακον. Ἀλλ' ἀπονόσφι πέλετθ' ἐμοὶ, εὖτ' ἂν ἵκηται.
 „ Ὡς ἡῦδα· πάσῃσι δ' ἐπὶ κλοπος ἦνδανε μῆτις.
 „ Αὐτίκα δ' Αἰσονίδην ἐτάρων ἀπονόσφιν ἐρύσσαι
 „ Ἄργος, ὅτ' ἦδη τήνδε κασιγνήτων ἰσάκουσεν
- 915 „ ἡερίην Ἐκάτης ἱερὸν μετὰ νηὸν ἰούσαν,
 „ ἦγε διὲκ πεδίου· ἅμα δὲ σφίσιν εἶπετο Μόψος
 „ Ἀμυκίδης, ἱσθλὸς μὲν ἐπιπροφανέντας ἐνίσπειν
 „ οἰωνούς, ἱσθλὸς δὲ συνενφράσσασθαι ἰούσιν.
 „ Ἐγθ' οὕτω τις τοῖος ἐπὶ προτέρων γένετ' ἀνδρῶν,
 920 „ οἷθ' ὅσοι ἐξ αὐτοῦ Διὸς γένος, οἷθ' ὅσοι ἄλλων
 „ ἀθανάτων ἦρωες ἀφ' αἵματος ἐβλάστησαν,
 „ οἷον Ἰήσωνα θῆκε Διὸς δάμαρ ἤματι κείνῳ,
 „ ἡμὲν ἰσάντα ἰδεῖν, ἠδὲ προτιμυθήσασθαι.
 „ Τὸν καὶ παπταίνοντες ἐδάμθεον αὐτοὶ ἐταῖροι
- 925 „ λαμπόμενον χαρίτεσσιν· ἐγήθησεν δὲ κελεύθῳ
 „ Ἀμυκίδης, ἥδη που οἰσάμενος τὰ ἕκαστα.
 „ Ἔσσι δὲ τις πεδίοιο κατὰ στίβον ἐγγύθι νηοῦ
 „ κίχρειρος φύλοισιν ἀπειρεσίοις κομώωσα,
 „ τῇ δαμά δὴ λακέρυζαι ἐπηυλίζοντο κορῶναι.

860 ἔπτα μὲν ἀνάνοισι λοεσσαμένη ὑδάτεσσιν,
 ἔπτάκι δὲ Βριμῷ κουροτρόφον ἀκαλέσασα,
 Βριμῷ νυκτιπόλον, χθονίην, ἐνέροισιν ἀνασσαν,
 λυγαίῃ ἐν νυκτί, σὺν ὀρφναίοισι φάρεσσι.

Μυκηθμῷ δ' ὑπένερθεν ἱρεμνὴ σείετο γαῖα,
 865 ῥίξης τεμνομένης Τιτηνίδος· ἔστενε δ' αὐτὸς
 Ἰαπετοῖο πάϊς ὀδύνη πέρι θυμὸν ἀλύων.

Τὸν ῥ' ἦγ' ἐξανελούσα θυώδει κἀτθετο μήτηρ,
 ἦ τε οἱ ἀμβροσίοισι περὶ στήθεσσιν ἔεργο.
 ἐκ δὲ θύραζε κιοῦσα θοῆς ἐπεδήσατ' ἀπήνης·

870 σὺν δὲ οἱ ἀμφίπολοι δοῖαι ἐκάτερθεν ἔεισαν.
 Αὐτὴ δ' ἠνί' ἔδεκτο, καὶ εὐποίητον ἰμάσθλην
 δεξιτερῇ, ἔλαεν δὲ δι' ἄστεος· αἱ δὲ δὴ ἄλλαι
 ἀμφίπολοι, πείρινθος ἐφαπτόμεναι μετέπισθε,
 τρώχων εὐρεῖαν κατ' ἀμαξίτον· ἂν δὲ χιτῶνας

875 λεπταλέους λευκῆς ἐπιγουνίδος ἄχρῃς ἄειρον.

Οἷη δὲ λιαροῦσιν ἐφ' ὕδασι Περθενίοιο,
 ἦε καὶ Ἀμνιστοῖο λοεσσαμένη ποταμοῖο,
 χρυσεῖοις Λητωῖς ἐφ' ἄρμασιν ἑστηυῖα,
 ὑπείαις κεμάδεσσι διεξελάσῃσι κολώνας,

880 τηλόθεν ἀντιόωσα πολυκνίσσου ἐκατόμῃης·
 τῇ δ' ἄμα Νύμφαι ἑπονται ἀμορθέαδες, αἱ μὲν ἐπ' αὐτῇ
 ἀγρόμεναι πηγῆς Ἀμνισίδος, αἱ δὲ δὴ ἄλλαι
 ἄλσεα καὶ σκοπίας πολυπίδακας· ἀμφὶ δὲ θῆρες
 κνυζήθμῳ σαίνουσιν ὑποτρομέοντες ἰοῦσαν·

885 ὥς αἳ γ' ἑσσεύοντο δι' ἕστεος· ἀμφὶ δὲ λαοὶ
 εἶκον, ἀλευάμενοι βασιληίδος ὄμματα κούρης.
 Αὐτὰρ ἔπει πόλιος μὲν εὐδμήτους λίπ' ἀγνυῖας,
 γῆν δ' εἰσαφίκανε διέκ πεδίων ἐλάουσα,
 δὴ τότε εὐτροχάλοιο κατ' αὐτόθι βῆσατ' ἀπήνης

890 ἱεμίνῃ, καὶ τοῖα μετὰ δμῳῇσιν ἔειπεν.

“ὦ φίλαι, ἦ μέγα δὴ τι παρήλιτον, οὐδ' ἐνόησα
 ἢ μὴ ἵμεν ἀλλοδαποῖσι μετ' ἀνδράσιν, οὔτ' ἐπὶ γαῖαν
 ἢ ἡμετέραν στρωφῶσιν. Ἀμνηχανίῃ βεβόληται
 ἢ πᾶσα πόλις· τὸ καὶ οὐ τις ἀνῆλυθε δεῦρο γυναικῶν

- 825 Ἐνθα κασιγνήτους μὲν ἔτ' αὐτόθι μείναι ἀνώγει
Ἄργος, ἵνα Φράζοντο νόον καὶ μῆδεα κούρης·
αὐτὸς δ' αὐτ' ἐπὶ νῆα κίε προπάροιτε λιασθεῖς.
Ἡ δ' ἐπεὶ οὖν τὰ πρῶτα Φαινομένην ἶδεν ἥω
παρ' Ὀνική, ξανθὰς μὲν ἀνήφατο χερσὶν ἐθείρας,
830 αἳ οἱ ἀτρημελίῃ κατακειμένοι ἡρέθοντο,
αὐσταλέας δ' ἔψησε παρηΐδας· αὐτὰρ ἄλοιφῃ
νεκταρέῃ Φαιδρύνετ' ἐπὶ χρεῖα· δῦνε δὲ πέπλου
καλὸν, ἐϋγνάμπτοισιν ἀρηράμενον περόνησιν·
ἀμβροσίῳ δ' ἐφύπερθε καρήατι βάλλεε καλύπτρην
835 ἀργυρέην. Αὐτοῦ δὲ δόμοις ἐνὶ δινεύουσα
στεῖβε πέδον, λήθῃ ἀχέων τὰ οἱ ἐν ποσὶν ἦε
θυσπέσι, ἅλλα τ' ἔμελλεν ἀεξήσεσθαι ὀπίσσω. —
Κέκλετο δ' ἀμφιπόλοισιν, αἳ οἱ δυοκαίδεκα πᾶσαι
ἐν προδόμῳ θαλάμοιο θυώδεος ὑλίζοντο,
840 ἥλικες, οὐπω λέκτρα σὺν ἀνδράσι πορσύνουσαι,
ἑσσυμένως οὐρῆας ὑποζεύξασθαι ἀπήνην,
οἳ κέ μιν εἰς Ἑκάτης περικαλλέα νηὸν ἄγοιεν.
Ἐνθ' αὐτ' ἀμφιπόλοι μὲν ἐφοπλίζεσκον ἀπήνην·
ἡ δὲ τέως γλαφυρῆς ἐξείλετο Φωριαμοῖο
845 Φάρμακον, ὃρρά τε Φασὶ Προμηθεῖον καλέεσθαι·
τῷ εἴκ' ἐννυχίοισιν ἀρεσσάμενος θυέεσσι
Δαίραν μουρογένειαν, ἰὸν δέμας ἐκμαίνοιτο,
ἦτ' ἂν ὄγ' οὔτε κ' εἰοί ῥηκτὸς χαλκοῖο τυπῆσιν,
οὔτε κεν αἰδομένῳ πυρὶ εἰκάδοι· ἀλλὰ καὶ ἄλκῃ
850 λωίτερος κείν' ἤμαρ ὁμῶς κάρτει τε πίλοιο.
Πρωτοφύες τέ γ' ἀνέσχε, καταστάξαντος ἔραζε
αἵματοντ' ἰχῶρα Προμηθεῖος μογεροῖο.
Τοῦ δ' ἦτοι ἄνδρος μὲν ὅσον πήχυιον ὕπερθε,
855 χροῖῃ Κωρυκίῳ ἱκελον πρόκῳ, ἐξεφαάνθη,
καυλοῖσιν διδύμοισιν ἐπήγορον· ἡ δ' ἐνὶ γαίῃ
ταρκὶ νεοτμήτῳ ἐναλίσκῃ ἐπλετο ῥίζα.
Τῆς, οἷν τ' ἐν ὄρεσσι κελαινὴν ἐκμάδα Φηγοῦ,
Κασπὴν ἐν κόχλῳ ἀμήσατο Φαρμάσσεσθαι,

- 790 „ ἥ καὶ πασσαμένη βραστήρια φάρμακα θυμοῦ.
 „ Ἀλλὰ καὶ ὡς φθιμένη μοι ἐπιβιβάζουσιν ὀπίσσω
 „ κερτομίας· τηλοῦ δὲ πόλιν περὶ πᾶσα βοήσῃ
 „ πότμον ἐμόν· καὶ κέν με διὰ στόματος φορέουσαι
 „ Κολχίδες ἄλκυδις ἄλλαι αἰκία μωμήσονται·
- 795 „ ἥ τις κηδομένη τόσον ἀνέρος ἀλοδαποῖο
 „ κάτθανεν, ἥ τις δῶμα καὶ οὐς ἥσχυε τοκήας,
 „ μαργοσύνην εἶξασα. Τί δ' οὐκ ἐμόν ἔσσεται αἵσχος;
 „ ὦ μοι ἐμῆς ἄτης! Ἦτ' ἂν πολὺ κέρδιον εἴη
 „ τῇδ' αὐτῇ ἐν νυκτὶ λιπεῖν βίον ἐν θαλάμοισι
- 800 „ πότμῳ ἀνωίστῳ, καὶ ἐλέσχεα πάντα φυγοῦσαν,
 „ πρὶν τάδε λωβήεντα καὶ οὐκ ὀνομαστὰ τελέσσαι.
 „ Ἦ, καὶ φωριαμὸν μετεκίαθεν, ἥ ἐνὶ πολλὰ
 „ φάρμακά οἱ, τὰ μὲν ἐσθλὰ, τὰ δὲ βραστήρη, ἔκειτο.
 „ Ἐφθιμένη δ' ἐπὶ γούνατ' ὀδύρετο. Δεῦρ δὲ κόλπους
- 805 „ ἄλῃκτον δακρύοισι, τὰ δ' ἐβρέεν ἀστεγὰς αὐτῶς,
 „ αἰὶν ὀλοφυρομένης τὸν ἐὸν μόρον. Ἴετο δ' ἦγε
 „ φάρμακα λέξασθαι θυμοφθόρα, ὅφρα πάσαιτο.
 „ Ἦδῃ καὶ δεσμούς ἀνελύετο φωριαμοῖο,
 „ ἐξελέειν μεμανυῖα δυσάμμορος· ἀλλὰ οἱ ἄφνω
- 810 „ δεξιὰ ὀλοῖον στυγεροῖο κατὰ φρένας ἦλθ' Αἰδάς.
 „ Ἔσχετο δ' ἀμφασίῃ δηρὸν χρόνον, ἀμφὶ δὲ πᾶσαι
 „ θυμηδεῖς βιότοιο μεληδόνες ἰνδάλλοντο.
 „ Μνήτατο μὲν τερπνῶν, ὅσ' ἐνὶ ζωῷσι πέλονται,
 „ μνήσθ' ὀμηλικῆς περιγηθείας, οἷά τε κούρη·
- 815 „ καὶ τέ οἱ ἥελιος γλυκίων γένετ' εἰσοράσθαι,
 „ ἥ πάρος, εἰ ἐτεόν γε νόον ἐπεμαίεθ' ἔκαστα.
 „ Καὶ τὴν μὲν ῥα πάλιν σφετέρων ἀποκάτθετο γούνων,
 „ Ἦρης ἐννεσίῃσι μετὰ τροπος, οὐδ' ἔτι βουλαῖς
 „ ἄλλῃ δοιάζεσκεν· ἐέλθετο δ' αἶψα φανῆναι
- 820 „ ἧν τεθρομένην, ἵνα οἱ θελκτήρια δόῃ
 „ φάρμακα συνθεσίῃσι, καὶ ἀντήσειεν ἐς ὤπην.
 „ Πυκνὰ δ' ἀνὰ κληῖδας ἑὼν λύεσκε θυράων,
 „ αἶγλιν σκεπτομένη· τῇ δ' ἀσπασίον βάλε φέγγος
 „ Ἠριγενῆς, κίνυντο δ' ἀνὰ πτολίεθρον ἕκαστοι.

- 755 Πυκνά δὲ οἱ κραδίη στηθέων ἔντοσθεν ἔθνυν,
 ἡελίου ὥς τις τε δόμοις ἐνιπάλλεται αἶγλη
 ὕδατος ἔξανιούσα, τὸ δὴ νέον ἢ ἐλθέητι,
 ἢ ἐπου ἐν γαυλῷ κέχυται· ἢ δ' ἐνθα καὶ ἐνθα
 ὠκείη στροφάλιγινι τινάσσεται αἵτουσα·
- 760 ὥς δὲ καὶ ἐν στήθεσσι κέαρ ἐλελίζετο κούρης —
 Δάκρυ δ' ἀπ' ὀφθαλμῶν ἐλέω βέεν· ἐνδοθι δ' αἰεὶ
 τεῖρ' ὀδύνη σμύχουσα διὰ χροῶς, ἀμφὶ τ' ἀραιὰς
 ἴνας, καὶ κεφαλῆς ὑπὸ νεάτον ἰνίον ἄχρει,
 ἐνθ' ἀλεγεινότατον δύνει ἄχος, ὅππότε' ἀνίας
- 765 ἀκάματοι πραπίδεςσιν ἐνιχρίμψουσιν Ἑρωτες.
 Φῆ δὲ οἱ ἄλλοτε μὲν θελκτῆρια φάρμακα ταύρων
 δωσέμεν, ἄλλοτε δ' οὔτι· καταφθίσθαι δὲ καὶ αὐτὴ·
 αὐτίκα δ' οὐτ' αὐτὴ θανέειν, οὐ φάρμακα δώσειν,
 ἀλλ' αὐτῶς εὐκηλος ἐὼν ὀτλησέμεν ἄτην.
- 770 ἐξομένη δ' ἤπειτα δοάσσατο, φώνησέν τε.
 “ Δειλὴ ἐγὼ, νῦν ἐνθα κακῶν, ἢ ἐνθα γένωμαι,
 „ πάντη μοι φρένες εἰσὶν ἀμήχανοι· οὐδὲ τις ἀλκὴ
 „ πῆματος· ἀλλ' αὐτῶς φλέγει ἔμπεδον. Ὡς ὅφελόν γε
 „ Ἀρτέμιδος κραιπνοῖσι πάρος βελέεσσι δαμῆναι,
 775 „ πρὶν τόν γ' εἰσιδέειν, πρὶν Ἀχαιῖδα γαῖαν ἰέσθαι
 „ Χαλκιοῖπης νῆας· τρὺς μὲν θεός, ἢ τις Ἑρινύς
 „ ἄμμι πολυκλαύτους δεῦρ' ἦγαγε κείθεν ἀνίας —
 „ Φθίσθω ἀεθλεύων, εἰ οἱ κατὰ νειὸν ὀλέσθαι
 „ μοῖρα πέλει. — Πῶς γάρ κεν ἐμούς λελάθοιμι τοκῆας
 780 „ φάρμακα μῆσαμένη; ποῖον δ' ἐπὶ μῦθον ἐνίψω;
 „ τίς δὲ δόλος, τίς μῆτις ἐπὶ κλοπὸς ἔσσετ' ἀρωγῆς;
 „ ἢ μιν ἀνευθ' ἐτάρων προσπτύξομαι οἷον ἰδοῦσα;
 „ δύσμορος· οὐ μὲν ἐόλπα καταφθιμένοιο περ ἔμψης
 „ λωφίσειν ἀχέων· τότε δ' ἂν κακὸν ἄμμι πέλοιτο,
 785 „ κείνος ὅτε ζωῆς ἀπαμείρεται. Ἐρρέτω αἰδώς,
 „ ἐρρέτω ἀγλαΐη· ὃ δ' ἐμῇ ἰότητι σαωθεῖς
 „ ἀσκηθῆς, ἵνα οἱ θυμῷ φίλον, ἐνθα νέοιτο.
 „ Αὐτὰρ ἐγὼν αὐτῆμαρ, ὅτ' ἐξανύσειεν ἀεθλον,
 „ τιθναίην, ἢ λαιμὸν ἀναρτήσασα μελέεσθαι,

720 „ ἢ δόλον, ἢ τινα μῆτιν ἐπιφράσσασθαι ἀέθλου,
 „ παίδων εἵνεκ' ἐμεῖο; καὶ ἐκ κείνοιο δ' ἰκάνει
 „ Ἄργος, ἐποτρύνων με τεῖς πειρῆσαι ἀρωγῆς·
 „ μετσηγὺς μὲν τόνδε δόμον λίπον ἐνθάδ' ἰούσα.

“Ὡς φάτο· τῇ δ' ἐντοσθεν ἀνέπτατο χάρματα θυμός·
 725 φοινίχθη δ' ἄμυδις καλὸν χροῖα, καδδὲ μιν ἀχλὺς
 εἶλεν ἱαινομένην, τοῖον δ' ἐπὶ μῦθον ἔειπε·

“ Χαλκίοπη, ὡς ὕμμι φίλον τερπνὸν τε τέτυκται,
 „ ὡς ἔρξω. Μὴ γάρ μοι ἐν ὀφθαλμοῖσι φαεῖνοι
 „ ἥως, μηδὲ μέθρὸν ἔτι ζώουσιν ἴδιοι,
 730 „ εἴ' ἔτι σῆς ψυχῆς προφερέστερον, ἢέ τι παίδων
 „ σῶν θείην, οἳ δὴ μοι ἀδελφείοι γεγάασι,
 „ κηδεμόνες τε φίλοι, καὶ ὁμήλικες. — “Ὡς δὲ καὶ αὐτὴ
 „ φημί κασιγνήτη τε σέθεν κούρη τε πέλεισθαι,
 „ ἴσον ἔπει κείνοις με τεῶ' ἐπαίραο μαζῶν

735 „ νηπυτήν, ὡς αἰὲν ἐγὼ ποτε μητρὸς ἄκουον.
 „ Ἀλλ' ἴθι, κεῦθε δ' ἐμὴν σιγῇ χάριν, ἔφρα τοκῆας
 „ λήσομαι ἐντύνουσα ὑπόσχεσιν· ἦρι δὲ νηὸν
 „ εἴσομαι εἰς Ἑκάτης, θελκτήρια φάρμακα ταύρων
 „ οἰσομένη ξείνῳ, ὑπὲρ οὗ τόδε νεῖκος ὄρωρεν.

740 “Ὡς ἢ γ' ἐκ θαλάμοιο πάλιν κίε, παῖσι τ' ἀρωγὴν
 αὐτοκασιγνήτης διεπίφραδε. Τὴν δὲ μιν αὖθις
 αἰδώς τε στυγερὸν τε δῖος λάβε μουνωθεῖσαν,
 τοῖα παρεῖξ οὗ πατρὸς ἐπ' ἀνέρι μητιάσθαι.

Νῦξ μὲν ἔπειτ' ἐπὶ γαῖαν ἄγε κνέφας· οἳ δ' ἐνὶ πόντῳ

745 ναῦται εἰς Ἑλίχην τε καὶ ἀστέρας Ὀρίωνος
 ἔδρακον ἐκ νηῶν· ὕπνοιο δὲ καὶ τις ὁδίτης
 ἦδη, καὶ πυλαωρὸς, ἐέλδετο· καὶ τινα παίδων
 μητέρα τεθνεώτων ἀδινὸν περὶ κῶμ' ἐκάλυπτεν·
 οὐδὲ κυνῶν ὕλακῇ ἔτ' ἀνὰ πτόλιν, οὐ θρόος ἦεν

750 ἡχῆεις· σιγῇ δὲ μελαινομένην ἔχεν ὄρφνην.
 Ἀλλὰ μάλ' οὐ Μήδειαν περ γλυκερὸς λάβεν ὕπνος.
 Ποῖα γάρ Αἰσανίδαο πύθῳ μελεδήματ' ἔγειρε
 δειδυῖαν ταύρων κρατερὸν μένος, οἷσιν ἔμελλε
 φθίσθαι ἀεικελίῃ μοίρῃ κατὰ νεῖον Ἄρηος.

- 685 Πολλὰ κίε δ' ἡμερόεν μὲν ἀνὰ στόμα θυὲν ἐνισπείν·
Φθογῇ δ' οὐ προύβαινε περαιτέρω· ἔψε δ' εἶπε
τοῖα δόλψ· θρασέες γὰρ ἐπικλονέεσκον Ἑρωτες.
“ Χαλκίοπη, περί μοι παιδῶν σέο θυμὸς ἄηται,
,, μὴ σφε πατήρ ξείνοισι σὺν ἀνδράσιν αὐτίκ' ὀλέσῃ,
690 ,, τοῖα κατακνώσασα μινυνθαδίῳ νέον ὕπνω
,, λεύσσω ὀνείρατα λυγρὰ, τὰ τίς θεὸς ἀκράντα
,, θεῖη, μὴδ' ἀλεγεινὸν ἐφ' υἷαςι κῆδος ἔλοιο.
Φῆ ῥα, κασιγνήτης πειρωμένη, εἴ κέ μιν αὐτῇ
ἀντιάσῃε πάροιδεν ἑοῖς τεκέεσσιν ἀμύνειν.
695 Τὴν δ' αἰνῶς ἄτλητος ἐπέκλυσε θυμὸν ἀνίη,
δείματι, τοῖ' ἐσάκουσεν· ἀμείβετο δ' ὧδ' ἐπέεσσι·
“ Καὶ δ' αὐτῇ τάδε πάντα μετήλυθον ὀρμαίνουσα,
,, εἴ τινα συμβράσσαιο καὶ ἀρτύνειας ἀρωγῇ.
,, Ἀλλ' ὅμοσον Γαῖάν τε καὶ Οὐρανὸν, ὅττι τοι εἶπω
700 ,, σχήσειν ἐν θυμῷ, σὺν τε δρηστέϊρα πέλεσθαι.
,, Δίσσομ' ὑπὲρ μακάρων, σέο τ' αὐτῆς, ἡδὲ τοκῶν,
,, μὴ σφε κακῇ ὑπὸ κηρὶ διαβραϊσθέντας ιδέσθαι
,, λευγαλέως· ἥ σοί γε φίλοις σὺν παισὶ θανούσα
,, εἶην ἐξ' Αἰδέω στυγερὴ μετόπισθεν Ἑρινύς.
705 “Ὡς ἄρ' ἔφη, τὸ δὲ πολλὸν ὑπεξέχυτ' αὐτίκα δάκρυ·
νεῖοθι δ' ἀμφοτέρησι περίσχετο γούνατα χερσὶ,
σὺν δὲ κάρη κόλποις περικάβηκ' αὖ. “Εὐδ' ἔλκεινόν
ἄμφω ἐπ' ἀπλήλῃσι θέσαν γόον· ὦρτο δ' ἰὼν
λεπταλήη διὰ δώματ' ὕδρομένων ἀχέεσσι.
710 Τὴν δὲ πάρος Μήδεια προσέννεπεν ἀσχαλώωσα.
“ Δαιμόνιη, τί νύ τοι βέξω ἄκος, οἳ ἀγορεύεις,
,, ἀράς τε στυγεράς καὶ Ἑρινύας; αἱ γὰρ ὄφρα δὸν
,, ἔμπεδον εἶναι ἐπ' ἅμμι τεοὺς νύϊας ἔρυσθαι.
,, Ἴστω — Κόλχων ὄρκος ὑπέρβιος, ὅντιν' ὁμόσσαι
715 ,, αὐτῇ ἐποτρύνεις — μέγας Οὐρανός, ἥ δ' ὑπέρνευθ'
,, Γαῖα, θεῶν μήτηρ, ὅσπον σθένος ἐστὶν ἐμεῖν,
,, μὴ σ' ἐπιδευήσεσθαι, ἀνυστά περ ἀντιώσων.
Φῆ ἄρα· Χαλκίοπη δ' ἡμείβετο τοῖσδ' ἐπέεσσι·
“ Οὐκ ἂν δὴ ξείνῳ τλαίῃς, χατίοντι καὶ αὐτῷ,

650 στρεφθεῖς· ἐκ δὲ πάλιν κίεν ἐνδοθεν, ἅψ τ' ἄλειψεν
εἴσω· τῆυσίην δὲ πόδες φέρον ἔνθα καὶ ἔνθα.

Ἦτοι ὅτ' ἰθύσειεν, ἔρυκ'· μιν ἐνδοθεν αἰδώς·
αἰδοῖ δ' εἰργομένην θρασὺς ἱμερος ὀτρύνεσκέ.

Τρεῖς μὲν ἐπειρήθη, τρεῖς δ' ἔσχετο, τέτρατον αὖτις·

655 λέκτροισι πρηνὴς ἐνικάππεσεν εἰλιχθεῖσα.

Ὡς δ' ὅτε τις νύμφη θαλερὸν πόσιν ἐν θαλάμοισι
μύρεται, ᾧ μιν ὅπασσαν ἀδελφοὶ ἠδὲ τοκῆς,
οὐδέ τι πω πάσαις ἐπιμίσγεται ἀμφιπόλοισιν
αἰδοῖ ἐπιφροσύνη τε· मुखῷ δ' ἀκίονσα θαάσσει·

660 τὸν δὲ τις ὤλεσε μοῦρα, πάρος ταρπήμεναι ἄμφω
δήνεσιν ἀλλήλων· ἥ δ' ἐνδοθι, δαιομένη περ,
σῖγα μάλα κλαίει, χῆρον λέχος εἰσροῶσα,
μὴ μιν κερτομέουσα ἐπιστοβέωσι γυναῖκες·
τῇ ἱκέλη Μήδεα κινύρετο. Τὴν δὲ τις ἄφνω

665 μυρομένην μεσσηγὺς ἐπιπρομολοῦσ' ἐνόησε
δμωάων, ἥ οἱ ἐπέτις πέλε κουρίζουσα·
Καλκίῳπῃ δ' ἤγειρε παρασχεδόν· ἥ δ' ἐνὶ παισὶν
ἦστ' ἐπιμητιώσα κασιγνήτην ἀρέσασθαι.

Ἀλλ' οὐδ' ὥς ἀπίθηνεν, ὅτ' ἐκλυεν ἀμφιπόλοιο

670 μῦθον ἀνώϊστον· διὰ δ' ἔσσυτο θαμβήσασα
ἐκ θαλάμου θαλαμόνδε διαμπερεῖς, ᾧ ἐνὶ κόρῃ
κέκλιτ' ἀκηχεμένη, δρυφεν δ' ἐκάτεροτε πορείας·
ὥς δ' ἰδε δάκρυσιν ὅσσα πεφυρμένα, φώνησέν μιν.

“ὦ μοι ἐγὼ, Μήδεα, τί δὴ τάδε δάκρυα λείβεις;

675 „τίπτ' ἔπαθες; τί τοι αἰνὸν ὑπὸ φρένας ἵκετο πένθος;

„ἢ νύ σε θυμορὴ περιδέδρομεν ἄψα νοῦσος,

„ἢ τί ν' οὐλομένην ἐδάς ἐκ πατρὸς ἐνιπὴν

„ἀμφί τ' ἐμοὶ καὶ παισίν; — Ὅφειλέ με, μήτε τοκῆων

„δῶμα, τὸδ' εἰσροῶν, μήτε πτόλιν, ἀλλ' ἐπὶ γαίῃς

680 „πεῖρασι ναιετάειν, ἵνα μὴδὲ περ οὐνομα Κόλχων.

Ὡς φάτο· τῆς δ' ἐρύθηνε παρρηία· δὴν δὲ μιν αἰδῶ
παρθενίη κατέρυκεν ἀκρίψασθαι μεμαυῖαν.

Μῦθος δ' ἄλλοτε μὲν οἱ ἐπ' ἀκροτάτης ἀνέτελλε
γλώσσης, ἄλλοτ' ἐνερθε κατὰ στήθος κέκλιτο.

615 ἱσπομένης ἀρίσθηλα καὶ ἀμφοδὰ ἔργα πέλονται.

Κούρην δ' ἐξ ἀχέων ἀδινὸς κατελώφεεν ἵπνος
λέκτρῳ ἀνακλινθεῖσαν. Ἄφαρ δὲ μιν ἡπεροπῆες,
οἳ τ' ἀκηχεμένην, ὀλοοὶ ἐρέθισπον ἔνειροι —
Τὸν ξεῖνον δ' ἐδόκησεν ὑφ' ἐστάμεναι τὸν ἄεθλον,
620 οὐ τι μάλ' ὀρμαίνοντα δέρος κριοῦ κομίσσαι,
οὐδέ τι τοῖο γ' ἔκητι μετὰ πτόλιν Αἰήταο
ἔλθ' ἔμεν, ὅφρα δέ μιν σφέτερον δόμον εἰσαγάγοιτο
κουριδίην παράκοιτιν· οἷτο δ' ἀμφὶ βίεσσιν
αὐτῇ ἀεθλευούσα μάλ' εὐμαρέως πονέεσθαι.

625 σφωίτερος δὲ τοκῆας ὑποσχέσθης ἀδερῖζειν,
οὐνεκεν οὐ κούρῃ ζεύξαι βόας, ἀλλὰ οἱ αὐτῷ
προὔθεσαν· ἐκ δ' ἄρα τοῦ νεῖκος πέλεν ἀμφήριστον
πατρί τε καὶ ξείνοισ· αὐτῇ δ' ἐπιέτρεπον ἀμφῷ
τὼς ἔμεν, ὥς κεν ἔῃσι μετὰ Φρεσὶν ἐθύσειν.

630 Ἡ δ' ἄφνω τὸν ξεῖνον, ἀφειδήσασα τοκῆων,
εἶλετο· τοὺς δ' ἀμέγακτον ἄχος λάβεν, ἐκ δ' ἐξήσαν
χωόμενοι· τὴν δ' ἵπνος ἅμα κλαγγῇ μεθήκε.
παλλομένη δ' ἀνόρουσε φάσξ, περὶ τ' ἀμφὶ τε τοίχους
πάπτηνεν θαλάμοιο· μέγισ δ' ἐσαγείρατο θυμὸν,

635 ὡς κάρος, ἐν στέροισ, ἀδινὴν δ' ἀνενέικατο Φωνήν.

“ Δεῖλῃ ἐγὼν, αἶον με βαρεῖς ἐφύθησαν ἔνειροι!

„ Δεῖδια, μὴ μέγα δὴ τι φέρῃ κακὸν ἥδε κέλευθος

„ ἡρώων. Περὶ μοι ξείνῳ φρένες ἡερέθονται.

„ Μνάσθω ἔόν κατὰ δῆμον Ἀχαιῖδα τηλόθι κούρην·

640 „ ἄμμι δὲ παρθενίῃ τε μέλοι καὶ δῶμα τοκῆων.

„ Ἐμπα γε μὴν θεμένη κύνεον κέαρ, οὐκ ἔτ' ἀνένδην

„ αὐτοκασιγνήτης πειρήσομαι, εἴ κέ μ' ἀέθλῳ

„ χραιομεῖν ἀντιάσῃσιν, ἐπὶ σφέτεροις ἀχέουσιν

„ παισί· τό κέν μοι λυγρὸν ἐνὶ κραδίῳ σέβσοι ἄλγος·

645 Ἡ ῥα, καὶ ὀρθωθείσα θυρᾶς ᾤξε δόμοιο,

νήλικος, οἰάνος· καὶ δὴ λελήτο νέεσθαι

αὐτοκασιγνήτηνδε, καὶ ἔρκεος οὐδὲν ἄμειψε.

Δὴν δὲ κατ' αὐτόθι μίμνεν ἐνὶ προδόμῳ θαλάμοιο,

αἰδοῦ ἐργομένη· μετὰ δ' ἐτράπετ' αὐτῆς, ὅπισσιν

580 ἄνδρα τὴν, ὅς ῥ' ὑπέδεκτο βαρὺν καμείσθαι ἄεθλον,
 δρυμὸν ἀναμύχθας λαοῖς κατ' ὑπερθε κολώνης
 αὐτὰνδρον βλέζειν ὄρου νήιον, ὃφρ' ἀλεγεινὴν
 ὕβριν ἀποφλύξωσιν ὑπέρβια μηχανώοντες.

Οὐδὲ γὰρ Αἰολίδην Φρίξον, μάλα περ χατέοντα,
 585 δέχθαι ἐνὶ μεγάροισιν ἐφέστιον, ὃ πέρα πάντων
 ζείνων μειλίχῃ τε Θεουδείῃ τ' ἐκέκαστο,
 εἰ μὴ αἰ Ζεὺς αὐτὸς ἀπ' οὐρανοῦ ἄγγελον ἦκεν
 Ἑρμείαν, ὥς κε προσκηδέος ἀντιάσειε.

Μὴ καὶ ληιστῆρας ἐὼν ἐς γαῖαν ἰόντας
 590 ἔσσεσθαι δηναιὸν ἀπήμονας, οἷσι μέμνηεν
 ὀφνειοῖς ἐπὶ χεῖρα ἐὼν κτεάτεσσιν αἰερεῖν,
 κρυπταδίου τε δόλους τεκταινέμεν, ἠδὲ βοτήρων
 αὔλια δυσκελεύουσιν ἐπιδρομήσιν δαΐζαι.
 Νόσφιν δ' οἱ αὐτῷ φάτ' ἐοικότα μέλια τίσειν

595 νύκτας Φρίξοιο, κακορρέκτῃσιν ὀπηδούς
 ἀνδράσι νοστήσαντας ἑμιλαδὸν, ὃφρα ἔτιμῃς
 καὶ σκήπτρων ἐλάσειαν ἀκηδέες· ὥς ποτε ἑάζιν
 λευγαλὴν οὗ πατρὸς ἐπέκλυεν Ἥελίοιο,
 χρῆναι μιν πυκινὸν τε δόλον, βουλάς τε γενέθλης

600 σφωιτέρης ἄτην τε πολύτροπον ἐξαλέασθαι·
 τῷ καὶ ἐλδομένους πέμπειν ἐς Ἀχαιΐδα γαῖαν
 πατρὸς ἐφημοσύνη, δολιχὴν ὁδόν. Οὐδὲ θυγατρῶν
 εἶναι οἱ τυτθὸν γε δέος, μὴ που τινὰ μῆτιν
 φράσσωνται στυγερὴν, οὐδ' υἱέος Ἀφύρτοιο·

605 ἀλλ' ἐνὶ Χαλκιόπῃς γενεῇ τάδε λυγρὰ τετύχθαι.
 Καί ῥ' ὁ μὲν ἄσχετα ἔργα πιφάυσκετο δημοτέροισι,
 χωόμενος· μέγα δέ σφιν ἀπείλεε νῆά τ' ἐρύσθαι,
 ἠδ' αὐτοὺς, ἵνα μὴ τις ὑπ' ἐκ κακότητος ἀλύξῃ.

Τόφρα δὲ μητέρ' ἐὼν, μετιῶν δόμον Αἰήταο,

610 Ἄργος παντοίοισι παρηγορέεσκεν ἔπεσσί,
 Μήδειαν λίσσεσθαι ἀμυνέμεν· ἡ δὲ καὶ αὐτὴ
 πρόσθεν μητιάσκει· δέος δέ μιν ἴσχανε θυμὸν,
 μὴ πως ἡ ἐκ πατρὸς αἴσαν ἐτώσια μειλίζαιτο
 πατρὸς ἀτυχομένην ὅλοον χόλον, ἡ ἐκ λιτῆσιν

- 545 "Τμμι, φίλοι, τόδε σῆμα θεῶν ἰότητι κέτυκται,
 ,, οὐδέ πη ἄλλως ἐστὶν ὑποκρίνασθαι ἄρειον,
 ,, παρθενικὴν δ' ἐπέεσσι μετελθέμεν ἀμφιέποντας
 ,, μήτι πάντοσσι. Δοκέω δέ μιν οὐκ ἀξέριζεν,
 ,, εἰ ἐτεὸν Φινεύς γε θεῇ ἐνὶ Κίπριδι νόστον
 550 ,, πέφραδεν ἔτσεσθαι. Κείνης δ' ὄγε μείλιχος ὄρνις
 ,, πότμον ὑπεξήλυξε· κέαρ δέ μοι ὥς ἐνὶ θυμῷ
 ,, τόνδε κατ' οἰωνὸν προτιόσσεται, ὥς γε πέλοιτο.
 ,, Ἄλλὰ, φίλοι, Κυθήρειαν ἐπικλείοντες ἀμύνειν,
 ,, ἥδη νῦν Ἀργοιο παραιφασίησι πίθεο θε.
 555 Ἴσκεν· ἐπήνησαν δὲ νέοι, Φινῆος ἐφετμαῖς
 μνησάμενοι· μῦνος δ' Ἀφαρῆιος ἀνδορὲν Ἰδας,
 δεινὴ ἐπαλαστήσας μεγάλη ὀπί, φώνησέν τε.
 "ὦ πίποι, ἦ ῥα γυναιξὶν ὁμόστολοι ἐνθάδ' ἐβήμεν,
 ,, οἳ Κύπριν καλέουσιν ἐπιβρόχον ἄμμι πέλεσθαι,
 560 ,, οὐκ ἔτ' Εὐναλίῳ μέγα σθένος· ἐς δὲ πελείας
 ,, καὶ κίρκους λεύσσοντες ἐρητίεσθε ἀέθλων.
 ,, Ἐβρέτε, μὴδ' ὕμμι πολεμήϊα ἔργα πέλοιτο·
 ,, παρθενικὰς δὲ λιτῆσιν ἀνάγκidas ἡπεροπέυειν.
 "Ὡς ἤνδα μεμαῶς· πολέες δ' ὁμάδῃσαν ἐταῖροι
 565 ἦκα μάλ', οὐδ' ἄρα τις οἱ ἐναντίον ἐκφατο μῦθον·
 Χωόμενος δ' ὄγ' ἔπειτα κατέζετο· τοῖσι δ' Ἰήσων
 αὐτίκ' ἐποτρύνων τὸν ἐὼν νέον ὧδ' ἀγόρευσεν·
 "Ἄργος μὲν παρὰ νηὸς, ἐπεὶ τόδε πᾶσιν ἔαδε,
 ,, στεῖχέσθω· ἀτὰρ αὐτοὶ ἐπὶ χθονὸς ἐκ ποταμοῖθ'
 570 ,, ἀμφαδὸν ἥδη πείσματ' ἀνάψομεν. Ἦη γὰρ ἔοικε
 ,, μηκέτι δὴν κρύπτεσθαι ὑποπτήσσοντας αὐτήν.
 "Ὡς ἄρ' ἔφη· καὶ τὸν μὲν Ἄφαρ προέκλθε νέεσθαι
 καρπαλίμως ἐξαῦτις ἀνὰ πτόλιν· οἳ δ' ἐπὶ νηὸς
 εὐναίας ἐρύτταντες ἐφετμαῖς Αἰσονίδαο,
 575 τυτθὸν ὑπὲξ ἔλεος χέρσῳ ἐπέκελσαν ἐρετμοῖς.
 Αὐτίκα δ' Αἰήτης ἀγορὴν ποιήσατο Κόλχων
 νόσφιν ἰοῖο δόμου, τόθι περ καὶ πρόσθε κάθιζον,
 ἀτλήτους Μινύαισι δόλους καὶ κήδεα τεύχων.
 Στεῦτο δ', ἐπεὶ κε πρῶτα βόες διαδηλῶσανται

- 510 „ ἦ τ' ἂν ὑπόσχεσίνην πεφυλαγμένος ἐντύναιο·
 „ εἰ δ' οὐ τοι μάλα θυμὸς ἐῖς ἐπὶ πάϊχ' ἐπέποιθεν
 „ ἦνορέη, μὴτ' αὐτὸς ἐπείγγο, μήτε τιν' ἄλλον
 „ τῶνδ' ἀνδρῶν πάπταινε παρήμενος. Οὐ γὰρ ἐγώ γε
 „ σχήσομ', ἐπεὶ θάνατός γε τὸ κύντατον ἴσσεται ἄλγος.
- 515 „ Ὡς ἔφατ' Αἰακίδης· Τελαμῶνι δὲ θυμὸς ὀρίνθη·
 σπερχόμενος δ' ἀνόρουσε θυῶς· ἐπὶ δὲ τρίτος Ἰδας
 ἔρτο μέγα φρονέων, ἐπὶ δ' οὔτις Τυνδαρίοιο·
 σὺν δὲ καὶ Οἰνείδης ἐναρίθμιος αἰζηοῖσιν
 ἀνδράσιν, οὐδὲ περ ὅσσον ἐπανδύωντας ἰούλους
- 520 ἀντέδρων· τοίῳ οἱ αἰέρετο κάρτει θυμός.
 Οἱ δ' ἄλλοι ἐξάντες ἀκὴν ἔχον. Ἀντίκα δ' Ἄργος
 τοῖον ἔπος μετέειπεν ἐλδομένοισιν ἀέθλου.
 „ ὦ φίλοι, ἦτοι μὲν τόδε λοίσθιον. Ἀλλὰ τιν' οἴω
 „ μητρὸς ἐμῆς ἔσσεσθαι ἐναΐσιμον ἔμμιν ἄρωγῃν.
- 525 „ τῷ καὶ περ μεμαῶτες, ἐρητύοισθ' ἐνὶ νηϊ
 „ τυτθὸν ἐθ', ὥς τοπάρουθεν, ἐπεὶ καὶ ἐπισχέμεν ἔμψης,
 „ λώιον, ἢ κακὸν οἶτον ἀφειδήσαντας ἐλέσθαι.
 „ Κούρη τις μεγάροισιν ἐνιτρέφειτ' Αἰήτασ,
 „ τὴν Ἐκάτη περίαλλα θεὰ δάε τεχνήσασθαι
- 530 „ Φάρμαχ', ὅσ' ἤπειρός τε φύει καὶ νήχυτον ὕδαρι
 „ τοῖσι καὶ ἀκαμάτοιο πυρὸς μειλίσσειτ' αὐτμήν,
 „ καὶ ποταμούς τ' ἴστησιν ἄφαρ κελαδαινὰ ῥέοντας,
 „ ἄστρα τε, καὶ Μῆνης ἱερῆς ἐπέδθησε κελεύθους.
 „ τῆς μὲν ἀπὸ μεγάροιο κατὰ στίβον ἐνθάδ' ἰόντες
- 535 „ μνησάμεθ', εἴκε δύναιτο, κασιγνήτη γεγαυῖα,
 „ μήτηρ ἡμετέρη πεπιθεῖν ἐπαρῆξαι ἀέθλῳ.
 „ Εἰ δὲ καὶ αὐτοῖσιν τόδ' ἐφ' ἀνδάνει, ἦ τ' ἂν ἰκοίμην
 „ ἡματι τῷδ' αὐτῷ πάλιν εἰς δόμον Αἰήτασ
 „ πειρήσων· τάχα δ' ἂν σὺν δαίμονι πειρηθεῖην.
- 540 „ Ὡς φάτο· τοῖσι δὲ σῆμα θεοὶ δόσαν εὐμενέοντας.
 Τρηῶν μὲν Φεύγούσα βίην κίρκιοι πελειᾶς
 ὑφ' ὅθεν Αἰσονίδεω πεφοβημένη ἔμπεσε κόλπῳ·
 κίρκος δ' ἀφλάστῳ περιμάκπεσεν. ὧκα δὲ Μῖφος
 τοῖον ἔπος μετὰ πᾶσι θεοπροπίων ἀγόρευεν.

- 475 “ Αἰσονίδῃ, μήτιν μὲν ὀνόσσειαι, ἣν τιν’ ἐνίψω·
 „ πείρης δ’ οὐ μάλ’ ἔοικε μεθιέμεν ἐν κακότητι.
 „ Κούρην δὲ τίνα πρόσθεν ὑπέκλυες αὐτὸς ἐμεῖο
 „ Φαρμάσσειν, Ἑκάτης Περσηίδος ἐννεσίῃσι·
 „ τὴν εἴ κεν πεπίθοιμεν, οἶδμαι, οὐκέτι τάρβος
- 480 „ ἔσσετ’ ἀεθλεύοντι δαμήμεναι· ἀλλὰ μάλ’ αἰνῶς
 „ δεῖδω, μή πως οὐ μοι ὑποσταίῃ τόδε μήτηρ.
 „ Ἐμῆς δ’ ἐξαῦτις μετελεύσομαι, ἀντιβόλῃσιν,
 „ ζυνὸς ἐπεὶ πάντεσσιν ἐπικρέμαθ’ ἡμῖν ὄλεθρος.
 „ Ἴσκεν εὐφρονέων· ὃ δ’ ἀμείβετο τοῖσδ’ ἐπέεσσιν.
- 485 “ Ω πέπον, εἴ νύ τοι αὐτῷ ἐφανδάνει, σὺ τι μεγαῖρω.
 „ Βάσκ’ ἴθι, καὶ πυκινοῖσι τεὴν παρὰ μητέρα μύθοις
 „ ὄρνυθι λισσόμενος· μελέῃ γε μὲν ἡμῖν ὄρωρεν
 „ ἔλπωρῃ, ὅτε νόστον ἐπετραπόμεσθα γυναιξίν.
 „ Ὡς ἔφατ’· ὦκα δ’ ἔλος μετεκίαθεν. — Αὐτὰρ ἑταῖροι
- 490 γηθόσυνον ἐρέεον, ὅπως παρεύντας ἴδοντο·
 τοῖσιν δ’ Αἰσονίδης τετιημένος ἔκφατο μῦθον.
 “ Ω φίλοι, Αἰήταο ἀπῆος ἄμμι φίλον κῆρ
 „ ἀντικρυς κεχόλwται. Ἐκαστα γ’ ἄρ’ οὐ νύ τι τέκνωρ
 „ οὗτ’ ἐμοί, οὔτε κεν ὕμμι διειρομένοσι πέλοιτο. —
- 495 „ Φῇ δὲ δύω πεδίον τὸ Ἀρήιον ἀμφινέμεσθαι
 „ ταύρω χαλκόποδε, στόματι φλόγα φυσιῶντες,
 „ τετράγυον δ’ ἐπὶ τοῖσιν ἐφίετο νεῖον ἀρύσσαι·
 „ δώσειν δ’ ἐξ ὄφews γενύων σπύρον, ὅς ῥ’ ἀνίησι
 „ Γηγενέας χαλκίοις σὺν τεύχεσιν· ἡματι δ’ αὐτῷ
- 500 „ χρειῶ τούσγε δαΐξαι. Ὁ δὲ νύ οἱ (οὔτι γὰρ ἄλλο
 „ βέλτερον ἦν φράσσασθαι) ἀπηλεγέως ὑπόεσθην.
 „ Ὡς ἄρ’ ἔφη· πάντεσσι δ’ ἀνήνυτος εἶσατ’ ἀεθλος. —
 Δὴν δ’ ἀνερ καὶ ἀναυδοὶ ἐς ἀλλήλους ὀρόωντο,
 ἅττη ἀμηχανίῃ τε κατηφέες· ὅψε δὲ Πηλεὺς
- 505 θαρσαλέως μετὰ πᾶσιν ἀριστήεσσιν ἔειπεν·
 “ Ὡρῃ μητιάσθαι ὃ κ’ ἐρζομεν. Οὐ μὲν ἑὸλπα
 „ βουλῆς εἶναι ὄνειαρ, ὅσον τ’ ἐπὶ κάρτει χειρῶν.
 „ Εἰ μὲν νυνὶ τύνῃ ζεῦξαι βόας Αἰήταο,
 „ ἥρος Αἰσονίδῃ, φρονέεις, μέμονάς τε πύνοιο,

440 Λυγείης, Τελαμών τε παρασχεδόν· εἶπετο δ' Ἄργος
οἶος, ἐπεὶ μεσσηγὺς ἔτ' αὐτόδε νεῦσε λιπέσθαι
αὐτοκασιγνήτοι· οἱ δ' ἦσαν ἐκ μεγάρου.

Θεσπέσιον δ' ἐν πᾶσι μετέπρεπεν Αἴσσονος υἱὸς
κάλλει καὶ χαρίτεσσιν· ἐπ' αὐτῷ δ' ὄμματα κούρη

445 λοξὰ παρὰ λιπαρὴν σχομένη θηεῖτο καλύπτρην,
κῆρ ἄχει σμύχουσα· νόος δέ οἱ, ἥντ' ὄνειρος,
ἐρπύζων πεπότητο μετ' ἶχνια νισσομένοιο.

Καί ῥ' οἱ μὲν ἑα δόμων ἐξήλυθον ἀσχαλίωντες.

Χαλκίοπη δὲ χόλον πεφυλαγμένη Αἰήταο

450 κάρπαλίμως θάλαμόνδε σὺν υἰάσιν οἷσι βελήκει.
Αὐτως δ' αὖ Μήδεια μετέστιχε· ποτὰ δὲ θυμῷ
ῥομαιν', ὅσσα τ' Ἑρωτες ἐποτρύνουσι μέλεσθαι.

Προπρὸ δ' ἄρ' ὀφθαλμῶν ἔτι οἱ ἰνδάλλετο πάντα·
αὐτὸς δ' οἶος ἔην, οἷοίσι τε φάρεσιν ἔστο,

455 οἷά τ' ἔειφ', ὥς δ' ἔζετ' ἐπὶ θρόνου, ὥς τε θύραζε
ἦεν· οὐδέ τιν' ἄλλον εἶδσατο πορφύρουσα
ἔμμεναι ἀνέρα τοῖον· ἐν οὐασι δ' αἰὲν ὀρώρει
αὐδὴ τε μῦθοί τε μελίφρονες, οὓς ἀγόρευσε.

Τάρβει δ' ἄμφ' αὐτῷ, μή μιν βόες, ἢ καὶ αὐτὸς

460 Αἰήτης φθίσειεν· ὀδύρετο δ' ἥντε πάμπαν
ἤδη τεθνεῶτα, τέρεν δέ οἱ ἄμφι παρειαῖς
δάκρυον αἰνοτάτῳ ἑλέω ῥέε κηδοσύνησιν·
ἦκα δὲ μυρομένη λιγέως ἀνενείκατο μῦθον.

“Τίπτέ με δειλαίην τὸδ' ἔχει ἄχος; εἴθ' ὄγε πάντων

465 „ φθίσεται ἡρώων προφερίστατος, εἴτε χερεῖων,
„ ἐρρέτω. — Ἥ μὲν ὄφελλεν ἀκήριος ἐξαλέασθαι! —

„ Ναὶ δὴ τοῦτό γε, πότνα θεὰ Περσηή, πέλοιτο.

„ Οἶκαδε νοστήτεις Φυγῶν μόρον· εἰ δέ μιν αἶσα

„ δμηθῆναι ὑπὸ βουσί, τότε προπάροιθε δαεῖη,

470 „ οὐνεκεν οὐ οἱ ἐγῶγε κακῇ ἐπαγαίομαι ἄτη.

Ἥ μὲν ἄρ' ὥς αἰόλητο νόον μελεδήμασι κούρη.

Οἱ δ' ἐπεὶ οὖν δήμου τε καὶ ἄστεος ἐκτὸς ἔβησαν

τὴν ὁδόν, ἣν τοπάροιθεν ἀνῆλυθον ἐκ πεδίοιο,

δὴ τότε ἰήσυνα τοῖσδε προσένειπεν Ἄργος ἔπεσσιν.

- 405 „ πειρηθείς. Ἐσθλοῖς γὰρ ἐπ' ἀνδράσιν οὔτι μεγαλῶ,
 „ ὡς αὐτοὶ μυθεῖσθε τὸν Ἑλλάδι κοίρανεοντα.
 „ Πεῖρα δέ τοι μένεις τε καὶ ἀλκῆς ἔσσετ' ἄεθλος,
 „ τὸν ἢ αὐτὸς περιέειμι χερσὶν, ὅλοον περ ἔοντα.
 „ Δοιῶ μοι πεδίον τὸ Ἀρήιον ἀμφιπέμυται
 410 „ τάρῳ χαλκόποδε, στόματι φλόγα φεκιάοντε·
 „ τοὺς ἐλάῳ ζεύξας στυφελὴν κατὰ νειὸν Ἄσπος
 „ τετράγυον, τὴν αἴψα ταμῶν ἐπὶ τέλσον ἀρότρου,
 „ οὐ σπύρον ὀλκοῖσι Δροῖς ἐνὶθάλασσομαι ἀκτῇ,
 „ ἅπ' ἔφιος δεινοῖο μεταλδήσκοντας ὀδόντας
 415 „ ἀνδράσι τευχιστῆσι δέμας· τοὺς δ' αὖθι δαΐζων
 „ κείρω ἐμῷ ὑπὸ δαυρὶ περισταδὸν ἀντιώοντας.
 „ Ἡέριος ζεύγνυμι βόας, καὶ δείελον ὥρην
 „ παύομαι ἀμήτοιο. Σὺ δ', εἰ τάδς τοῖα τελέσσεις,
 „ αὐτῆμαρ τόδε κῶας ἀποΐσσαι ἐς βασιλῆος·
 420 „ πρὶν δέ κεν οὐ δοίην, μὴδ' ἔλπω. Δὴ γὰρ αἰεὶς
 „ ἀνδρ' ἀγαθὸν γεγαῶτα κακωτέρῳ ἀνέρι εἴξει.
 „ Ὡς ἄρ' ἔφη· ὁ δὲ σίγα ποδῶν πάρος ὄμματα πήξαι
 „ ἦσθ' αὐτῶς ἄφθολος, ἀμηχανέων κακότητι.
 „ βουλὴν δ' ἀμφὶ πολὺν στρώψα χρόνον, οὐδέ πη εἶχε
 425 „ θαρσαλέως ὑποδέχθαι, ἐπεὶ μέγα φαίνεται ἔργον·
 „ ὅψ' δ' ἀμειβόμενος προσελέξατο κερδαλίοισιν.
 „ Διήτη, μάλα τοί με δίκη περὶ ποδῶν ἔργεις,
 „ τῇ καὶ ἐγὼ τὸν ἄεθλον, ὑπερφιάλῳ περ ἔοντα,
 „ τλήσομαι, εἰ καὶ μοι θανέειν μύρος. Οὐ γὰρ ἐτ' ἄλλο
 430 „ ἔλγισον ἀνθρώποισι κακῆς ἐπικρίσσετ' ἀνάγκης,
 „ ἢ με καὶ ἐνθάδε νεῖσθαι ἐπέχραεν ἐκ βασιλῆος.
 „ Ὡς φάτ' ἀμηχανὴν βεβόλημένος· αὐτὰρ ὁ τότε
 „ σμερδαλέοις ἐπέσσει προσέννεπεν ἀσχαλίοντα.
 „ Ἐρχεσθ' ἄγε νῦν μεθ' ὅμιλον, ἐπεὶ μέμονάς γε πόνοιο·
 435 „ εἰ δέ σύ γε ζυγὰ βουσίην ὑπαδδείσας ἐπαΐραι,
 „ ἥε καὶ οὐλομένον μεταχάσσεαι ἀμήτοιο,
 „ αὐτῷ κεν τὰ ἕκαστα μέλοιτέ μοι, ἔφρα καὶ ἄλλος
 „ ἀνὴρ ἐγγύγισιν ἀρείονα θῶτα μετελθεῖν,
 „ Ἴσκειν ἀπηλεγέως· ὁ δ' ἀπὸ θρόνου ὄρνυτ' Ἴησων,

370 Χαλκιδόπης· τῶν γὰρ σφε μετελθέμεν οὐνεκ' ἰόλπει·
ἐκ δέ οἱ ὄμματ' ἔλαμψεν ὑπ' ἑφρύσιν ἱεμένοιῳ.

“Οὐκ ἄφαρ ὀφθαλμῶν μοι ἀπόπροθι, λαβητῆρες,
,, νεῖσθ' αὐτοῖσι δόλοισι παλίσσεται ἐκτοθι γαίης,
,, πρὶν τίνα λευγαλίον τε δέρος καὶ Φρίξον ἰδέσθαι

375 ,, αὐτίχ' ὁμαρτήσαντες ἀφ' Ἑλλάδος! Οὐκ ἐπὶ κῶας,
,, σκῆπτρα δὲ καὶ τιμὴν βασιλῆϊδα δεῦρο νέεσθαι.

,, Εἰ δέ κε μὴ προπάραιθεν ἐμῆς ἤφασθε τραπέζης,
,, ἦτ' ἂν ἀπὸ γλώσσας τε ταμῶν καὶ χεῖρε κεάσσαι
,, ἀμφοτέρας, οἷοισιν ἐπιπροέηκα πόδεσσιν,

380 ,, ὥς κεν ἐρητύοισθε καὶ ἴστερον ὀρμηθῆναι,
,, οἷα δὲ καὶ μακάρεσσιν ἐπεψεύσασθε θεοῖσι.

Φῆ ἄρα χαλεψάμενος· μέγα δὲ φρένες Διάκιδας
νεόθεν οἰδαίνεσκον· εἰλδετο δ' ἔγδοθι θυμὸς
ἀντιβίην ὅλοον φᾶσθαι ἔπος· ἄλλ' ἀπέρκεν

385 Αἰσονίδης· πρὶ γὰρ αὐτὸς ἀμείψατο μελιχίοισιν.

“Αἰήτη, χρέος μοι τῷδε στόλῳ. — Οὐ τι γὰρ αὐτῷ
,, ἄστν τιόν καὶ δῶμαθ' ἱκάνομεν, ὥς που ἔολπας,
,, οὐδὲ μὲν ἱεμένοι. — Τίς δ' ἂν τόσον οἶδμα περῆσαι
,, τλαίῃ ἐκὼν ὀνειδὸν ἐπὶ κτέρας; — ἄλλ' ἐμὲ δαίμων

390 ,, καὶ κρυερὴ βασιλῆος ἀτασθάλου ᾤρσεν ἑφελμῇ.

,, Δὸς χάριν ἀντομένοισι· σίδεν δ' ἐγὼ Ἑλλάδι πάσῃ
,, θεσπεσίην οἶσω κληιδόνα· καὶ δέ τοι ἤδη
,, πρόφρονες εἰμὲν Ἀρηὶ θεὸν ἀποτίσαι ἀμοιβήν,
,, εἴτ' οὖν Σαυρομάτας γε λιλαίεαι, εἴτε τιν' ἄλλον

395 ,, δῆμον σφωιτέρῳσιν ὑπὸ σκῆπτροισι δαμάσσαι.

Ἴσκεν ὑπασσαίνων ἀγανῇ ὀπί· τοῖο δὲ θυμὸς
δίχθ' ἀδὴν πόρφυρεν ἐνὶ στήθεσσι μενοινῇ,
,, σφέας ὀρμηθεὶς αὐτοσχεδὸν ἐξεναρίζοι,
,, ἢ ὅγε πειρῆσαιτο βίης. Τό οἱ εἶσατ' ἄρειον

400 Φραζομένῳ· καὶ δὴ μιν ὑποβλήδην προσέειπε.

“Ξεῖνε, τί κεν τὰ ἕκαστα διηγεκέως ἀγορεύεις;
,, Εἰ γὰρ ἐτήτυμον ἐστὲ θεῶν γένος, ἥ καὶ ἄλλως
,, οὐδὲν ἐμεῖο χέρηες ἐπ' ὀνειρόισιν ἔβητε,
,, δώσω τοι χρύσειον ἄγειν δέρος, αἴ κ' ἐθέλῃσθαι,

- 335 „ σφωϊτέρη πάντεσσι μετέπρεπεν Αἰολίδῃσι,
 „ πέμπει δεῦρο νέσθαι ἀμήχανον· οὐδ' ὑπαλύξειν
 „ στεύται ἀμειλίχτιο Διὸς θυμαλγέα μῆνιν
 „ καί' χόλον, οὐδ' ἄτλητον ἄγος, Φρίξοιό τε ποινάς,
 „ Αἰολίδεω γενεήν, πρὶν ἐς Ἑλλάδα κῶας ἰέσθαι.
- 340 „ Νῆα δ' Ἀθηναίη Παλλὰς κάμεν, οὐ μάλα τοίην,
 „ οἳαί περ Κόλχοισι μετ' ἀνδράσι νῆες ἔασι,
 „ τῶν αἰνοτάτῃ ἐπεκύρσαμεν· ἤλιθα γάρ μιν
 „ λάβρον ὕδωρ πνοή τε δέτμαγεν· ἡ δ' ἐνὶ γόμοφοις
 „ ἴσχεται, ἣν καὶ πᾶσαι ἐπιθρίσωσιν ἄεθαι.
- 345 „ Ἴσον δ' ἐξ' ἀνέμοιο θείει, καὶ ὅτ' ἀνέρες αὐτοὶ
 „ νωλεμέως χεῖρεσσιν ἐπισπέρχωσιν ἑρτμοῖς —
 „ τῇ δ', ἀνεγειράμενος Παναχαΐδος εἴ τι φέριστον
 „ ἥρώων, τὸν ἄστυ μετήλυθε, πύλ' ἐπαληθεῖς
 „ ἄστεα, καὶ πελάγη στυγερῆς ἁλὸς, εἴ οἱ ὀπάσσοις.
- 350 „ Αὐτῷ δ' ὥς κεν ἄδη, τὼς ἔσσεται· οὐ γὰρ ἰκάνει
 „ χερσὶ βησόμενος· μέμονεν δέ τοι ἄξια τίσειν
 „ δωτίνης, αἶων ἐμέθεν μέγα δυσμενέοντας
 „ Σαυρομάτας, τοὺς σοῖσιν ὑπὸ σκήπτροισι δαμάσσει.
 „ Εἰ δέ καὶ οὐνομα δῆθεν ἐπιθύεις γενεήν τε
- 355 „ ἴδμεναι, εἴτινές εἰσιν, θιαστὰ γε μυθησαίμην.
 „ Τόνδε μὲν, οἷο περ οὔνεκ' ἀφ' Ἑλλάδος ὦδοι ἄγερθεν,
 „ κλείουσ' Αἰσῶνος υἱὸν Ἰήσωνα Κρηθεΐδαο.
 „ Εἰ δ' αὐτοῦ Κρηθῆος ἐτήτυμόν ἐστι γενέθλης,
 „ οὔτω κε γνωτὸς πατρῷος ἄμμι πέλοιτο.
- 360 „ Ἀμφὶ γὰρ Κρηθεὺς Ἀθάμας τ' ἔσαν Αἰόλου υἱεῖ·
 „ Φρίξος δ' αὐτ' Ἀθάμαντος ἦν παῖς Αἰολίδαο.
 „ Τόνδε δ' ἄρ', Ἥελίου γόνον ἔμμεναι εἴ τιν' ἀκούεις,
 „ δέρχεται Αὐγείην· Τελαμῶν δ' ὄγε, κυδίστοιο
 „ Αἰακοῦ ἐκγεγαώς· Ζεὺς δ' Αἰακὸν αὐτὸς ἔτικτεν.
- 365 „ Ὡς δὲ καὶ ὦδοι πάντες, ὅσοι συνίπονται ἐταῖροι,
 „ ἀθανάτων υἱὲς τε καὶ νῆωνι γεγάασι.
 „ Τοῖα παρῖννεπεν Ἄργος· ἀναξ δ' ἐπεχώσατο μύθοις
 „ εἰσαΐων· ὑψοῦ δὲ χόλῳ φρένες ἱερέοντο·
 „ φῆ δ' ἐπαλαστήσας — μενέηνε δὲ παισὶ μάλιστα

300 αὐτοὶ τε λικροῦσιν ἱφαιδρύναντο λοετροῖς,
 ἀσπασιῶς δὲ ῥῥῳ τε ποτῆτί τε θυμὸν ἄρεσσαν.
 Ἐκ δὲ τοῦ Αἰήτης σφετέρης ἐρέεινε θυγατρὸς
 νύμφας, τοίοισι παρηγορέων ἐπέεσσι.

“ Παιδὸς ἐμῆς κοῦροι, Φρίξοιό τε, τὸν περὶ πάντων

305 „ ξείνων ἡμετέροισιν ἐνὶ μεγάροισιν ἔτισα,
 „ πῶς Αἴανδε νέεσθε παλίσσυτοι, ἢ τίς ἄτη
 „ σωομένους μεσσηγὺς ἐνέκλασεν; οὐ μὲν ἐμεῖο
 „ κείθεσθε, προφέροντος ἀπείρουκα μέτρα κελεύθου.
 „ Ἥϊδεν γάρ ποτε πατὴρ ἐν ἄρμασιν Ἡελίοιο

310 „ διενύσας, ὅτ' ἐμεῖο κασιγνήτην ἐκόμιζε
 „ Κίρκην Ἑσπερίης εἴσω χθονός, ἐκ δ' ἐκόμεσθα
 „ ἄκτῃν ἠπείρου Τυρσηίδος, ἐνθ' ἔτι νῦν περ
 „ καιετᾶει, μάλα ποδῶν ἀπὸ προδὶ Κολχίδος αἴης.
 „ Ἀλλὰ τί μύθων ἦδος; ἃ δ' ἐν ποτὶν ὕμμιν ὄρωρεν
 315 „ εἶπατ' ἀριφραδέως, ἢ δ' οἵτινες οἶδ' ἐφίπονται
 „ ἄνδρες, ὅππῃ τε γλαφυρῆς ἐκ νηὸς ἔβητε.

Τοῖά μιν ἐξερέοντα κασιγνήτων προπάροιθεν
 Ἄργος ὑποδδείσας ἀμφὶ στόλῳ Αἰσονίδαο
 μελιχίως πρόσέειπεν, ἐπεὶ προγενέστερος ἦεν.

320 “ Αἰήτη, κείνην μὲν ἄφαρ διέχευαν ἀέθλαι
 „ ζαχρηεῖς· αὐτοὺς δ' ὑπὸ δούρουσι πεπτηῶτας
 „ νήσου Ἐνυαλίοιο ποτὶ ξερὸν ἐκβάλε κῦμα
 „ λυγαίῃ ὑπὸ νυκτί· θεὸς δὲ τις ἄμμι' ἐσάωσεν.
 „ Οὐδὲ γὰρ κί τὸ πάροιθεν ἐρημαίην κατὰ νῆσον

335 „ πύλίζοντ' ἔρριδες Ἀρηΐαι, οὐδ' ἔτι κείνας
 „ εὐρομεν· ἃ δ' οἶγ' ἄνδρες ἀπήλασαν, ἐξαποβάαντες
 „ νηὸς ἐῆς προτέρῳ ἐνὶ ἡματι· καὶ σφ' ἀπέρυκεν
 „ ἡμέας οἰκτεῖρων Ζηνὸς νῖος, ἢ τίς αἴσα·
 „ αὐτῶν ἐπεὶ καὶ βρῶσιν ἄλις καὶ εἶματ' ἔδωκαν,

330 „ οὐνομά τε Φρίξοιο περιχλεῖς εἰσαΐοντες,
 „ ἢ δ' αὐτοῖο σέθεν· μετὰ γὰρ τεὸν ἄστυ νέονται.
 „ Χρεῖώ δ' ἦν ἐθέλης ἐξίδμεναι, οὔ σ' ἐπικεύσω.
 „ Τόνδε τις ἰέμενος πατὴρ ἀπάνευθεν ἐλάσσαι
 „ καὶ κτεάνων βασιλεὺς περιώσιον, οὐνεκεν ἀλκῇ

- 265 „ ἡμετέρῃ κραδίῃ. Τί δέ κεν πόλιν Ὀρχομενοῖα,
 „ ὅστις ὄδ' Ὀρχομενός, κτεάων Ἀθάμαντος ἔκητι,
 „ μητέρ' ἔην ἀχέουσιν ἀποπρολιπόντες, ἴκοισθε;
 „ ὧς ἔφατ'· Αἰήτης δὲ πανύστατος ὤρετο θυμῷ,
 ἐκ δ' αὐτῇ Εἰδυῖα δάμαρ κίεν Αἰήταο,
- 270 Χαλκιοῖσσι αἰούσα· τὸ δ' αὐτίκα πᾶν ὁμάδοιο
 ἔρκος ἐπεπλήθει. Τοὶ μὲν μέγαν ἀμφιπένοντο
 ταῦρον ἅλις δμῶες· τοὶ δὲ ξύλα κάσκανα χαλκῷ
 κόπτον· τοὶ δὲ λοετρὰ πυρὶ ζέον· οὐδέ τις ἦεν,
 ὅς καμάτου μεδέσκειν, ὑποδρήσων βασιλῆϊ.
- 275 Τόφρα δ' Ἔρως πολιοῖο δι' ἡέρος ἔξεν ἄφαντος,
 τετρηχῶς, ὅταν τε νέαις ὑπὸ Φορβᾶσιν οἴστρος
 τέλλεται, ὅν τε μύωπα βοῶν κλείουσι νομῆες.
 ὧκα δ' ὑπὸ Φλιὴν προδόμῳ ἐνὶ τόξῳ τανύσας
 ἰοδόκης ἀδλῆτα πολύστονον ἐξέλετ' ἰόν.
- 280 Ἐκ δ' ὅγε καρπαλίμοισι λαβὼν ποσὶν οὐδὸν ἄμειψεν,
 ὄξια δεινδύων· αὐτὸς δ' ὑπὸ βαιῶς ἐλυσθεῖς
 Αἰσονίδῃ, γλυφίδας μέσση ἐνικάτθετο νευρῇ,
 ἰδυς δ' ἀμφοτέρῃσι διασχόμενος παλάμῃσιν
 ἦκ' ἐπὶ Μηδείῃ· τὴν δ' ἀμφασίῃ λάβε θυμόν.
- 285 Αὐτὸς δ' ὑπορόφοιο καλιμπητὲς ἐκ μεγάρῳ
 κατχαλῶν ἤϊξε· βέλος δ' ἐνεδαίετο κούρη
 νέρθεν ὑπὸ κραδίῃ, φλογὶ εἴκελον· ἀντίκ' αἰεὶ
 βάλλεν ἐπ' Αἰσονίδην ἀμαρύγματα, καὶ οἱ ἄητο
 στηθεῖαν ἐκ πυκιναῖ καμάτῳ φρένες, οὐδέ τιν' ἄλῃην
- 290 μῆστιν ἔχε, γλυκερῇ δὲ κατείδετο θυμόν ἀνίη.
 ὧς δὲ γυνὴ μαλερῷ περὶ κάρφεα χεύατο δαλῷ
 χερσὶν, τῇ περ ταλασθία ἔργα μέμνηεν,
 ὥς κεν ὑπώροφιον νύκτωρ σέλας ἐντύναιτο,
 αἶψα μάλ' ἐγρομένη· τὸ δ' ἀθέσφατον ἐξ ὀλίγοις
- 295 δαλοῦ ἀνερχόμενον σὺν κάρφεα πάντ' ἀμαθύνει·
 τοῖος ὑπὸ κραδίῃ εἰλυμένος αἶθετο λάτρη
 οὖλος Ἔρως· ἀπαλὰς δὲ μετετρωπᾶτο παρειᾶς
 ἐς χλόον, αἶψατ' ἔρευθεος, ἀκηδείῃσι νόοιο.
 Δμῶες δ' ὁπότε δὴ σφιν ἐκαρτέα θῆκαν ἐδωδὴν,

- 230 καὶ οἱ χαλκίποδες ταύρους κάμε, χάλκεα δὲ σφέν
 ἦν στόματ', ἐκ δὲ πυρὸς δεινὸν θέλας ἀμπνείσκον·
 πρὸς δὲ καὶ αὐτόγυνον στιβαροῦ ἀδάμαντος ἄροτρον
 ἤλασεν, Ἡελίῳ τίνων χάριν, ὅς ῥά μιν ἵπποις
 δέξατο, Φλεγραίῃ κεκμηότα δηϊότητι.
- 235 Ἐνθάδε καὶ μέσσαυλος ἐλήλατο· τῇ δ' ἐπὶ ποταμῷ
 δικλίδες εὐπηγεῖς, θάλαμοί τ' ἔσαν ἐνθα καὶ ἐνθα·
 δαιδαλή δ' αἰΐθουσα παρέξ' ἐκάτερθε τέτυκτο.
 Λίχρσι δ' αἰπύτεροι δόμοι ἕστασαν ἀμφοτέρωθε,
 τῶν ἦτοι ἄλλων μὲν, ὅτις καὶ ἐπίροχος ἦε,
- 240 κρείων Αἰήτης σὺν ἤν' ἐνέεισε δάμαρτι·
 ἄλλον δ' Ἀφύρτος ναῖεν παῖς Αἰήταο.
 Τὸν μὲν Κανκασίη Νύμφη τέκεν Ἀστερόδεικ,
 πρὶν περ κουριδίην θύσθαι Εἰδυῖαν ἄκοιτιν,
 Τηθύος Ὠκεαγοῦ τε πανοπλοτάτην γεγαυῖαν.
- 245 καὶ μιν Κόλχων νῆες ἐπωνυμίην Φαίθοντα
 ἔκλεον, οὐνεκα πᾶσι μετέπρεπεν ἡθίοισι.
 Τοὺς δ' ἔχον ἀμφίπολοί τε, καὶ Αἰήταο θυγάτρες
 ἄμφω, Χαλκιοῖα, Μήδειά τε. Τῇ μὲν ἄρ' οἶγε,
 ἐκ θαλάμου θαλαμῶνδε κασιγνήτην μετιούσα, —
- 250 Ἦρῃ γάρ μιν ἔρυκε δόμῳ· πρὶν δ' εὖ τι θάμιζεν
 ἐν μεγάροις, Ἐκάτης δὲ πανήμερος ἀμφοπονεῖτο
 νηὸν, ἐπεὶ ῥά θεῆς αὐτὴ πέλεν ἀρήτειρα —
 καὶ σφέας ὡς ἴδεν ἄσπον, ἀνίαχεν· ὧν δ' ἄκουσε
 Χαλκιοῖα· δμῳαὶ δὲ ποδῶν προπάροιθε βαλοῦσαι
- 255 νήματα καὶ κλωστήρας ἀολλέες ἔκτοθε πᾶσαι
 ἔδραμον. Ἡ' δ' ἅμα τῆσιν ἐοὺς νήας ἰδοῦσα
 ὑφ' οὗ χάσματι χεῖρας ἀνέσχεθεν· ὥς δὲ καὶ αὐτοῖ
 μητέρα δεξιόωντο, καὶ ἀμφαγάπαζον ἰδόντες
 γηθόσυνοι· τοῖον δὲ κινυρομένη φάτο μῦθον.
- 260 “Ἐμης οὐκ ἄρ' ἐμίχλετ' ἀκηδεῖη με λιπόντες
 „ τηλόθι πλάγξασθαι· μετὰ δ' ὑμέας ἔτραπεν αἴσα,
 „ Δειλὴ ἐγὼν, οἷον πόθον Ἐχάδος ἐκ ποδὸν ἄτης
 „ λευγαλέης, Φρίξοιο ἐφημοσύνησιν ἔλεσθε
 „ πατέρες; ὁ μὲν θνήσκων στυγεραῖς ἐπιτείλειτ' ἀνίας

- 195 πανσυδίη, οὐδ' ἔσκε παρέξ ὅτις ἄλλο κελεύοι.
Καὶ τότε ἄρ' υἷας Φρίξου, Τελαμῶνά θ' ἔπεσθαι
ᾤρεσεν καὶ Αὐγείην· αὐτὸς δ' ἔλεν Ἑρμείῳ
σκῆπτρον· ἄφαρ δ' ἄρα νηὸς ὑπὲρ δονακάς τε καὶ ὕδωρ
χέρσινδ' ἐξαπέβησαν ἐπὶ θρωσμοῦ πεδίοιο.
- 200 Κιρκαῖον τάδε που κικλίσκεται· ἐνθα δὲ πολλαὶ
ἐξεῖς πρόμαλοι τε καὶ ἰτέαι ἐκπεφύκσι,
τῶν καὶ ἐπ' ἀκροτάτων νέκυες σειρήσι κρέμανται
δέσμιοι· Εἰσέτι νῦν γὰρ ἄγος Κόλχοισιν ἔρρειεν
ἀνέρας οἰχομένους πυρὶ καίεμεν· οὐδ' ἐνὶ γαίῃ
- 205 ἔστι θέμις στείλαντας ὑπὲρ θ' ἐπὶ σῆμα χέεσθαι,
ἅλ' ἐν ἀδεψήτοισι κατειλύσαντες βοεῖαις,
δενδρέων ἐξάπτειν ἐκάς ἄστρος· Ἡέρι δ' ἴσῃν
καὶ χθὼν ἔμμορεν αἴσαν, ἐπεὶ χθονὶ ταρχύουσι
θνηυτέρας· ἥ γάρ κε δίκη θεσμοῖε τέτυκτο.
- 210 Τοῖσι δὲ νισσομένοις Ἥρη Φίλα μητιώσασα
ἡέρα πουλὺν ἐφῆκε δι' ἄστρος, ὅφρα λάθοιν
Κόλχων μυρίον ἔθνος ἐς Αἰήταο κίοντες·
ἴκα δ' ὅτ' ἐκ πεδίοιο πόλιν καὶ δῶμαθ' ἴκοντο
Αἰήτεω, τότε δ' αὖτις ἀπεσκέδασε νέφος Ἥρη.
- 215 Ἔσταν δ' ἐν προμολῇσι τεθνηπότες ἔρχε ἀνακτος,
εὐρείας τε πύλας, καὶ κίονας, οἱ περὶ τοίχους
ἐξεῖς ἀνεχον· θριπκὸς δ' ἐφύπερθε δόμοιο
λαῖνεος χαλκῆσιν ἐπὶ γλυφίδεσσιν ἀρήρει.
Εὐκῆλοι δ' ὑπὲρ οὐδὲν ἔπειτ' ἔβαν· Ἀλχι δὲ τοῖο
- 220 ἡμερίδες χλοεροῖσι κατυστεφές πετάλοισιν
ὑψοῦ ἀειρόμεναι μέγ' ἐθήλεον. Αἱ δ' ὑπὸ τῇσιν
ἀέναιοι κοῆναι πίσυρες ῥέον, ἃς ἐλάχνηεν
Ἥφαιστος· καὶ ῥ' ἡ μὲν ἀναβλύεσκε γάλακτι,
ἡ δ' οἴῳ, τριτάτη δὲ θυάδει νᾶεν ἀλοιφῇ·
- 225 ἡ δ' ἄρ' ὕδωρ προρέεσκε, τὸ μὲν ποτὶ δυομένησι
θέρμετο Πληιάδεσσιν, ἁμοιβῆδ' ἀνιούσαις
κρυστάλλῳ ἱκελον κοίλης ἀνεκῆκε πέτρης.
Τοῖ' ἄρ' ἐνὶ μεγάροισι Κυτατέος Αἰήταο
τεχνήεις Ἥφαιστος ἐμήσκατο θέσκελα ἔργα.

160 αἰθερίας· ἔνθεν δὲ καταιβάτις ἐστὶ κέλευθος
οὐρανίη· δοιῶ δὲ πόλοι ἀνέχουσι κάρηνα
οὐρέων ἡλιβάτων, κορυφαὶ χθονός, ἥχι τ' ἀερθεῖς
ἡέλιος πρώτῃσιν ἐρεύθεται ἀκτίνεσσι.

Νειόθι δ' ἄλλοτε γαῖα φερέσθιος, ἄστεά τ' ἀνδρῶν

165 φαίνετο, καὶ ποταμῶν ἱεροὶ ῥοοὶ, ἄλλοτε δ' αὐτὴ
ἄκριες, ἀμφὶ δὲ πόντος ἀν' αἰθέρι ποδῶν ἰόντι.

Ἦρωες δ' ἀπένευθεν ἔης ἐπὶ σέλμασι νηὸς
ἐν ποταμῷ κατ' ἔλος λελοχημένοι ἡγορώωντο.

Αὐτὸς δ' Αἰσονίδης μετεφώνεεν· οἱ δ' ὑπάκουον

170 ἡρέμας ἢ ἐνὶ χώρῃ ἐπισχερῶ ἐδριώοντες.

“ὦ φίλοι, ἦτοι ἐγὼ μὲν ὁ μοι ἐπιαχθάνει αὐτῷ

,, ἐξερέω· τοῦ δ' ὑμῖν τέλος κρηῆναι ἔοικε.

,, ξυνὴ γὰρ χρεῖω, ξυνὸι δὲ τε μῦθοι ἔασι

,, πᾶσιν ὅμως· ὁ δὲ σῖγα νόον βουλὴν τ' ἀπερύκων,

175 ἴστω καὶ νόστου τόνδε στόλον οἶος ἀπούρας.

,, ὦδοι μὲν κατὰ νῆα σὺν ἔντεσι μίμνεθ' ἱκῆλοι·

,, αὐτὰρ ἐγὼν ἐς δώματ' ἐλεύσομαι Αἰήταο,

,, υἱὰς ἑλὼν Φρίξιοιο, δῶν δ' ἐπὶ τοῖσιν ἐταίρους.

,, πειρήσω δ' ἐπέεσσι παροίτερον ἀντιβολήσας,

180 ,, εἴ κε θέλει φιλότῃτι δέρος χρύσειον ὀπάσσαι,

,, ἢ καὶ οὐ· πῖσυνος δὲ βίη μετιόντας ἀτίσσει.

,, Ὡδὲ γὰρ ἐξ αὐτοῦ πάρος κακότητα δαέντες,

,, φρασσόμεθ' εἰτ' Ἀρηὶ συνοισόμεθ', εἴτε τις ἄλλῃ

,, μῆτις ἐπίρροδος ἔσται ἐεργομένοισιν αὐτῆς.

185 ,, Μηδ' αὐτῶς ἀλκῇ, πρὶν ἐπεσσί γε πειρηθῆναι,

,, τόνδ' ἀπαμείρωμεν σφέτερον κτέρας· Ἀλλὰ πάροιθε

,, λωίτερον μύθῳ μιν ἀρέσσασθαι μετιόντας.

,, Ποδάκι τοι ῥέα μῦθος, ὅ κεν μόγις ἐξανύσειεν

,, ἡγορέη, τόδ' ἔρεξε κατὰ χρέος, ἥπερ ἐψέκει

190 ,, πρηῆνας. Οἱ δὲ καὶ ποτ' ἀμύμονα Φρίξον ἔδεκτο,

,, μητριῆς φεύγοντα δόλον, πατρός τε θυηλᾶς. —

,, Πᾶντες ἐπεὶ πάντῃ, καὶ ὅτις μάλα κύντατος ἀνδρῶν,

,, Ξεινίου αἰδεῖται Ζηνὸς θέμιν, ἠδ' ἀλεγίζει.

“Ὡς φάτ', ἐπήνησαν δὲ νέοι ἔπος Αἰσονίδαο

125 καὶ μὴν τούγε παρ᾽ ἄσσον ἐπὶ πρῶτέροισιν ὀλέσσαι
βῆ κενεαῖς σὺν χερσὶν ἀμήχανος, οὐδ' ἐνόησε
Κύπριν ἐπιπλομένην. Ἡ δ' ἀντὶ τῆς ἴστατο παιδὸς,
καὶ μιν ἄφαρ γναθμοῦ κατασχομένη προσέειπε.

130 „Τίπτε' ἐπιμειδιάας, ἄφατον κακόν; ἢ μιν αὐτῷ
„ἦπαφες, οὐδὲ δίκη περιέπλεο, νῆιν ἔοντα; —

„Εἰ δ' ἄγε μοι πρόφρων τέλεσον χρεῖος, ὅττι κεν εἴπω·
„καὶ κέν τοι ὀπάσαιμι Διὸς περικαλλὲς ἄθρυμα,
„κείνο, τὸ δὲ ποίησε Φίλη τροφὸς Ἀδρήστεια,
„ἄνθρωπ' ἐν Ἰδαίῳ ἔτι νήπια κουρίζοντι,

135 „σφαῖραν εὐτρόχαλον, τῆς οὐ σύ γε μείλιον ἄλλο
„χειρῶν Ἡφαίστοιο ἡτακτεατίσση ἄρειον.

„Χρῦσα μὴν οἱ κύκλα τέτυκται· ἀμφὶ δ' ἐκάστω
„διπλοαὶ ἀψίδες περιηγέες εἰλίσσονται·
„κρυπταὶ δὲ βραφαὶ εἰσιν· ἔλιξ δ' ἐπιδέδρομε πύσαις

140 „κυανέῃ· ἀτὰρ, εἴ μιν ἐκὼς ἐνὶ χερσὶ βάλοιο,
„ἄστῆρ, ὃς φλεγέθοντα δὲ ἥερος ὀλκὸν ἴησι.

„Τὴν τοι ἐγὼν ὀπάσω· σὺ δὲ παρθένον Αἰήταο
„θέλῃον, ὠστεύσας ἐπ' Ἰήσωνι· μηδὲ τις ἔστω
„ἀμβολίῃ. δὴ γάρ κεν ἀφαιροτέρῃ χάρις εἴη.

145 „Ὡς φάτο· τῷ δ' ἀσπαστὸν ἔπος γένετ' εἰσαίοντι.
Μείλια δ' ἐκβαλε πάντα, καὶ ἀμφοτέρῃσι χιτῶνός
νωλεμές ἐνθα καὶ ἐνθα θεῶς ἔχεν ἀμφιμεμαρπύς.
Λίσσεται δ' αἰψά πορεῖν αὐτοσχεδόν· ἢ δ' ἀγανοῖσιν
ἀντομίνῃ μύθοισιν, ἐπειρύνουσα παρειαῖς,

150 κύσσε ποτισχομένη, καὶ ἀμείβετο μειδίῳσα.

„Ἰστω νῦν τάδε σείο φίλον κάρη, ἥδ' ἐμὸν αὐτῆς,
„ἢ μὲν τοι δῶρόν γε παρέξομαι, οὐδ' ὑπατήσω,
„εἴ κεν ἐνισκίμφεις κούρῃ βέλος Αἰήταο.

Φῆ· ὃ δ' ἄρ' ἀστραγάλους συναμήσατο, καδδὲ φαίνῃ

155 μητρὸς ἦς, εὖ πάντας ἀριθμήσας, βάλε κόλπῳ.
Λυτῖκα δ' ἰσοδόκῃ χρυσῇ περικύτθετο μήτρῃ,
πρίμην κεκλιμένην· ἀνὰ δ' ἀσκύλον εἴλετο τόξον·
βῆ δὲ δι' ἐκ μεγάρου Διὸς πάσκαρπον ἄλῳγν.
Αὐτὰρ ἔπειτα πύλας ἐξήλυθεν Οὐλύμποιο.

- 90 Ὡς ἄρ' ἔφη· Κύπρις δὲ μετ' ἀμφοτέρησιν ἔειπεν·
 “Ἦρῃ, Ἀθηναίη τε, πίθοιτό κεν ὕμμι μάλιστα,
 „ ἢ ἔμοί. Ἵμεῖων γὰρ ἀνικιδήτω περ ἔοντι
 „ τυτθῇ γ' αἰδώς ἔσσει· ἐν ὄμμασιν αὐτὰρ ἔμειο
 „ οὐκ ὄφεται, μάλα δ' αἰὲν ἐριδμαίνων ἀφ' ἐρίζεи.
- 95 „ Καὶ δὴ οἱ μενέηνα, περισχομένη κακότητι,
 „ αὐτοῖσιν τόξοισι δύσηχέας ἄζαι οἰστοῦς
 „ ἀμφαδίη. Τοῖον γὰρ ἐπηκέιλσε χαλεφθεῖς,
 „ εἰ μὴ τηλόδ' ἐχειρας, ἕως ἔτι θυμὸν ἐρύκει,
 „ ἔζω ἑμαῖς, μετέπειτά γ' ἀτεμβοίμην ἐοῖ αὐτῇ.
- 100 Ὡς φάτο· μεῖδῃσαν δὲ θεαί, καὶ ἐσίδρακον ἄντην
 ἀπῆλαις. Ἡ δ' αὖτις ἀκηχεμένη προσέειπεν·
 “Ἄλλοις ἄλγεα τὰμὰ γέλως πέλει· οὐδὲ τί με χρεῖ
 „ μυθεῖσθαι πάντεσσιν· ἄλλης δ' εἰδυῖα καὶ αὐτή.
 „ Νῦν δ' ἐπεὶ ὕμμι φίλον τόδε δὴ πέλει ἀμφοτέρησι,
- 105 „ πειρήσω, καὶ μιν μελίζομαι, οὐδ' ἀπιδήσει.
 Ὡς φάτο· τὴν δ' Ἦρῃ ἐαδινῆς ἐπεμάσσατο χειρὸς,
 ἦκα δὲ μειδιώσῃ παραβλήδην προσέειπεν·
 “Οὕτω νῦν, Κυθήρεια, τόδε χρέος, ὥς ἀγορεύεις,
 „ ἔρξον ἄφαρ· καὶ μὴ τι χαλῖπτεο, μηδ' ἐρίδαινε
- 110 „ ἡωμένη σὺ παιδί· μεταλλήξει γὰρ ὀπίσσω.
 Ἦ ῥα, καὶ ἔλαπε θῶκον· ἐφωμάρτησε δ' Ἀθήνη.
 Ἐκ δ' ἴσαν ἀμφω ταίγε παλίσσυτοι. Ἦδὲ καὶ αὐτὴ
 βῆ β' ἵμεν Οὐλύμποιο κατὰ πτύχας, εἴ μιν ἱφεύροι.
 Εὗρε δὲ τόν γ' ἀπάνευθε, Διὸς θαλερῇ ἐν ἀλῶνι,
- 115 οὐκ οἶον, μετὰ καὶ Γανυμήδεα, τόν ῥα ποτὲ Ζεὺς
 οὐρανῷ ἐγκατένασεν ἐφέστιον ἀθανάτοισι,
 κάλλος ἱμερθεῖς. Ἀμφ' ἀστραγάλοισι δὲ τῶγε
 χρυσείοις, ἅτε κοῦροι ὁμήθεες, ἐψιόνωντο.
 Καὶ β' ὁ μὲν ἤδη πάμπαν ἐνίπλεον ᾤ ἐπὶ μαζῶν
- 120 μάργος Ἔρως λαίης ὑποῖσχανε χειρὸς ἀγοστόν,
 ὀρθεὶς ἐφειστηώς· γλυκερόν δὲ οἱ ἀμφὶ παρειᾶς
 χροῖῃ θάλασσαν ἔρευθος. Ο' δ' ἐγγύθεν ὀκλαδὸν ἦστο
 σίγα κατηφίων· δοιῶ δ' ἔχεν, ἄλλον ἔθ' αὐτῶς
 ἄλλω ἐπιπροΐεις, κεχόλωτο δὲ καίχαλῶντι.

- 55 Ἦν δ' Ἥρῃ τοίοισιν ἀμειβομένη προσέειπε·
 “Κερτομέεις· νῶϊν δὲ κέαρ συνορίνεται ἄτῃ.
 „ Ἦδ' ἂν ποταμῷ ἐνὶ Φάσιδι νῆα κατίσχει
 „ Αἰσονίδης, οἳ τ' ἄλλοι, ὅσοι μετὰ κῶας ἔπονται.
 „ Τῶν ἦτοι πάντων μὲν, ἐπεὶ πέλῃς ἔργον ὕρωρ,
 60 δαΐδιμεν ἐκπάγλως, περὶ δ' Αἰσονίδαο μάλιστα.
 „ Τὸν μὲν ἐγὼν, εἴ καί περ ἐς Αἶδα ναυτίλῃται
 „ λυσόμενος χαλκίῳ Ἰξίονα νεόφθι δεσμῶν,
 „ ῥύσομαι, ὅσσον ἐμοῖσιν ἐνὶ σθένης ἐπλετο γυίοις,
 „ ὄφρα μὴ ἐβγελάσῃ Πελὶς κακὸν οἶτον ἀλύξας,
 65 ὅς μ' ὑπερνηρέῃ θυέων ἀγέραςτον ἐθήκε.
 „ Καὶ δ' ἄλλως ἔτι καὶ πρὶν ἐμοὶ μέγα φίλατ' Ἰήσαν,
 „ ἐξήτ' ἐπὶ προχοῇσιν ἄλις πλήθοντος Ἀναύρου,
 „ ἀνδρῶν εὐνομίης πειρωμένη ἀντεβόλησε
 „ θήρης ἑξανιών· νιφετῷ δ' ἐπαλύνετο πάντα
 70 οὔρεα καὶ σκοπιαὶ περιμήκεες· οἳ δὲ κατ' αὐτῶν
 „ χεῖμαρβροὶ καναχῆδ' ἀκυλινδόμενοι φορέοντο·
 „ γρηῃ δέ μ' εἰσαμένην ὀλοφύρατο, καὶ μ' ἀναείρας
 „ αὐτὸς ἑοῖς ἄμοισι δι' ἐκ προαλῆς φέρειν ὕδωρ.
 „ Τῷ νύ μοι ἄλλῃκτον περιτίεται· οὐ δέ κε λῶδῃ
 75 τίσειεν Πελὶς, εἰ μὴ σύ γε νόστον ὑπάσσεις.
 “Ὡς ἤδα· Κύπριν δ' ἐνεοστασίῃ λάβε μύθων.
 “Ἀζετο δ' ἀντόμένην Ἥρην ἐνδ' εἰσορώσα,
 καὶ μιν ἔπειτ' ἀγανοῖσι προσέννεπεν ἥ γ' ἐπέεσσι·
 “Πότνα θεὰ, μήτοι τι κακώτερον ἄλλο πέλοιτο
 80 „ Κύπριδος, εἰ δὴ σείῃ λιλαιομένης ἀθρυίζω
 „ ἢ ἔπος, ἥ εἰ τι ἔργον, ὃ κεν χέρες αἶγε κάμοιεν
 „ ἠπεδαναί· καὶ μή τις ἀμοιβαίῃ χάρις ἔστω.
 “Ὡς ἔφαθ'· Ἥρῃ δ' αὖτις ἐπιφραδέως ἀγόρευσεν·
 “Οὐ τι βίης χατέουσαι ἰκάνομεν, οὐδέ τι χειρῶν.
 85 „ Ἀλλ' αὐτως ἀκέυσα τεῷ ἐπιπένκλεο παιδί,
 „ παρθέγον Αἰήτειω θέλξαι πόθῳ Αἰσονίδαο.
 „ Εἰ γάρ οἱ κείνῃ συμφράσσεται εὐμενέουσα,
 „ ῥήϊδίως μιν ἐλόντα δέρος χρύσειον ὕψω
 „ νοστήσειν ἐς Ἴωλκόν, ἐπεὶ δολόεσσα τέτυκται.

- 20 „ Φράσασθαι νοέω τοῦτον δόλον, ὅστις ὀνήσει
 „ θυμὸν ἀριστῶν· πολλὰς δ' ἐπεδοίασα βουλάς.
 Ἦ, καὶ ἐπ' οὐδὲος αἶγε πόδων πάρος ὄμματ' ἐπήξαν,
 ἄνδιχα πορφύρουσαι ἐνὶ σφίσιν· αὐτίκα δ' Ἦρη
 τοῖν μητιώσα παροϊτέρη ἐκφατο μῦθον.
- 25 “ Δεῦρ ἴομεν μετὰ Κύπριν· ἐπιπλόμεναι δέ μιν ἄμφω
 „ παιδὶ ἔῳ εἰπεῖν ὀτρύνομεν, αἶ κε πίθεται
 „ κούρην Αἰήτεω πολυφάρμακον οἷσι βέλεσσι
 „ θέλξει οἰστεύσας ἐπ' Ἰήσωνι. Τὸν δ' ἄν εἴῃ
 „ κείνης ἐννεσίῃσιν ἐς Ἑλλάδα κῶας ἀνάξειν.
- 30 “ Ὡς ἄρ' ἔφη· πυκινὴ δὲ συνεύαδε μῆτις Ἀθήνη,
 καὶ μιν ἔπειτ' ἐξαυτίς ἀμείβετο μελιχίοισιν·
 “ Ἦρη, νήϊδα μὲν με πατήρ τέκε τοῖο βολάων,
 „ οὐδὲ τίνα χρεῖω θελκτήριον οἶδα πόθοιο.
 „ Εἰ δέ σοι αὐτῇ μῦθος ἐφανδάνει, ἦτ' ἂν ἔγωγε
- 35 „ ἐσποιμήν· σὺ δέ κεν Φαίης ἔπος ἀντιώσω.
 Ἦ, καὶ ἀναίξασαι ἐπὶ μέγα δῶμα νέοντο
 Κύπριδος, ὄρβρα τέ οἱ δεῖμεν πόσις ἀμφιγυήεις,
 ὁππότε μιν τὰ πρῶτα παρὰ Διὸς ἦγεν ἄκοιτιν.
 Ἐρκεα δ' εἰσελθούσαι ἐπ' αἰθούσῃ θαλάμοιο
- 40 ἔτταν, ἵν' ἐντύνησκε θεὰ λέχος Ἥφαιστοιο.
 Ἀλλ' ὁ μὲν εἰς χαλκεῶνα καὶ ἄκμονας ἦρι βεβήκει
 νήσοιο πλαστῆς εὐρὺν μυχόν, ᾧ ἐνὶ πάντα
 δαίδαλα χάλκευε ῥιπῇ πυρός· ἥ δ' ἄρα μούνη
 ἦστο δόμῳ δινωτὸν ἀνὰ θρόνον, ἅντα θυράων.
- 45 λευκοῖσιν δ' ἐκάτερθε κόμας ἐπιειμένη ὥμοις
 κόσμει χρυσεῖη διὰ κερκίδι, μέλλε δὲ μακροὺς
 πλέξασθαι πλοκάμους· τὰς δὲ προπάραιθεν ἰδοῦσα
 ἐσχεθεν, εἰώω τέ σφ' ἐκάλει, καὶ ἀπὸ θρόνου ὤρτο,
 εἰσὲ τ' ἐνὶ κλισμοῖσιν· ἀτὰρ μετέπειτα καὶ αὐτῇ
- 50 ἴζανεν, ἀψήκτους δὲ χερσὶν ἀνεδήσατο χαίτας.
 Τοῖα δὲ μειδιόωσα προσέννεπεν αἰμυλίοισιν.
 “ Ἦθεῖαι, τίς δεῦρο νόος χρεῖω τε κομίζει
 „ δηκτικὰς αὐτῶς; τί δ' ἰκάνετον, οὐ τι πάρος γε
 „ λίην φοιτίζουσαι, ἐπεὶ περίστε θεάων;

ΑΠΟΛΛΩΝΙΟΥ ΑΡΓΟΝΑΥΤΙΚΩΝ

ΒΙΒΛΙΟΝ Γ.

Εἰ δ' ἄγε νῦν, Ἐρατῶ, παρὰ θ' ἴστασο, καὶ μοι ἐνίσπε
 ἔνθεν ὅπως ἐς Ἰωλκὸν ἀνήγαγε κῶας Ἰήσων
 Μηδείης ὑπ' ἔρωτι· σὺ γὰρ καὶ Κύπριδος αἴσαν
 ἔμμορες, ἀδμήτας δὲ τεοῖς μελεδήμασι θέλγεις
 5 παρθενικάς· τῷ καὶ τοι ἐπήρατον οὐνομ' ἀνῆπται.

“Ὡς οἱ μὲν πυκινόσιν ἐναίετ' ὀνόμασσι
 μένον ἀριστῆες λελοχημένοι· αἱ δ' ἐνόησαν
 Ἥρῃ Ἀθηναίῃ τε, Διὸς δ' αὐτοῖο καὶ ἄλλων
 ἀθανάτων ἀπονόσφι θεῶν, θάλαμινδε κιοῦσαι.
 10 βούλευον· πείραζε δ' Ἀθηναίην πάρος Ἥρῃ.
 “Αὐτὴ νῦν προτέρῃ, θύγατερ Διός, ἄρχεο βουλῆς.
 „Τί χρέος; ἢ δόλον τίνα μήσεται, ᾧ κεν ἐλόντες
 „χρῦσεον Αἰήταο μεθ' Ἐλλάδα κῶας ἄγουντο;
 „ἢ καὶ τόν γ' ἐπέσσι παραιφάμενοι πεπίθοιεν
 15 „μελιχίλοις; ἢ μὲν γὰρ ὑπερφίαλος πέλει αἰνῶς.
 „Ἐμπης δ' οὐ τίνα πείραϊν ἀποτρωπᾶσθαι ἔοικεν.
 “Ὡς φάτο· τὴν δὲ παρᾶσσαν Ἀθηναίη προσέειπε·
 “Καὶ δ' αὐτὴν ἐμὲ τοῖα μετὰ φρεσὶν ὀρμαίνουσιν,
 „Ἥρῃ, ἀπηλεγέως ἐξίεται. Ἀλλὰ τοι οὔπω

- 1280 „ εἴτε καὶ ἀλλοίη τις ἐπήβολος ἔσσεται ὁρμή,
 Ὡς ἔφατ'· Ἄργον δ' αὖτε παρηγορήσιν Ἰήσων
 ὑψόθι νῆ' ἐκέλευσεν ἐπ' εὐναίησιν ἐρύσσαι,
 Δάσκιον εἰσελάσαντας ἔλος· τὸ δ' ἐπισχεδὸν ἦε
 νισσομένων, ἐνθ' οἶγε διὰ κνέφας ἠυλίζοντο.
 1285 Ἦώς δ' οὐ μετὰ δηρὸν ἐελδομένοισι φάανθη.
-

- 1245 ἐσσυμένως, λιαροῖο φορεῦμενοι ἐξ ἀνέμοιο.
 Καὶ δὴ νισσομένοισι μυχὸς διεφαίνετο Πόντου·
 καὶ δὴ Καυκασίων ὄρεων ἀνέτηλλον ἐρίπναι
 ἠλίδεσσι, τάδε γυῖα περὶ στυφελῶσι πάγοισιν
 ἰδόμενος χαλκήρεσιν ἀλυκτοπέδεσσι Προμηθεὺς
- 1250 αἰετὸν ἦπατι φέρδε παλιμπετὲς αἰσσοῦντα.
 Τὸν μὲν ἐπ' ἀκροτάτης ἰδὼν ἔσπερον ἔξεϊ βροῖζην
 νηὸς ὑπερπτάμενον νεφέων σχεδόν· ἀλλὰ καὶ ἔμπης
 λαίφεα πάντ' ἐτίναξε, παραιδύξας πτερυγέσσιν.
 Οὐ γὰρ ὄγ' αἰθερίοιο φυὴν ἔχεν οἰωνοῖο,
- 1255 ἴσα δ' ἐϋξέστοις ὠκύπτερα πάλλεν ἑρετμοῖς.
 Δηρὸν δ' οὐ μετέπειτα πολύστονον αἶον αὐδὴν
 ἦπαρ ἀνελκομένοιο Προμηθέος· ἐκτύπε δ' αἰθήρ
 οἰμωγῇ, μέσφ' αὐτίς ἀπ' οὐρέος αἰσσοῦντα
 αἰετὸν ὠμηστὴν αὐτὴν ὁδὸν εἰσενήσαν.
- 1260 Ἐννύχιοι δ' Ἄργοιο δαημοσύνησιν ἴκοντο
 ἥ πᾶσιν τ' εὐρυρέοντα, καὶ ἔσχατα πείρατα Πόντου.
 Αὐτίκα δ' ἰστία μὲν καὶ ἐπικρίον ἐνδοθεὶ κοίλης
 ἰστοδόκης στείλαντες ἐκόσμεον· ἐν δὲ καὶ αὐτὸν
 ἰστὸν ἄφαρ χαλάσαντο παρκακλιδόν· ὥκα δ' ἑρετμοῖς
- 1265 εἰσέλασαν ποταμοῖο μέγαν ῥόον· αὐτὰρ ὁ πάντη
 καχλάζων ὑπόεικεν, ἔχων δ' ἐπ' ἀριστερὰ χειρῶν
 Καύκασον αἰπήνεντα, Κυταιίδα τε πτόλιν Αἰῆς,
 ἔνθεν δ' αὖ πεδίον τὸ Ἀρῆιον, ἱερὰ τ' ἄλση
 τοῖο θεοῦ, τόθι κῶας ὕφει ἵδρυτο δοκεύων,
- 1270 πεπτάμενον λαοίοισιν ἐπὶ δρυὸς ἀκρεμόνεσσιν.
 Αὐτὸς δ' Αἰσονίδης χρυσέῳ ποταμόνδε κυπέλαρ
 οἴνου ἀκηρασίῳ μελισταγέας χέει λοιβὰς
 Γαίῃ τ', ἐνναέταις τε θεοῖς, ψυχῇς τε καμόντων
 ἡρώων· γουνοῦτο δ' ἀπήμονας εἶναι ἄρωγους
- 1275 εὐμένεως, καὶ νηὸς ἐναΐσιμα πείσματα δέχθαι.
 Αὐτίκα δ' Ἀλκαῖος τοῖον μετὰ μῦθον ἔειπε.
 “Κολχίδα μὲν δὴ γαῖαν ἰκάνομεν, ἡδὲ βίεθρα
 „Φάσιδος· ὥρῃ δ' ἡμῖν ἐνὶ σφίσι μητιάσασθαι,
 „εἴτ' οὖν μειλιχίῃ πειρησόμεθ' Αἰήταο,

- 1210 „Καυκάσου ἐν κνημοῖσι, Τυφασίνην ἔτι πέτρῃ,
 „ἐνθα Τυφάονα Φωσι Διὸς Κρονίδαο περαυνῶ
 „βλήμενον, ὑπώπτε βί στιβαράς ἐπορέζατο χεῖρας,
 „θερμὸν ἀπὸ κρατὸς στάζει φόνον· ἵκατο δ' αὐτῷ
 „οὔρεα καὶ πεδία Νυσηίων, ἐνθ' ἔτι νῦν περ
- 1215 „κεῖται ὑποβρύχιος Σερβωνίδος ὕδασι λίμνης.
 „Ὡς ἄρ' ἔφη· πολέεσσι δ' ἐπὶ χλός εἴλε παρειᾶς
 ἀντίκα, τοῖον ἄεθλον ὅτ' ἔκλυον. Αἴψα δὲ Πηλεὺς
 θαρσαλέως ἐπέεσσιν ἀμείψατο, φώνησέν τε·
 „Μὴ δ' οὕτως, ἡθδε, λίην δειδίσσεο θυμῷ.
- 1220 „οὔτε γὰρ ᾧδ' ἀλκὴν ἐπιδευόμεθ', ὥστε χερεῖους
 „ἔμμεναι Αἰήταο σὺν ἐντεσι πειρηθῆναι.
 „Ἀλλὰ καὶ ἡμέας οἷω ἐπισταμένους πολέμοιο
 „κεῖσε μόλειν, μακάρων σχεδὸν αἵματος ἐκγεγαῶτας,
 „τῷ, εἰ μὴ φιλότῃτι δέρος χρύσειον ὀπάσσοι,
- 1225 „οὐ οἱ χραισμήσειν ἐπιέλομαι ἔθνεα Κόλχων.
 „Ὡς οἷγ' ἀπλήλοισιν ἀμοιβὰδὸν ἡγορόωντο,
 μέσφ' αὖτις δόρποιο κορυσσάμενοι κατέδαρθεν.
 „Ἡοὶ δ' ἀνεγρομένοισιν ἐνκραὴς ἄεν οὔρος·
 ἰστία δ' ἤειραν, τὰ δ' ὑπαὶ ῥιπῆς ἀνέμοιο
- 1230 τείνετο· ῥίμφα δὲ νῆσον ἀποπροέλειπον Ἄρηος.
 Νυκτὶ δ' ἐπιπλομένοι Φιλυρηίδα νῆσον ἄμειβον·
 ἐνθα μὲν Οὐρανίδης Φιλύρῃ Κρόνος, εὐτ' ἐν Ὀλύμπῳ
 Τιτήνων ἥνασεν, ὁ δὲ Κρηταῖον ὑπ' ἄντρον
 Ζεὺς ἔτι Κουρήτεσσι μετετρέφετ' Ἰδαίοισι,
- 1235 Ῥεῖν ἐξαπάφῳν, παρελέξατο· τοὺς δ' ἐνὶ λέκτροις
 τέτμε θεὰ μεσσηγύς· ὁ δ' ἐξ εὐνῆς ἀγορούσας
 ἔσσυτο χαιτήντι φυὴν ἐναλίσκιος ἵππῳ·
 ἡ δ' αἰδοῖ χῶρόν τε καὶ ἦθεα κεῖνα λιποῦσα
 Ὠκεανὶς Φιλύρῃ, εἰς οὔρεα μακρὰ Πελασγῶν
- 1240 ἦλθ', ἵνα δὴ Χείρωνα πελώριον, ἄλλα μὲν ἵππῳ,
 ἄλλα δὲ θεῷ, ἀτάλαντον, ἀμοιβαίῃ τέκεν εὐνῇ.
 Κεῖθεν δ' αὖ Μάκρωνα, ἀπειρεσίην τε Βεχέειρων
 γαῖαν, ὑπερφιάλους τε παρεζενέοντο Σάπειρας,
 Βύζηράς τ' ἐπὶ τοῖσιν· ἐπιπρὸ γὰρ αἰὲν ἔτεμνον

- 1175 μῆλων τ' ἠδὲ βοῶν τῇδ' ἐσχάρῃ ἱερὰ καίειν·
 ἄλλ' ἵππους δαίτρευνον, ἐπητανὸν κομίουσαι.
 Αὐτὰρ ἐπεὶ ῥέζαντες ἐπαρτέα δαῖτα πᾶσαντο,
 δὴ τοτ' ἄρ' Αἰσονίδης μετεφώνεεν, ἦρχέ τε μύθων.
 “Ζεὺς αἰτεῖ τὰ! — ἕκαστ' ἐπιδέσκεται· οὐδὲ μιν ἄνδρες
- 1180 „ λήθομεν ἔμπεδον, οἳ τε θεοῦδᾶες ἠδὲ δίκαιοι —
 „ ὥς μὲν γὰρ πατέρ' ὑμῖν ὑπεξείρυτο Φόνοιο
 „ ματρὸν ἧς, καὶ νόσφιν ἀπειρέσιον πόρην ὄλβον·
 „ ὥς δὲ καὶ ὑμέας αὖτις ἀπήμονας ἐξεσάωσε
 „ χεῖματος οὐλομένοιο. Πάρεσσι δὲ τῇδ' ἐπὶ νηὸς
- 1185 „ ἔνθα καὶ ἔνθα νέεσθαι, ὅπῃ φίλον, εἴτε μετ' Αἴαν,
 „ εἴτε μετ' Ἀφνειὴν θείου πόλιν Ὀρχομενοῖο.
 „ Τὴν γὰρ Ἀθηναίη τεχνήσατο, καὶ τάμε χαλκῷ
 „ δούρατα Πηλιάδος κορυφῆς πέρι· σὺν δὲ οἱ Ἄργος
 „ τεύξεν. Ἀτὰρ κείνην γε κακὸν διὰ κῆρ' ἐπέδασσε,
- 1190 „ πρὶν καὶ πετράων σχιδὸν ἔλθειν, αἳ τ' ἐνὶ Πόντῳ
 „ στενωπῷ συνίασι πανήμεροι ἀλλήλοισιν.
 „ Ἄλλ' ἄγεθ', ὧδε καὶ αὐτὸν ἐς Ἑλλάδα μαιομένοισι.
 „ κῶας ἄγειν χρούσειον ἐπὶ ῥόδοι ἄμμι πέλεσθε,
 „ καὶ πλοῦν ἡγεμονῆες, ἐπεὶ Φρίξοιο θυγαῖς
- 1195 „ στέλλομαι ἀμπλήσων, Ζηνὸς χόλον Αἰολίδῃσιν.
 “Ἴσκε παρηγορέων· οἳ δ' ἔστυγον εἰσαΐοντες.
 Οὐ γὰρ ἔφην τεύξεσθαι ἐνὲος Αἰήταο
 κῶας ἄγειν κριοῖο μεμαότας, ὧδέ τ' ἔειπεν
 “Ἄργος, ἀτεμζόμενος τοῖον στόλον ἀμφιπένεσθαι.
- 1200 “ὦ φίλοι, ἡμέτερον μὲν ὅσον σθένος, οὔ ποτ' ἄρωγῆς
 „ σχήσεται, οὐδ' ἠβαιὸν, ὅτε χρειώ τις ἴκηται.
 „ Ἄλλ' αἰνῶς ὀλοῇσιν ἀπηνείησιν ἄρῃεν
 „ Αἰήτης· τῷ καὶ περιδείδια ναυτίλλεσθαι.
 „ Στεῦται δ' Ἥελίου γόνος ἔμμεναι· ἀμφὶ δὲ Κόλχων
- 1205 „ ἔθνεα ναιετάουσιν ἀπείρονα· καὶ δὲ κεν Ἄρει
 „ σμερδαλέην ἐνοπὴν μέγα τε σθένος ἰσοφαρίζοι.
 „ Οὐ μὲν, οὐδ' ἀπάνευθεν ἔλειν δέρος Αἰήταο
 „ ῥήϊδιον, τοῖός μιν ὄφειε περὶ τ' ἀμφὶ τ' ἔρυται
 „ ἀθάνατος καὶ αὔπνος, ὃν αὐτῇ Γαῖ' ἀνέφυσε

- 1140 Τὸν δ' Ἄργος προσέειπεν ἀμυχανέων κακότητι·
 “ Αἰολίδην Φρίξον τιν' ἀφ' Ἐλλάδος ἄν' ἰκέσθαι,
 „ ὅτρεκέας, δοκέω που, ἀκούετε καὶ πάρος αὐτοί,
 „ Φρίξον, ὅτις πολλοῖσιν ἀνέλυθεν Αἰήταο,
 „ κροῦ ἐπεμβεβαῖως, τὸν ἴα χρύσειον ἔθηκεν
- 1145 „ Ἑρμείης — κῶας δὲ καὶ εἰσέτι νῦν κεν ἴδοισθε —
 „ Τὸν μὲν ἔπειτ' ἔρμεξεν ἥϊς ὑποθημοσύνησι
 „ Φυξίῳ ἐκ πάντων Κρονίδῃ Διὶ. Καὶ μιν ἔδεκτο
 „ Αἰήτης μεγάρῳ, κούρην τέ οἱ ἐλγυάλιζε
 „ Χαλκίοπην ἀνάεδνον, εὐφροσύνησι νόοιο·
- 1150 „ τῶν ἐξ ἀμφοτέρων εἰμὲν γένος. Ἄλλ' ὁ μὲν ἦδη
 „ γηραιὸς θάναε Φρίξος ἐν Αἰήταο δόμοισιν·
 „ ἡμεῖς δ' αὐτίκα, πατρὸς ἐφειγμένων ἀλέγοντες,
 „ νεόμεθ' ἐς Ὀρχομενὸν, κτεάτων Ἀθάμαντος ἔκῃ.
 „ Εἰ δὲ καὶ οὐνῃμα δῆθεν ἐπιθύεις δεδαῆσθαι,
- 1155 „ τῷ δὲ Κυτίσσωρος πέλει οὐνῃμα, τῷδε δὲ, Φρόντις·
 „ τῷ δὲ, Μέλαις· ἐμὲ δ' αὐτὸν ἐπικλείουτέ κεν Ἄργον.
 „ Ὡς φάτ'· ἀριστῆες δὲ συνηβολίῃ κεχάροντο,
 „ καὶ σφέας ἀμφίεπον περιθαμβέες. Αὐτὰρ ἴησαν
 „ ἐξαυτίς κατὰ μοῖραν ἀμείψατο τοῖσδ' ἐπέεσσιν.
- 1160 “ Ἡ ἄρα δὴ γνωτοὶ πατρώιοι ἄμμιν ὄντες
 „ λίσσεσθ' εὐμενέοντας ἐπαρκέσσαι κακότητα.
 „ Κρηθρὸς γάρ ῥ' Ἀθάμας τε κασίγνητοι γεγάασι.
 „ Κρηθρὸς δ' υἱὸς ἐγὼ σὺν τοῖσιν ἑταίροις
 „ Ἐλλάδος ἐξ αὐτῆς νέομ' ἐς πόλιν Αἰήταο.
- 1165 „ Ἀλλὰ τὰ μὲν καὶ ἐσαυτίς ἐνίφομεν ἀπλήλοισι·
 „ νῦν δ' ἔσσασθε πάροιθεν· ὑπ' ἐννεσίῃσι δ' ὄλω
 „ ἀθανάτων ἐς χεῖρας ἐμὰς χατέοντας ἰκέσθαι.
 „ Ἡ ἴα, καὶ ἐκ νηὸς δῶκε σφίσιν εἴματα δύναι.
 „ Πανσυδίῃ δ' ἤπειτα κίον μετὰ νηὸν Ἄρης,
 1170 μῆλ' ἱερευσόμενοι· περὶ δ' ἐσχάρῃ ἐστήσαντο
 „ ἐσσυμένως, ἥ τ' ἐκτὸς ἀνηρεφέος πέλε νηοῦ,
 „ στιάων· εἴσω δὲ μέλαις λίθος ἡρήρειστο
 „ ἱερὸς, ᾧ ποτε πᾶσαι Ἀμαζόνες εὐχετόωντο.
 „ οὐδὲ σφιν θέμις ἦεν, ὅτ' ἀντιπέρηθεν ἵκοντο,

- 1105 ἄμπεχεν, οὐδέ πη ἄστρο διαυγέα φαίνεται ἰδέσθαι
 ἐκ νεφέων, σκοτίεις δὲ περὶ ζῶφος ἡρήρειστο.
 Οἱ δ' ἄρα μυδαλέοι, στυγερόν τρομέοντες ὀλεθρον,
 νῆες Φρίξοιο φέρονθ' ὑπὸ κύμασιν αὐτως.
 Ἰστία δ' ἐξήραξ' ἀνέμου μένος, ἡδὲ καὶ αὐτὴν
- 1110 νῆα διάνδιχ' ἔαζε τινασσομένην ῥοθίοισιν.
 Ἔνθα δ' ἔπ' ἐννεσίησι θεῶν, πίσυρές περ ἶόντες,
 δοῦρατος ὠρέξαντο πελωρίου, οἳα τε ποῖα
 φαισθεΐσης κεκέδαστο, θεοῖς συναρηρότα γόμοις.
 Καὶ τοὺς μὲν νησόνδε, παρὲξ ὀλίγον θανάτοιο,
- 1115 κύματα καὶ ῥιπαὶ ἀνέμου φέρον ἀσχαλῶντας.
 Αὐτίκα δ' ἐρράγη ὄμβρος ἀδέσφατος, ἔε δὲ πόντον
 καὶ νῆσον, καὶ πᾶσαν ὅσην κατεναντία νῆσου
 χώραν Μοσσύνοικοι ὑπέρβιοι ἀμφενέμοντο.
 Τοὺς δ' ἄμυδις κρατερῶ σὺν δούρατι κύματος ὀρμή
- 1120 νῆας Φρίξοιο μετ' ἡϊόνας βάλε νῆσου
 νύχθ' ὑπὸ λυγαίῃ· τὸ δὲ μυρίον ἐκ Διὸς ὕδωρ
 λήξεν ἅμ' ἡελίῳ· τάχα δ' ἐλγύθεν ἀντεβόλησαν
 ἀπ' ἡλίοις, Ἄργος δὲ παροίτατος ἐκφατο μῦθον.
 « Ἀντόμεθα πρὸς Ζηνὸς Ἐποψίου, οἵτινες ἐστὶ
- 1125 „ ἀνδρῶν, εὐμένειν τε καὶ ἀρκέσσαι χατίουσι.
 „ Πόντῳ γάρ τρηχεῖαι ἐπιβρίσασαι ἔεθαι
 „ νηὸς ἀεικελῆς διὰ δούρατα πάντ' ἐκέδασαν.
 „ τοῦνεκα νῦν ὑμέας γονναζόμεθ', αἵ κε πίπτεισθε,
 „ δοῦναι ὅσον θ' εἴλυμα περὶ χροῶς, ἡδὲ κομίσσαι,
- 1130 „ ἀνέρας οἰκτεΐραντας ὁμήλικας ἐν κακότητι.
 „ Ἀλλ' ἰκέτας ζείνους Διὸς εἵνεκεν αἰδέσασσθε
 „ Ξεινίου, Ἰκεσίου τε· Διὸς δ' ἄμφω ἰκέται τε
 „ καὶ ξεινοί· ὃ δὲ που καὶ ἐπόψιος ἄμμι τέτυκται.
 Τὸν δ' αὖτ' Αἴσωνος υἱὸς ἐπιφραδέως ἔρεεινε,
- 1135 μαντοσύνας Φινῆος οἰσάμενος τελέεσθαι·
 « Ταῦτα μὲν αὐτίκα πάντα παρέξομεν εὐμένεοντες.
 „ Ἀλλ' ἄγε μοι κατάλεξον ἐτήτυμον, ὥς ποθὶ γαίης
 „ ναίετε, καὶ χρέος ὅδον ὑπεῖρ ἄλλα νεῖσθαι ἀνώγει,
 „ αὐτῶν θ' ὑμείων ὄνομα κλυτὸν, ἡδὲ γενέθλην;

- 1070 Ἀμφὶ δὲ χαλκείας κόρυθας κεφαλῇσιν ἔθεντο,
 δεινὸν λαμπομένας, ἐπὶ δὲ λάφοι ἐτσειόντο
 φοινίκεσι. Καὶ τοὶ μὲν ἀμοιβήδην ἐλάσσον·
 τοὶ δ' αὖτ' εἵχεϊσι καὶ ἀσπίσι νῆα κάλυψαν.
 ὣς δ' ὅτε τις κεράμῳ κατερέψεται ἐρκίον ἀνὴρ,
- 1075 δώματος ἀγλαίην τε καὶ ὑετοῦ ἔμμεναι ἄλκαρ,
 ἅλῃ δ' ἔμπεδον ἅλῃος ὁμῶ· ἐπαμοιβὸς ἄρρηρ·
 ὡς οἴγ' ἀσπίσι νῆα συναρτύναντες ἔρεψαν.
 Οἷη δὲ κλαγγὴ δηίου πέλει ἐξ ὁμάδοιο
 ἀνδρῶν κινυμένων, ὅποτε ζυνίωσι φάλαγγες,
- 1080 τοίῃ ἄρ' ὑφόδι νηὸς ἐς ἡέρα κίδνατ' αὐτῇ.
 Οὐδὲ τιν' οἰωνῶν ἔτ' ἐσέδρακον, ἀλλ' ὅτε νήσω
 χρίμιψαντες σακίεσσιν ἐπέκτυπον, αὐτίκ' ἄρ' οἱ γε
 μυρίοι ἐνθά καὶ ἐνθά πεφυζότες ἡρέθοντο.
 ὣς δ' ὅποτε Κρονίδης πυκινὴν ἐφέηκε χάλαζαν
- 1085 ἐκ νεφέων ἀνά τ' ἄστρῳ καὶ οἰκίᾳ, τοὶ δ' ὑπὸ τοῖσιν
 ἐνναίεται κίονα βον τεγέων ὑπὲρ εἰσαΐοντες
 ἦνται ἀκὴν, ἐπεὶ οὐ σφε κατέβλαβε χεῖμας ὥρῃ
 ἀπροφάτως, ἀλλὰ πρὶν ἐκαρτύναντο μέλαθρα·
 ὡς πυκινὰ πτερὰ τοῖσιν ἐφίεσαν αἰσσοῦντες
- 1090 ὕψι μάλ' ἀμπέλαγος περάτης εἰς οὐρεα γαίης.
 Τίς γὰρ δὴ Φινῆος ἔην νόος, ἐνθάδε κέλσαι
 ἀνδρῶν ἡρώων θεῖον στόλον; ἢ καὶ ἔπειτα
 ποῖον ὄνειαρ ἔμελλεν ἐελδομένοισιν ἰκίσθαι;
- Τίηες Φρίξοιο μετὰ πτόλιν Ὀρχομενοῖο
- 1095 ἐξ Αἴης ἐνέοντο παρ' Αἰήταο Κυταίου,
 Κολχίδα νῆ' ἐπιβάντες, ἵν' ἄσπετον ὄλβον ἄροιτο
 πατρός· ὁ γὰρ θνήσκων ἐπετείλατο τήνδε κέλευθον.
 Καὶ δὴ ἔσαν νήσοιο μάλα σχεδὸν ἡματι κείνῳ.
 Ζεὺς δ' ἀνέμου Βορέας μένος κίνησεν αἴναι,
- 1100 ὕδατι σημαίνων διερὴν ὁδὸν Ἀρκτούροιο·
 αὐτὰρ ὅγ' ἡμάτιος μὲν ἐν οὐρεσι φύλλ' ἐτίνασσε
 τυτθὸν ἐπ' ἀκροτάτοισιν ἀήσυρος ἀκρεμόνεσσι·
 νυκτὶ δ' ἔβη πόντονδε πελώριος, ὥρσε δὲ κύμα
 κεκληγῶς πνοιῇσι· κελαινὴ δ' οὐρανὸν ἀχλὺς

- 1035 ἐνναέτην νήσοιο δὲ ἡέρος ὄρνιν ἰδόντο,
 ἥς ῥα τινάζαμενος πτέρυγας κατὰ νῆα θέουσαν
 ἦκ' ἐπὶ οἱ πτερόν ὀξύ· τὸ δ' ἐν λαιῷ πέσεν ὦμῳ
 δίου Ὀϊλῆος· μεθήκε δὲ χερσὶν ἔρετμόν
 βλήμενος· οἱ δὲ τάφον, πτερόεν βέλος εἰσορόωντες·
- 1040 καὶ τὸ μὲν ἐξείρυσσε παρεδρώνων Ἐριδῶτης,
 ἔλκος δὲ ζυνέδησεν, ἀπὸ σφετέρου κολεοῖο
 λυσάμενος τελαμῶνα κατήγορον· ἐκ δὲ φαάνῃ
 ἄλλος ἐπὶ προτέρῳ πεποτημένος· ἀλλὰ μὲν ἦρωε
 Εὐρυτίδης Κλύτιος — πρὸ γὰρ ἀσκύλα τείνατο τόξα —
- 1045 ἦκεν ἐπ' οἰωνὸν ταχινόν βέλος, αὐτὰρ ἔπειτα
 πληξεν· δινηθεὶς δὲ θοῆς πέσεν ἐγγύθι νηός.
 Τοῖσιν δ' Ἀμφιδάμας μυθήσατο, παῖς Ἀλεοῖο.
 “Νῆσος μὲν πέλας ἡμῖν Ἀρητιάς, ἴστε καὶ αὐτοὶ
 „ τοῖσδ' ὄρνιθας ἰδόντες. Ἐγὼ δ' οὐκ ἔλπομαι ἰούς
- 1050 „ τόσσον ἐπαρκέσσειν εἰς ἔκθασιν. Ἀλλὰ τιν' ἄλλην
 „ μῆτιν πορσύνωμεν ἐπὶ ῥέοθον, εἰ γ' ἐπικέλσκι
 „ μέλλετε, Φινῆος μεμνημένοι, ὡς ἐπέτελλεν.
 „ Οὐδὲ γὰρ Ἡρακλῆης, ὅπότε ἤλυθεν Ἀρκαδίηνδε,
 „ πλωάδας ὄρνιθας Στυμφηλίδος ἔσθενε λίμνης·
- 1055 „ ὥσασθαι τόχοισι, τὸ μὲν τ' ἐγὼ αὐτὸς ὅπωπα.
 „ Ἀλλ' ὅγε χαλκείην πλαταγὴν ἐνὶ χερσὶ τινάσσων
 „ δούπει ἐπὶ σκοπιῆς περιμήκεος· αἱ δ' ἐφέβοστο
 „ τηλοῦ, αὐτὴν ὑπὸ δείματι κεκληγυῖται.
 „ Τῷ καὶ νῦν τοίην τιν' ἐπιφραζώμεθα μῆτιν·
- 1060 „ αὐτὸς δ' ἂν τοπάροισιν ἐπιφρασθεὶς ἐνέποιμι.
 „ ἀνθέμενοι κεφαλῇσιν ἀερσιλίκους τρυφαλείας,
 „ ἡμίσεες μὲν ἐρέσσετ' ἀμοιβαδίς, ἡμίσεες δὲ
 „ δούρασί τε ζυστοῖσι καὶ ἀσπίσιν ὄρσατε νῆα.
 „ αὐτὰρ πανσυνδίη περιώσιον ἔρυντ' αὐτὴν
- 1065 „ ἀθρόοι, ὅφρα κολῶν ἀηδείῃ φοβέωνται,
 „ νεύοντάς τε λόφους, καὶ ἐπήγορα δούραθ' ὑπερθεν.
 „ εἰ δέ κεν αὐτὴν νῆσον ἰκοίμεθα, δὴ τότε ἔπειτα
 „ σὺν κελάδῳ σακίεσσι πελώριον ὄρσατε δούπον.
 „ Ὡς ἂν ἔφη· πάντα σσι δ' ἐπὶ ῥέοθος ἦνδανε μῆτις.

1000 νέσφι δ' ἀκοντοβόλοι Χαθήσiai. Ἡματι δ' ἄλλα
νυκτὶ τ' ἐπιπλομένη Χαλύβων παρὰ γαῖαν ἵκοντο.

Τοῖσι μὲν οὔτε βοῶν ἄροτος μέλει, οὔτε τις ἄλλη
φυταλή καρποῖο μελίφρονος· οὐδὲ μὲν εἴ γε
ποίμνας ἐρσήεντι νομῶ ἐνι ποιμαίνουσιν·

1005 ἅλλα σιδηρεφόρον στυφελὴν χθόνα γατομέοντες,
ῶνον ἀμείβονται βιοτήσιον, οὐδὲ ποτέ σφιν
ἥως ἀντέλλει κάματων ἄτερ, ἅλλα κελαινῇ
λεγνύει καὶ καπνῷ κάματον βαρὺν ὀτλεύουσι.

Τούσδε μετ' αὐτίκ' ἔπειτα Γενηταίου Διὸς ἄκρη

1010 γνάμψαντες, σώοντο παρεῖξ Τίβαρηνίδα γαῖαν.

Ἐνθ' ἐπεὶ ἄρ' κε τέκνεται ὑπ' ἀνδράσι τέκνα γυναῖκες,
αὐτοὶ μὲν στενάχουσιν ἐνὶ λεχέεσσι πιόντες,
κράατα δησάμενοι· ταὶ δ' εὖ κομέουσιν ἐδωδῇ
ἀνέρας, ἡδὲ λοστρά λεχώια τοῖσι πίνονται.

1015 Ἰερὸν αὐτ' ἐπὶ τοῖσιν ὄρος, καὶ γαῖαν ἄμειβον,
ἧ ἐνὶ Μοσσύνιοι ἀν' οὔρεα ναιετάουσι
δουρατέους πύργους ἔυπηγέας, οὓς καλέουσι
Μόσσυνας· καὶ δ' αὐτοὶ ἐπώνυμοι ἔνθεν ἔασιν.
Ἀλοίη δὲ δίκη, καὶ θέσμια τοῖσι τέτυται.

1020 Ὅσσα μὲν ἀμφαδίη ῥέζειν θύρις, ἧ ἐνὶ δῆμῳ,
ἧ ἀγορῇ, τάδε πάντα δόμοις ἐνὶ μηχανόωνται·
ὅσσα δ' ἐνὶ μεγάροις πεπονήμεθα, κείνα θύραζε
ἀφεγέως μέσσησιν ἐνὶ ῥέζουσιν ἀγνυαῖς.

Οὐδ' εὐνῆς αἰδῶς ἐπιδήμιος, ἅλλα, σύες ὥς

1025 φορβᾶδες, οὐδ' ἡβαιὸν ἀτυζόμενοι παρεόντας,
μίσγονται χαμάδις ξυνῇ φιλότῃτι γυναικῶν.
Αὐτὰρ ἐν ὑφίστῳ βασιλεὺς μόσσυνι θαάσων
ἰθείας πολέεσσι δίκας λαοῖσι δικάζει,
σχέτλιας· ἦν γάρ που τι θεμιστεύων ἀλίτῃται,

1030 λιμῇ μιν κτεῖν ἤμαρ ἐνικλείσαντες ἔχουσι.

Τοὺς παραμειβόμενοι, καὶ δὴ σχιδὸν ἀντιπέρηθεν
νῆσσω Ἀρητιάδος, τέμνον πλόον εἰρεσίῃσιν
ἡμάτιοι· λιαρὴ γάρ ὑπὸ κνήφας ἔλαπεν αὐρῇ.
Ἦδὴ καὶ τιν' ὑπέρθεν Ἀρήιον αἰσσοντα

- 965 γνάμψαν Ἀμαζονίδων ἕκαθεν λιμενήοχον ἄκρην.
 Ἐνθα ποτὲ προμολοῦσαν Ἀρητιάδα Μελανίππην
 ἥρως Ἡρακλῆς ἐλοχῆσατο, καὶ οἱ ἄποινα
 Ἰπολύτη ζωστῆρα παναίολον ἐγυάλιζεν
 ἀμφὶ κασιγνήτης· ὃ δ' ἀπήμονα πέμψεν ὀπίσσω.
 970 τῆς οἱ γ' ἐν κόλπῳ, προχοαῖς ἐπὶ Θερμώδοντος,
 κέλσαν, ἐπεὶ καὶ Πόντος ὀρίνετο νισσομένοισι·
 Τῷ δ' οὔτις ποταμῶν ἐναλίγκιος, οὐδὲ ῥέεθρα
 τόσσ' ἐπὶ γαῖαν ἴησι παρῆξ ἔθεν ἄνδιχα βῆδων.
 Τετράκις εἰς ἑκατὸν δυνούτο κεν, εἴ τις ἕκαστα
 975 πεμπάζοι· μία δ' οἷα ἐτήτυμος ἐπλετο πηγή·
 ἢ μὲν τ' ἐξ ὀρέων κατανίσσεται ἡπειρόνδε
 ὑψηλῶν, ἃ τε φασὶν Ἀμαζόνια κλείεσθαι.
 Ἐνθεν δ' αἰπυτέρην ἐπικίδνεται ἔνδοθι γαῖαν
 ἀντικρύ· τῷ καὶ οἱ ἐπίστροφοι εἰσὶ κέλευθοι·
 980 αἰεὶ δ' ἄλκυδις ἄβη, ὅπη κύρσειε μάλιστα
 ἡπείρου χθραμαλῆς, εἰλίσσεται· ἢ μὲν ἄπωθεν,
 ἢ δὲ πέλας· πολέες δὲ πόροι νώνυμοι ἔασιν,
 ὅππῃ ὑπεξαφύονται· ὃ δ' ἀμφαδὸν ἄμμιγ' ἀπαύραι
 Πάντον ἐς Ἀξείνον κυρτὴν ὑπερέυγεται ἄκρην.
 985 Καὶ νῦ κε δηθύνοντες Ἀμαζονίδεσσιν ἔμιζαν
 ὕσμινην — καὶ δ' οὐ κεν ἀναιμωτὶ γ' ἐριδῆναν —
 (οὐ γάρ Ἀμαζονίδες μάλ' ἐπητίες, οὐδὲ θέμιστας
 τίευσαι πεδίον Δοιάντιον ἀμφενέμοντο·
 ἀλλ' ὕβρις στονόεσσα καὶ Ἄρεος ἔργα μεμήλει.
 990 Δὴ γὰρ καὶ γενεὴν ἔσαν Ἄρεος Ἀρμονίης τε
 Νύμφης, ἢ τ' Ἀρῆϊ Φιλοποτόλέμους τέκε κούρας,
 ἄλσεος Ἀλκμονίοιο κατὰ πτύχας εὐνηθεῖσα·) —
 εἰ μὴ ἐκ Διόθεν πνοαὶ πάλιν Ἀργέσταιο
 ἤλυθον· οἱ δ' ἀνέμῳ περιηγέα κάλλιπον ἄκρην,
 995 ἔνθα Θερμισκύρειαί Ἀμαζόνες ὠπλίζοντο.
 Οὐ γὰρ ὁμηγερέες μίαν ἀμπόλιν, ἀλλ' ἅνα γαῖαν
 κεκριμένα κατὰ Φῦλα διὰ τρίχα ναιετάασκον·
 νόσφι μὲν αἰδ' αὐταὶ τῆσι τότε κοιρανέεσκον
 Ἰπολύτη, νόσφι δὲ Λυκάστιαι ἀμφενέμοντο,

- 930 Αὐτίκα δ' οἳ γ', ἀνέμοιο κατασπέρχοντος, ἔβησαν
νῆ' ἐπὶ· καδδ' ἄρα λαῖφος ἔρυσσάμενοι τανύοντο
ἐς πόδας ἀμφοτέρους· ἥ δ' ἐς πέλαγος πεφόρητο
ἐντενές, ἥντε τίς τε δι' ἡέρος ὑψόθεν κίρκος
ταρσὸν ἐφείς πνοιῇ, φέρεται ταχύς, οὐδὲ τινάσσει·
- 935 ῥιπὴν, εὐκῆλοισιν ἐνευδιόων πτερύγεσσι.
Καὶ δὴ Παρθενίοιο βροῖς ἀλιμυρήντες,
πρηϋτάτου ποταμοῦ, παρεμέτρεον, ᾧ ἐνὶ κούρῃ
Ληταῖς, ἄγρηθεν ὅτ' οὐρανὸν εἰσαναβαίνει,
ὅν δέμας ἱμερτοῖσιν ἀναψύχει ὑδάτεσσι.
- 940 Νυκτί τ' ἔπειτ' ἄλκιτον ἐπὶ προτέρωσε θέοντες,
Σήσαμον, αἰπεινούς τε παρεξενιόντ' Ἐρυθίνους,
Κρωδίαλον, Κρώμναν τε, καὶ ὕληντα Κύτωρον.
Ἐνθεν τ' αὖτε Κάραμβιν ἄμ' ἡελίοιο βολῇσι
γνάμψαντες, παρὰ πούλυν ἔπειτ' ἤλαυνον ἔρετμοῖς
- 945 αἰγιάλῳ, πρόπαν ἡμαρ, ὁμῶς τ' ἐπὶ ἡματι νύκτα.
Αὐτίκα δ' Ἀσσυρίης ἐπέβαν χθονός, ἐνθα Σινώπην,
Θυγατέξ' Ἀσωποῖο, καθίσσατο, καὶ οἱ ὅπασσε
παρθενίην Ζεὺς αὐτὸς, ὑποσχέσῃσι δολωθεῖς.
Δὴ γάρ ὁ μὲν Φιλότητος ἐέλδετο· νεῦσε δ' ὅγ' αὐτῇ
- 950 δωσέμεναι, ὅ κεν ᾔσι μετὰ Φρεσὶν ἰθύσειεν.
Ἡ δὲ ἐ παρθενίην ἠτήσατο κερδοσύνησιν.
Ὡς δὲ καὶ Ἀπόλλωνα παρήπαφεν, εὐνηθῆναι
ἰέμενον, ποταμόν τ' ἐπὶ τοῖς Ἄλυν· οὐδὲ μὲν ἀνδρῶν
τὴν γέ τίς ἱμερτῆσιν ἐν ἀλκείνῃσι δάμασσαν·
- 955 Ἐνθα δὲ Τρικηαίοιο ἀγαυοῦ Δηϊμάχοιο
ὕϊες, Δηϊλίων τε, καὶ Αὐτόλυκος, Φλόγιός τε,
τῆμος, ὅς τ' Ἡρακλῆος ἐπεπλάσχευεν, παρέναιον·
οἳ ῥά τόθ', ὡς ἐνόησαν ἀριστῶν στόλον ἀνδρῶν,
σφῶς αὐτοὺς νημερτὲς ἐπιφραδὸν ἀντιάσαντες·
- 960 οὐδ' ἔτι μιμνάζειν θέλον ἔμπεδον, ἀλλ' ἐνὶ νηϊ,
Ἀργέσταο παρᾶσσον ἐπιπνείοντος, ἔβησαν.
Τοῖσι δ' ὁμοῦ μετέπειτα θοῇ πεφορημένοι αὖρη
λεῖπον Ἄλυν ποταμὸν, λεῖπον δ' ἀσχιζέουσιν Ἴριν,
ἠδὲ καὶ Ἀσσυρίης πρόχυσιν χθονός· ἡματι δ' αὐτῇ

- 895 νῆα Ἰοὴν ἄξειν· δὴ γὰρ θεοῦ ἐτράπεθ' ἑρμῇ.
 Τὸν δὲ μέτ' Ἐργῖνος, καὶ Ναύπλιος, Εὐφημός τε
 ὤρουντ', ἐθύνειν λεληθμένοι. Ἀλλ' ἄρα τοῖσγε
 ἔσχεθον· Ἀλκαίῳ δὲ πολλεῖς ἦνυσαν ἐταίρων.
 Ἡῶι δ' ἤπειτα δωδεκάτῳ ἐπέβαινον
- 900 ἤμκτι· δὴ γάρ σφι Ζέφυρος μέγας οὔρος ἄητο.
 Καρπαλίμως δ' Ἀχέροντα διεξεπέρησαν ἑρετμοῖς,
 ἐκ δ' ἔχταν πίτυνοι ἀνέμῳ λῖνα, πούλῳ δ' ἐπιπρὸ
 λαιφῶν πεπταμένων τέμνον πλόον εὐδύοντες.
 Ὡκα δὲ Καλλιχόροιο παρὰ προχοῆς ποταμοῖο
- 905 ἤλυθον, ἐνθ' ἐνέπουσι Διὸς Νυσήϊον υἱά,
 Ἰνδῶν ἠνίκα φῦλα λιπὼν κατενάσσατο Θήβας,
 ὀργιάσαι, στῆσαι τε χοροὺς ἄντροιο πάροιθεν,
 ὧ ἐν ἀμειδίτους ἀγρίας ἠυλίζετο νύκτας,
 ἐξ οὗ Καλλιχόρον ποταμὸν περιναϊετάντες,
- 910 ἦδὲ καὶ Αὐλίον ἄντρον ἐπανυμῖν καλέουσιν.
 Ἐνθεν δὲ Σθενέλου τάφον ἔδρακον Ἀκτορίδαο,
 ὅς ῥά τ' Ἀμαζονίδων πολυθαρσέος ἐκ πολέμοιο
 ἄψ' ἀνίων — δὴ γὰρ συνανήλυθεν Ἡραλῆι —
 βλήμενος ἰῶ, καῖθεν ἐπ' ἀλχιάλου θάνατον ἀκτῆς.
- 915 Οὐ μὲν θῆν προτέρῳ ἔτ' ἐμέτρεον. Ἔκε γὰρ αὐτῇ
 Φερσεφόνῃ ψυχὴν πολυδάκρυον Ἀκτορίδαο
 λισσομένην τυτθὸν περ ὁμήθεος ἄνδρας ἰδέσθαι.
 Τύμβου δὲ στεφάνῃς ἐπικρᾶς σκοπιάζετο νῆα,
 τοῖος ἔων, αἰὼς πόλεμόνδ' ἔεν· ἀμφὶ δὲ καλὴ
- 920 τετράφαλος φοῖνικι λόφῳ ἐπελάμπετο κήληξ.
 Καὶ ῥ' ὁ μὲν αὖτις ἔδυνε μέλαν ζῶφον· οἱ δ' ἐσιδόντες
 θάμβυσαν· τοὺς δ' ὥρσε θεοπροπέων ἐπικέλσαι.
 Ἀμπυκίδης Μύθος, λισβῆσί τε μετλίξασθαι.
 Οἱ δ' ἀνὰ μὲν κραιπνῶς λαῖφος σπάσαν· ἐκ δὲ βαλόντες
- 925 πείσματ' ἐν αἰγιαλῷ Σθενέλου τάφον ἀμφεπένοντο,
 χύτλα τέ οἱ χεύαντο, καὶ ἦγνισαν ἔντομα μῆλων.
 Ἄνδιχα δ' αὖ χύτλων νηοσσόῳ Ἀπόλλωνι
 βωμὸν δειμάμενοι μῆλ' ἐφλεγον· ἂν δὲ καὶ Ὀρφεὺς
 θῆκε λύρην· ἐκ τοῦ δὲ Λύρη πέλει οὖνομα χώραν.

860 αὐτοῦ, ἀμηχανήσιν ἄλως προπάροιθε πεσόντες,
 ἐντυπὰς εὐκήλως εἰλυμένοι, οὔτε τι σίτου
 μνώνοντ' οὔτε ποτοῖο· κατήμυσαν δ' ἀχέεσσι
 θυμόν, ἐπεὶ μάλα πολλὸν ἀπ' ἐλπίδος ἐπλετο νόστος.
 Καὶ νῦν κ' ἔτι προτέρω τετιημένοι ἰσχανόωντο,

865 εἰ μὴ ἄρ' Ἀλκαίῳ περιώσιον ἐμβαλεν Ἥρη
 θάρσος, ὃν Ἰμβρασίοισι παρ' ὕδασι Ναστυπύλαια
 τίκτε Ποσειδάων· περιπρὸ γὰρ εὖ ἐκέκαστο
 ἰδύνειν· Πηλῆα δ' ἐπεσσύμενος προσέειπεν.

“Αἰακίδη, πῶς καλὸν ἀφειδήσαντας αἰεθλῶν

870 „ γαίῃ ἐν ἀλλοδαπῇ δὴν ἔμμεναι; οὐ μὲν ἄρῃος
 „ ἱδριν ἔοντα με τόσπον ἄγει μετὰ κῶας Ἰήσων
 „ Παρθενίης ἀπάνευθεν, ὅσον τ' ἐπιύτορα νηῶν.
 „ Τῷ μὴ τοι τυτθὸν γε δέος περὶ νηὶ πελίσθω.
 „ Ὡς δὲ καὶ ὦλλοι δεῦρο δαήμονες ἄνδρες ἔασι,

875 „ τῶν ὅτινα πρύμνης ἐπιβήσομεν, οὔτις ἰάψει
 „ ναυτιλίην. Ἀλλ' ὦκα, παραιφάμενος τάδε πάντα,
 „ θαρσαλέως ὁρόθυνον ἐπιμνήσασθαι αἰεθλῶν.

“Ὡς φάτο· τοῖσι δὲ θυμὸς αἰζέτο γηθοσύνησιν —
 Αὐτίκα δ' οὐ μετὰ δηρὸν ἐνὶ μέσσοις ἀγόρευσε·

880 “ Δαιμόνιοι, τί νυ πένθος ἐτώσιον ἴσχομεν αὐτῶς;
 „ Οἱ μὲν γὰρ ποθι τοῦτον, ὃν ἔλλαχον, οἷτον ὄλοντο —
 „ Ἡμῖν μὲν γὰρ ἔασι κυβερνητῆρες ὁμίλῳ,
 „ καὶ πολέες. Τῷ μὴ τι διατριβώμεθα πείρης·
 „ ἀλλ' ἔγρεσθ' εἰς ἔργον, ἀποβρίψαντες ἀνίας.

885 Τὸν δ' αὖτ' Αἴσωνος υἱὸς ἀμηχανέων προσέειπεν·
 “Αἰακίδη, πῇ δ' οἶδε κυβερνητῆρες ἔασιν;
 „ οὓς μὲν γὰρ τοπάροιθε δαήμονας εὐχόμεθ' εἶναι,
 „ οἶδε κατηφῆσαντες ἐμεῦ πλόον ἀσχαλόωσι.
 „ τῷ καὶ ἰμοῦ φθιμένοισι κακὴν προτιόσσομαι ἄτην,

890 „ εἰ δὲ μήτ' ὀλοοῖτο μετὰ πτόλιν Αἰήταο
 „ ἔσσεται, ἥ καὶ αὐτίς ἐς Ἐθάδα γαῖαν ἰκέσθαι
 „ πετράων ἔκτοσθε, κατ' αὐτόθι δ' ἄμμε καλύψει
 „ ἀκλειῶς κακὸς οἶτος, ἐτώσια γηράσκοντας.

“Ὡς ἔφατ'· Ἀλκαῖος δὲ μάλ' ἱσσυμένως ὑπέδεκτο

- 825 ὕψι μάλ' ἐκ δονάκων ἀνεπάλμενος ἤλασε μῆρὸν
 αἰγὸν, μέσσας δὲ σὺν ὀστέῳ ἵνας ἔκερσεν.
 Ὅξυ δ' ὄγ' ἐγκλάγξας οὔδ' ἐπίσεν· οἱ δὲ τυπέντος
 ἀθρόοι ἀντιάχθησαν. Ὅριζατο δ' αἰψ' ὀλοοῖο
 Πηλεὺς αἰγανέην φυγάδ' εἰς ἔλος ὄρμηθέντος
- 830 καπρίου· ἔσσυτο δ' αὖτις ἐναντίος· ἄλλὰ μιν Ἰδαι
 οὔτασε, βεβρυχὼς δὲ θοῶ περικάππεσε δουρί.
 Καὶ τοὶ μὲν χαμάδις λίπον αὐτόθι πεπτηῶτα·
 τὸν δ' ἔταροι ἐπὶ νῆα φέρον ψυχοβράχοντα,
 αἰχνύμενοι, χεῖρεςσι δ' ἐὼν ἐνικάτθαν' ἑταίρων.
- 835 Ἐνθάδε ναυτιλίας μὲν ἐρητύοντο μέλεισθαι,
 ἀμφὶ δὲ κηδείῃ νέκυος μένον ἀσχαλῶντες.
 ἤματα δὲ τρία πάντα γόων· ἑτέρῳ δὲ μιν ἤδη
 τάρχουν μεγαλωστί· συνεκτερέιξε δὲ λαὸς
 αὐτῷ ἑμῷ βασιλῆϊ Λίκῳ· παρὰ δ' ἄσπετα μῆλα,
- 840 ἢ θέμις οἰχομένοισι, ταφῆϊα λαίμοτόμησαν.
 Καὶ δὴ τοὶ κέχυται τοῦδ' ἀνέρος ἐν χθονὶ κείνῃ
 τύμβος· σῆμα δ' ἐπ', καὶ ὀψιγόνοισιν ιδέσθαι
 νηίου ἐκ κοτίνοιο, φάλαγγι θαλεῖ δὲ τε φύλλοις
 ἄκρης τυτθὸν ἐνερθ' Ἀχερουσίδος. Εἰ δέ με καὶ τὸ
- 845 χρεῖω ἀπηλεγέως Μουσέων ὑπο γηρύσασθαι,
 τότε πολισσούχον διεπέφραδε Βοιωτοῖσι
 Νισαίοισι τε Φοῖβος ἐπιβρῆδην ἱλασθαι,
 ἀμφὶ δὲ τήνγε φάλαγγα παλαιγενέος κοτίνοιο
 ἄστυ βαλεῖν· οἱ δ' ἀντὶ θεουδῆος Διολίδαο
- 850 Ἰδμονος εἰσέτι νῦν Ἀγαμήστορα κυδαίνουσι.
 Τίς γάρ δὴ θάνεν ἄλλος; ἐπεὶ καὶ ἔτ' αὖτις ἔχουσιν
 ἥρωες τότε τύμβον ἀποφθιμένου ἐτάρριο.
 Δοιὰ γάρ οὔν κείνων ἔτι σήματα φαίνεται ἀνδρῶν.
 Ἀγνιάδην Τίφυν θανέειν φάτις· οὔδ' οἱ ἦε
- 855 μοῖρ' ἐτι ναυτίλῃσθαι ἐκαστέρῳ· ἄλλὰ νυ καὶ τὸν
 αὖθι μινυνθαδὴ πάτρης ἐκὰς εὐνάσε νοῦσος,
 εἰσόκ' Ἀθαντιάδῳ νέκυν κτερέιξεν ὄμιλος.
 ἄτλητον δ' ὀλοῶ ἐπὶ πῆματι κῆδος ἔλοντο.
 Δὴ γάρ ἐπει καὶ τότε πικρασχεδὸν ἐκτερέιξαν

- 790 „ Παφλαγόνες δ' ἐπὶ τοῖς Πελοπήϊδι εἵκαθον αὐτῶν,
 „ ὅσους Βιβακίῳ μέλαν περιάγνυται ὕδωρ.
 „ Ἀλλὰ με νῦν Βέβρυκες, ὑπερβασίη τ' Ἀμύνκοιο,
 „ τηλόθι ναιετάοντος, ἐνόσφισαν, Ἡρακλῆος,
 „ δὴν ἀποτεμνόμενοι γαίης ἄλλης, ὄφρ' ἐδάλλοντο.
- 795 „ οὔρα βαθυρρείοντος ἱφ' εἰαμεναῖς Ἰπίοιο.
 „ Ἐμπης δ' ἐξ ὑμέων ἔδωσαν τίσιν· οὐδέ γε Φημί
 „ ἡματι τῷδ' ἀέκητι θεῶν ἐπελάσσαι ἄρῃα.
 „ Τυνδαρίδην Βέβρυξιν, ὅτ' ἀνέρα κείνον ἐπεφνε.
 „ Τῷ νῦν ἦνται ἐγὼ τίσαι χάριν ἄρκιος εἰμί,
- 800 „ τίσω προφρονέως. Ἡ γὰρ θέμις ἠπεδανοῖσιν
 „ ἀνδράσιν, εὖτ' ἄρξωσιν ἀρείονες ἄλλοι ὀφέλλειν.
 „ Ξυνῇ μὲν πάντεσσιν ὁμόστολον ὕμῃν ἐπεσθαι
 „ Δάσκυλον ὀτρυνέω, ἐμὸν νίεα· τοῖο δ' ἴοντος,
 „ ἥτ' ἂν ἐυξείνοισι διαμπερὲς ἀντιῴοιτε
- 805 „ ἀνδράσιν, ὄφρ' αὐτοῖο ποτὶ στόμα Θερμώδοντος.
 „ Νόσφι δὲ Τυνδαρίδαις Ἀγχερουσίδος ὑπόθεν ἄκρης
 „ εἴσομαι ἱερὸν αἰπύ· τὸ μὲν μάλα τηλόθι πάντες
 „ ναυτίλοι ἀμπέλαγος θηπύμενοι ἰλάζονται·
 „ καὶ κέ σφιν μετέπειτα πρὸ ἄστεος, οἷα θεοῖσιν
- 810 „ πίνοντας εὐαρότοιο γῆρας πεδίοιο ταμοίμην.
 „ Ὡς τότε μὲν δαῖτ' ἄμφι πανήμεροι ἐψιόνοντο.
 „ Ἡοί γε μὴν ἐπὶ νῆα κατήϊσαν ἐκονέοντες·
 „ καὶ δ' αὐτοὶ σὺν τοῖσι Λύκος κίε, μυρὶ ὅπασσας
 „ δῶρα φέρειν· ἅμα δ' υἷα δόμων ἐκπεμπε νέεσθαι.
- 815 „ Ἐνθαδ' Ἀεαντιάδην πέπρωμένη ἤλασε μοῖρα
 „ Ἰδμονα, μαντοσύνησι κεκασμένον· ἀλλὰ μιν οὐ τὰ
 „ μαντοσύναι ἐσάωσαν, ἐπεὶ χρεὼ ἦγε δαμῆναι·
 „ κεῖτο γὰρ εἰαμενῇ δονακώδεος ἐν ποταμοῖο
 „ ψυχόμενος λαγόνας τε καὶ ἄσπετον ἰλὺν νηδὺν
- 820 „ κάπριος ἀργιόδων, ὀλοὸν τέρας, ὃν ἔα καὶ αὐταὶ
 „ Νύμφαι ἐλειονόμοι ὑπεδείδισαν· οὐδέ τις ἀνδρῶν
 „ ἤϊδει· οἷος δὲ κατὰ πλατὺν βόσκετο τίφος.
 „ Αὐτὰρ ὃ γ' ἰλυόντος ἀνὰ θρωσμούςε ποταμοῖο
 „ νίσσεται Ἀεαντιάδης· ὃ δ' ἄρ' ἐκ ποδῶν ἀφράστοισι

- 755 αἰῶν καὶ ἄρθμον ἔθεντο μετὰ σφίσι τοῖο γ' ἔκητι.
 Αὐτὸν δ', ὥστε θεὸν, Πολυδεύκεα δεξιόωντο
 πάντοθεν ἀγρόμενοι· ἐπειδὴ μάλα τοῖ γ' ἐπὶ δῆρὸν
 ἀντιδίην Βέβρυξιν ὑπερφιάλοις πολέμιζον.
 Καὶ δὴ πανσυδὴ μεγάρων ἔντοσθε Λύκοιο
- 760 κεῖν' ἤμαρ φιλότῃτι, μετὰ πολίεθρον ἰόντες,
 δαίτην ἀμφίεπον, τέρποντό τε θυμὸν ἔπασσιν.
 Αἰσονίδης μὲν οἱ γενεὴν καὶ οὔνομ' ἐκάστου
 σφωϊτέρων μυθεῖθ' ἐτέρων, Πελίαό τ' ἐφετμᾶς
 ἦδ' ὡς Λημνιάδεσσιν ἐπεξεינוῦντο γυναῖξιν,
- 765 ὅσσα τε Κύζικον ἀμφὶ Δολιονίην ἐτέλεσαν·
 Μυσίδα δ' ὡς ἀφίκοντο, Κίον δ', ὅθι κάλλιπον ἦρω
 Ἡρακλέην αἰκοντι νόψ, Γλαύκοιό τε βάζειν
 πέφραδε, καὶ Βέβρυκας ὅπως Ἀμυκόν τ' ἐδάϊζαν·
 καὶ Φινῆος ἔειπε θεοπροπῖαν τε δύνῃ τε,
- 770 ἦδ' ὡς Κυανέας πέτραις φύγον, ὥς τ' ἀβόλησαν
 Λητοῖδῃ κατὰ νῆσον. Ο' δ' ἐξείης ἐνέποντος
 δέλγεται ἀκουῇ θυμὸν· ἄχος δ' ἔλεν Ἡρακλῆϊ
 λειπομένῳ, καὶ τοῖον ἔπος πάντεσσι μετηύδα.
 «ὦ φίλοι, οἶον φῶτος ἀποπλασθέντες ἀρωγῆς·
- 775 „παίρετ' ἐς Αἰήτην τόσσον πλόν. Εὖ γὰρ ἐγὼ μιν
 „Δασκύλου ἐν μεγάροισι καταυτόθι πατρός ἐμείο
 „οἷδ' ἐσιδὼν, ὅτε δεῦρο δι' Ἀσίδος ἠπείροιο
 „πεζὸς ἔβη, ζωστῆρα φιλοπτολέμοιο κομίζων
 „Ἱπολύτης· ἐμὰ δ' εὗρε νέον χροάοντα ἰούλους.
- 780 „Ἐνθάδ' ἐπὶ Πριόλαο κασιγνήτοιο θανόντος
 „ἡμετέρου Μυσοῖσιν ὑπ' ἀνδράσιν, ὅντινα λαὸς
 „οἰκτίστοις ἐλέγοισιν ὀδύρεται ἐξέτι κείνου,
 „ἄθλευων Τιτίνῃ ἀπεκαίνυτο πυγμαχέοντα
 „καρτερόν, ὃς πάντεσσι μετέπρεπεν ἡϊθέοισιν
- 785 „εἰδὸς τ' ἠδὲ βίην· χαμαῖς δὲ οἱ ἤλασ' ὀδόντας.
 „Αὐτὰρ ὁμοῦ Μυσοῖσιν ἐμῷ ὑπὸ πατρὶ δάμασσε
 „καὶ Φρύγας, εἵναίουσιν ὁμώλακας ἡμῖν ἀρούρας,
 „Φυλά τε Βιδυνῶν αὐτῇ κτεατίσσατο γαίῃ,
 „ἔκ π' ἐπὶ Ῥηθαίου προχοῆς σκόπελόν τε Κολώνης·

720 Ἦμος δὲ τρίτατον φάος ἤλυθε, δὴ τότε ἔπειτα
ἀκραῖ Ζεφύρω νῆσον λίπον αἰπήεσαν.

Ἐνθεν δ' ἀντιπέρην ποταμοῦ στόμα Σαλγαρίοιο,
καὶ Μαριανδυνῶν ἀνδρῶν ἐριθηλέα γαῖαν,
ἠδὲ Λύκοιο ῥέεθρα, καὶ Ἀνθεμοεισίδα λίμνην

725 δερκόμενοι παράμειδον· ὑπὸ πνοιῇ δὲ κάλωες,
ἴπλα τε νῆια πάντα τινάσσετο νισσομένοισιν.

Ἦωθεν δ' ἀνέμοιο διὰ κνέφας εὐνηθέντος,
ἀσπασίως ἄκρης Ἀχερουσίδος ὄρμον ἵκοντο.

Ἡ μὲν τε κρημνοῖσιν ἀνίσχεται ἡλιβάτοισιν,

730 εἰς ἄλα δερκομένη Βιδυνίδα· Τῇ δ' ὑπο πέτραι
λίσσάδες ἐρρίζωνται ἀλίβροχοι· ἄμφι δὲ τῇσι
κῦμα κυλινδόμενον μεγάλα βρέμει· αὐτὰρ ὑπερθεῖν
ἄμφιλαφεῖς πλατύνιστοι ἐπ' ἀκροάτῃ πεφύασιν.

Ἐκ δ' αὐτῆς εἴσω κατακέκλιται ἡπειρόνδε

735 κοίλῃ ὑπαιθα νάπη, ἵνα τε σπέος ἔσθ' Αἶδαο
ἔλῃ καὶ πέτρησιν ἐπηρεφές, ἐνθεν αὐτμῇ
πηγυλὶς, ὀκρυόεντος ἀναπνεύουσά μυχοῖο
συνεχές, ἀργινόεσσαν αἰεὶ περιέτροφε πάχυνν,
ἥτε μεσημβριόωντος ἰαίνεται ἡελίοιο.

740 Σιγῇ δ' οὐ ποτε τήν γε κατὰ βλοσυρὴν ἔχει ἄκρην,
ἄλλ' ἄμυδρις πόντοιο θ' ὑποστένει ἡχήμεντος,
φύλων τε πνοιῇσι τινάσσομένων μυχίῃσιν.

Ἐνθαδὲ καὶ προχοαὶ ποταμοῦ Ἀχέροντος ἔασιν,
ὅστε διέξ ἄκρης ἀνερεύγεται εἰς ἄλα βράδων

745 ἡφῆν· κοίλῃ δὲ φάραγξ κατάγει μιν ἄνωθεν.

Τὸν μὲν ἐν ὀφιγρόνοισι Σωινάυτην ἰνόμηναν
Νισαῖοι Μαγαρήες, ὅτε νάσσεσθαι ἔμελλον
γῆν Μαριανδυνῶν. Δὴ γὰρ σφείας ἐξεσάωσεν
αὐτῇσιν νήεσσι, κακῇ χρίμψαντας αἰέτῃ.

750 Τῇ ῥ' οἷγ' αὐτίκα νηὶ διέξ Ἀχερουσίδος ἄκρῃ
εἰσωποὶ, ἀνέμοιο νέον λήγοντος, ἔκελσαν.

Οὐδ' ἄρα δηδὰ Λύκον, κείνης πρόμον ἡπείροιο,
καὶ Μαριανδυνὸς λάδον ἀνέρας ὀρμηθέντες
αὐθύνται Ἀμύκοιο, κατὰ κλέος, ἢ πρὶν ἄκονος·

- 685 Ὀρφεὺς ἐκφατο μῦθον, ἀριστήεσσι πεφάυστων.
 “Εἰ δ’ ἄγε δὴ, νῆσον μὲν Ἐφόν Ἀπόλλωνος,
 „ τήνδ’ ἱερὴν κλείωμεν, ἐπεὶ πάντεσσι φαάνθη
 „ ἥως μετιῶν· τὰ δὲ ρέζομεν οἷα πάρεστι,
 „ βωμὸν ἀναστήσαντες ἐπάκτιον· εἰ δ’ ἂν ὀπίσσω
 690 „ γαῖαν ἐς Αἰμονίην ἀσκηθεῖα νόστον ὁπάσῃ,
 „ δὴ τότε οἱ κεραῶν ἐπὶ μηρία θύσομεν αἰγῶν.
 „ Νῦν δ’ αὐτῶς κνίσσῃ λοιθῇσι τε μελιζασθαι
 „ κέχλομαι. Ἀλλ’ ἴληθι ἀναξ, ἴληθι φαανθεῖς!
 “Ὡς ἄρ’ ἔφη· καὶ τοὶ μὲν ἄφαρ βωμὸν τετύκοντο
 695 χερμάσιν· οἱ δ’ ἀνὰ νῆσον ἰδίεον, ἱερέοντες
 εἰ κέ τιν’ ἢ κεμάδων, ἢ ἀγροτέρων ἰσίδοιεν
 αἰγῶν, οἷα τε ποθὰ βαθεῖν βόσκεται ὕλη.
 Τοῖσι δὲ Λητοίδης ἄγρην πόρεν· ἐκ δὲ νῦ πάντων
 εὐαγέως ἱερῶ ἀνὰ διπλῶα μηρία βωμῶ
 700 καῖον, ἐπικλείοντες Ἐώιον Ἀπόλλωνα.
 Ἀμφὶ δὲ δαιομένοις εὐρὺν χορὸν ἐστήσαντο,
 καλὸν Ἰηπαῖον, Ἰηπαῖονα Φοῖβον
 μελπόμενοι· σὺν δὲ σφιν εὖς παῖς Οἰάγροισι
 Βιστονίη Φόρμιγι λιγείης ἤρχεν αἰοιδῆς·
 705 ὥς ποτε πετρεῖν ὑπὸ δειράδι Παρνησοῖο
 Δελφύνην τόχοισι πελώριον ἱξενάριζε,
 κοῦρος ἔων ἔτι γυμνός, ἔτι πλοκάμοισι γεγηθώς. —
 Ἰλήκοις· αἰεὶ τοι, ἀναξ, ἄτμητοι ἔθειραι,
 αἰὲν ἀδήλητοι· τῶς γὰρ θέμις. Οἶόςδε δ’ αὐτῇ
 710 Λητῶ Κοιογένεια φίλαις ἐνὶ χερσὶν ἀφάσσει. —
 Ποθὰ δὲ Κωρύκει Νύμφαι, Πλείστοιο θύγατρες
 θαρσύνεσκον ἔπεσσιν, Ἰήϊε κεκληγυῖαι·
 ἔνθεν δὴ τότε καλὸν ἐφύμνιον ἔπλετο Φοῖβω.
 Αὐτὰρ ἐπειδὴ τότε χορεῖν μέλψαν αἰοιδῇ
 715 λοιθαῖς εὐαγέεσσιν ἐπάμωσαν, ἢ μὲν ἀρῆζειν
 ἀπὸ λήλοισιν ἱσαῖν ὁμοφροσύνης νόοιο,
 ἀπτόμενοι θυνῶν· καὶ ῥ’ εἰσέτι νῦν γε τέτυκται
 κῆρ· Ὀμοιοῖς ἱερὸν εὐφρονος, ὅθ’ ἐκάμοντο
 αἰτοί, κιδίστην τότε δαίμονα πορσαίνοντες.

- 650 ῥῆξαν ὠκυρόην ποταμόν, σκόπελόν τε Κολώνης,
 ἄκρην δ' οὐ μετὰ δητὰ παρεξενέοντο Μέλαιναν,
 τῇ δ' ἄρ' ἐπὶ προχοῇς Φυλῆϊδας, ἐνθα πάροιθε
 Διφάκ' εὔτ' Ἀθάμαντος ἰοῖς ὑπέδεντο δόμοισιν,
 ὁππότ' ἄμα κριῶ Φεῦγε πτόλιν Ὀρχομενοῖο.
- 655 τίκτε δέ μιν Νύμφη λειμωνιάς· οὐδέ οἱ ὕδρις
 ἦνδανεν, ἀλλὰ ἐδελημὺς ἐφ' ὕδασι κτρός ἰοῖο
 μητέρι συνναίεσκεν, ἐπάκτια πάνα φέρων.
 τοῦ μὲν δ' ἱερὸν αἶψα, καὶ εὐρείας ποταμοῖο
 ἠόντας, πεδίον τε, βαθυρρεῖόντά τε Κάλπην
- 660 δερκόμενοι παράμειβον, ὁμῶς δ' ἐπὶ ἥματι νύκτω
 νήνεμον ἀκαμάτῃσιν ἐπεβύωντ' ἐλάτῃσιν.
 Οἷον δὲ πλαδῶσαν ἐπισχίζοντες ἄρουραν
 ἐργατῖναι μογέουσι βόες, πέρι δ' ἄσπετος ἰδρῶς
 εἴβεται ἐκ λαγόνων τε καὶ αὐχένος· ὄμματα δέ σφ,
- 665 λοξὰ παραστραφῶνται ὑπὸ ζυγοῦ· αὐτὰρ αὐτμὴ
 ἀνάλῃ στομάτων ἄμοτον βρέμει· οἱ δ' ἐνὶ γατῇ
 χηλὰς σκηρίπτοντε πανημέριοι πονέονται·
 τοῖς ἱκέλοι ἥρωες ὑπέξ ἁλὸς εἴληκον ἔρεμνῶ.
 Ἥμος δ' οὐτ' ἄρ' πω φάος ἄμβροτον, οὔτε τι λίην
- 670 ὄρφναίῃ πέλεται, λεπτὸν δ' ἐπιδέδρομε νυκτὶ
 φέγγος, ὅτ' ἀμφιλύκην μιν ἀνεγρόμενοι καλέουσι,
 τῆμος ἐρημαίης νήσου λιμέν' εἰσελάσαντες
 Θυνεάδος, καμάτῳ πολυπήμονι βαῖνον ἔραζε.
 Τοῖσι δὲ Λητοῦς υἱὸς, ἀνερχόμενος Λιδυῆθεν
- 675 τῇλ' ἐπ' ἀκείρωνα δῆμον Ἰπερβορέων ἀνδρώπων,
 ἔξεφάνη· χρύσειοι δὲ παρειάων ἐκάτερθε
 πλοχμοὶ βοτρυόεντες ἐπεβύωντο κινῆντι.
 λαίῃ δ' ἀργύρεον νῆμα βίον, ἀμφὶ δὲ νῶτοισι
 ἰαδύκη τετάνυστο κατωμαδόν· ἥ δ' ὑπὸ ποσσὶ
- 680 σείετο νήσος ὅλη, κλύζεν δ' ἐπὶ κύματα χέρσῳ.
 Τοὺς δ' ἔλε θάμβος ἰδόντας ἀμήχανον· οὐδέ τις ἔτλη
 ἀντίον ἀνυάσσασθαι ἐς ὄμματα καλὰ θεοῖο.
 Στάν δὲ κάτω νεύσαντες ἐπὶ χθονός· αὐτὰρ ὁ τηλοῦ
 βῆ ῥ' ἵμεναι Πόντονδε δὲ ἥερος· ὅφρ' ἂν τοῖον

- 615 „ Αἰσονίδῃ, τύνῃ δὲ τεοῦ βασιλῆος ἰφετμήν,
 „ εὔτε δὲ ἐκ πέτρας φυγέειν θεὸς ἡμῖν ὅπασσε,
 „ μηκέτι δείδιδι τοῖον· ἐπεὶ μετόπισθεν αἰέθλους
 „ εὐπαλέας τελέεσθαι Ἀγηνορίδης Φάτα Φινεύς,
 Ἡ δ' ἄμκα καὶ προτέρωσσε παραὶ Βιδυνίδα γαῖαν
 620 νῆα δὲ ἐκ πέλαγος σεῦε μέσον. Αὐτὰρ ὁ τόγγε
 μειλιχίοις ἐπέεσσι παραβλήδην προσέειπε.
 “ Τίφου, τῇ μοι ταῦτα παρηγορέεις ἀχέοντι;
 „ ἤμφοτον, αἰσάμην τε κακὴν καὶ ἀμήχανον ἄτην.
 „ Χρὴν γὰρ ἐφειμένοιο καταντικρὺ Πελῖαο
 625 „ αὐτὴν ἀνήνασθαι τόνδε στόλον, εἰ καὶ ἔμελλον
 „ νηλεῶς μελεῖσσι κεδαίόμενος θανέεσθαι·
 „ νῦν δὲ περισσὴν δαῖμα καὶ ἀτλήτους μελεδῶνας
 „ ἄλκειμαι, στυγέων μὲν ἀλὸς κρυόεντα κέλευθα
 „ νῆϊ διαπλῶειν, στυγέων δ' ὅτ' ἐπ' ἡπείροιο
 630 „ βαίνομεν· πάντα γὰρ ἀνάρσιοι ἄνδρες ἔασιν
 „ Αἰεὶ δὲ στονόεσσαν ἐπ' ἡματι νύκτα φυλάσσω,
 „ ἐξέγχε το πρῶτιστον ἐμὴν χάριν ἡγερέσσε,
 „ Φραζόμενος τὰ ἕκαστα· σὺ δ' εὐμαρέως ἀγορεύεις,
 „ οἷον ἔης ψυχῆς ἀλέγων ὑπερ· αὐτὰρ ἐγώ γε
 635 „ εἶο μὲν οὐδ' ἡβαιὸν ἀτύξομαι· ἀμφὶ δὲ τοῖο
 „ καὶ τοῦ, ὁμῶς καὶ σεῖο, καὶ ἄλλων δείδι ἐταίρων,
 „ εἰ μὴ ἐς Ἑλλάδα γαῖαν ἀπήμονας ὕμμε κομίσσω.
 “Ὡς Φάτ' ἀριστῆων πειρώμενος· οἱ δ' ὁμάδησαν
 θαρσαλέοις ἐπέεσσιν. Οἱ δὲ φρένας ἐνδον ἰάνθη
 640 κεκλομένων, καὶ δ' αὖτις ἐπιβρόχῃδην μετέειπεν·
 “ Ω φίλοι, ὑμετέρῃ ἀρετῇ ἐνὶ θάρσος αἰέξω.
 „ τοῦνεκα νῦν, οὐδ' εἴ κε διέξ Αἰῶας βερέθρων
 „ στελλοίμην, ἔτι τάρβος ἀνάφομαι, εὔτε πέλεσθε
 „ ἔμπεδοι ἀργαλέοις ἐνὶ δείμασιν. Ἀλλ' ὅτε πέτρας
 645 „ Πληγάδας ἐξέπλωμεν, οἶόμην οὐκέτ' ὀπίσσω
 „ ἔσσεσθαι τοιόνδ' ἕτερον φόβον, εἰ ἑτέρῳ γε
 „ Φραδμοσύνη Φινῆος ἐπισπόμενοι νεόμεσθα.
 “Ὡς Φάτο, καὶ τοίων μὲν ἐλῶφρον αὐτίκα μύθων,
 εἰρησὶν δ' ἀλίσστον ἔχον πόνον· αἴψα δὲ τοίγχε

- 580 καὶ σφίσιν ἀπροφάτως ἀνέδν μέγα κῦμα πάροιθε
 κυρτὸν, ἀποτμήγι σκοπιῇ ἴσον· οἱ δ' ἐσιδόντες
 ἤμυσαν λοξοῖσι καρήμασιν. Εἶσατο γάρ ῥα
 νηὸς ὑπὲρ πάσης κατεπαύμενον ἀμφικαλύφειν.
 Ἀλλὰ μιν ἔφθη Τῖφος ὑπ' εἰρεσίῃ βαρύνδουσιν
- 585 ἀσχαλάσας· τὸ δὲ ποῖον ὑπὲρ τρίπιν ἐξακυλίσθη,
 ἐκ δ' αὐτὴν πρύμνηνδεν ἀνείρυσσε τηλόθι νῆα
 πετρώων· ὑψοῦ δὲ μεταχθονίη πεφόρητο.
 Εὐφημος δ' ἀνὰ πάντας ἰὼν βοάσκειν ἐκαίρους,
 ἐμβαλέειν κώπῃσιν, ὅσον σθένος· οἱ δ' ἀλαλητῶ
- 590 κόπτον ὕδωρ. Ὅσον δ' ἀνυπείκαθε νηὺς ἐρέτῃσι,
 δις τίσον ἄψ ἀπόρουσεν· ἐπεγνάμπτοντο δὲ κῶπαι,
 ἥντε καμπύλα τόξα, βιαζομένων ἡρώων.
 Ἐνθεν δ' αὐτίκ' ἔπειτα κατηρεφὲς ἔσσυτο κῦμα,
 ἣ δ' ἄφαρ, ὥστε κύλινδρος, ἐπέτρεχε κύματι λάβρῃ
- 595 προπροκαταίγδην κοίλης ἁλός. Ἐν δ' ἄρα μέσσαις
 Πληγάσι δινήεις εἶχε ῥόος· αἱ δ' ἐκατερθε
 σείόμεναι βρόμεον· πεπέδητο δὲ νῆια δοῦρα. —
 Καί' τ' οὖτ' Ἀθηναίη στιβαρῆς ἀντέσπασε πέτρης
 σκαίῃ, δεξιτερῇ δὲ διαμπερές ὥσε φέρεσθαι.
- 600 Ἡ δ' ἐκέλη πτερύγεσσι μετ' ἡορος ἔσσυτ' οἰστῶ.
 ἔμπης δ' ἀφλάστοιο παρὶθρισαν ἄκρα κόρυμβα
 νωλεμὲς ἐμπλήξασαί ἐναντίαι. Αὐτὰρ Ἀθήνη
 Οὐλύμπόνδ' ἀνόρουσεν, ὅτ' ἀσκηθεῖς ὑπάλυζαν.
 Πέτραι δ' εἰς ἓνα χῶρον ἐπισχεδὸν ἀπ' ἡλήλῃσιν
- 605 νωλεμὲς ἐβρίζωνδεν, ὃ δὴ καὶ μόρσιμον ἦεν
 ἐκ μακάρων, εὖτ' ἂν τις ἰδὼν διὰ νηὶ περάσσει.
 Οἱ δὲ που ὀκρυόεντος ἀνέπνεον ἄρτι φόβοιο,
 ἥερα παπταίνοντες ὁμοῦ, πέλαγός τε θαλάσσης
 τῇλ' ἀναπεπταμένον. Δὴ γὰρ Φάσαν ἐξ Αἴδαο
- 610 σώεσθαι· Τῖφος δὲ παροίτατος ἤρχετο μύθων·
 “Ἐλπομαι αὐτῇ νηὶ τόγ' ἔμπεδον ἐξαλείσθαι
 „ ἡμέας· οὐδέ τις ἄλλος ἐπαίτιος, ὅσον Ἀθήνη,
 „ ἣ οἱ ἐνέπνευσε θεῖον μένος, εὐτέ μιν Ἄργος
 „ γόμφοισι συνάρασσα· θεῖμις δ' οὐκ ἔστιν ἀλῶναι.

- 545 ὕγρῃ τε, τραφερῇ τ' ἰνδάσσεται, ἄλλοτε δ' ἄλλῃ
 ὀξέα πορφύρων ἐπιμαίεται ὀφθαλμοῖσιν·
 ὥς ἄρα καρπαλίμως κούρη Διὸς αἰζάσα
 θῆκεν ἐκ' αἰετοίοιο πόδας Θωννίδος ἀκτῆς.
 Οἱ δ' ὅτε δὴ σκολιοῖο πόρου στεινωπὸν ἵκοντο
 550 τρηχεῖς σπιλάδεσσιν ἐργαμένον ἀμφοτέρωθεν,
 δινεῖς δ' ὑπέρερθεν ἀνακλύζεσκεν ἰούσαν
 νῆα ῥόος, ποσσὶν δὲ φόβῳ προτέρωσσε νέοντο,
 ἥδη δὲ σφίσι δοῦπος ἀρσασομένων πετράων
 νωλεμεῖς οὐατ' ἔβαλλε, βόων δ' ἀλιμυρεῖς ἀκταί,
 555 δὴ τότε ἔπειθ' ὁ μὲν ὤρτο πελειάδα χειρὶ μεμαρπῶς
 Εὐφημος πρῶρης ἐπιθήμεναι· οἱ δ' ὑπ' ἀνωγῇ
 Τίφυος Ἀγνιάδαο θελήμονα ποιήσαντο
 εἰρεσίην, ἣν ἔπειτα διέκ πέτρας ἐλάσειαν,
 κάρτεϊ ᾧ πίσυνοι. Τὰς δ' αὐτίκα λοίσθιον ἄλλων
 560 οἰγομένας, αἰκῶνα περιγνάμψαντες, ἴδοντο.
 Σὺν δὲ σφιν χύτο θυμός· ὁ δ' αἰεὶ πτερύγεσσιν
 Εὐφημος προέηκε πελειάδα· ταὶ δ' ἅμα πάντες
 ἤειραν κεφαλὰς ἐσορῶμενοι· ἡ δὲ δὲ αὐτῶν
 ἔπτατο· ταὶ δ' ἄμυδρι πάλιν ἀντίαι ἀπάλησιν
 565 ἄμφω ὁμοῦ ξυνιαῦσαι ἐπέκτυπον. Ὄρτο δὲ ποσσὶ
 ἄλμῃ ἀνάβρασθεῖσα, νέφος ὥς· αὖτε δὲ Πόντος
 σμερδαλέον· πάντα δὲ περὶ μέγας ἔβρεμεν αἰθήρ,
 Κοῖλαι δὲ σπήλυγες ὑπὸ σπιλάδας τρηχεῖας
 κλυζοῖσθις ἀλὸς ἔνδον ἐβόμβεον· ὑψόθεν δ' ὄχθη
 570 λευκὴ καχλάζοντος ἀνέπτυσσε κύματος ἄχνη.
 Νῆα δ' ἔπειτα πέριξ εἴλει ῥόος· ἄκρα δ' ἔκομαν
 οὐραῖα πτερὰ ταί γε πελειάδος· ἡ δ' ἀπόρουσεν
 ἀσκηθῆς. Ἑρέται δὲ μέγ' ἰαχόν· ἔβραχε δ' αὐτὸς
 Τίφυς ἔρσασέμεναι κρατερῶς· οἴγοντο γὰρ αὖτις
 575 ἄνδιχα. Τοὺς δ' ἐλάρντας ἔχε φόβος, ὄφρα μιν αὐτῶν
 πλημμυρεῖς παλίνορσος ἀπερχομένη κατένεικεν
 εἰσω πετράων· τότε δ' αἰνύτατον θεὸς εἶλε
 πάντας· ὑπὲρ κεφαλῆς γὰρ ἀμήχανος ἦεν ὄλεθρος.
 Ἦδ' ὁ δ' ἔνθα καὶ ἔνθα διὰ πλατύς εἶδετο Πόντος,

510 νηπίαχον Χείρωνος ὑπ' ἀντροισι κομέεσθαι.
 Τῷ καὶ ἀεζήθεντι θεαὶ γάμον ἐμνήστευσαν
 Μοῦσαι, ἀκαστορίην τε θεοπροπίας τ' ἐδίδαξαν·
 καὶ μιν ἔων μῆλων θίσαν ἤρανον, ὅσσ' ἐνέμοντο
 ἀμπεδίον Φθίης Ἀθαμάντιον, ἀμφί τ' ἐρυμνήν·
 515 Ὀδρυν, καὶ ποταμοῦ ἱερὸν ῥέον Ἀπιδανοῖο.
 Ἦμος δ' οὐρανίθεν Μινωίδας ἐφλεγε νήσους·
 Σείριος, οὐδ' ἐπὶ δηρὸν ἔην ἄκος ἐνναέτῃσι,
 τῆμος τὸν γ' ἐκάλεσσαν, ἐφημοσύνης Ἐκάτοιο,
 λοιμοῦ ἀλεξήτῃρα. Αἶπεν δ' ὅ γε πατρὲς ἱφειμῆ

520 Φθίην, ἐν δὲ Κέφ κατενάσσατο, λαὸν ἀγείρας
 Παρξάσιον, τοίπερ τε Λυκάονός· εἰσι γενέθλησι
 καὶ βωμὸν ποίησε μέγαν Διὸς Ἰχμαίοιο
 ἱερὰ τ' εὖ ἐβρέξεν ἐν οὔρεσιν ἀστέρι κείνῳ
 Σειρίῳ, αὐτῷ τε Κρονίδῃ Διὶ. Τοῖο δ' ἔκητι
 525 γαῖαν ἐπιφύχουσιν ἐτήσιαι ἐκ Διὸς αὔραι
 ἤματα τεσσαράκοντα· Κέφ δ' ἔτι νῦν ἱερῆς
 ἀντολίων προπάροιθε Κυνὸς ῥέζουσι θυλάας.

Καὶ τὰ μὲν ὥς ὑδέονται· ἀριστῆες δὲ κατ' αὐτῇ
 μένον ἐρυκόμενοι· ξεινήϊα δ' ἄσπετα Θυνοὶ

530 πᾶν ἡμαρ, Φινῇ χαρίζόμενοι, προβαλόν.
 Ἐκ δὲ τόθεν μακάρεσσι δωδέκα δωμήσαντες
 βωμὸν ἀλὸς ῥηγμῖνι πέτρην, καὶ ἐφ' ἱερὰ θέντες,
 γῆα θοὴν εἰσβαῖνον ἐρεσσέμεν, οὐδὲ πελείης
 τρήρωνος λήθοντο μετὰ σφίσιν· ἀλλ' ἄρα τήγγε
 535 δείματι πεπτηνῦται ἣν φέρε χειρὶ μεμαρπὼς
 Εὐφημος, γαίης δ' ἀπὸ διπλῶα κείσματ' ἔλυσαν.

Οὐδ' ἄρ' Ἀθηναίην προτέρῳ λαῶν ὀρμηθέντες.
 Αὐτίκα δ' ἐσσυμένως νεφέλης ἐπιβᾶσα πόδεσσι
 κούφης, ἥ κε φέροι μιν ἄφαρ, βριαρὴν περ ἰοῦσαν,

540 σέυατ' ἵμεν πόντονδε, φίλα φρονέουσ' ἐρέτῃσιν.
 Ὡς δ' ὅτε τις πάτρηθεν ἀλώμενος, οἳά τε ποδῶ
 πλαζόμεθ' ἀνθρώποι τετληότες, οὐδέ τις αἶα
 τηλουργός, πᾶσαι δὲ κατέφιοι εἰσὶ κέλευθοι,
 σφωϊτέρους δ' ἐνόησε δόμους, ἄμυδις δὲ κέλευθος

- 475 „ Ἄλλ' ὃ γε πατὴρ ἰοῖο κακὴν τίνεσκεν ἁμοιβὴν
 „ ἀμπλακίης. Ὁ γὰρ οἶος ἐν οὔρεσι δένδρεα τέμνων
 „ δὴ ποθ' Ἀμαδρυάδος Νύμφης ἀτέρριζε λιταῖαν,
 „ ἥ μιν ὀδυρομένη ἀδινῶ μειλίσσετο μύθῳ,
 „ μὴ ταμέειν πρέμνον δρυὸς ἥλικος, ἥ ἐπι πουλὺν
- 480 „ αἰῶνα τρίβεσκε διηνεκές· αὐτὰρ ὁ τήνγε
 „ ἀφραδέως ἔτ' ἤμεν, ἀγνοροῖη νεότητος·
 „ τῷ δ' ἄρα νηκερδῇ Νύμφῃ πόρεν οἶτον ὀπίσσω
 „ αὐτῇ καὶ τεκέεσσιν. Ἐγώ γε μὲν, εὖτ' ἀφίκανεν,
 „ ἀμπλακίην ἔγνων· βωμὸν δὲ κέλευσα καμόντα
- 485 „ Θυνιάδος Νύμφης, λωφῆίᾳ ῥέξαι ἐπ' αὐτῷ
 „ ἱερά, πατρώην αἰτεῦμένον αἶσαν ἀλύξαι.
 „ Ἐνθ' ἐπεὶ ἐκφυγε κῆρα θεήλατον, οὔ ποτ' ἐμείο
 „ ἐκλάθεται, οὐδ' ἀτέρριζε· μόλις δ' ἐέοντα δύραζε
 „ πέμπω, ἐπεὶ μέμονέν γε παρέμμεναι ἀσχαλῶντι.
- 490 „ Ὡς φάτ' Ἀγνοροίδης· ὃ δ' ἐπισχεδὸν αὐτίκα δοῖν
 „ ἤλυθ' ἄγων ποίμνηθεν οἷς. Ἄνα δ' ἴστατ' Ἰήσων,
 „ ἂν δὲ Βορήιοι νῆες, ἐφημοσύνησι γέροντος,
 „ ὧκα δὲ κεκλόμενοι μαντήϊον Ἀπόλλωνα
 „ ῥίξον ἐπ' ἱσχαρόφιν, νέον ἡματος ἀνομένοιο.
- 495 Κουρότεροι δ' ἐτάρων μενοεικέα δαῖτ' ἀλέγνυνον.
 „ Ἐνθ' εὖ δαισάμενοι, τοὶ μὲν παρὰ πείσμασι νῆος,
 „ τοὶ δ' αὐτοῦ κατὰ δώματ' ἀολλέες εὐνάζοντο.
 „ Ἦρι δ' ἐτήσιοι αὖραι ἐπέχραον, αἳ τ' ἀνὰ πᾶσαν
 „ γαῖαν ὁμῶς τοιῇδε Διὸς πνέουσιν ἄρωγῇ.
- 500 Κυρήνη πέφαται τις ἔλος παρὰ Πηνειοῖο
 „ μῆλα νέμειν προτέροισι παρ' ἀνδράσιν· εὐαδὲ γὰρ οἱ
 „ παρθενὴ καὶ λέκτρον ἀκήρατον· αὐτὰρ Ἀπόλλων
 „ τήν γ' ἀνγρεψάμενος ποταμῷ ἐπι ποιμαίνουσας,
 „ τήλοθεν Αἰμονίης, Χθονίης παρακάτθετο Νύμφαις,
- 505 αἱ Λιεύην ἐνέμοντο, παρὰ Μυρτώσιον αἶπος.
 „ Ἐνθα δ' Ἀρισταῖον Φοῖβῳ τέκεν, ὃν καλέουσιν
 „ Ἀγρέα καὶ Νόμιον πολυλήϊον Αἰμονίης.
 „ Τὴν μὲν γὰρ Φιλότητι θεὸς καίωσατο Νύμφην
 „ αὐτοῦ μακροαῖωνα, καὶ ἀγρότιν· νῆα δ' ἐνείκε

- 440 „ τηλόθεν, ὅφρα τοι νῆες ἀμύνειαν Βορέας·
 „ εἰ δὲ καὶ ὕψαλμοῖσι Φῶς πάρει, ἦν' ἂν, οὔτω,
 „ γηθήσεις ὅσον, εἴπερ ὑπότροπος οἴκαδ' ἰκοίμην.
 „ Ὡς ἔφατ'· αὐτὰρ ὁ τόνγε κατηφῆσας προσέειπεν.
 „ Αἰσονίδη, τὸ μὲν οὐ καλινάγρετον, οὐδὲ τι μῆχος·
 445 „ ἔστ' ἐπίσω· κενεαὶ γὰρ ὑποσμίχονται ὀππαταί.
 „ Ἀντὶ δὲ τοῦ θανάτῳ μοι ἄφαρ θεὸς ἐγυαλίζας,
 „ καὶ τε θανὼν πάσῃσι μετέσσομαι ἀγλαΐῃσιν.
 „ Ὡς τῷ γ' ἀδελήλοισι παραβλήδην ἀγόρευεν.
 Αὐτίκα δ' οὐ μετὰ δὴρὸν ἀμειβομένων ἐφαάνθη
 450 Ἥριγενής· τὸν δ' ἀμφὶ περικτῖται ἠγερέζοντο
 ἄνδρες, οἳ καὶ πρόσθεν ἐπ' ἡματι κέῖσε θάμιζον
 αἰὲν, ὁμῶς φορέοντες ἧς ἀπὸ μοῖραν ἔδωδ' ἔης.
 Τοῖς ὁ γέρων πάντεσσιν, ὅτις καὶ ἀφαιρὸς ἴκοιτο,
 ἔχραεν ἐνδυκέως, πολέων δ' ἀπὸ πῆματ' ἔλυσε
 455 μαντοσύνη· τῇ καὶ μιν ἐποιχόμενοι κομέεσκον.
 Σὺν τοῖσιν δ' ἔκανε Παραίβιος, ὅς ῥά οἱ ἦε
 Φίλτατος· ἀσπᾶσιος δὲ δόμοις ἐνι τοῖς γ' ἐνόησε.
 Πρὶν γὰρ δὴν ὑπὸ τ' αὐτὸς ἀριστῶν στόλον ἀνδρῶν
 Ἐδάδος ἐξανιόντα μετὰ πτόλιν Αἰήταο
 460 πέισματ' ἂν ἄψασθαι μυθήσατο Θυνίδα γαίῃ,
 οἳ τε οἱ Ἀρπυίας Διόθεν σχήσουσιν ἰούσας.
 Τοὺς μὲν ἔπειτ' ἐπέεσσιν ἀρεσσάμενος πυκνιοῖσι
 πέμφ' ὁ γέρων· οἷον δὲ Παραίβειν αὐτόθι μέμνεν
 κέκλετ' ἀριστήεσσι σὺν ἀνδράσιν· κῆψα δὲ τὸν γη·
 465 σφωιτέρων οἷων ὅτις ἐξοχος εἰς ἔ' κομίσσαι
 ἦκεν ἐποτρύνας. Τοῦ δ' ἐκ μεγάρου κίοντος,
 μελιχίως ἐρέτῃσιν ὀμηγρέεσσι μετηύδα.
 „ ὦ φίλοι, οὐκ ἄρα πάντες ὑπέρβιοι ἄνδρες ἔασιν
 „ οὐδ' εὐεργεσίας ἀμνήμονες· ὥς καὶ ὅδ' ἀνὴρ
 470 „ τοῖος ἐὼν δεῦρ' ἦλθεν, ἐὼν μόρον ὅφρα δαίῃ.
 „ Εὖτε γὰρ οἷν ὥς πλεῖστα κάμοι καὶ πλεῖστα μογήσοι,
 „ δὴ τότε μιν περιπλοὺν ἐπαυσυτέρῃ βίωτοιο
 „ χρημοσύνη τρύχεσκεν· ἐπ' ἡματι δ' ἡμαρ ὀρώρει
 „ κύντερον, οὐδὲ τις ἦεν κνᾶπνευσις μογήοντι.

- 405 „ πεπτάμενον φηγοῖο δράκων, τέρας αἰνὸν ἰδέσθαι,
 „ ἀμφὶς ὀκίπτει δεδοκημένος· οὐδὲ οἱ ἦμαρ,
 „ οὐ κνέφας, ἥδυμος ὕπνος ἀναιδέα δάμναται ὅσσε.
 „ Ὡς ἄρ' ἔφη· τοὺς δ' εἶθαρ ἔλεν δέος εἰσαίνοντας.
 Δὴν δ' ἔσαν ἀμφοσὶν βεβωλημένοι· ὅψε δ' ἔειπεν
- 410 ἦρως Αἰσῶνος υἱὸς ἀμμηχανέων κακότητι.
 „ ὦ γέρον, ἥδη μὲν τε δύνειο πείρατ' ἀέθλων
 „ ναυτιλίας, καὶ τέκμαρ, ὅτῳ στύγεράς διὰ πέτρας
 „ πειθόμενοι Πόντονδε περήσομεν· εἰ δὲ καὶ αὐτὶς
 „ τάσδ' ἡμῖν προφυγοῦσιν ἐς Ἑλλάδα νόστος ὀπίσσω
- 415 „ ἔσσεται, ἀσπαστῶς κε παρὰ σέο καὶ τὸ δαεῖν
 „ πῶς ἔρδω, πῶς αὐτε τόσῃν ἄλός εἰμι κέλευθον,
 „ νῆϊς ἐὼν ἐτάροις ἅμα νήϊσιν; Αἶα δὲ Κολχίς
 „ Πόντου καὶ γαίης ἐπικέκληται ἐσχατιῇσιν.
 „ Ὡς φάτο· τὸν δ' ὁ γεραίὺς ἀμειβόμενος προσέειπεν.
- 420 „ ὦ τέκος, εὖτ' ἂν πρῶτα φύγῃς ὀλοὰς διὰ πέτρας,
 „ θάρσει· ἐπεὶ δαίμων ἕτερον πλοῖον ἡγεμονεύσει
 „ ἐξ Αἴης· μετὰ δ' Αἶαν ἄλις πομπῆς ἔσονται.
 „ Ἀλλὰ, φίλοι, φράζεσθε θεοῦ δολόεσσαν ἀρωγὴν
 „ Κύπριδος· ἐν γὰρ τῇ κλυτὰ πείρατα κεῖται ἀέθλων.
- 425 „ Καὶ δέ με μηκέτι τῶνδε περαιτέρω ἐξερέσθε.
 „ Ὡς φάτ' Ἀγνορίδης· ἐπὶ δὲ σχεδὸν νύκτι δοῖω
 Θρηϊκίου Βορέας κατ' αἰθέρος αἰζάντες
 οὐδ' ἐπὶ κραιπνὸς ἔβαλον πόδας· οἱ δ' ἀνόρουσαν
 ἐξ ἐδάων ἥρωες, ὅπως παρεόντας ἰδόντο.
- 430 Ζήτης δ' ἱεμένοισιν, ἐτ' ἄσπετον ἐκ καμάρτοιο
 ἄσθμ' ἀναφυσίων, μετεφώνεον, ὅσπον ἔπωθεν
 ἤλασαν, ἡδ' ὥς Ἴρις ἐρύκακε τὰςδε δαίξαι,
 ὄρχιά τ' εὐμενέουσα θεὰ πόρεν, αἱ δ' ὑπέδυσαν
 δείματι Δικταίης περιώσιον ἄντρον ἐρίπνης.
- 435 Γηθόσυνοι δ' ἤπειτα δόμοις ἐνὶ πάντες ἱταῖροι
 αὐτὸς τ' ἀλγελὴ Φινεὺς πέλεν. ὦκα δὲ τὴν γε
 Αἰσωνίδης περὶ πολλὸν ἐϋφρονέων προσέειπεν.
 „ Ἡ ἄρ' αὖθις δὴ τις ἔην, Φινεῦ, θεὸς, ὃς σέθεν ἄτης
 „ κήδετο λευγαλίας, καὶ δ' ἐμέας αὖτις πύλασσε

- 375 „ ἐξανέχει γαίης · ἐπὶ δὲ στόμα Θερμώδοντος
 „ κόλπῳ ἐν εὐδιόνῳ Θεμισκύρειον ἐπ' ἄκρην
 „ μύρεται, εὐρείης διακειμένος ἠπείροιο.
 „ Ἐνθαδὲ Δοϊάντος πεδίον, σχεδόνδ' ἐπὶ πόλῃς
 „ τρῖσσαι Ἀμαζονίδων. Μετὰ δὲ σμυγερῶτατοι ἀνδρῶν
- 375 „ τροχέην Χάλυδες καὶ ἀπειρέα γαίαν ἔχουσιν.
 „ ἐργατῖναι · τοὶ δ' ἄμφι σιδήρεα ἔργα μέλονται.
 „ Ἀλχι δὲ ναιετάουσι πολύβροντες Τίβαρῃνοι
 „ Ζηνὸς Ἐυξείνοιο Γενηταῖην ὑπὲρ ἄκρην.
 „ Τοῖς δ' ἐπὶ Μοσσύνοικοι ὁμόριοι ὕλησσαν
- 380 „ ἐξείης ἠπειρον, ὑπώρειάς τε νέμονται,
 „ δουρατέοις πύργοισιν ἐν οἰκίᾳ τεκτῆνυντες.
 „ Τοὺς παραμειβόμενοι λισσῇ ἐπικέλσεται νῆσῳ,
 „ μήτι παντοίῃ μὲν ἀναιδέας ἐξελάσαντες
 „ οἰωνοὺς, οἱ δὲ δὴ δὲν ἀπειρέσιοι ἐφέπουσι
- 385 „ νῆσον ἐρημαίην. Τῇ μὲν τ' ἐν νηὶ Ἄρης
 „ λαΐνεον ποίησαν Ἀμαζονίδων βασιλείαι
 „ Ὀτρηρὴ τε καὶ Ἀντιόπη, ὅποτε στρατόωντα.
 „ Ἐνθα γὰρ ὕμῃν ὄνειαρ ἄδευκός ἐξ ἁλὸς εἴσιν
 „ ἄρρητον · τῷ καὶ τε φίλα φρονέων ἀγορεύω
- 390 „ ἰσχύμεν. Ἀλλὰ τί με πάλιν χρεῖω ἀλιτέσθαι
 „ μαντοσύνη, τὰ ἕκαστα διηγεκέες ἐξενέποντα; —
 „ Νήσου δὲ προτέρωσε καὶ ἠπείροιο περαιῖς
 „ φέρβονται Φίλυρες · Φιλύρων δ' ἐφύπερθεν ἔασι
 „ Μάκρωνες · μετὰ δ' αὖ περιώσια Φῦλα Βεχεύρων.
- 395 „ Ἐξείης δὲ Σάπειρες ἐπὶ σφίσι ναιετάουσι ·
 „ Βύζηρες δ' ἐπὶ τοῖσιν ὁμώλακες, ὧν ὑπὲρ ἤδη
 „ αὐτοὶ Κόλχοι ἔχονται ἀρήϊοι. Ἀλλ' ἐν νηὶ
 „ πείρεθ', ἕως μυχάτῃ κεν ἐνιχρίμψῃτε θαλάσση.
 „ Ἐνθα δ' ἐπ' ἠπείροιο Κυταιῖδος, ἧδ' Ἀμαραντῶν
- 400 „ τηλόθεν ἐξ ὄρεων, πεδίοιο τε Κιρκαιοῖο
 „ Φᾶσις δινήεις εὐρὺν ῥέον εἰς ἅλα βάλλει.
 „ Κείνου νῆ' ἑλάοντες ἐπὶ προχοᾷς ποταμοῖο
 „ πύργους εἰσόψουσθε Κυταιέος Αἰήταο,
 „ ἅλας τε σκίον Ἄρης · τότ' κῶας ἐπ' ἄκρης

- 615 „ Αἰσονίδῃ, τὴν δὲ τεοῦ βασιλῆος ἐφετμήν,
 „ εὔτε δὲ ἐκ πέτρας φυγέειν θεὸς ἡμῖν ὅπασσε,
 „ μηκέτι δείδει τοῖον· ἐπεὶ μετόπισθεν αἰέθλους
 „ εὐπαλέας τελέεσθαι Ἀγηνορίδης φάτα Φινεύς,
 ἼΗ ῥ' ἄμα καὶ προτέρωσε παρὰ Βιδυνίδα γαῖαν
 620 νῆα δὲ ἐκ πέλαγος σεῦε μέσον. Αὐτὰρ ὁ τόνγε
 μελιχίοις ἐπέεσσι παραβλήδην προσέειπε.
 “ Τίφου, τῇ μοι ταῦτα παρηγορέεις ἀχέοντι;
 „ ἡμῖστον, ἀασάμην τε κακὴν καὶ ἀμήχανον ἄτην.
 „ Χρὴν γὰρ ἐφιεμένοιο καταντικρὺ Πελίαο
 625 „ αὐτὴν ἀνήνασθαι τόνδε στόλον, εἰ καὶ ἔμελλον
 „ νηλεῶς μελεῖστί κεδαίόμενος θανέεσθαι·
 „ νῦν δὲ περισσὴν δαῖμα καὶ ἀτλήτους μελεδῶνας
 „ ἄσκειμαι, στυγέων μὲν ἀλὸς κρυόνετα κέλευθα
 „ νηὶ διαπλῶειν, στυγέων δ' ὅτ' ἐπ' ἠπείροιο
 630 „ βαίνομεν· πάντα γὰρ ἀνάρσιοι ἄνδρες ἔασι
 „ Αἰεὶ δὲ στονόεσσαν ἐπ' ἡματι νύκτα φυλάσσω,
 „ ἐξέτε το πρῶτιστον ἐμὴν χάριν ἠγέρθεσθε,
 „ φραζόμενος τὰ ἕκαστα· σὺ δ' εὐμαρέως ἀγορεύεις,
 „ οἷον ἔης ψυχῆς ἀλέγων ὑπερ· αὐτὰρ ἐγὼ γε
 635 „ εἶο μὲν οὐδ' ἠβαιὸν ἀτύζομαι· ἀμφὶ δὲ τοῖο
 „ καὶ τοῦ, ὁμῶς καὶ σεῖο, καὶ ἄλλων δείδει ἑταίρων,
 „ εἰ μὴ ἐς Ἑλλάδα γαῖαν ἀπήμονας ὕμμε κομίσσω.
 “Ὡς φάτ' ἀριστῆων πειρώμενος· οἱ δ' ὁμάδην
 θαρσαλέοις ἐπέεσσιν. Ὁ δὲ φρένας ἐνδον ἰάνθη
 640 κεκλομένων, καὶ ῥ' αὖτις ἐπιβρόχῃδην μετέειπεν·
 “ Ω φίλοι, ὑμετέρῃ ἀρετῇ ἐνὶ θάρσος αἰέξω.
 „ τοῦνεκα νῦν, οὐδ' εἴ κε διέξ Αἴδας βερέθρων
 „ στελλοίμην, ἔτι τάρβος ἀνάφομαι, εὔτε πέλεσθε
 „ ἔμπεδοι ἀργαλέοις ἐνὶ δαίμασιν. Ἀλλ' ὅτε πέτρας
 645 „ Πληγιάδας ἐξέπλωμεν, οἶομαι οὐκέτ' ὀπίσω
 „ ἔσσεσθαι τοῖόνδ' ἕτερον φόβον, εἰ ἑτέον γε
 „ φραδμοσύνη Φινῆος ἐπισπόμενοι νεόμεσθα.
 “Ὡς φάτο, καὶ τοίων μὲν ἐλάφρον αὐτίκα μύθων,
 εἰρσίσῃ δ' ἀλίσστον ἔχον πόνον· αἶψα δὲ τοίγῃ

- 580 καὶ σφίσιν ἀπροφάτως ἀνέδν μίγα κῦμα πάροιθε
 κυρτὸν, ἀποτμῆγα σκοπιῇ ἴσον· οἱ δ' ἐσιδόντες
 ἤμυσαν λοξοῖσι καρήμασιν. Εἶσατο γάρ ῥα
 νηὸς ὑπὲρ πάσης κατεπάλμενον ἀμφικαλύφειν.
 Ἄλλ' ἄ μιν ἔφθη Τίφους ὑπ' εἰρεσίῃ βαρύνθουσιν
 585 ἀλκαλίας· τὸ δὲ ποδὸν ὑπὲρ τρέπιν ἐξακυλίσθη,
 ἐκ δ' αὐτὴν πρύμνηθεν ἀνείρυσσε τηλόθι νῆα
 πετράων· ὑφ' οὗ δὲ μεταχθονίη πεφόρητο.
 Εὐφημος δ' ὅν' ἅ πάντας ἰὼν βοάσκειν ἐπαίρους,
 ἐμβαλεῖν κώπησιν, ὅσον σθένος· οἱ δ' ἀλαλήτῳ
 590 κόπτον ὕδωρ. Ὅσσον δ' ἀνυπείκαθε νῆς ἐρέτῃσι,
 δις· τίσον ἄψ ἀπόρουσεν· ἐπεγνάμπτοντο δὲ κῦμαι,
 ἥντε καμπύλα τόξα, βιαζομένων ἥρώων.
 Ἐνθεν δ' αὐτίκ' ἔπειτα κατήρεφες ἔσσυτο κῦμα,
 ἣ δ' ἄφαρ, ὥστε κύλινδρος, ἐπέτρεχε κύματι λάβρῳ
 595 προπροκαταίγδην κοίλης αἰλός. Ἐν δ' ἄρα μέσσαις
 Πηληγάσι διηέης εἶχε ρόος· αἱ δ' ἐκατερθε
 σειόμεναι βρόμεον· πεπέδητο δὲ νῆα δοῦρα. —
 Καί' τίτ' Ἀθηναίη στιβαρῆς ἀντέσπασε πέτρης
 σκαίῃ, δεξιτερῇ δὲ διαμπερές ὥσε φέρεσθαι.
 600 Ἡ δ' ἐκέλη πτερόεντι μετῆρος ἔσσυτ' οἰστῷ.
 ἔμπης δ' ἀφλάστοιο παρέθρισαν ἄκρα κόρυμβά
 νωλεμές ἐμπλήξασαι ἐναντίαί. Αὐτὰρ Ἀθήνη
 Οὐλυμπόνδ' ἀνόρουσεν, ὅτ' ἀσκηθεῖς ὑπάλυζαν.
 Πέτραι δ' εἰς ἓνα χῶρον ἐπισχεδὸν ἀπῆλθον
 605 νωλεμές ἐρρίζωθεν, ὃ δὴ καὶ μόρσιμον ἦεν
 ἐκ μακάρων, εὖτ' ἄν τις ἰδὼν διὰ νηὶ περάσσει.
 Οἱ δὲ πονοκρυόεντος ἀνέπνεον ἄρτι φόβοιο,
 ἥερα παπταίνοντες ὁμοῦ, πέλαγός τε θαλάσσης
 τῇλ' ἀναπεπταμένον. Δὴ γὰρ φάσαν ἐξ Αἰδαο
 610 σώεσθαι· Τίφους δὲ παροίτατος ἤρχετο μύθων·
 “Ἐλπομαι αὐτῇ νηὶ τόγ' ἐμπεδὸν ἐξαλείεσθαι
 ,, ἡμίας· οὐδέ τις ἄλλος ἐπαίτιος, ὅσσον Ἀθήνη,
 ,, ἣ οἱ ἐνέπνευσε θεῖον μένος, εὖτέ μιν Ἀργος
 ,, γόμφοισι συνάρασσε· θέμις δ' οὐκ ἔστιν ἀλῶναι.

545 ὕγρῃ τέ, τραφερῇ τ' ἰνδάλλεται, ἄλλοτε δ' ἄλλῃ
 ὀξέα πορφύρων ἐπιμαίεται ὀφθαλμοῖσιν·
 ὥς ἄρα καρπαλίμως κούρη Διὸς αἰῶσα
 θῆκεν ἐκ' αἰετοῖο πόδας Θυνηίδος ἀκτῆς.

Οἱ δ' ὅτε δὴ σκολιοῖο πόρου στενωπὸν ἵκοντο
 550 τρηχεῖς σπιλάδεσσιν ἐργμένον ἀμφοτέρωθεν,
 δινήεις δ' ὑπένερθεν ἀνακλίζεσκον ἰούσαν
 νῆα ῥόος, ποδῶν δὲ φόβῳ προτέρωσε νέοντο,
 ἥδη δὲ σφίσι δούπος ἀρυσσομένων πετράων
 νωλεμέσ οὐατ' ἔβαλλε, βόων δ' ἀλιμυρτές ἀκταί,
 555 δὴ τότε ἔπειθ' ὁ μὲν ὤρτο πελειάδα χειρὶ μεμαρπώς
 Εὐφημος πρῶρης ἐπιθήμεναι· οἱ δ' ὑπ' ἀνωγῇ
 Τίφυος Ἀγνιάδαο θελήμονα ποιήσαντα
 εἰρεσίην, ἵν' ἔπειτα διέκ πέτρας ἐλάσειαν,
 κάρτεϊ ᾧ πύονοι. Τὰς δ' αὐτίκα λοίσθιον ἄλλον
 560 οἰγομένας, ἀδυνῶνα περιγνάμφαντες, ἶδοντο.

Σὺν δὲ σφιν χύτο θυμός· ὁ δ' αἰῶμι περὺγεσσιν
 Εὐφημος προέηκε πελειάδα· τοὶ δ' ἅμα πάντες
 ἥϊραν κεφαλὰς ἐσορώμενοι· ἡ δὲ δὲ αὐτῶν
 ἔπατο· ταὶ δ' ἄμυδις πάλιν ἀντία ἀπῆλθον
 565 ἄμφω ὁμοῦ ξυνιαῦσαι ἐπέκτυπον. ὦρτο δὲ ποδῇ
 ἄλμῃ ἀνάδρασθεῖσα, νέφος ὥς· αὔε δὲ Πόντος
 σμερδαλέον· πάντα δὲ περὶ μέγας ἔβρεμεν αἰθήρ.
 Κοῖλαι δὲ σπῆλυγες ὑπὸ σπιλάδας τρηχείας
 κλυζοῖσῃς ἄλός· ἔνδον ἔβόμβον· ὑφ' οὗ δ' ὄχθης

570 λευκὴ καχλάζοντος ἀνέπτυε κύματος ἄχνη.
 Νῆα δ' ἔπειτα πέριξ εἴλει ῥόος· ἄκρα δ' ἔκοψαν
 οὐραῖα πτερὰ ταί γε πελειάδος· ἡ δ' ἀπόρουσεν
 ἀσκητής. Ἐρέται δὲ μέγ' ἱαχον· ἔβραχε δ' αὐτὸς
 Τίφυς ἐρεσσέμεναι κρατερῶς· οἶγοντο γὰρ αὐτὸς
 575 ἄνδιχα. Τοὺς δ' ἐλάοντας· ἔχε φόβος, ὅφρα μιν αὐτῶν
 πλημυρθεῖς παλινόρατος ἀερχομένη κατένεικεν
 εἴσω πετράων· τότε δ' αἰνύτατον δέος εἶλε
 πάντας· ὑπὲρ κεφαλῆς γὰρ ἀμήχανος ἦεν ὄλεθρος.
 Ἦδη δ' ἔνθα καὶ ἔνθα διὰ πλάτης εἶδετο Πόντος,

- 510 υπἱάχον Χείρωνος ὑπ' ἄντροισι κομέεσθαι.
 Τῷ καὶ ἀεζηθέντι θεαὶ γάμον ἐμνήστευσαν
 Μοῦσαι, ἀπεστορίην τε θεοπροπίας τ' ἐδίδαξαν·
 καὶ μιν ἔων μῆλων θέσαν ἤσανον, ὅσσ' ἐνέμοντο
 ἀμπεδίον Φθίης Ἀθαμάντιον, ἀμφὶ τ' ἑρμυῆν·
 515 Ὀθρυν, καὶ ποταμοῦ ἱερὸν ῥέον Ἀπιδανοῖο.
 Ἥμος δ' οὐρανέθεν Μινωΐδας ἔφλεγε νήσους·
 Σεῖριος, οὐδ' ἐπὶ δηρὸν ἐνν ἄκος ἐνναέτησι,
 τῆμος τόν γ' ἐκάλεσσαν, ἐφημοσύνης ἑκάτοιο,
 λοιμοῦ ἀλέξητῆρα. Αἶπεν δ' ὅ γε πατρὲς ἰφειμῆ
 520 Φθίην, ἐν δὲ Κέφ κατενάσσατο, λαὸν ἀγείρας
 Παρρᾶσιον, τόλπερ τε Λυκάονός· εἰσι γενέθλην
 καὶ βωμόν ποιήσε μέγαν Διὸς Ἰκμαίοιο
 ἱερά· τ' εὖ ἐβρέξεν ἐν οὐρεσιν ἀστέρι κείνῳ
 Σεῖριῳ, αὐτῷ τε Κρονίδῃ Διὶ. Τοῖο δ' ἔκητι
 525 γαῖαν ἐπιψύχουσιν ἐτήσιαι ἐκ Διὸς αὖραι
 ἤματα τεσσαράκοντα· Κέφ δ' ἔτι νῦν ἱερῆες
 ἀντολέων προπάροιθε Κυνὸς ῥέζουσι θυηλάς.
 Καὶ τὰ μὲν ὥς ὑδέονται· ἀριστῆες δὲ κατ' αὖθι
 μίμνον ἐρυκόμενοι· ζεινήϊα δ' ἄσπετα Θυνοὶ
 530 πᾶν ἥμαρ, Φινῆι χαριζόμενοι, προῖαλλον.
 Ἐκ δὲ τόθεν μακάρεσσι δωδῆκα δωμήσαντες
 βωμὸν ἁλὺς ῥηγμῖνι πέρην, καὶ ἐφ' ἱερά θέντες,
 γῆα θοὴν εἰσβαῖνον ἐρεσσέμεν, οὐδὲ πελείης
 τρήρωνος λήθοντο μετὰ σφίσιν· ἀλλ' ἄρα τήν γε
 535 δείματι πεπτηῦται ἐπὶ φέρε χειρὶ μεμαρπώς
 Εὐφημος, γαίης δ' ἀπὸ διπλόα πείσματ' ἔλυσαν.
 Οὐδ' ἄρ' Ἀθηναίην προτέρω λάθον ὁρμηθέντες.
 Αὐτίκα δ' ἐσσυμένως νεφέλης ἐπιβῶσα πόδεσσι
 κοῦφης, ἥ κε φέροι μιν ἄφαρ, βριαρὴν περ ἑοῦσαν,
 540 σέυατ' ἴμεν πόντονδε, φίλα φρονέουσ' ἐρέτησιν.
 Ὡς δ' ὅτε τις πάτρηθεν ἀλώμενος, οἷά τε ποῖα
 πλαζόμεθ' ἀνδρωποὶ τετληότες, οὐδὲ τις αἰᾶ
 τηλουργός, πᾶσαι δὲ κατῳφιοὶ εἰσὶ κέλευθοι,
 σφωιτέρεος δ' ἐνόησε δόμους, ἄμυδις δὲ κέλευθος

- 475 „ Ἄλλ' ὅ γε πατὴρς εἶο κακὴν τίνεσκεν ἁμοιβὴν
 „ ἀμπλακίης. Ὁ γὰρ ὅς τις ἐν οὖρεσι δένδρεα τέμνων
 „ δὴ ποθ' Ἀμαδρυάδος Νύμφης ἀτέρριζε λιταίαν,
 „ ἢ μιν ὀδυρομένη ἀδινῶ μειλίσσεται μύθῳ,
 „ μὴ ταμείην πρέμνον δρυὸς ἥλικος, ἢ ἐπὶ πούλυν
- 480 „ αἰῶνα τρίβεσκε διηνεκί· αὐτὰρ ὁ τήν γε
 „ ἀφραδέως ἔτ' ἤμην, ἀγνοομένη νεότητος·
 „ τῷ δ' ἄρα νηκερδῇ Νύμφῃ πόρεν οἶτον ὀπίσσω
 „ αὐτῇ καὶ τεκέσσιν. Ἐγώ γε μὲν, εὖτ' ἀφίκαεν,
 „ ἀμπλακίην ἔγνω· βωμὸν δὲ κέλευσα καμόντα
- 485 „ Θυνιάδος Νύμφης, λωφῆναι ῥέξαι ἐπ' αὐτῷ
 „ ἱερά, πετρῶν αἰτεῦμενον αἶσαν ἀλύξαι.
 „ Ἐνθ' ἐπεὶ ἐκφυγε κῆρα θεήλατον, οὐποτ' ἐμείο
 „ ἐκλάθεται, οὐδ' ἀτέρριζε· μόλις δ' ἀέκοντα θύραζε
 „ πέμπω, ἐπεὶ μέμονέν γε παρέμμεται ἀσχαλῶντι.
- 490 „ Ὡς φάτ' Ἀγνοορίδης· ὁ δ' ἐπισχεδὼν αὐτίκα δοῖα
 „ ἤλυθ' ἄγων ποίμνηδεν οἷς. Ἀνὰ δ' ἵστατ' Ἰήσων,
 „ ἃν δὲ Βορήϊοι νῆες, ἐφημοσύνησι γέροντος,
 „ ὦκα δὲ κεκλόμενοι μαντήϊον Ἀπόλλωνα
 „ ῥέζον ἐπ' ἐσχαρόφιν, νέον ἡμάτος ἀνομένοιο.
- 495 Κουρότεροι δ' ἐτάρων μενοεικέα δαῖτ' ἀλέγνον.
 „ Ἐνθ' εὖ δαισάμενοι, τοὶ μὲν παρὰ πείσμασι νῆος,
 „ τοὶ δ' αὐτοῦ κατὰ δώματ' ἀσπῆτες εὐνάζοντο.
 „ Ἦρι δ' ἐτήσιοι αὖραι ἐπέχρμον, αἱ τ' ἀνὰ πᾶσαν
 „ γαῖαν ὁμῶς τοιῇδε Διὸς πνεύουσιν ἀρωγῇ.
- 500 Κυρήνη πέφαται τις ἔλος παρὰ Πηνειοῖο
 „ μῆλα νέμειν προτέροισι παρ' ἀνδράσιν· εὐαδὲ γῶρ οἱ
 „ παρθενίη καὶ λέκτρον ἀκήρατον· αὐτὰρ Ἀπόλλων
 „ τήν γ' ἀνερειψάμενος ποταμῷ ἐπὶ ποιμαίνουσιν,
 „ τήλοθεν Αἰμονίης, Χθονίης παρακάτθετο Νύμφαις,
- 505 καὶ Λιβύην ἐνέμοντο, παρὰ Μυρτώσιον αἶπος.
 „ Ἐνθα δ' Ἀρισταῖον Φοῖβος τέκεν, ὃν καλέουσιν
 „ Ἀγρέα καὶ Νόμιον πολυλήϊον Αἰμονιῆες.
 „ Τὴν μὲν γὰρ Φιλότητι θεὸς παῖσάτο Νύμφην
 „ αὐτοῦ μακροαῖωνα καὶ ἀγρότιν· νῆα δ' ἐνείκε

- 440 „ τηλόθεν, ὅφρα τοι νῆες ἀμύνειαν Βορέας·
 „ εἰ δὲ καὶ ὀφθαλμοῖσι φῶς πάρει, ἦν' ἂν, οὔτω,
 „ γηθήσεις ὅσον, εἴπερ ὑπότροπος οἰκάδ' ἰκοίμην.
 “Ὡς ἔφατ'· αὐτὰρ ὁ τόνγε κατηφῆσας προσέειπεν.
 “ Αἰσονίδη, τὸ μὲν οὐ καλινάγρετον, οὐδὲ τι μῆχος·
 445 „ ἔστ' ἐπίσω· κενεαὶ γὰρ ὑποσμίχονται ὀπωπαί.
 „ Ἀντὶ δὲ τοῦ θανάτῳ μοι ἄφαρ θεὸς ἐγυαλίζει,
 „ καὶ τε θανὼν πάσῃσι μετέσσομαι ἀγλαΐῃσιν.
 “Ὡς τῷ γ' ἀπᾷλοισι παραβλήδην ἀγόρευεν.
 Αὐτίκα δ' οὐ μετὰ δὴρὸν ἀμειβομένων ἐφαάνθη
 450 Ἥριγενής· τὸν δ' ἄμφι περικτίται ἡγερέδοντο
 ἄνδρες, οἱ καὶ πρόσθεν ἐπ' ἡματι κῆσσε θάμιζον
 αἰὲν, ὁμῶς φορέοντες ἧς ἀπὸ μοῖραν ἔδωδ' ἦς.
 Τοῖς ὁ γέρων πάντεσσιν, ὅτις καὶ ἄφαυρὸς ἴκοιτο,
 ἔχραεν ἐνδυκίως, πολέων δ' ἀπὸ πῆμάτ' ἔλυσε.
 455 μαντοσύνη· τῷ καὶ μιν ἐπιοχόμενοι κομέεσκον.
 Σὺν τοῖσιν δ' ἴκανε Παράϊδιος, ὅς ῥα οἱ ἦε
 φίλτατος· ἀσπᾶσιος δὲ δόμοις ἐνι τούς γ' ἐνόησε.
 Πρὶν γὰρ δὴν ὑπὸ τ' αὐτὸς ἀριστῶν στόλον ἀνδρῶν
 Ἑλλάδος ἐξανιόντα μετὰ πτόλιν Αἰήταο
 460 πείσματ' ἂν ἄψασθαι μυθήσατο Θυνίδα γαίῃ,
 οἳ τε οἱ Ἀρπυίας Διόθεν σχήσουσιν ἰούσας.
 Τοὺς μὲν ἔπειτ' ἐπέεσσιν ἀρεσσάμενος κυκλινοῖσα
 πέμφ' ὁ γέρων· οἷον δὲ Παράϊδιν αὐτόθι μέμνειν
 κέκλετ' ἀριστήεσσι σὺν ἀνδράσιν· κῆψα δὲ τὸν γὰρ
 465 σφωιτέρων οἶων ὅτις ἔξοχος εἰς ἔ κομίσσαι
 ἦκεν ἐποτρύνας. Τοῦ δ' ἐκ μεγάρῳ κίοντος,
 μειλίχιως ἐρέτησιν ὀμηγερέεσσι μετηΐδα.
 “ὦ φίλοι, οὐκ ἄρα πάντες ὑπέρβειοι ἄνδρες ἔασιν
 „ οὐδ' εὐεργεσίῃς ἀμνήμονες· ὥς καὶ ὁδ' ἀνὴρ
 470 „ τοῖος ἐὼν δευρὶ ἦλθεν, ἐὼν μόνον ὅφρα δαΐη.
 „ Εὖτε γὰρ οὔν ὥς πλεῖστα κάμοι καὶ πλεῖστα μογήσοι,
 „ δὴ τότε μιν περιπολὸν ἐπασσύτερῃ βίῳ τοιο
 „ χρημοσύνη τρύχεσκεν· ἐπ' ἡματι δ' ἡμᾶρ ὀρώρει
 „ κύντερον, οὐδὲ τις ἦεν ἀνάπνευσις μογέοντι.

- 335 „ Τῷ καὶ τὰλλα μεθύντες, ἐνήϊστον πονέεσθε
 „ Ξαρσαλέως· πρὶν δ' οὐ τι θεοὺς λίσσεσθαι ἐρύκει.
 „ Εἰ δέ κεν ἀντικρὺ πταμένη μεσσηγὺς ὄληται,
 „ ἄφοβροι στέλλεσθε· ἐπεὶ πολὺ βέλτερον εἶξαι
 „ ἀθανάτοισι· οὐ γάρ κε κακὸν μῖρον ἐξυλέασθε
- 340 „ πετράων, οὐδ' εἴ κε σιδηρεὴν πέλει Ἀργῷ.
 „ Ὡ μέλει, μὴ τλῆτε παρέξ ἱμᾶ θεσφάτα βῆναι,
 „ εἰ καὶ με τρίς τόσσον ὄεσθ' Οὐρανίδησιν,
 „ ὅσπον ἀνάρσιός εἰμι, καὶ εἰ πλεῖον, στυγέεσθαι,
 „ μὴ τλῆτ' οἰωνοῖο πάρεξ ἔτι νηὶ περῆσαι.
- 345 „ Καὶ τὰ μὲν ὥς κε πέλη, τὼς ἕσσεσθαι. Ἦν δὲ φύγητε
 „ σὺνδρομα πετράων ἀσκηθέες ἐνδοθι Πόντου,
 „ αὐτίκα, Βιδυνῶν ἐπὶ δεξιᾷ γαῖαν ἔχοντες,
 „ πλώετε, ῥηγμῖνα πεφυλαγμένοι, εἰσόκεν αὖτε,
 „ Ῥέξαν ἀκυρόην ποταμὸν, ἄκρην τε Μέλαιναν
- 350 „ γνῆμφαντες, νήσου Θυνηίδος ὄρμον ἵκησθε.
 „ Κεῖθεν δ' οὐ μάλα πούλῳ διεξ ἁλὸς ἀντιπέρακιον
 „ γῆν Μαριανδυνῶν ἐπικέλσετε νοστήσαντες.
 „ Ἐνθα μὲν εἰς Αἶδαο καταιβάτις ἐστὶ κέλευθος,
 „ ἄκτῃ τε προβλῆς Ἀχερουσιάς ὑφ' ὅθι τείνει,
- 355 „ διγῆεις τ' Ἀχέρων αὐτὴν διὰ νεῖόθι τέμνων
 „ ἄκρην, ἐκ μεγάλης προχοᾷς ἴησι φάραγγος.
 „ Ἀγχίμολον δ' ἐπὶ τῇ πολέας παρανεῖσθε κολωνοῦς
 „ Παφλαγόνων, τοῖσιν Ἐνετήϊος ἐμβασίλευε
 „ πρῶτα Πέλοψ, τοῦ καὶ περ ἄφ' αἵματος εὐχετόωνται.
- 360 „ Ἔστι δέ τις ἄκρη Ἑλίκης κατεναντίον ἄρκτου,
 „ πάντοθεν ἡλίβατος, καὶ μιν καλέουσι Κάραμβιν,
 „ τῆς καὶ ὑπερ Βορέας περισχίζονται ἄεθαι·
 „ ὧδε μάλ' ἀμπέλκας τετραμμένη αἰθέρι κύρει.
 „ τήνδε περιγνάμφαντι πολὺς παρακέλιται ἤδη
- 365 „ αἰγιαλός· πολέος δ' ἐπὶ πείρασιν αἰγιαλοῖο
 „ ἄκτῃ ἐπὶ προβλῆτι ῥοαὶ Ἄλυσος ποταμοῖο
 „ δεινὸν ἐρεύγονται· μετὰ τόνδ' ἀλχίρρος Ἴρις
 „ μειότερος λευκῆσιν ἐλίσσεται εἰς ἅλα δῖναις.
 „ Κεῖθεν δὲ προτέρως τε μέγας καὶ ὑπείροχος αἰγῶν

300 Οὐλύμπόνδε, θοῇσι μεταχθονίῃ πτερύγεσσι.

Τόφρα δ' ἀριστῆες πινόεν περὶ δέρμα γέροντες
πάντη φοιδήσαντες, ἐπικριδὸν ἱρεύσαντο
μῆλα, τὰ τ' ἐξ Ἀμύκοιο λήλασις ἐκομίσσαν.
Αὐτὰρ ἐπεὶ μέγα δόρπον ἐνὶ μεγάροισιν ἔθεντο,
305 δαίνυνθ' ἐζόμενοι· σὺν δὲ σφισι δαίνυτο Φινεύς
ἀρκαλέως, οἷόν τ' ἐν ὀνείρασι θυμὸν ἰαίνων.
Ἐνθάδ' ἐπεὶ δόρποιο κορέσσαντ' ἠδὲ ποτῆτοι,
παννύχιοι βορέω μένον υἱίας ἐγρήσσοντες.
Αὐτὸς δ' ἐν μέσσοισι παρ' ἐσχάρῃ ἦστο γεραίος,

310 πείρατα ναυτιλίας ἐνέπων, ἄνυσιν τε κελεύθου.

“Κλυτὲ νυν· οὐ μὲν πάντα κίλει θέμις ὕμμι δαῖναι
,, ἄτρεκές· ὅσσα δ' ὕρωρε θεοῖς φίλον οὐκ ἐπικεύσω.
,, Ἀασάμην καὶ πρόσθε, Διὸς νόον ἀφραδίῃσι
,, χρεῖων ἐξείης τε καὶ ἐς τέλος. ὦδε γάρ αὐτὸς
315 ,, βούλεται ἀνθρώποις ἐπιδευέα θάσφατα φαίνειν
,, μαντοσύνης, ἵνα καὶ τι θεῶν χατέουσι νόοιο.
,, Πέτραι μὲν πάμπρωτον, ἀφορμηθέντες ἐμεῖο,
,, Κυανέας ὤψεσθε δῶα ἅλως ἐν ζυνοχῇσι.
,, Τάων οὐ τίνα φημί διαμπερές ἐξαλείσθαι.

320 ,, Οὐ γάρ τε ῥίξῃσιν ἐνῆρενται νεάτησιν,
,, ἀλλὰ θαμὰ ζυγίασιν ἐναντία ἀδῆλησιν
,, εἰς ἐν, ὕπερθε δὲ πολλὸν ἅλως κορδύνεται ὕδωρ
,, βρασσόμενον· στρηνές δὲ περὶ στυφελὴ βρέμει κῆτή.
,, Τῶ νῦν ἡμετέρῃσι παραιφασίῃσι πίθεσθε,

325 ,, εἰ ἑτεὺν πυκινῶ τε νόῳ, μακάρων τ' ἀλέγοντες
,, πείρετε· μὴδ' αὐτῶς αὐτάγρετον ὄτον ὀλησθε
,, ἀφραδέως, ἣ θύνετ' ἐπισπόμενοι νεότητι.
,, Οἴωνῳ δὴ πρόσθε πελειάδι πειρήσασθε,
,, νηὸς ἅπο προμεθέντες ἐφιδέμεν. Ἦν δὲ δὲ αὐτῶν

330 ,, πετράων Πόντονδε σόη πτερύγεσσι δῆται,
,, μηκέτι δὴν μὴδ' αὐτοὶ ἐρητύεσθε κελεύθου,
,, ἀλλ' εὖ καρτύναντες ἑαῖς ἐνὶ χερσὶν ἑρετμὰ,
,, τέμνεθ' ἅλως στεινωπόν· ἐπεὶ φάος οὐ νύ τι τόσσον
,, ἴσσει· ἐν εὐχολῇσιν, ἔσσην τ' ἐνὶ κάρτει χειρῶν.

- 265 στήσαν, ἵνα ξιφέσσιν ἱπεσσυμένους ἐλάσειαν.
 Καὶ δὴ τὰ πρῶτισθ' ὁ γέρον ἔφαυεν ἐδωδῆς·
 αἱ δ' ἄφαρ, ἥτ' ἄελλαι ἀδευκέες, ἥ στεροπαὶ ὥς
 καὶ πρόφατοι, νεφέων ἐξάλμεναι ἐσσεύοντο
 κλαγγῇ, μαιμώσασαι ἐδητύας· οἱ δ' ἐσιδόντες
- 270 ἦρωες μεσσηγὺς ἀνίσχον· αἱ δ' ἄμ' αὐτῇ
 πάντα καταβρῶξασαι ὑπὲρ πόντοιο φέροντο
 τῆλε παρέξ· ὁδμὴ δὲ δυσάσχετος αὐτῇ λέλειπτο.
 Τάων δ' αὖ κατόπισθε δύω υἱες Βορέας
 Φάσγαν' ἐπισχόμενοι ὀπίσω θέον. Ἐν γὰρ ἔηκε
- 275 Ζεὺς μένος ἀκάματόν σφιν· ἀτὰρ Διὸς οὐ κεν ἐπέσθην
 νόσφιν, ἐπεὶ Ζεφύροιο παραίσσεσκον αἰέλλας
 αἰέν, ὅτ' ἐς Φινῆα, καὶ ἐκ Φινῆος ἴοιεν.
 Ὡς δ' ὅτ' ἐνὶ κνημοῖσι κύνας, δεδαημένοι ἄγρης,
 ἢ αἴγας κεραυούς, ἢ ἐπύκας ἰχνεύοντες,
- 280 θείωσι, τυτθὸν δὲ τιταινόμενοι μετόπισθεν
 ἄγρης ἐν γένεσσι μάτην ἀράβησαν ὀδύοντας·
 ὥς Ζήτης Κάλαις τε μάλα σχεδὸν αἰύσσοντες,
 τάων ἀκροάτῃσιν ἐπέχραον ἥλιθα χερσί.
 Καὶ νύ κε δὴ σφ' ἀέκητι θεῶν διεδηλησαντο,
- 285 πῶλόν ἐκὰς νήσοισιν ἐπὶ Πλωτῆσι κιχόντες,
 εἰ μὴ ἄρ' ἀέκ' Ἴρις ἴδεν, κατὰ δ' αἰθέρος ἄλτ' αὖ
 οὐρανόθεν, καὶ τοῖα παραιφαμένη κατέρυκεν.
 «Οὐ θέμις, ὦ υἱες Βορέω, ξιφέσσιν ἐλάσσαι
 „ Ἀρκυίας, μεγάλῳ Διὸς κύνας· ἔρκια δ' αὐτῇ
- 290 „ δώσω ἑγὼν, ὡς οὐ οἱ ἐτι χρίμψουσιν ἰοῦσαι.
 Ὡς φαμένη λοιδὴν Στυγὸς ὥμοσεν, ἥ τε θεῶσιν
 βίγιστη πάντεσσιν, ὀκιδνοτάτη τε τέτυκται,
 μὴ μὲν Ἀγνηορίδῳ δόμοις ἐτι τάσδε πελάσσαι
 εἰσαῦτις Φινῆος, ἐπεὶ καὶ μόρσιμον ἦεν.
- 295 Οἱ δ' ὄρκῳ εἴζαντες ὑπέστρεφον ἄψ' ἐπὶ νῆα
 σεύεσθαι. Στροφάδας δὲ μετακλείουσ' ἄνθρωποι
 νήσους τοῖο γ' ἔκητι, πάρος Πλωτὰς καλέοντες.
 Ἀρκυαὶ τ' Ἴρις τε διέτμαγον. Αἱ μὲν ἔδυσαν
 κενθρμῶνα Κρήτης Μινωίδος· ἥ δ' ἀγόρουσεν.

- 230 „ οὐ κε τις οὐδὲ μίνυνθα βοοτῶν ἀνσχοίτο πελάσσαι,
 „ οὐδ' εἴ οἱ ἀδάμαντος ἐληλαμένον κέαρ εἴη.
 „ Ἀλλὰ με πικρὴ δῆτα κατίσχει δαιτὸς ἀνάγκη
 „ μίμνειν, καὶ μίμνοντα κακῇ ἐν γαστέρι θέσθαι.
 „ Τὰς μὲν θέσφατόν ἐστιν ἐρητύσαι· Βορέας
 235 „ νύεας. Οὐδ' ὀδυνοὶ ἀλαλήσουσιν ἔοντες,
 „ εἰ δὲ ἐγὼν ὁ πρὶν ποτ' ἐπικλυτὸς ἀνδράσι Φανεύς
 „ ὄλβω μαντοσύνη τε, πατήρ δέ μ' ἐγέναιτ' Ἀγήμερ·
 „ τῶν δὲ κασιγνήτη, ὅτ' ἐνὶ Θρήκεσσιν ἀνάσπον,
 „ Κλειοπάτρην ἐδνοῖσιν ἐμὸν δόμον ἦγον ἄκοιτιν.
 240 „ Ἴσκεν Ἀγνηορίδης· ἀδινὸν δ' ἔλε κῆδος ἕκαστον
 ἡρώων, πέρι δ' αὐτὲ δῶα νύας Βορέας
 Δάκρυ δ' ὁμορξαμένῳ σχεδὸν ἤλυον, ὅδ' ἑῖπε
 Ζήτης, ἀσχαλὼντος ἐλὼν χερὶ χεῖρα γέροντος.
 „ Ἄ δειλ', οὐ τινα φημί σίδεν στυγερώτερον ἄλλων
 245 „ ἔμμεναι ἀνθρωπῶν. Τί νύ τοι τόσα κῆδ' ἀνῆπται;
 „ ἢ ῥα θεοὺς ὀλοῇσι παρήλιτες ἀτροπήσι,
 „ μαντοσύνας δεδαώς· τῷ τοι μέγα μηνιόωσιν.
 „ Ἀμμι γε μὴν νόος ἐνδον ἀτύζεται ἱεμένοιισι
 „ χραϊσμεῖν, εἰ δὲ πρόχην γέρας τότε πάρθετο δαίμων
 250 „ νῶν. — Ἀρίζηλοι γὰρ ἐπιχθονίσαισιν ἐνικαί
 „ ἀθανάτων — Οὐδ' ἂν πρὶν ἐρητύσαιμεν ἰούσας
 „ Ἀρπυίας, μάλα περ λεληημένοι, ἔς τ' ἂν ἐμίσση
 „ μὴ μὲν τοῖο γ' ἔκητι θεοῖς ἀπὸ θυμοῦ ἔσεσθαι.
 „ Ὡς φάτο· τοῦ δ' ἰθὺς κενεὰς ὁ γεραίος ἀνέσχε
 255 „ γλήνας ἀμπετάσας, καὶ ἀμείψατο τοῖσδ' ἐπέεσσιν.
 „ Σίγα· μὴ μοι ταῦτα νόῳ ἐνὶ βάλλειο, τέκνον.
 „ Ἴστω Λητοῦς υἱός, ὃ με πρόφρων ἐδίδουξε
 „ μαντοσύνας· ἴστω δὲ δυσώνυμος, ἣ μ' ἔλαχεν κῆρ,
 „ καὶ τόδ' ἐπ' Ὀφθαλμῶν ἀλαὸν νέφος, οἷ τ' ὑπένεργε
 260 „ δαίμονες, οἳ μὴδ' ὧδε θανόντι περ εὐμενέοιεν,
 „ ὥς οὐ τις θεόθεν χόλος ἔσσεται εἰνεκ ἀρωγῆς.
 „ Τῷ μὲν ἐπειδ' ὄρκοισιν ἀλαλκέμεναι μενέαινον.
 „ Λίψα δὲ κουρότεροι πεπονῆατο δαῖτά γεροντι,
 „ λοίσθιον Ἀρπυίῃσιν ἐλώριον· ἐλγύει δ' ἄμφω

- 195 ταῦσδ' αὐτοὺς παρίεντας ἐπήϊσεν, ὧν οἱ ἰόντων
 θέσφατον ἐκ Διὸς ἦεν ἔης ἀπόνασθαι ἐδωδῆς.
 Ὀρῶντες δ' εὐνῆθεν, ἀκήριον ἧτ' ὄνειρον,
 βάκτρῳ σκηπτόμενος, ῥίκνοῖς ποτὶν ἦε θύραζε,
 τοίχους ἀμφαφῶν · τρέμε δ' ἄψευα νισσομένοιῳ
 200 ἀδρανὴ γῆρξ τε · πίνῃ τέ οἱ αὐσταλέος χρῶς
 ἐσκήλκει, ῥίνοι δὲ σὺν ὀστέα μαῦνον ἔεργον.
 Ἐκ δ' ἔλθων μεγάρῳ καθέζετο, γούνα βαρυνθεῖς,
 οὐδοῦ ἐπ' αὐλείῳ · κάρος δὲ μιν ἀμφεκάλυψε
 πορφύρεος, γαῖαν δὲ περικτ' ἐδόκησε φέρεσθαι
 205 νειόθεν, ἀβληχρῶ δ' ἐπὶ κώματι κέκλιτ' ἀνανδός.
 Οἱ δὲ μιν ὡς εἶδοντο, περισταδὸν ἠγερέδοντο,
 καὶ τάφον. Αὐτὰρ ὁ τοῖσι μάλ' αὖ μάλιστα ἐξ ὑπάτοιο
 στήθεος ἀμπνεύσας μετεφώνεε μαντοσύνησι.
 “ Κλῦτε, Πανελλήνων προφερέστατοι, εἰ ἔτεόν δῃ
 210 „ οἷδ' ὑμεῖς, οὓς δὴ κρυερῇ βασιλῆος ἔφετμή
 „ Ἀργῶς ἐπὶ νηὸς ἄγει μετὰ κῶας Ἰήσων.
 „ Ἰμεῖς ἀτρεκέως — Ἔτι μοι νόος οἶδεν ἕκαστα
 „ ἦσι θεοπροπίησι — Χάριν νύ τοι, ὦ ἄνα, Λητοῦς
 „ νιέ, καὶ ἀργαλείοισιν ἀνάπτομαι ἐν καμάτοισιν.
 215 „ Ἰκεῖν πρὸς Ζηνὸς, ὅτι· ῥίγιστος ἀλιτροῖς
 „ ἀνδράσι, Φοῖβου τ' ἄμφι, καὶ αὐτῆς εἵνεκεν Ἥρης
 „ λίσσομαι, ἣ περιάλλα θεῶν μέμβλεσθε κίοντες,
 „ χραίσμετέ μοι, ῥύσασθε δυσάμμορον ἀνέρα λύμης,
 „ μηδέ μ' ἀκηδείησιν ἀφορμήθῃτε λιπόντες
 220 „ αὐτῶς. Οὐ γάρ μοῦνον ἐπ' ὀφθαλμοῖσιν Ἐριννύς
 „ λάξ ἐπέβη, καὶ γῆρας ἀμήρυντον ἐς τέλος ἔλκω.
 „ Πρὸς δ' ἔτι πικρότατον κρέματ' αἰ κακὸν ἄλλο κακοῖσιν.
 „ Ἀρπυιαὶ στόματός μοι ἀφαρπάξουσιν ἐδωδῆν,
 „ ἐκ ποθεν ἀφράστοιο καταίσσουσαι ὀλέθρου.
 225 „ Ἰσχω δ' οὐ τίνα μῆτιν ἐπιβρόδον. Ἀλλὰ καὶ ῥῆον
 „ αὐτὸς ἐμὸν λελάθοιμι νόον, δόρκοιο μεμηλῶς,
 „ ἣ κείνας · ὧδ' αἶψα διηέριαι ποτέονται.
 „ Τυτθὸν δ' ἦν ἄρα δήποτ' ἐδητύος ἄμμι λίπωσι,
 „ πνεῖ τόδε μυδαλέον τε καὶ οὐ τλητὸν μένος ὀδμῆς.

160 ἄλχιάλῳ, τῇ καὶ τὰ περὶ πρυμνήσι ἀνῆπτον,
 Ὀρφεὴν φόρμιγγι συνοίμιον ὕμνον ἄειδον
 ἱμμελέως· περὶ δὲ σφιν ἱαίνετο νήνεμος ἀκτὴ
 μελοπομένοισι· κλεῖον δὲ Θεραπναῖον Διὸς υἱά.

Ἦμος δ' ἥελιος δροσεράς ἐπέλαμψε κολώνας
 165 ἐκ περάτων ἀνιῶν, ἤγειρε δὲ μηλοβοτῆρας,
 δὴ τότε λυσάμενοι νεάτης ἐκ πείσματα δάφνης
 ληΐδα τ' εἰσθήσαντες, ὅσῃν χρεὼ ἦεν ἄγεσθαι,
 πνοιῇ δινέεντ' ἀνὰ Βόσπορον ἰθύνοντο.

Ἐνθα μὲν ἡλιβάτῃ ἐναλίγκιον οὔρει κῦμα
 170 ἐμφέρεται προπάροιθεν ἐπαύσαντι ἱεσῆος,
 αἰὲν ὑπὲρ νεφέων ἡερμένον· οὐδὲ κέ φαίης
 φεύξεσθαι κακὸν οἶτον, ἵπει μάλα μεσσάδι νηὸς
 λάβρον ἐπικρέμαται, καθάπερ νέφος. Ἄλλὰ τό γ' ἔμπη
 στόρνυται, εἴ κ' ἐσθλοῦ κυβερνητῆρος ἐπαύρη.

175 Τῷ καὶ Τίφυος οἶδε δαημοσύνησι νέοντο,
 ἀσκηθεῖς μὲν, ἀτὰρ πεφοβημένοι· ἥματι δ' ἄλλῳ
 ἀντιπέρην γαίῃ Βιδυνίδι πείσματ' ἀνῆψαν.

Ἐνθαδ' ἐπάκτιον οἶκον Ἀγνορίδης ἔχε Φινεύς,
 ὅς περὶ δὴ πάντων ὀλοώτατα πῆματ' ἀνέτλη,

180 εἵνεκα μαντοσύνης, τὴν οἱ πάρος ἐγνυάλιξε
 Λητοῖδης· οὐδ' ὅσσαν ὀπίζετο, καὶ Διὸς αὐτοῦ,
 χρεῖων ἀτρεκέως ἱερὸν νόον ἀνδράποισι.
 Τῷ καὶ οἱ γῆρας μὲν ἐπὶ δηναιὸν ἴαλλεν,
 ἐκ δ' ἔλετ' ὀφθαλμῶν γλυκερὸν φάος· οὐδὲ γάνυσθαι

185 εἶα ἀπειρεσίοισιν ὀνείασιν, ὅσσα οἱ αἰεὶ
 δέσφατα πενθόμενοι περιναίεται οἴκαδ' ἄγειρον.
 Ἄλλὰ διέκ νεφέων ἄφνω πέλας αἰήσουσαι

Ἀρπυιαὶ στόματος χειρῶν τ' ἀπὸ γάμφηλῇσι
 συνεχέως ἤρπαζον. Ἐλείπετο δ' ἄλλοτε φορβῆς
 190 οὐδ' ἔσον, ἄλλοτε τυτθῶν, ἵνα ζῶων ἀκάχοιτο.
 Καὶ δ' ἐπὶ μυδαλήν ὁδὸν χέον· οὐδέ τις ἔτλη
 μὴ καὶ λαυκανίηνδε φορεύμενος, ἀλλ' ἀπὸ τηλοῦ
 ἕστηώς· τοῖόν οἱ ἀπέπνεε λείψανα δαιτός.
 Αὐτίκα δ' εἰσαΐων ἐνοπὴν καὶ δοῦπον ὀμίλου,

- 125 λάθρη ἑυρίων τε κυνῶν, αὐτῶν τε νομήων,
μαίνονται δ' ὅ τι πρῶτον ἐπαΐξαντες ἔλωσι,
πόλλ' ἐπιπαμφαλῶντες ὁμοῦ · τὰ δὲ πάντοφεν αὐτῶς
στείνονται πίπτοντα περὶ σφίσιν · ὥς ἄρα τοίγε
λευγαλέως Βέβρυκας ὑπερφιάλους ἐφόβησαν.
- 130 Ὡς δὲ μελισσῶων σμῆνος μέγα μηλοβοτῆρες
ἢ μελισσοκόμοι πέτρῃ ἐνὶ καπνιώσιν,
αἱ δὴ τοι τέως μὲν ἀολλέες ᾧ ἐνὶ σίμβλῳ
βομβηδὸν κλονέονται, ἐπιπρὸ δὲ λιγνυόντες
καπνῷ τυφόμεναι πέτρης ἑκὰς αἰύσουσιν ·
- 135 ὥς οἳγ' οὐκέτι δὴν μένον ἐμπεδον, ἀλλὰ κέδασθεν
εἴτω Βεβρυκίης, Ἀμύκου μύρον ἀγγελέοντες ·
νήπιοι, οὐδ' ἐνόησαν ὃ δὴ σφίσιν ἐλύθην ἄλλο
πῆμ' αἰδήλον ἔην. Πέρθοντο γάρ ἡμὲν ἀλῶαι,
ἢ οἶται τῆμος δηῖω ὑπὸ δουρὶ Λύκοιο
- 140 καὶ Μαριανθύνων ἀνδρῶν, ἀπεόντος ἀνακτος.
Αἰεὶ γὰρ μάρναντο σιδηροφόρου περὶ γαίης.
Οἱ δ' ἤδη σταθμούς τε καὶ αὔλια δηΐαασκον ·
ἤδη δ' ἄσπετα μῆλα περιτροπάδην ἐτάμοντο
ἥρως, καὶ δὴ τις ἔπος μετὰ τοῖσιν ἔειπε.
- 145 “ Φράζεσθ' ὅ ττι κεν ᾔσιν ἀναλκίῃσιν ἔρεξαν,
,, εἴ πως Ἡρακλῆα θεὸς καὶ δεῦρο κόμισσεν.
,, Ἦτοι μὲν γὰρ ἐγὼ, κείνου παρεόντος, ἔολπα
,, οὐδ' ἂν πυγμαχίῃ κρινθήμεναι · ἀλλ' ὅτε θεσμοὺς
,, ἤλυθην ἐξερέων, αὐτοῖς ἄφαρ οἷς ἀγόρευε
- 150 ,, θεσμοῖσιν ροπάλω μιν ἀγνορίης λελαθέσθαι.
,, Ναὶ μὲν ἀκήδεστον γαίῃ ἐνὶ τόνδε λιπόντες
,, πόντον ἐπέτλωμεν · μάλα δ' ἡμέων αὐτὸς ἕκαστος
,, εἴσεται οὐλὰ μένην ἄτην, ἀπάνευθεν ἔντος.
,, Ὡς ἂρ' ἔφη · τὰ δὲ πάντα Διὸς βουλῇσι τέτυκτο.
- 155 Καὶ τότε δὴ μένον αὖτις διὰ κνέφας, ἔλκεα τ' ἀνδρῶν
οὔταμένων ἀκρόντο, καὶ ἀθανάτοισι θυηλάς
ῥέξαντες, μέγα δόρπον ἐφώπλισαν · οὐδὲ τιν' ὕπνος
εἶλε παρὰ κρητῆρι καὶ αἰδομένοις ἱεραῖσι.
Ἐανδρὰ δ' ἐρεψάμενοι δάφνη κατ' ὑπερθε μέτωπα

90 Ἐνθα δ' ἔπειτ' Ἄμυκος μὲν ἐπ' ἀκροτάτοισιν ἀερθεῖς,
 βουτύπος οἶα, πόδεσσι, τανύσσατο, καδδὲ βαρεῖαν
 χεῖρ ἐπὶ οἱ πελέμιζεν· ὁ δ' αἰζαντος ὑπέστη,
 κρᾶτα παρακλίνας, ὦμῳ δ' ἀνεδέξατο πῆχυν
 τυτθόν· ὁ δ' ἄλχ' αὐτοῖο παρ' ἐκ γόνυ γουνὸς ἀμείβων

95 κόψε μεταίγδην ὑπὲρ οὐατος, ὅστ' ἐα δ' εἴσω
 ῥῆξεν· ὁ δ' ἀμφ' ὀδύνη γνύξ' ἤριπεν· οἱ δ' ἰάχυσαν
 ἥρωες Μινύαι· τοῦ δ' ἀθρόος ἔκχυτο θυμός.

Οἷδ' ἄρα Βέβρυκες ἄνδρες ἀφείδησαν βασιλῆος·
 αἶψ' ἄμυδις κορύνας ἀζηχέας ἠδὲ σιγύνους

100 ἰδὺς ἀνασχόμενοι Πολυδεύκεος ἀντιάσκον.

Τοῦ δὲ πάρος κολεῶν εὐήκεα φάσγαν' ἱταῖροι
 ἔσταν ἐρυσσάμενοι. Πρῶτός γε μὲν ἀνέρα Κάστῳρ
 ἤλασ' ἐπεσσύμενον κεφαλῆς ὑπὲρ· ἡ δ' ἐκ' ἑκάτερθεν
 ἔνθα καὶ ἐνθ' ὦμοισιν ἐπ' ἀμφοτέροισι κιάσθη.

105 Αὐτὸς δ' Ἴτυμονῆα πελώριον, ἠδὲ Μίμαντα,
 τὸν μὲν, ὑπὸ στέρνοιο θόφ' ποδὶ λάξ' ἐπαρούσας,
 πληῖξε, καὶ ἐν κονίῃσι βάλεν· τοῦ δ' ἄσπον ἔντος
 δεξιτερῇ σκαιῆς ὑπὲρ ὀφρύος ἤλασε χεῖρ',
 δρῦφε δὲ οἱ βλέφαρον, γυμνὴ δ' ὑπελείπετ' ἱπωπή.

110 Ὀρείδης δ' Ἀμύνκοιο, βίην ὑπέροπλος, ἐπάων
 οὔτα Βιαντιάδαο κατὰ λαπάρην Ταλαεῖο,
 ἀδ' ἀμιν οὐ κατέπεφθεν, ὅσων δ' ἐπὶ δέρμκι μῶνον,
 νηδυῖαν ἀφαιστός ὑπὸ ζώνην θόρε χαλκός.

Αὐτὸς δ' Ἄρητος μενεδήϊον Εὐρύτου υἱά

115 Ἴφιτον ἀζαλὴν κορίνη στυφέλιζεν ἑλάσσας,
 οὔπω κηρὶ κακῇ πεπωμένον· ἦ τὰχ' ἔμελλεν
 αὐτὸς δηώσεσθαι ὑπὸ ξίφει Κλυτίοιο.

Καὶ τότε ἄρ' Ἀλκαῖος Λυκοόργοιο θραυτὸς υἱὸς
 αἶψα μάλα τεταγὼν πέλεκυν μέγαν, ἠδὲ πελαϊνὸν
 ἄρκτου πρὸς χίμενος σκαιῇ δέρος, ἐνθόρε' μέσσω
 ἐμμεμαῶς Βέβρυξιν· ὁμοῦ δὲ οἱ ἐσσεύοντο
 Αἰακίαι, σὺν δὲ σφιν ἀρήϊος ἄρ' ἐντ' ἴησαν.

ὣς δ' ὅτ' ἐνὶ σταθμοῖσιν ἀπείρονα μῶλ' ἐφύθησαν
 ἡματι χειμερίῳ πολιοὶ λῦκοι, ὕμνηδέντες

- 55 “ Τῶνδὲ τοι, ὄν κ’ ἐθέλῃσθα, κάλου ἄτερ, ἐγὺναλίζω
 „ αὐτὸς ἐκὼν, ἵνα μὴ μοι ἀτέμῃσαι μετόπισθεν.
 „ Ἄλλὰ βάλευ, περὶ χειρὶ· δαῖς δὲ κεν ἄλλω ἐνίσποις
 „ ὅσπον ἐγὼ ῥινοῖς τε βοῶν πέρι τ’ εἰμὶ ταμέσθαι
 „ ἀζκαλέας, ἀνδρῶν τε παρηΐδας αἵματι φύρσαι.
 60 Ὡς ἔφατ’· αὐτὰρ ὃ γ’ οὔτι παραβλήδην ἐρίδαινε.
 Ἦκα δὲ μειδῆσας, οἷοι παρὰ ποσσὶν ἔκειντο,
 τοὺς ἔλεν ἀπροφάτως· τοῦ δ’ ἀντίος ἤλυθε Καστώρ
 ἠδὲ Βιαντιάδης Ταλαὸς μέγας· ὦκα δ’ ἱμάντας
 ἀμφοτέρων, μάλα ποδῶν παρηγορέοντες ἐς ἀλκὴν.
 65 Τῷ δ’ αὖτ’ Ἀρητύς τε καὶ Ὀρνυτος, οὐδέ τι ἦδειν
 νῆπιοι ὕστατα κεῖνα κακῇ δῆσαντες ἐν αἴσῃ.
 Οἱ δ’ ἐπεὶ οὖν ἱμᾶσι διασταδὸν ἤρτύναντο
 αὐτὶν ἀνασχόμενοι ῥεθύνων προπάροιντε βαρέας
 χεῖρας, ἐπ’ ἀλλήλοισι μένος φέρον ἀντίωντες.
 70 Ἐνθα δὲ Βεβρύκων μὲν ἀναξ, ἅτε κύμα θαλάσσης
 τρηχὺ θοῇ ἐπὶ νηὶ κορύσσεται, ἥ δ’ ὑπὸ τυτθῶν
 ἰδρεῖη πυκνιοῖο κυβερνητῆρος ἀλύσκει,
 ἱεμένου φορέεσθαι ἔσω τοίχοιο κλύδωνος·
 ὥς ὅγε Τυνδαρίδην φοβέων ἔπετ’, οὐδέ μιν εἶα
 75 δηθύνειν. Οἱ δ’ ἄρ’ αἰὲν ἀνούτατος, ἦν διὰ μῆτιν
 αἰσῶν, ἀλέεινεν· ἀπηνέα δ’ αἴψα νοήσας
 πυγμαχίην, ἥ κάρτος αἰάκτος, ἥ τε χερεῖων,
 στῆ ῥ’ ἄμοτον καὶ χερσὶν ἐγκντία χεῖρας ἐμίξεν·
 ὥς δ’ ὅτε νῆα δοῦρα θοοῖς ἀντίζου γόμφοις
 80 ἀνέρες ὑλπούργοι, ἐπιβλήδην ἐλάοντες,
 θείνωσι σφύρησιν, ἐπ’ ἄλλω δ’ ἄλλος ἄηται
 δοῦπος ἄδην· ὥς τοῖσι παρηΐα τ’ ἀμφοτέρωθεν
 καὶ γένυες κτύπεον· βρυχή δ’ ὑπετέλλετ’ ὀδόντων
 ἄσπετος, οὐδ’ ἔβληξαν ἐπισταδὸν οὐτάζοντες,
 85 ἐς τε περ οὐλοῦν ἄσθμα καὶ ἀμφοτέρους ἐδάμασσε.
 Στάντε δὲ βαιὸν ἄπωθεν ἀπωμόρξαντο μετώπῳ
 ἰδρῶ ἅλις, καματηρὸν αὐτμένα φυσιῶντες.
 Ἄψ δ’ αὖτις συνόρουσαν ἐναντίοι, ἥντε ταύρω
 φορβάδος ἀμφὶ βοῶς κεκοτητὴ δηριάσθων.

- 20 εἶλε χόλος· πέρι δ' αὖ Πολυδεύκεα τύφεν ὀμοκλή.
 Αἶψα δ' ἔων ἐτάρων πρόμος ἴστατο, Φώνησέν τε·
 „Ἴσχεο νῦν, μῆδ' ἄμμι κακὴν, ὅτις εὐχεται εἶναι,
 „Φαῖνε βίην· θεσμοῖς γὰρ ὑπείζομεν, ὡς ἀγορεύεις.
 „Αὐτὸς ἐκὼν ἤδη τοι ὑπίσχομαι ἀντιάσθαι.
- 25 „Ὡς φάτ' ἀπηλεγέως· ὁ δ' ἐσέδραμεν, ὄμμαδ' ἐλίζας,
 ὥστε λείων ὑπ' ἄκοντι τετυμμένους, ὄντ' ἐν ὄρεσσι
 ἄνδρες ἀμφιπέπονται· ὁ δ' ἰαχόμενός περ ὁμίλῳ
 τῶν μὲν ἔτ' οὐκ ἀλέγει, ἐπὶ δ' ὄσσεται οἷόθεν οἷος
 ἄνδρα τόν, ὅς μιν ἔτυψε παροίτατος, οὐδ' ἐδάμασεν.
- 30 „Ἐνθ' αὖ Τυνδαρίδης μὲν εὐστικτον δέτο Φᾶρος
 λεπτόμιτον, τί βρά οἱ τίς ἐν ξεινήϊον εἶναι
 ὥπασε Δημνιάδων· ὁ δ' ἐρεμνὴν δίπτυχα λώπην
 αὐτῇσιν περόνησι, καλαῦροπά τε τρηχεῖαν
 κάεθεαλε, τὴν φορέεσκεν, ὀριτρεφέος κοτίνιοι.
- 35 Αὐτίκα δ' ἐγγύθε χῶρον ἐάδοντα παπτήναντες
 ἔζον ἰούς δίχα πάντας ἐνὶ ψαμάθοισιν ἐταίρους,
 οὐδέμας, οὐδὲ φυὴν ἐναλίγκιοι εἰσορῆασθαι.
 Ἄλ' ὁ μὲν ἦ ὀλοοῖο Τυφώεως, ἡ δὲ καὶ αὐτῆς
 Γαίης εἶναι ἔικτο πέλωρ τέκος, οἷα πάροιθε,
- 40 χλωμένη Διὶ, τίκτεν· ὁ δ' οὐρανῷ ἀτάλαντος
 ὥστερι Τυνδαρίδης, οὐπερ κάλλισται ἔασιν
 ἐσπερίην διὰ τύκτα Φαινομένου ἀμαρυγαί.
 Τοῖς ἔην Διὸς υἱός, ἔτι χνοάοντας ἰούλους
 ἀντίδων, ἔτι Φαιδρὸς ἐν ὄμμασιν ἄλλα οἱ ἀλκή
- 45 καὶ μένος ἦντε θηρὸς ἀέζετο· πῆλε δὲ χεῖρας,
 πειράζων εἴθ' ὥς πρὶν ἐντροχάλοι φορέονταί,
 μῆδ' ἄμυδις καμάτῳ τε καὶ εἰρεσίῃ βαρύνθοιεν.
 Οὐ μὰν αὖτ' Ἀμυκος πειρήσατο· σίγα δ' ἄπωθεν
 ἰσθμῶς εἰς αὐτὸν ἔχ' ὄμματα, καὶ οἱ ὀρέχθει
- 50 θυμὸς ἐελομένῳ στηθεῶν ἐξ αἵμα κεδάσσει.
 Τοῖσι δὲ μεσσηγὺς θεράπων Ἀμύκοιο Λυκωρεὺς
 ᾔηκε πάροιθε ποδῶν δοίους ἐκάτερθεν ἱμάντας
 ὤμους, ἀζαλέους, πέρι δ' οἱ γ' ἔσαν ἐσκληῶτες.
 Αὐτὰρ ὁ τόν γ' ἐπέεσσιν ὑπερφιάλοισι μετηύδα.

ΑΠΟΛΛΩΝΙΟΥ
ΑΡΓΟΝΑΥΤΙΚΩΝ
ΒΙΒΛΙΟΝ Β.

- Ἐνθάδ' ἔσαν σταθμοὶ τε βοῶν, αὖλεις τ' Ἀμύκοιο,
 Βεβρύκων βασιλῆος ἀγένορος, ὃν ποτε Νύμφη
 τίκτε, Ποσειδάωνι Γενεθλίῳ εὐνηθεῖσα,
 Βιδυνὶς Μελίη, ὑπεροπληστῆτον ἀνδρῶν.
 5 ὅς τ' ἐπὶ καὶ ξείνοισιν αἰεκέως θέσμον ἔθηκε,
 μή τιν' ἀποστείχειν, πρὶν πειρήσασθαι ἑῷ
 πυγμαχίῃ, πολέας δὲ περικτιόνων ἰδαίξει.
 Καὶ τότε δὴ προτὶ νῆα κίων, χρειώ μιν ἐρέσθαι
 ναυτιλίας, οἳ τ' εἶεν, ὑπερβασίησιν ἄτισσε.
 10 τοῖον δ' ἐν πάντεσσι παρασχεδὸν ἔκφατο μῦθον.
 “Κέκλυθ' ἀλίπλαγκτοι, τάπερ ἰδμεναὶ ὕμιν εἴπην.
 „Οὐ τίνα θέσμιόν ἐστιν ἀφορμηθέντα νέεσθαι
 „ἀνδρῶν ὀφνείων, ὅς κεν Βέρυξι πελάσῃ,
 „πρὶν χεῖρεσσιν ἐμῇσιν ἑᾶς ἀνὰ χεῖρας αἰῖραι·
 15 „τῇ καὶ μοι τὸν ἄριστον ἀποκριδὸν ὅδ' ὁμίλου
 „πυγμαχίῃ στήσασθε κατανύθι θηρινθῆναι.
 „Εἰ δ' αὖ ἀπληγέοντες ἐμὰς πατέοιτε θέμιστας,
 „ἢ κέν τις στυγερώς κρατερὴ ἐπιέψεται ἀνάλκῃ.
 3 Ἡ μὰ μέγα φρονέων· τοὺς δ' ἄγριος εἰσκίοντας

- 1350 ἡ ζωὸν εὐροιεν Ἴλα μόνον, ἡ δὲ θανόντος.
 Τοῦτο δὲ ρύσι ὅπασσαν, ἀποκρίναντες ἀρίστους
 υἷας ἐκ δήμοιο, καὶ ὄρκια ποιήσαντο,
 μή ποτε μαστεύοντες ἀπολλήξειν καμάτοιο.
 Τοῦνεκεν εἰσέτι νῦν περ Ἴλαν ἐρέουσι Κιανοί,
 1355 κοῦρον Θειοδάμαντος, ἐκτιμένης τε μέλονται
 Τρηχῖνος. Δὴ γὰρ ῥα κατ' αὐτόθι νάσσατο παῖδας,
 οὓς οἱ ρύσια κείθεν ἐπιπροέηκαν ἄγεσθαι.
 Νῆυν δὲ πανημερίην ἄνεμος φέρε νυκτὶ τε πάσῃ
 λάβρως ἱμπνείων· ἀτὰρ οὐδ' ἐπὶ τυτθὸν ἤητο
 1360 ἦοὺς τελλομένης. Οἱ δὲ χθονὸς εἰσανέχουσιν
 ἀκτὴν ἐκ κόλποιο μάλ' εὐρεῖν γ' ἐσιδέσθαι
 φρασσάμενοι, κώπησιν ἅμ' ἡελίῳ ἐπέκελσαν.
 (Ὡς δ' οὐ μετὰ δῆρ' ἐλδομένοις ἰφαιάνθη)

- 1315 “ Τίπτε παρέκ μεγάλοιο Διὸς μενεαίνετε βουλὴν
 „ Αἰήτεω πτολίεθρον ἄγειν θρασὺν Ἑρακλῆα;
 „ Ἄρχει οἱ μοῦρ' ἐστὶν ἀτασθάλῳ Εὐρυσθῆϊ
 „ ἐκπλῆσαι μογέοντα δυώδεκα πάντας αἰθλούς,
 „ ναίειν δ' ἄθανάτοισι συνέστιον, εἴ κ' ἔτι παύρους
 1320 „ ἔξανύσῃ· τῷ μὴ τι ποθὴ κείνοιο πελίσσω.
 „ Αὐτῷ δ' αὖ Πολύφημον ἐπὶ προχοῇσι Κίοιο
 „ πέπρωται Μυσοῖσι περικλεῆς ἄστυ καμίντα,
 „ μοῖραν ἀναπλήσειν Χαλύβιν ἐν ἀπείρονι γαίῃ.
 „ Αὐτὰρ ἴταν φιλότῃτι θεὰ ποιήσατο Νύμφη
 1325 „ ὅν πόσιν, οἷο περ οὔνεκ' ἀποπλασθύντες ἔλειφθεν.
 “ Ἡ, καὶ κῦμ' ἀλίσστον ἐφέσσατο γειόθι δύψας·
 ἀμφὶ δέ οἱ δίνῃσι κυκώμενον ἄφρεν ὕδωρ
 πορφύρεον, κοίλῃν δὲ διέξ' ἀλὺς ἐκλυσε νῆα.
 Γήθησαν δ' ἥρωες· ὁ δ' ἐσσυμένως ἐξεβήκει
 1330 Αἰακίδης Τελαμὼν ἐς Ἴησονα, χεῖρα δὲ χειρὶ
 ἄκρην ἀμφιβαλὼν προσπτύζατο, φώνησέν τε.
 “ Αἰσονίδη, μὴ μοι τι χολώσσαι, ἀφραδέησιν
 „ εἴ τι περ ἀσάμην. Πέρι γάρ μ' ἄχος ἦκεν ἐνίσπειν
 „ μῦθον ὑπερφιάλόν τε καὶ ἄσχετον. Ἄλ' ἀνέμοισι
 1335 „ δώομεν ἀμπλακίην, ὥς καὶ πάρος εὐμενέοντες.
 Τὸν δ' αὖτ' Αἰσῶνος υἱὸς ἱπιφραδέως προσέειπεν·
 “ ὦ πέπον, ἧ μάλα δὴ με κακῷ ἐκυδάσσαις μύθῳ,
 „ φᾶς ἐνὶ τοῖσιν ἅπασιν ἐνὲός ἀνδρὸς ἀλείτην
 „ ἔμμεναι. Ἄλ' οὐ θῆν' τοι ἀδευκέα μῆνιν ἀέξω,
 1340 „ πρὶν περ ἀνηθείς· ἐπεὶ οὐ περὶ πάρεσι μῆλων,
 „ οὐδὲ περὶ κτεάτεσσιν χαλεφάμενος μενέηναις,
 „ ἄλλ' ἐτάρου περὶ φωτός. Ἐολπὰ δέ τοι σὲ καὶ ἄλλον
 „ ἀμφ' ἐμεῦ, εἰ τοιόνδε πέλοι ποτὲ, δηρίεσθαι.
 “ Ἡ γὰρ, καὶ ἀρθρμηθέντες, ὅπη πάρος, ἐδριόωντο.
 1345 Τῷ δὲ Διὸς βουλῇσιν, ὃ μὲν Μυσοῖσι βαλέσθαι
 μέλλεν ἐπάνυμον ἄστυ πολισσάμενος πεταμοῖο
 Εἰλατίδης Πολύφημος· ὁ δ' Εὐρυσθῆος αἰθλούς
 αὐτίς ἰὼν πονέεσθαι. Ἐπηπείλῃσε δὲ γαῖαν
 Μυσίδ' ἀναστήσειν αὐτὸς χεδὼν, ἐκπύα μὴ οἷ

- 1280 Ἦμος δ' οὐρανόνθεν χαροπὴν ὑπολάμπεται ἥως
ἐκ περάτης ἀνιοῦσα, διαγλαίσσουσι δ' ἀταρπεῖ,
καὶ πεδία δροσόνετα φαινῇ λάμπεται αἴγλη,
τῆμος τοῦσ' ἐνόησαν αἰδρεῖσσι λιπόντες.
Ἐν δέ σφι κρατερόν νεῖκος πέσεν, ἐν δέ κολῶς
- 1285 ἀσπετος, εἰ τὸν ἄριστον ἀποπρολιπόντες ἔβησαν
σφωιτέρων ἐτάρων. Ὁ δ' ἀμηχανήσιν ἀτυχθεῖς
οὐδέ τι τοῖον ἔπος μετεφάνεεν, οὐδέ τι τοῖον
Αἰσανίδης· ἀλλ' ἦστο βαρεῖη νεόθεν ἄτη
δυμὸν ἔδων· Τελαμῶνα δ' ἔλε χόλος, ὧδέ τ' ἔειπεν.
- 1290 “ Ἦσ' αὐτὰς εὐκηλος, ἐπεὶ νύ τοι ἄρμενον ἦεν
,, Ἡρακλῆα λιπεῖν· σέο δ' ἐκτοδὶ μῆτις ὕρωεν,
,, ὅφρα τὸ κείνου κῦδος ἀν' Ἑλλάδα μὴ σε καλύψῃ,
,, αἶ κε θεοὶ δώωσιν ὑπότροπον οἴκαδε νόστον.
,, Ἀλλὰ τί μύθων ἦδος; ἐπεὶ καὶ νόσφιν ἐταίρων
- 1295 ,, εἴμι τεῶν, οἳ τόνγε δόλον συνετεκτίναντο.
Ἦ, καὶ ἐς Ἀγνιάδην Τίφυν θόρε· τῷ δέ οἱ ὅσσε
ὄστλιγες μαλεροῖο πυρὸς ὡς ἰνδάλλοντο.
Καὶ νύ κεν ἄψ ὀπίσω Μυσῶν ἐπὶ γαῖαν ἵκοντο,
λαῖτμα βηισάμενοι, ἀνέμου τ' ἄλλακτον ἰωὴν,
- 1300 εἰ μὴ Θρηκίοιο δῶω υἱὲς Βορέας
Αἰακίδην χαλεποῖσιν ἐρητύεσκον ἔπεσσι,
σχέτιλοι· ἦ τέ σφι στυγερὴ τίσις ἔπλετ' ὀπίσσω
χερσὶν ὑφ' Ἡρακλῆος, ὅ μιν δίζεσθαι ἔρुकον.
Ἄθλων γάρ Πελῖας δεδουπότος ἄψ ἀνιότας
- 1305 Τήνῃ ἐν ἀμφιῤῥύτῃ πέφνεν, καὶ ἀμήσατο γαῖαν
ἀμφ' αὐτοῖς, στήλας τε δῶω κατ' ὑπερθεῖν ἔτευξεν,
ῶν ἐτέρη, θάμβος περιώσιον ἀνδράσι λεύσσειν,
κίνυται ἡχέεντος ὑπὸ πνοῇ Βορέας.
Καὶ τὰ μὲν ὡς ἤμελλε μετὰ χρόνον ἐκτελέεσθαι.
- 1310 Τοῖσιν δὲ Γλαῦκος βρυχίης ἀλὸς ἐξεφαάνθη,
Νηρῆος θεοῖο πολὺ ράδμων ὑποφῆτης·
ὑψὶ δ' ἐλαχυνῆεν τε κάρη κα' στήθ' αἰέρας
νεόθεν ἐκ λαγόνων, στιβαρῇ γ' ἐπορίζατο χειρὶ
νηῖου ὀλκαίοιο, καὶ ἔαχεν ἐσσυμένοισι.

- 1245 λιμῶ δ' αἰθόμενος μετανίσσεται, οὐδ' ἐπικέρσε
 ποίμνησι· πρὸ γὰρ αὐτοὶ ἐνὶ σταθμοῖσι νομῆες
 ἔλσαν· ὁ δὲ στενάχων βρόμει ἄσπετον, ἔφρα κόμηνησιν·
 ὡς τότε ἄρ' Εἰλατίδης μεγάλ' ἔστενε, ἀμφὶ δὲ χῶρον
 φοῖτα κεκληγώς· μελή δέ οἱ ἐπλετο Φωνή.
- 1250 Αἶψα δ' ἐρυσσάμενος μέγα φάσγανον ὥρτο νέεσθαι,
 μή πως ἢ θήρῃσιν ἔλωρ πέλοι, ἢέ μιν ἄνδρες
 μῶνον ἔοντ' ἐλόχησαν, ἄγουσι δὲ ληῖδ' ἐτοίμην.
 "Εὐθ' αὐτῷ ζυμῆλῃτο κατὰ στίβον Ἡρακλῆϊ,
 γυμνὸν ἐπαΐτων παλάμη ἕϊφος· εὖ δέ μιν ἔγνω
- 1255 σπερχόμενον μετὰ νῆα διὰ κνέφας. Αὐτίκα δ' ἄτην
 ἐκφατο λευγαλήν, βεβαρημένος ἄσθματι θυμῖν·
 "Δαιμόνιε, στυγερὸν τοῖ ἄχος πάμπρωτος ἐνίψω.
 ,, Οὐ γὰρ Ἰλίας, κρήνηδε κιών, σόος αὖτις ἰκάνει.
 ,, Ἀλλὰ ἐλθιστῆρες ἐνιχρίμψαντες ἄγουσιν,
- 1260 ,, ἢ θῆρες σίνονται· ἐγὼ δ' ἰάχοντος ἄκουσα.
 "Ὡς φάτο· τῷ δ' αἰόντι κατὰ κροτάφων ἄλις ἰδρῶς
 κήκειν, ἐν δὲ κελαινὸν ὑπὸ σπλάγχνοις ζέεν αἷμα.
 Χωόμενος δ' ἐλάτην χαμάδις βάλεν, ἐς δὲ κέλευθον
 τὴν θέεν, ἣ πόδες αὐτὸν ὑπέκφερον αἰσσοντα.
- 1265 "Ὡς δ' ὅτε τίς τε μύωπι τετυμμένος ἔσσυτο ταῦρος,
 πίσεά τε προλιπὼν καὶ ἑλεσπίδας, οὐδὲ νομῆαν
 οὐδ' ἀγέλης ὄφεται, πρήσσει δ' ἰδὼν, ἄλλοτ' ἄπαστος,
 ἄλλοτε δ' ἰστάμενος, καὶ ἀνὰ πλατὺν αὐχέν' αἰείρων,
 ἵησι μύκημα, κακῷ βεβωλημένος οἰστρω·
- 1270 ὥς ὅγε ραιμῶων, ὅτε μὲν θοᾷ γούνατ' ἐπαῖθε
 συνεχέως, ὅτε δ' αὖτε μεταλλήγαν καμάτοιο
 τῇλε διαπρύσιον μεγάλη βοάσκειν αὐτῇ.
 Αὐτίκα δ' ἀκροτάτας ὑπερέσχεθεν ἄηριος ἀστήρ
 ἠῶος, πνοιαί δὲ κατήλυθον· ὦκα δὲ Τίφους
- 1275 ἐσβαίνειν ὀρόθυνεν, ἐπαύρεσθαι τ' ἀνέμοιο.
 Οἱ δ' ἐισβαῖνον ἄφαρ λελημένας· ὕψι δὲ νῆος
 εὐναίας ἐρύσαντες ἀνεκρούσαντο κάλως.
 Κυρτώθη δ' ἀνέμῳ λῖνα μεσσίθε, τῇλε δ' ἀπ' αὐτῆς
 γηθέσυνοι φορέοντο παρὰ Προσπῶν ἀκρην.

- 1210 ὁτραλῆος κατὰ κόσμον ἐπαρτίσσειεν ἰόντι.
 Δὴ γὰρ μιν τοίοισιν ἐν ἡέσιν αὐτὸς ἔφερθε
 νηπιάχον τὰ πρῶτα, δόμων ἐκ πατρὸς ἀπούρας,
 δῖον Θειοδάμαντος, ὃν ἐν Δρυόπεσιν ἐπέφνε
 νηλεῆς, βοὸς ἀμφὶ γαυμέρου ἀντιόωντα.
- 1215 Ἦτοι ὁ μὲν νεοῖδ' ὕψος τέμνεσκεν ἀρότρη
 Θειοδάμας ἀνὴρ βεβόλημένος· αὐτὰρ ὁ τόνγε
 βοῦν ἀρότρη ἤνωγε παρασχεόμεν οὐκ ἐθέλοντα.
 Ἴστο γὰρ πρόφασιν πολέμου Δρυόπεσσι βάλῃσθαι
 λευγαλὲν, ἐπεὶ οὐ τι δίκης ἀλέγοντες ἔναιον.
- 1220 Ἀλλὰ τὰ μὲν τηλοῦ κεν ἀποπλάγξειεν αἰοιδῆς —
 Αἴψα δ' ὅ γε κρήνην μετεκίαθεν, ἣν κάλειουσι
 Πηγάς ἀμφίγυοι περιναίεται. Οἱ δέ που ἄρτι
 Νυμφῶν ἴσταντο χοροί· μέλκε γὰρ σφίσι πάσαις,
 ὕσσαι κέσθ' ἐρατὸν Νύμφαι βίον ἀμφενέμοντο,
- 1225 Ἀρτέμιν ἐννυχίῃσιν αἰεὶ μέλπεσθαι αἰδοῦσιν.
 Αἱ μὲν ὅσαι σκοπιάς ὀρέων λάχον, ἥ καὶ ἐναύλους,
 αἵ γε μὲν ὑλήωροι ἀπόπροθεν ἐστιχόωντο·
 ἥ δὲ νέον κρήνης ἀνεδύετο καλλιναίοιο
 Νύμφη ἐφουδατή· τὸν δὲ σχεδὸν εἰσένησε
- 1230 κόλπει καὶ γλυκερῆσιν ἐρευνδόμενον χαρίτεσσι.
 Πρὸς γὰρ οἱ διχόμηνις ἀπ' αἰδέρος ἀγάζουσα
 βάλε Σεληναίη· τὴν δὲ φρένας ἐπτοίησε
 Κύπρις, ἀμηχανίη δὲ μόγις συναγείρατο θυμόν.
 Αὐτὰρ ὅγ' ὥς τὰ πρῶτα βόη ἐνὶ κάλπιν ἔρεισε
- 1235 λείχους ἐπιχριμφθεῖς, περὶ δ' ἄσπετον ἔβραχεν ὕδωρ
 χαλκὸν ἐς ἡχήμεντα φορεῦμενον, αὐτίκα δ' ἤγε
 λαῖον μὲν καδύπερθεν ἐπ' ἀνχίνος ἀνέτετο πῆχυν,
 κύσσαι ἐπιδύουσα τέρεν στόμα· δεξιτερῇ δὲ
 αἰκῶν ἐσπασε χεῖρ', μέσῃ δ' ἐνικάββαλε δῖνῃ.
- 1240 Τοῦ δ' ἥρως ἰάχοντος ἐπέκλυεν οἷος ἑταίρων
 Εἰλατίδης Πολύφημος, ἰὼν προτέρωσε κελεύθου.
 Δέκτο γὰρ Ἡρακλῆα πελώριον, ὅππόθ' ἵκοιτο.
 Εἷ δὲ μεταίξας Πηγέων σχεδὸν, ἥτε τις θῆρ
 ἄγριος, ἐν ῥά τε γῆρυσ ἀπόπροθεν ἵκετο μῆλων.

- 1175 αὐσταλῆος κοινήσι, περιτριβείας δέ τε χεῖρας
 εἰσορόων, κακὰ ποτὰ ἐπ' ἡρήσατο γαστρί·
 τῆμος ἄρ' οἱ γ' ἀφίκοντο Κιανίδος ἥδεα γαίης,
 ἄμφ' Ἀργανθώνειον ὄρος, προχοᾶς τε Κίοιο.
 Τοὺς μὲν ἐϋζείνως Μυσοὶ φιλότῃ κίοντας
- 1180 δειδέχατ', ἐνναέται κείνης χθονός, ἥϊά τε σφε
 μῆλ' αὖ τε δευομένοις, μέθυ τ' ἄσπετον ἐγνύαλιζαν.
 Ἐνθα δ' ἔπειθ' οἱ μὲν ξύλα κάσκανα, τοὶ δὲ λεχαίην
 φυθάδα λειμώνων φέρον ἄσπετον ἀμήσαντες,
 στόρνυσθαι· τοὶ δ' ἄμφι πυρήϊα δινεύεσκον·
- 1185 οἱ δ' αἶνον κρητήρσι κέρων, πονέοντό τε δαῖτα,
 Ἐκθατίφ' ῥέζαντες ὑπὸ κνέφας Ἀπύδωνι.
 Αὐτὰρ ὁ δαίχυσθαι ἐτάροισιν ἐοῖς ἐπιτείλας
 βῆ ὅ' ἔμην εἰς ὕλην υἱὸς Διὸς, ὥς κεν ἔρετμῶν
 οἱ αὐτῷ φθαίῃ καταχείριον ἐντύνασθαι.
- 1190 Εὐρεν ἔπειτ' ἐλάτῃν ἀλαλήμενος, οὔτε τι ποτὰ οὐ
 ἄχθομένην ὄχοις, οὐδὲ μέγα τηλεθώωσαν,
 ἀλλ' αἶον ταναῆς ἔργος πέλει αἰγείροιο·
 τόσση ὁμῶς μῆκος καὶ ἐς πάχος ἦεν ἰδέσθαι.
 Ῥίμφα δ' οἰστοδόκη μὲν ἐπὶ χθονὶ θῆκε Φαρέτρην
- 1195 αὐτοῖσιν τόχοισιν, ἔδν δ' ἄπο δέρμα λένοντος.
 Τὴν δ' ὄγε χαλκοβαρεῖ ῥοπάλῃ δαπέδοιο τινάξας
 νεϊόθεν ἀμφοτέρῃσι περὶ στύπος ἐπαβε χερσίν,
 ἡγορέῃ πύσσον· ἐν δὲ πλατύν ὦμον ἔρεισεν
 εὖ διαβάς· πεδόθεν δὲ, βαθύρριζον περ' ἐοῦσαν,
- 1200 προσφύς ἐξήειρε σὺν αὐτοῖς ἔχμασσι γαίης.
 Ὡς δ' ὅταν ἀπροφάτως ἰστὸν νεὸς, εὐτε μάλιστα
 χειμερὶ ὀλοοῖο πέλει δύσις Ὠρίωνος,
 ὑπόθεν ἐμπλίζασα θοῇ ἀνέμοιο κατὰίξ
 αὐτοῖσιν σφῆνεσσιν ὑπέκ προτόνων ἐρύσσηται·
- 1205 ὥς ὄγε τὴν ἤειρεν. Οἷ μὲ δ' ἀνὰ τόξα καὶ ἰούς,
 δέρμα θ' ἐλών, ῥοπάλῳ τε, παλίσσυτος ἄρτο νέεσθαι.
 Τόφρα δ' ἴλας χαλκήσιν κάλπισι νόσφιν ὀμίλου
 δίζετό τε κρήνης ἱερὸν ροόν, ὥς κεν οἱ ἴδωρ
 φθαίῃ ἀφυσσάμενος ποτιδόρπιον, ἅπαντα

- 1140 Ἡ δὲ που εὐαγέεσσιν ἐπὶ Φρένα θῆκε θυηλαῖς
 ἀνταίη δαίμων· τὰ δ' εἰκότα σήματ' ἔγεντο.
 Δένδρεα μὲν καρπὸν χεῖον ἄσπετον, ἀμφὶ δὲ ποσσὶν
 αὐτομάτη φνε γαῖα τερείνης ἄνδρα ποίηε.
 Θῆρες δ' εἰλυοὺς τε κατὰ ξυλόχους τε λιπόντες,
 1145 οὐρῇσιν σαίγοντες ἐπήλυθον· ἰδὲ καὶ ἄλλο
 θῆκε τέρας· ἐπεὶ οὐ τι παροίτερον ὕδατι παῖε
 Δίνδυμον· ἄλλα σφιν τότε ἀνέβραχε διψάδος αὐτῶς
 ἐκ κορυφῆς ἄλληκτον· Ἰησονίην δ' ἐνέπυσσε
 κεῖνο ποτὸν κρήνην περιναίεται ἄνδρες ὀπίσσω.
 1150 Καὶ τότε μὲν δαῖτ' ἀμφὶ θεῶς θέσαν οὐρεσιν ἄρκτων,
 μέλποντες Ῥεῖην πολυπότνιαν· αὐτὰρ ἐς ἡῶ,
 ληξάντων ἀνέμων, νῆσον λίπον εἰρεσίησιν.
 Ἐνθ' ἔρις ἄνδρα ἕκαστον ἀριστῶν ὀρόθυνεν,
 ὅστις ἀπολλήξειε πανύστατος· Ἀμφὶ γὰρ αἰθῆρ
 1155 νήνεμος ἐστόρεσεν δῖνας, κατὰ δ' εὐνασε πόντον.
 Οἱ δὲ γαληναῖη πίσυνοι ἐλάασκον ἐπιπρὸ
 νῆα βίη· τὴν δ' οὐ κε διέξ' ἀλὸς αἴσσουσιν
 οὐδὲ Ποσειδάωνος ἀεθλόποδες κίχον ἵπποι.
 Ἐμπερ δ' ἐγρομένοιο σάλου ζαχρηέσιν αὐρῆς,
 1160 αἱ νέον ἐκ ποταμῶν ὑπὸ δειέλων ἠερέθοντο,
 τειρόμενοι καμάτῳ μετελώφεον· Αὐτὰρ ὁ τούτῳ
 πανσυδίῃ μογέοντας ἐφέλκετο κάρτεϊ χειρῶν
 Ἡρακλῆς, ἐτίνασσε δ' ἀρηρότα δούρατα νηός.
 Ἄλλ' ὅτε δὴ, Μυσῶν λεληθμένοι ἠπίεροι,
 1165 Ῥυνδακίδας προχαῖς, μέγα τ' ἥριον Αἰγαίῳ
 τυτθὸν ὑπὲκ Φρυγίης παραμέτρεον εἰσορόωντες,
 δὴ τότε ἄνοχλίζων τετραχότος οἴδατος ἑλκούς,
 μεσσοῦθεν ἄξεν ἑρετμόν· ἀτὰρ τρύφος ἄλλο μὲν αὐτὸς
 ἄμφω χερσὶν ἔχων πέσε δόχμιος, ἄλλο δὲ πόντος
 1170 κλύζε καλεῖρόθιοισι φέρων· Ἀνὰ δ' ἔζετο σιγῇ
 παπταίνων· χεῖρες γὰρ ἀήθεσαν ἠρεμέουσιν.
 Ἥμος δ' ἀγρόθεν εἶσι φυτοσκάφος, ἣ τις ἀροτρεὺς
 ἀσπασίως εἰς αὐλιν ἐήν, δόρποιο χατίζων,
 αὐτοῦ δὲ προμολῇ τετριμμένα γούνατ' ἐκάμφεν

- 1105 πάντας ἐπισπέρχων, καὶ τε σφίτιν ἐγρομένοισιν
 Ἀμυκίδεω Μίφωιο θεοπροπίας ἀγέρευσεν.
 Αἴψα δὲ κουρότεροι μὲν ἀπὸ σταθμῶν ἐλάσαντες
 ἐνθεν ἐπ' αἰπεινὴν ἀναγὼν βόας οὖρεος ἄκρην.
 Οἱ δ' ἄρα, λυσάμενοι Ἰερῆς ἐκ πείσματα πέτρης,
 1110 ἤρυσαν ἐς λιμένα Θρηάκιον· ἂν δὲ καὶ αὐτοὶ
 βαῖνον, παντοτέρους ἐτάρων ἐν νηὶ λιπόντες.
 Τοῖσι δὲ Μακρυάδες σκοπιαί, καὶ πᾶσα περικύη
 Θρηικής ἐνὶ χερσὶν ἑαῖς προῦφαίνεται· ἰδέσθαι·
 φαίνεται δ' ἡρώεν στόμα Βοσπόρου, ἥδ' ἐκ κολῶναι·
 1115 Μυσίαι· ἐκ δ' ἐτέρης ποταμοῦ ῥόος Αἰσήποιο,
 ἄστυ τε καὶ πεδίον Νηπήιον Ἀδρηστείης.
 Ἔσκε δὲ τι στιβαρὸν στύπος ἀμπέλων ἐντροφὸν ὕλην
 πρίχυν γεράνδρου· τὸ μὲν ἔκταμον, ὅφρα πέλοιτο
 δαίμονος οὐρείης ἱερὸν βρέτας· ἔξεσε δ' Ἄργος
 1120 ἐκόςμωσ, καὶ δὴ μιν ἐπ' ὀκρίεντι κολωνῶ
 ἴδρυσαν, φηγοῖσιν ἐπηρεφὲς ἀκροτάτησιν,
 αἱ ῥά τε πασῶν πανυπέρταται ἐρδίζωντο.
 Βωμὸν δ' αὖ χερσίδος παρενήνεον· ἀμφὶ δὲ φύλλοις
 στεφάμενοι δρυῖνοισι θυηπολὴς ἐμέλοντο,
 1125 Μητέρα Δινδυμίνην πολυπότνιαν ἀγκαλιόντες,
 ἐνναέτιν Φρυγίης, Τιτίνην δ' ἄμα, Κύνανον τε,
 οἱ μῦνοι πολέων μοιρηγέται ἡδὲ πάρεδροι
 Μητέρος Ἰδαίης κεκλήαται, ὅσοι ἑασί
 Δάκτυλοι Ἰδαῖοι Κρηταίεες, οὓς ποτε Νύμφη
 1130 Ἀλχιώλῃ Δικταῖον ἀνὰ σπέος, ἀμφοτέρησιν
 δραξαμένη γαίης Οἰαξίδος, ἐβλάστησε.
 Πολλὰ δὲ τήνγ' ἐλιτῆσιν ἀποστρέφαι ἐριωλαῖς
 Αἰσονίδης γυνάσκει ἐπιλείβων ἱεροῖσιν
 αἰδομένοις· ἄμυδις δὲ νέει Ὀρφῆος ἀνωγῇ
 1135 σκαίροντες βηταρμόν ἐνὶ πλιν, ὠρχήσαντο,
 καὶ σάνεα ξιφέσσιν ἐπέκτυπον, ὥς κεν ἰωὴ
 εὐσφημος πλάσσοιτο δι' ἡέρος, ἣν ἐτι λαοὶ
 κηδείῃ βασιλῆος ἀνέστηνον· ἐνθεν ἰσαιοὶ
 ῥόμβοι καὶ τυπάνη· Ῥεῖην Φρύγεσσι λιάσκονται·

- 1070 Αἰνότετον δὴ κείνο Δολιονίησι γυναιξίν
 ἀνδράσι τ' ἐκ Διὸς ἡμαρ ἐπήλυθεν · οὐδὲ γὰρ αὐτῶν
 ἔτλη τις πάσασθαι ἐδητύος, οὐδ' ἐπὶ δηρὸν,
 ἐξ ἀχέων, ἔργοιο μυληφάτου ἐμνώνοντο ·
 ἀλλ' αὐτως ἀφλεκτα διαζώεσκον ἔδοντες.
- 1075 Ἐνθ' ἔτι νῦν, εὖτ' ἂν σφιν ἐτήσια χύτλα χέωνται
 Κύζικον ἐνναίοντες Ἰάονες, ἐμπέδον αἰεὶ
 πανδῆμοιο μύλης πελάνους ἐκαλετρεύουσιν.
 Ἐκ δὲ τότεν τρηχεῖαι ἀνῆρθησαν ἄεθλαι
 ἡμαθ' ὁμοῦ νύκτας τε θυώδεα, τοὺς δὲ κατ' αὐτῆς
- 1080 ναυτίλλεσθαι ἔρुकον. Ἐπιπλομένη δ' ἐνὶ νυκτὶ
 ὦλλοι μὲν ῥα πάρος δεδμημένοι εὐνάζοντο
 ὕπνῳ ἀριστῆες πύματον λάχος · αὐτὰρ Ἀκαστος
 Μόφος τ' Ἀμπυκίδης ἀδινὰ κνώσσοντας ἔρुकτο.
 Ἡ δ' ἄρ' ὑπὲρ ζανθοῖο καρήατος Αἰσονίδαο
- 1085 πωτᾶτ' ἀλκυονίδας λιγυρῇ ἐπὶ δεσπίζουσα
 λῆξιν ὀριγομένων ἀνέμων · συνέηκα δὲ Μόφος,
 ἀπταλῆς ὄρνιθος ἐναΐσιμον ὅσσαν ἀκούσας.
 Καὶ τὴν μὲν θεὸς αὐτίς ἀπέτραπεν, Ἴξε δ' ὑπερθε
 νηΐου ἀφλάστοιο μετ' ἥορος αἶψα.
- 1090 Τὸν δ' ὅ γε κεκλιμένον μαλακοῖς ἐνὶ κώσιν οἶῳ
 κινήτας ἀνέγειρε παρασχεδὸν, ὧδ' ἔειπεν·
 „ Αἰσονίδη, χρειώ σε τόδ' ἱερὸν εἰσανιόντα
 „ Δινδύμου ὀκρίεντος, εὐθρονον ἰλάξασθαι
 „ μητέρα συμπάντων μακάρων · λήξουσι δ' ἄεθλαι
- 1095 „ ζαχρηεῖς. Τοίην γὰρ ἐγὼ νέον ὅσσαν ἀκονσα
 „ ἀλκυόνος ἀλῆς, ἥτε κνώσσοντος ὑπερθε
 „ σεῖο πέριξ τὰ ἕκαστα πιφανσκομένη πεπότης.
 „ Ἐκ γὰρ τῆς ἀνεμὸς τε, θάλασσά τε, νεῖοδι τε χθῶν
 „ πᾶσα πεπεύρηται, νιφέν θ' ἔδος Οὐλύμποιο ·
- 1100 „ καὶ οἱ, ὅτ' ἐξ ὀρέων μέγαν οὐρανὸν εἰσαναβαίνει,
 „ Ζεὺς αὐτὸς Κρονίδης ὑποχάζεται · ὥς δὲ καὶ ὦλλοι
 „ ἀθάνατοι μάκαρες δεινὴν θεὸν ἀμφιέπουσιν.
 „ Ὡς φάτο · τῇ δ' ἀσπαστὸν ἔπος γένετ' εἰπαύοντι.
 „ Ὄρुकτο δ' ἐξ εὐνῆς πεχαρημένους · ὥρσε δ' ἐταίρους

- 1035 μοῖραν ἀνέπλησεν. Τὴν γὰρ θῆμις οὐ ποτ' ἀλύξαι
 θνητοῖσι· πάντα δὲ περὶ μέγα πέπταται ἔρκος.
 ὥς τὸν οἰόμενόν που ἀδευκέος ἔκτοθεν ἄτης
 εἶναι ἀριστῶν, αὐτῇ ὑπὸ νυκτὶ πέδησε
 μαρνάμενον κείνοισι. Πολεῖς δ' ἐπαρηγάνες ἄλλοι
 1040 ἔκταθεν. Ἡρακλῆς μὲν ἐνήρατο Τηλεκλῆα
 ἠδὲ Μεγαδρόντην· Σφόδριν δ' ἐνάριζεν Ἀκαστος·
 Πηλεὺς δὲ Ζέλυν εἶλιν, ἀρηΐθοόν τε Γέφυρον.
 Αὐτὰρ ἑυμελὴς Τελαμῶν Βασίλῃα κατέκτα.
 Ἴδας δ' αὖ Προμεία, Κλύτιος δ' Ὑάκινθον ἐπέφνε.
 1045 Τυνδαρίδαι δ' ἄμφω Μεγαλοσσοῖεκα, Φλόγιόν τε
 Οἰνεΐδης δ' ἐπὶ τοῖσιν ἔλε θρασὺν Ἴτυμονῆα,
 ἠδὲ καὶ Ἀρτακέα, πρόμον ἀνδρῶν· οὐς ἔτι πάντας
 ἐνναέται τιμαῖς ἡρώϊσι κυδαίνουσιν.
 Οἱ δ' ἄλλοι εἰζάντες ὑπέτρεσαν, ἥντε κίρκους
 1050 ὠκυπέτας ἀγγελῶν ὑποτρέσσωσι πέλειαι.
 Ἔς δὲ πύλας ὁμάδῳ πέσον ἄθροοι· αἴψα δ' αὐτῆς
 πλῆτο πόλις, στονόνετος ὑποτροπὴ πολέμοιο.
 Ἡῶθεν δ' ὅλοην κωὶ ἀμήχανον εἰσενόησαν
 ἀμπλακίην ἄμφω· στυγερὸν δ' ἄχος εἶλεν ἰδόντας
 1055 ἥρωες Μινύας Αἰνῆϊον νῆα πάροιθε
 Κύζικον ἐν κονίῃσι καὶ αἵματι πεπτηῶτα.
 Ἦματα δὲ τρία πάντα γόων, τίλλοντό τε χαίτας
 αὐτοὶ ὁμῶς λαοὶ τε Δολίονος. Αὐτὰρ ἔπειτα
 τρεῖς περὶ χαλκείοις σὺν τεύχεσι δινηθéntες
 1060 τύμβῳ ἐνεκτερέϊζαν, ἐπειρήσαντί τ' ἀέθλων,
 ἥ θῆμις, ἀμπεδίον λειμώνιον, ἐνθ' ἔτι νῦν περ
 ἐλκέχεται τόδε σῆμα καὶ ὀφειγύνουσιν ἰόεσθαι.
 Οὐδὲ μὲν οὐδ' ἄλοχος Κλείτη φθιμένοιο λέλειπτο
 οὐ πόσιος μετόπισθε· κακῷ δ' ἐπὶ κύντερον ἄλλο
 1065 ἦνυσεν, ἀφάμενῃ βρόχον αὐχένι. Τὴν δὲ καὶ αὐταὶ
 Νύμφαι ἀποφθιμένην ἀλσηΐδες ὠδύραντο·
 καὶ οἱ ἀπὸ βλεφάρων ὕσα δάκρυα χεῦαν ἔραζε,
 πάντα τάγε κρήνην τεῦξαν θεαί, ἣν καλέουσι
 Κλείτην, δυστήνοιο περικλεῆς οὐνομα νύμφης.

- 1000 Γηγενέων ἦρωες ἀρήϊοι, ἡμὲν εἰστοῖς,
 ἡδὲ καὶ ἐλκείησι δεδεγμένοι, εἰσόκε πάντας
 ἀντιβίην ἀσπερχές ὀρινομένους ἐδάϊζαν.
 Ὡς δ' ὅτε δούρατα μακρὰ νέον πελέκεσσι τυπέντα
 ὑλοτόμοι στοιχηδὸν ἐπὶ ῥηγμῖνι βάλωσιν,
- 1005 ἔφρα νοτισθέντα κρατεροὺς ἀνεχοῖατο γόμφους·
 ὡς οἱ ἐνὶ ζυγοχῇ λιμένος πολιοῦτο τέταντο
 ἐξεῖς, ἄλλοι μὲν ἐς ἀλμυρὸν ἀθρόοι ὕδωρ
 δύπτοντες κεφαλὰς καὶ στήθεα, γυῖα δ' ὑπερθε
 χέρσῳ τεινόμενοι· τοὶ δ' ἔμπαλιν, αἰγιαλοῦτο
- 1010 κράατα μὲν ψαμάθοισι, πόδας δ' εἰς βένθος ἔρειδον,
 ἄμφω ἄμ' οἰωνῶσι καὶ ἰχθύσι κύρμα γενέσθαι.
 Ἴηρωες δ', ἕτε δὴ σφιν ἀταρβῆς ἔπλετ' αἰεθλος,
 δὴ τότε πείσματα νηὸς ἐπὶ πνοῆς ἀνέμοιο
 λυσάμενοι, προτέρωσθε δι' ἐξ ἁλὸς ὁδῶμα νέοντο.
- 1015 Ἡ δ' ἔθεεν λαίφεσσι πανήμερος· οὐ μὲν ἰούσης
 νυκτὸς ἔτι ῥιπὴ μένεν ἔμπεδον, ἀλλὰ θύελλα
 ἀντίαι ἀρπάγδην ἐπίσω φέρον, ὅφρ' ἐπέλασσαν
 αὐτὶς ἐυξείνοισι Δολίοσιν. Ἐκ δ' ἄρ' ἐβῆσαν
 αὐτονοχί· Ἱερὴ δὲ φαίνεται ἡδ' ἔτι κέτρη,
- 1020 ἣ περὶ πεισματα νηὸς ἐπισσύνετο ἐβάλλοντο.
 Οὐδέ τις αὐτὴν νῆσον ἐπιφραδέως ἐνόησεν
 ἔρμεναι· οὐδ' ὑπὸ νυκτὶ Δολιόγεσ ἀψ' ἀνιόντας
 ἦρωας νημερτές ἐπήϊσαν· ἀλλὰ που ἀνδρῶν
 Μυκρῶν εἶσαντο Πελασγικὸν ἄρεα κέλσαι.
- 1025 τῇ καὶ τεύχεα δύντες ἐπὶ σφίσι χεῖρας ἄειραν.
 Σύν θ' ἔλασαν μελίας τε καὶ ἀσπίδας ἀπαήλοισιν,
 ὕξειν ἱκελοι ῥιπῇ πυρὸς, ἥ τ' ἐνὶ θάμνοισι
 ἀναλέοισι πεσοῦσα κορύσσεται· ἐν δὲ κυδοιμᾷ
 δεινός τε ζυμενὴς τε Δολιονίῳ πέσσε δῆμη.
- 1030 Οὐδ' ὅγε δημοτῆτος ὑπὲρ μόνον αὐτὶς ἔμελλεν
 οἴκαδε νυμφιδίους θαλάμους καὶ λέκτρον ἰκίσθαι·
 ἀλλὰ μιν Διόνειδος τετραμμένον ἰθὺς ἐεῖο
 πληῆξεν ἱκαίῃας στῆθος μέσον, ἀμφὶ δὲ δουρὶ
 ὀστῖον ἐβραίσθη· ὁ δ' ἐνὶ ψαμάθοισιν ἐλυοθεῖς

- 965 ἄστεος ἐν λιμένι πρυμνήσια νηὸς ἀνάψαι.
 ἔνθ' οἳ γ' Ἐκβάσιω βωμὸν θέσαν Ἀπόλλωνι,
 εἰσάμενοι παρὰ θῖνα, θηηολίης τ' ἐμέλοντο.
 Δῶκεν δ' αὐτὸς ἀναξ λαρὸν μέθυ δευομένοισι,
 μῆλ' αὖθ' ὁμοῦ. Δὴ γάρ οἱ ἔην φάτις, εὖτ' ἂν ἴκωνται
- 970 ἀνδρῶν ἡρώων θεῖος στόλος, αὐτίκα τόνγε
 μείλιχον ἀντιάαν, μηδὲ πτολέμοιο μέλεισθαι.
 Νεῖεν που κῆκεῖνα ἐπισταχέσκον ἰούλοι,
 οὐδ' ἐνὶ πῶ παιδεσσιν ἀγαθόμενος μεμόρητο·
 ἀλλ' ἔτι οἱ κατὰ δώματ' ἀκήρατος ἦεν ἀκοίτις
- 975 ὠδίνων, Μέροπος Περκωσίου ἐγγεγαυῖα,
 Κλείτη· εὐπλόκαμος, τὴν μὲν νέον ἐξέτι πατρὸς
 θεσπεσίῳ ἔθνοισιν ἀνήγαγεν ἀντιπέρηθεν.
 Ἀλλὰ καὶ ὅς, θάλαμὸν τε λιπὼν καὶ δέμνια νύμφης,
 τοῖς μέτα δαῖτ' ἀλέγυνε, βάλεν δ' ἀπὸ δέγματα θυμοῦ.
- 980 Ἀλλήλους δ' ἐρέεινον ἀμοιβαδίς· ἦτοι ὁ μὲν σφέων
 πύθτο ναυτιλίας ἄνυσιν, Πελῖαιό τ' ἐφετμάς·
 οἱ δὲ περικτιύνων πόλιας, καὶ κόλπον ἅπαντα
 εὐρείης πύθοντο Προποντίδος· οὐ μὲν ἐπιπρὸ
 ἡϊέει καταλέξαι ἐλδομένοισι δαῖναι.
- 985 Ἡοὶ δ' εἰσανέβαν μέγα Δίνδυμον, ὕφρα κεν αὐτοῖ
 θήσαιντο πόρου κείνης ἀλός· ἐκ δ' ἄρα τοίγε
 νῆα χυτεῦ λιμένος προτέρου ἐξήλασαν ὅρου·
 ἦτε δ' Ἰησονίη πέφатаι ὁδὸς, ἥνπερ ἔβησαν.
- Γηγενέες δ' ἐτέρωθεν ἀπ' οὐρεος αἰζάντες
- 990 φράξαν ἀπειρεσίῳ Χυτοῦ στόμα, νειύθι πέτρης,
 πόντιον, οἷά τε θῆρα λοχώμενοι ἐνδὸν ἔοντα.
 Ἀλλὰ γὰρ αὖθι λέλειπτο σὺν ἀνδράσιν ὀπλοτέροισιν
 Ἡρακλῆς, ὅς δ' ἡ σφι παλίντονον αἶψα τανύσσας
 τόξον, ἐπασσύτερους πέλασε χθονί· τοῖ δὲ καὶ αὐτοῖ
- 995 πέτρας ἀμφιρύθῳγας ἀεργάζοντες ἔβαλλον.
 Δὴ γάρ που κῆκεῖνα θεὰ τρέφεν αἰνὰ πέλωρα
 Ἥρη, Ζηνὸς ἀκοίτις, ἀέθλιον Ἡρακλῆϊ.
 Σὺν δὲ καὶ ὦλοι δῆθεν ὑπότροποι ἀντιόωντες,
 πρὶν περ' ἀνελθέμεναι σκοπιῇν, ἥπτοντο φόνου.

- 930 μέτρον, Ἰδαίην ἐπὶ δεξιὰ γαῖαν ἔχοντες.
 Δαρδανίην δὲ λιπόντες ἐπιπροσέβαλλον Ἀχῦδω,
 Περκίωπην δ' ἐπὶ τῇ, καὶ Ἀβαρνίδος ἡμαθόεσσαν
 ἡϊόνα, ζαθέην τε παρήμειβον Πιτύειαν.
 Καὶ δὴ τοί γ' ἐπὶ νυχτὶ, διάνδιχα νηὸς ἰούσης,
 935 δῖνῃ πορφύροντα διήνυσαν Ἐπλήσπολλον.
 Ἔσθι δὲ τις αἰετὶα Προποντίδος ἐνδοθι νῆσος
 τυτθὸν ἀπὸ Φρυγίης πολυλήϊου ἠπείροιο
 εἰς ἄλλα κεκλιμένη, ὅσσον τ' ἐπιμύρεται ἰσθμὸς
 χέρσῳ ἐπιπρήνης καλᾷεμένος· ἐν δὲ οἱ ἀχλαὶ
 940 ἀμφίδυμοι, κεῖνται δ' ἀπὲρ ὕδατος Αἰσίοιο.
 Ἄρκιον μιν καλέουσιν ὄρος περιναϊστάοντες·
 καὶ τὸ μὲν ὕβρισταί τε καὶ ἄγριοι ἀμφινέμονται
 Γηγενέες, μέγα θαῦμα περικλιίνεσσιν ἰδέσθαι.
 Ἐξ γὰρ ἐκάσῳ χεῖρες ὑπέρβιοι ἠερέθουσι,
 945 αἱ μὲν ἀπὸ σιβαρῶν ὤμων δύο, ταὶ δ' ὑπένερθε
 τέσσαρες αἰνοτάτῃσιν ἐπὶ πλευρῇ ἀραρυταί.
 Ἰσθμὸν δ' αὖ πεδίον τε Δολιόνας ἀμφινέμοντο
 ἄνδρες· ἐν δ' ἥρως Αἰνῆϊος υἱὸς ἄνασσε
 Κῦζικος, ὃν κόρη δίου τέκεν Εὐσώροιο
 950 Αἰνήτη. Τοὺς δ' οὐ τι, καὶ ἔκπαγλοί περ ἔοντες,
 Γηγενέες σίνοντο, Ποσειδάωνος ἀρωγῇ·
 τοῦ γὰρ ἔσαν τακρῶτα Δολιόνας ἐκγεγαῶτες.
 Ἐνθ' Ἀργῷ προὔτυφεν ἐπειγομένη ἀνέμοισι
 Θρηϊκίοις, καλὸς δὲ λιμὴν ὑπέδεκτο θέουσαν.
 955 Κεῖσε καὶ εὐναίης ὀλίγον λίθον ἐλκύσαντες,
 Τίφους ἐννεσίησιν ὑπὸ κρήνῃ ἐλίποντο,
 κρήνῃ ὑπ' Ἀρτακίῃ· ἕτερον δ' ἔλον, ὅστις ἀρήρει,
 βριδύν· ἀτὰρ κεῖνόν γε θεοπροπῆαις Ἐκάτοιο
 Νηλεΐδαι μετόπισθεν ἴαονες ἰδρύσαντο
 960 ἱερὸν, ἧ θέμις ἦεν, Ἰησονίης ἐν Ἀθήνης.
 Τοὺς δ' ἄμυδις Φιλότητι Δολιόνας, ἠδὲ καὶ αὐτὸς
 Κῦζικος, ἀντήσαντες, ὅτε στόλον ἠδὲ γενέθλην
 ἐκλυοὺν οὔτινες εἶεν, εὐζέλως ἀρέσαντο,
 καὶ σφέας εἰρεσίῃ πέπιθον προτέρωσσε κίοντας.

- 895 „σχίσεις, οὐτ' αὐτὴ προτιόσσομαι ὥδε τελεῖσθαι.
 „Μνώεο μὴν ἀπείων περ ὁμῶς καὶ νόστιμος ἦδη
 „Ίφικύλης· λίπε δ' ἡμῖν ἔπος, τό κεν ἐξανύσαιμι
 „πρόφρων, ἣν ἄρα δὴ με θεοὶ δώσωσι τελέσθαι.
 Τὴν δ' αὖτ' Ἀΐσωνος υἱὸς ἀγαιόμενος προσέειπεν·
 900 “ Ίφικύλη, τὰ μὲν οὕτω ἐναίσιμα πάντα γένοιτο
 „ἐκ μακάρων· τύνη δ' ἐμέθεν πέρι θυμὸν ἀρείω
 „ἴσχαν', ἐπεὶ πάτρην μοι ἄλκις Πελῖας ἔκητι
 „ναιστάειν· μούνον με θεοὶ λύσειαν ἀέθλων.
 „Εἰ δ' οὐ μοι πέπρωται ἐς Ἑλλάδα γαῖαν ἰκέσθαι
 905 „τηλοῦ ἀναπλώσει, σὺ δ' ἄρσενα παῖδα τέκναι,
 „πέμπε μιν ἠβήσαντα Πελασγίδος ἔνδον Ἰωλκοῦ,
 „πατρὶ τ' ἐμῷ καὶ μητρὶ δῦης ἄκος, ἣν ἄρα τοὺς γε
 „τέτμη ἔτι ζῶντας, ἵν' ἀνδραγατοῖσιν ἀνακλῶς
 „σφοδρῶσιν πορσύνωνται ἐφ' ἑσίοιο ἐν μεγάροισιν.
 910 “ Ἡ, καὶ ἔβαιν' ἐπὶ νῆα παροίτατος· ὥς δὲ καὶ ὦλκε
 βαῖνεν ἀριστῆες· λάζοντο δὲ χερσὶν ἕρετμά
 ἐνσχερῶ ἐζόμενοι· πρυμνήσια δὲ σφίσιν Ἄργος
 λῦσεν ὑπὲρ πέτρης ἀλιμυρέας· ἐνθ' ἄρα τοίγε
 κόπλον ὕδωρ δολιχῆσιν ἐπικρατέως ἐλάττησιν.
 815 Ἐσπέρην δ' Ὀρφῆος ἐφημοσύνησιν ἐκελσαν
 νῆσον ἐς Ἠλέκτρης Ἀτλαντίδος, ὅφρα δαίνετες
 ἀβρόχτους ἀγανῆσι τελεσφορήσι θέμιστας
 θαρσύτεροι κρούεσσαν ὑπεὶρ ἄλα ναυτίλοιντο.
 Τῶν μὲν ἔτ' οὐ προτέρω μυθήσομαι· ἀλλὰ καὶ αὕτη
 920 νῆσος ὁμῶς κεχάροιο, καὶ οἱ λάχον ὄργια κεῖνα
 δαίμονες ἐνναέται, τὰ μὲν οὐ θέμις ἀμμὶν αἰεδεῖν.
 Κεῖθεν δ' εἰρεσίῃ Μέλανος διὰ βένδεα πόντου
 ἰέμενοι, τῇ μὲν Θρηκῶν χθόνα, τῇ δὲ περαιῖν
 Ἰμβρον ἔχον καθύπερθε· νέον γε μὲν ἡλείοιο
 925 δυομένου, Χερώνησιν ἐπὶ προὔχουσιν ἵκοντο.
 Ἐνθα σφι λαιψηρὸς αἴητο νότος, ἰσθία δ' οὖρε
 σιησάμεναι, κόρυς Ἀθαμαντίδος αἰπὰ ῥέεθρα
 εἰσέβαλον· πέλαγος δὲ τὸ μὲν καθύπερθε λάλειπτο
 ἦρι, τὸ δ' ἐννύχιοι· Ροιτειάδος ἐνδοθεν ἀκλῆς

860 Κύπριν αἰδοῖ· τι θυέσσιν τε μελίσσαντο.

Ἀμβολίη δ' εἰς ἡμαρ αἰεὶ ἐξ ἡματός ἦε
ναυτιλίας · δηρὸν δ' ἂν ἐλίνυον αὖτις μένοντες,
εἰ μὴ ἀολλήσας ἐτάρους ἀπάνευθε γυναικῶν
Ἡρακλῆς, τοίοισιν ἐνιπλάζων προσέειπε.

865 “ Δαιμόνιοι, πάτρης ἐμφύλιον αἷμ' ἀποέργει

,, ἡμέας; ἢ γάμων ἐκιδευέες ἐνθάδ' ἔβημεν

,, κεῖθεν, ὀνοσσάμενοι πολιήτιδας; αὖτις δ' ἔαδε

,, ναίοντες λιπαρὴν ἄροσιν Δήμνοιο ταμέσθαι;

,, Οὐ μὲν εὐκλείεις γε σὺν ὀθνεῖσι γυναιξίν

870 ,, ἐσσόμεθ' ὧδ' ἐπὶ δηρὸν ἐελμένοι· οὐδὲ τι κῶας

,, αὐτόμαλον δώσει τις ἐλὼν θεὸς εὐξαμένοισιν.

,, Ἴομεν αὖτις ἑκάστος ἐπὶ σφέα · τὸν δ' ἐνὶ λέκτροις

,, Ὑψιπύλης εἴατε πανήμερον, εἰσόκε Λῆμνον

,, παισὶν ἐπανδρώσῃ, μεγάλη τέ ἐ βάζεις ἱκῆται.

875 Ὡς νεῖκεσσαν ὅμιλον · ἐναντία δ' οὐ νύ τις ἔτλη

ἔρματ' ἀνασχεθῆειν, οὐδὲ προτιμυθῆσασθαι ·

ἄλλ' αὕτως ἀγορήθεν ἐπαρλίζοντο νέεσθαι

σπερχόμενοι. Ταῖ δὲ σφιν ἐπέδραμον, εὖτ' ἐδάησαν.

Ὡς δ' ὅτε λείρια καλὰ περιβορόμευσι μέλισσαι

880 πέτρης ἐκχύμεναι σιμβλήϊδος, ἀμφὶ δὲ λειμῶν

ἐρσῆεις γάνυται, ταῖ δὲ γλυκὺν ἄλλοτ' ἄλλον

καρπὸν ἀμέργουσιν πεποτημέναι · ὥς ἄρα ταῖ γε

ἐνδυκῆς ἀνέρας ἀμφὶ κινυρόμεναι προχέοντο,

χερσὶ τε καὶ μύθοισιν ἐδεικανόωντο ἑκάστων,

885 εὐχόμεναι μακάρεσσιν ἀπήμονα νόστον ὑπάσσαι.

Ὡς δὲ καὶ Ὑψιπύλη ἠρήσατο, χεῖρας ἐλοῦσα

Αἰσονίδεω, τὰ δὲ οἱ ῥέε δάκρυα χήτει ἰόντος.

“ Νίσσο, καὶ σὲ θεοὶ σὺν ἀπηρέσιν αὐτὶς ἐταίροις

,, χρύσειον βασιλῆϊ δῆρος κομίσσειαν ἄγοντα

890 ,, αὕτως, ὥς ἐθέλεις καὶ τοι φίλον · ἦδε δὲ νῆσος

,, σκῆπτρόν τε πατρὸς ἐμεῖο παρέσσεται, εἴ κεν ὀπίσω

,, δῆ ποτε νοστήσας ἐθέλης ἄψορρον ἱέσθαι.

,, Ῥηιδίως δ' ἂν τοι καὶ ἀπείρονα λαὸν ἀγείραις

,, ἄλλων ἐκ πολλῶν. Ἄλλ' οὐ σύ γε τήνδε μεινοῖν

- 825 „ ἄρσεν ἀνὰ πλολιέθρον , ἔβαν πόλιν , ἐνδ' ἔτι νῦν περ
 „ Ὀρηκίης ἄροσιν χιονώδεα ναιετάουσι .
 „ Τῷ ὑμεῖς σπρωφᾶσθ' ἐπιδήμιοι · εἰ δέ κεν αὖτις
 „ ναιετάειν ἐθέλοις , καί τοι ἄδοι , ἦτ' ἂν ἔπειτα
 „ πάλρὸς ἐμοῖο Θόάηος ἔχοις γέρας · οὐδὲ τι σ' οἶω
- 830 „ γαῖαν ὀνύσσεσθαι · πέρι γὰρ βαθυλήϊος ἄλλων
 „ νήσων , Αἰγαίη ὅσαι εἰν ἀλί ναιετάουσιν .
 „ Ἀδ' ἄγε νῦν ἐπὶ νῆα κιὼν ἐτάροισιν ἔνισπε
 „ μύθους ἡμετέρους , μὴδ' ἐκλῇθι μίμνε πόληος .
 „ Ἴσκεν , ἀμαλδύνουσα φόνου τέλος , οἶον ἐτύχθη
- 835 ἀνδράσιν · αὐτὰρ ὃ τήνγε παραβλήθην προσέειπεν .
 “ Ὑψιπύλῃ , μάλα κεν θυμηδέοι ἀντιάσαιμεν
 „ χρησμοσύνης , ἣν ἄμμι , σέθεν χατεύουσιν , ὀπάξεις .
 „ Εἴμι δ' ὑπότροπος αὐτίς ἀνὰ πτόλιν , εὖτ' ἂν ἔκασθα
 „ ἐξεῖπω κατὰ κόσμον . Ἀνακτορίῃ δὲ μελέσθω
- 840 „ σοί τ' αὐτῇ καὶ νῆσος · ἐγώ γε μὲν οὐκ ἀδερζίζω
 „ χάζομαι , ἀλλὰ με λυγροὶ ἐπισπέρχουσιν ἄεθλοι .
 “ Ἡ , καὶ δεξιτερῆς χειρὸς θίγεν · αἶψα δ' ὀπίσσω
 βῆ ὃ ἴμεν , ἀμφὶ δὲ τόνγε νεηνίδες ἄλλοθεν ἄλλαι
 μυρίαὶ εἰλίσσοντο κεχαρμέναι , ὄφρα πυλάων
- 845 ἐξέμολε · μετέπειτα δ' εὐτροχάλοισιν ἀμάξαις
 ἀκλὴν εἰσανέβαν , ξεινήια ποδᾶ φέρουσαι ,
 μῦθον ἔτ' ἤδη πάντα διηνεκῶς ἀγόρευσε ,
 τὸν ῥα καλεσσαμένη διεπέφραδεν Ὑψιπύλεια ·
 καὶ δ' αὐτοὺς ξεινοῦσθαι ἐπὶ σφέα δῶματ' ἄγεσκον
- 850 ῥηιδίως · Κύπρις γὰρ ἐπὶ γλυκὴν ἴμερον ὤρσεν ,
 Ἥφαίστου χάριν πολυμήτιος , ὄφρα κεν αὐτίς
 ναίηται μετόπισθεν ἀκῆρατος ἀνδράσι Λήμνος .
 “ Ἐνδ' ὃ μὲν Ὑψιπύλῃς βασιλῆϊον ἐς δόμον ὤρτο
 Λίσονίδης · οἱ δ' ἄλλοι ἔπη καὶ ἔκυρσαν ἕκαστος ,
- 855 Ἡρακλῆος ἀνευθεν . Ὁ γὰρ παρὰ νηὶ λίλειπτο
 αὐτὸς ἐκὼν , παῦροί τε διακρινθέντος ἐταῖροι .
 Αὐτίκα δ' ὅσῳ χοροῖσι καὶ εἰλαπίνῃσι γεγῆθει ,
 κακῶν κνισσέντι περίπλεον · ἔξοχα δ' ἄλλων
 ἀθανάτων Ἥρης νῆα κλυτὸν , ἥδὲ καὶ αὐτήν

- 790 ἀντία δεσποίνης · ἥ δ' ἔκλειδον ὅσσε βαλοῦσα
παρθενικὰς ἐρύθηνε παρηΐδας · ἔμπα δὲ τόνγε
αἰδομένη μύθοισι προσέννεπεν αἰμυλίοισι.
,, Ξεῖνε, τίη μίμνοντες ἐπὶ χρόνον ἐκβοᾷς πύργων
,, ἥσθ' αὐτῶς; ἐπεὶ οὐ μὲν ὑπ' ἀνδράσι ναίεται ἄστυ.
- 795 ,, Ἀλλὰ Θρηϊκίης ἐπινασίοιο ἠπείροιο
,, πυροφόρους ἀρώσει γύας. Κακότηθα δὲ πᾶσαν
,, ἔξερέω νημερτές, ἴν' εὖ γνοιήτε καὶ αὐτοί.
,, Εὐτε Θείας ἀσποῖσι πατὴρ ἐμὸς ἐμβασίλευε,
,, τηνίκα Θρηϊκίης, οἱ τ' ἀντία ναιετάουσι,
- 800 ,, Λήμνου ἀπορνούμενοι λαοὶ πέρφεσκον ἐπαύλους·
,, ἐκ νηῶν, αὐτῇσι δ' ἀπείρονα ληΐδα κούραις
,, δεῦρ' ἄγον· οὐλομένης δὲ θεᾶς πορσύνετο μῆτις.
,, Κύπριδος, ἥτε σφιν θυμοφθόρον ἐμβαλεν ἄτην.
,, Δὴ γὰρ κουριδίῃς μὲν ἀπέστυγον, ἐκ δὲ μελάθρων,
- 805 ,, ἡ ματίη εἰξάντες, ἀπεσσεύοντο γυναῖκας·
,, αὐτὰρ ληϊάδεσσι δορυκλήταις παρίανον,
,, σχέτλιοι. Ἡ μὲν δηρὸν ἐτέτλαμεν, εἴ κέ ποτ' αὐτίς
,, ὅφ' ἐμελασθρέψωσι νόον· τὸ δὲ διπλόον αἰεὶ
,, πῆμα κακὸν προὔβαινον. Ἀτιμάζοντο δὲ τέκνα
- 810 ,, γνήσι' ἐνὶ μεγάροισι, σκοτὴν δ' ἀνέτελλε γενέθλη.
,, Αὐτῶς δ' ἀδμῆτές τε κόραι, χῆραί τ' ἐπὶ τῇσι
,, μητέρες ἀμπελολίεθρον ἀττημελέες ἀλάληθον.
,, Οὐδὲ πατὴρ ὀλίγον περ ἐῆς ἀλέγριζε θυγατρὸς,
,, εἰ καὶ ἐν ἰφθαλμοῖσι δαΐζομένην ὀρόωτο
- 815 ,, μῆρυις ὑπὸ χερσὶν ἀτασθάλου· οὐδ' ἀπὸ μητρὸς
,, λώβην, ὥς τοπάρουθεν, ἀεικέα παῖδες ἄμυνον·
,, οὐδὲ κασιγνήτοισι κασιγνήτη μέλε θυμῷ.
,, Ἀλλ' οἶαι κούραι ληΐτιδες ἐν τε δόμοισιν,
,, ἐν τε χοροῖς, ἀγορῇ τε, καὶ εἰλαπίνῃσι μέλοντο·
- 820 ,, εἰσάκε τις θεὸς ἄμμιν ὑπέρβιον ἐμβαλε θάρσος,
,, ἃς ἐπανερχομένους Θρηικῶν ἀπο μηκέτι πύργοις
,, δέχθαι, ἴν' ἡ φρονέοιεν ἄπερ θέμις, ἥε πη ἄλλα
,, αὐταῖς ληϊάδεσσιν ἀφορμηθέντες ἵκοιντο.
,, Οἱ δ' ἄρα θεσσάμενοι παίδων γένος, ὅσσον ἔλειπτο

- 755 τὸν δὲ μεταδρομάδην ἐπὶ Μυρτίλος ἤλασεν ἵππους·
σὶν τῇ δ' Οἰνόμαος προτενὲς δόρυ χειρὶ μεμαρπτός
ἄζονος ἐν πλήμνῃσι παρακλιδὶν ἀγνυμένοιο
πίπην, ἐπεσσύμενος Πελοπήϊα νῶτα δαΐζαι.
Ἐν καὶ Ἀπόλλων Φοῖβος οἰσιλεύων ἐτέτυκτο,
760 βούπαις οὐκω πολλός, ἐν ἑρύνοντα καλύπτρης
μητέρα, Σαρσαλέως Τιτυὸν μέγαν, ὃν ῥ' ἔτεκέν γε
δὲ Ἐλάρη, θρέψεν δὲ καὶ ἄψ' ἐλοχεύσατο Γαῖα.
Ἐν καὶ Φρίξος ἦν Μινυήϊος, ὡς ἐτεόν περ
εἰσαῖων κριοῦ, ὃ δ' ἄρ' ἐξενέποντι ἔοικε.
765 Κείνους κ' εἰσορόων ἀκέοις, ψεύδοιό τε θυμὸν,
ἐλπίομενος πυκινὴν τιν' ἀπὸ σφείων ἰσακοῦσαι
βάζειν, ὃ καὶ θυρόν νυν ἐκ' ἐλπίδι θηήσαιο.
Τοῖ' ἄρα δῶρα θεᾶς Τριτωνίδος ἦεν Ἀθήνης.
Δεξιτερῇ δ' ἔλεν ἔλχος ἐκητόλον, ὃ ῥ' Ἀταλάνῃ
770 Μαινάλῃ ἐν ποτέ οἱ ζεινήϊον ἐλγυάλιζε,
πρόφρων ἀγιομένη· πέρι γὰρ μενέαινεν ἐπισθαί
τὴν ὁδόν· ἀλλὰ γὰρ αὐτὸς ἐκὼν ἀπερήτυε κούρην·
δεῖσεν δ' αἰργαλέας ἔριδας φιλότῃος ἔκῃτι.
Βῆ δ' ἴμεναι προτὶ ἄστυ, Φαιειῶ ἄστει ἴσος,
775 ὃν ῥά τε νηγατέησιν ἐεργόμεναι καλύβῃσι
νύμφαι θηήσαντο δόμων ὑπεραντέλλοντα,
καὶ σφίσι κυανέοιο δι' ἡέρος ὄμμαϊα θέλγει
καλὸν ἐρευνδόμενος, γάνυται δὲ τε ἡϊθέοιο
παρθένος ἰμείρουσα μετ' ἀπαδαπρῖσιν ἔοντος
780 ἀνδράσιν, ᾧ κέν μιν μνηστῆρην κομέωσι τοκῆες·
τῇ ἔκελος πρὸ πόλης ἀνὰ στίβον ἦεν ἥρως.
Καὶ ῥ' ὅτε δὴ πυλέων τε καὶ ἄσπεος ἐντὸς ἔβησαν,
δημότεραι μὲν ὅπισθεν ἐπεκλονέοντο γυναικες,
γηθόσυναι ζεῖνψ· ὃ δ' ἐπὶ χθονὸς ὄμματ' ἐρείσας
785 νίσσεται ἀπληγέως, ὃφρ' ἀγλαὰ δώμαθ' ἵκανε
Ἰφιπύλης· ἄνισαν δὲ θύρας προφανέντι θεράπναι
δικλίδας, εὐτύχιοισιν ἀρηραμένης σάνιδεσσιν.
Ἐνθα μιν Ἰφινόη κλισμῶ ἔνι παμφανώοντι
ἔσσυμένως καλῆς διὰ πασίδος εἴσεν ἄγουσα

720 πέμπον ἔμεν, καὶ δ' αὐτοὶ ἐπεντύνοιο νέεσθαι.

Αὐτὰρ ὄγ' ἄμφ' ὤμοισι θεῶς Τριτανίδος ἔργον,
δίπλακα πορφυρέην περονήσατο, τήν οἱ ὅπασσε
Παλλὰς, ὅτε πρῶτον δρυόχους ἐπεβάλλετο νηὸς
Ἀργούης, καὶ κανόνεσσι δάε ζυγὰ μετρήσασθαι.

725 Τῆς μὲν ρήϊτερόν κεν ἐκ' ἥελιον ἀνιόντα
ῥοσσε βάλοις, ἣ κεῖνο μεταβλέψειας ἔρευθος.

Δὴ γάρ τοι μέσση μὲν ἔρευθῆσσαι τέτυκτο,
ἄκρα δέ, πορφυρέη πάντῃ πέλεν· ἐν δ' ἄρ' ἐκάστω
τέρμασι δαίδαλα πῶλ' ἀ διακριδὸν εὖ ἐνέκαστο.

730 Ἐν μὲν ἔσαν Κύκλωπες ἐπ' ἀφ' ἑτῆς ἡμενοὶ ἔργῳ,
Ζηνὶ κεραυνὸν ἀνακτὶ πονεύμενοι, ὅς τόνον ἤδη
παμφαίνων ἐτέτυκτο, μῆς δ' ἔτι δεύτο μῶνον
ἀκλῖνος, τὴν οἶγε σιδηρεῖς ἐλάασκον
σφύρησιν, μαλεροῖο πυρὸς ζείουσαν αὐτμῇ.

735 Ἐν δ' ἔσαν Ἀντιόπης Ἀσωπίδος υἱέε δαίω,
Ἀμφίων καὶ Ζῆθος· ἀπύργωτος δ' ἔτι Θήβῃ
κεῖτο πέλας, τῆς οἶγε νέον βᾶλλοντο δομαῖους
ἰέμενοι. Ζῆθος μὲν ἐπωμαδὸν ἤερταζεν,
οὔρεος ἡλιβάτοιο κάρη, μογέοντι ἰοικώς·

740 Ἀμφίων δ' ἐπὶ οἱ χρυσῆν φόρμιγγι λιγαίνων
ἦε, ὅς τόνον δὲ μετ' ἔχνια νίσσεται πέτρῃ.

Ἐξείης δ' ἦσκητο βαδύπλοκάμος Κυθερείῃ
Ἄρεος ὀχμαζούσα θοὸν σάκος· ἐκ δέ οἱ ὤμου
πῆχυν ἐπὶ σκαῖν ζυνοχὴ κεχάλαστο χιτῶνος

745 νέρθεν ὑπὲρ μαζοῖο· τὸ δ' ἀντίον ἀτρεκέες αὐτῶς
χαλκείῃ δαίκελον ἐν ἀσπίδι φαίνεται ἰδέσθαι.

Ἐν δὲ βοῶν ἔσκε λάσιος νομός· ἄμφι δὲ βουσι
Τηλεβοῖα μάρναντο καὶ υἱέες Ἥλεκτρώωνος·
οἱ μὲν ἀμειβόμενοι, ἀτὰρ οἷγ' ἐθέλοντες ἀμέρσαι

750 ληίσται· Τάφιοι· τῶν δ' αἵματι δεύτο λειμῶν
ἐρσῆεις, πολέες δ' ὀλίγους βιόωντο νομῆας.

Ἐν δὲ δύνω δίφρῳ πεπονῆατο δηριόωτες.

Καὶ τὸν μὲν προπάροιθε Πέλοψ ἴθυνε, τινάσσων
ἡνία, σὺν δὲ οἱ ἔσκε παραιβάτις Ἰπποδάμεια·

- 685 „ πῶς τῆμος βώσσεσθε δυσάμμοροι; ἤε βαρεΐαις
 „ αὐτόμαλοι βόες ὑμῖν ἐνιζευχθέντες ἀρούραις
 „ γειστόμον νεοῖο διειρύσσουσιν ἄροτρον,
 „ καὶ πρόκα, τελλομένου ἔτεος, δίαχυν ἀμήσανται;
 „ Ἡ μὲν ἐγὼν, εἰ καὶ μετανῦν ἔτι πεφρίκασι
- 690 „ Κῆρες, ἐπερχόμενόν που οἶδμαι εἰς ἔτος ἥδη
 „ γαῖαν ἐφίσσασθαι, κλερώων ἀπὸ μοῖραν ἐλοῦσαν
 „ αὐτῶς ἢ θέμις ἐστί, πάρος κακότητι πελάσσαι.
 „ Ὀπλοτέρησι δὲ πάσῃ τάδε φράζεσθαι ἄνωγα.
 „ Νῦν γάρ δὴ παρὰ ποσσὶν ἐπήβολος ἐστὶ ἄλεωρή,
- 695 „ εἴ κεν ἐπιρῆψητε δόμους καὶ ληϊδὰ πᾶσαν
 „ ὑμετέρεην ξείνοισι, καὶ ἀγλαὸν ἄστυ μέλεσθαι.
 „ Ὡς ἔφατ' ἐν δ' ἀγορῇ πλῆτο θρόνου. Εὐάδε γάρ σφι
 „ μῦθος. Ἀτὰρ μετὰ τὴν γε παρασχεδὸν αὐτὶς ἀνῶρθο
 „ Ἵψιπύλη, καὶ τοῖον ὑποβλήδην ἔπος ἤνδα.
- 700 „ Εἰ μὲν δὴ πάσῃσιν ἐφανδάνει ἥδε μενοινῇ,
 „ ἥδη κεν μετὰ νῆα καὶ ἄσπελον ὀτρύναιμι.
 „ Ἡ ῥα καὶ Ἴφινὴν μετεφώνεεν ἄσπον ἐοῦσαν.
 „ Ὅρσο μοι, Ἴφινὴ, τοῦδ' ἀνέρος ἀνιῶσσω
 „ ἡμέτερόνδε μολεῖν, ὅστις στόλου ἡγεμονεύει,
- 705 „ ὅφρα τι οἱ δῆμοιο ἔπος θυμῆρες ἐνίσπω·
 „ καὶ δ' αὐτοὺς γαίης τε καὶ ἄσπεος, αἰ' κ' ἐθέλωσι,
 „ κέκλεο θαρσαλέως ἐπιβαινέμεν εὐμενέοντας.
 „ Ἡ, καὶ ἔλυσ' ἀγορῇ· μετὰ δ' εἰς ἐὼν ὥρτο νέεσθαι.
 „ Ὡς δὲ καὶ Ἴφινὴ Μινύας ἔκεθ'· οἱ δ' ἐρέεινον
- 710 „ χρεῖοι ὅτι φρονέουσα μετήλυθεν. Ὡκα δὲ τοὺς γε
 „ πανσυδίῃ μῦθοισι προσέννεπεν ἐξερέοντας.
 „ Κούρη τοί μ' ἐπέηκε Θοαντιάς ἐνθάδ' ἰοῦσαν
 „ Ἵψιπύλη, καλέειν νηὸς πρόμον, ὅστις ὄρωρεν,
 „ ὅφρα τι οἱ δῆμοιο ἔπος θυμῆρες ἐνίσπη·
- 715 „ καὶ δ' αὐτοὺς γαίης τε καὶ ἄσπεος, αἰ' κε θέληῃ,
 „ κέκλεται αὐτίκα νῦν ἐπιβαινέμεν εὐμενεόνηας.
 „ Ὡς ἄρ' ἔφη· πάντεσσι δ' ἐναΐσιμος ἦνδανε μῦθος.
 „ Ἵψιπύλην δ' εἰσανθο καλαφθιμένοιο Θίαντος
 „ τηλυγέτην γεγαυῖαν ἀνασσίμεν· Ὡκα δὲ τὸν γε

650 ὅς ῥα τόθ' Ἰψιπύλην μειλίζατο δέχθαι ἰόντας
ἤματος ἀνομένοιο διὰ κνέφας · οὐδὲ μὲν ἦοι
πείσμαλα νηὸς ἔλυσαν ἐπὶ πνοῇ Βορέαο.

Λημνιάδες δὲ γυναῖκες ἀνά πτόλιν ἴζον ἰοῦσαι
εἰς ἀγορὴν · αὐτὴ γὰρ ἐπέφραδεν Ἰψιπύλεια.

655 Καί ῥ' ὅτε δὴ μάλα πᾶσαι ὁμιλαδὸν ἠγερέθοντο,
αὐτίκ' ἄρ' ἦγ' ἐνὶ τῇσιν ἐπολύνουσ' ἀγόρευεν.

“ὦ Φίλαι, εἰ δ' ἄγε δὴ μενοεικέα δῶρα πόρωμεν

,, ἀνδράσιν, οἳ τ' εἴκειν ἄγειν ἐπὶ νηὸς ἔχοντας,

,, ἥϊα, καὶ μέθυσον λαγόν, ἵν' ἐμπεδὸν ἔκλῳσι πύργων

660 ,, μίμνωσι, μὴδ' ἄμμε κατὰ χρεῖω μετέποντες

,, ἀτροκέως γνῶωσι, κακὴ δ' ἐπὶ πολλὸν ἵκηται

,, βάζεις · ἐπεὶ μέγα ἔργον ἐρέζαμεν, οὐδὲ τι κάμπαν

,, θυμηδὲς τοῖσιν γε τόδ' ἔσσεται, εἴ κε δαΐεν.

,, Ἡμετέρη μὲν νυν τοίη παρενήνοθε μῆτις ·

665 ,, ὑμέων δ' εἴ τις ἄρειον ἔπος μῆτιςσέβει ἄλλα,

,, ἔγχεσθω · τοῦ γάρ τε καὶ εἵνεκα δεῦρο κάλεσσε.

Ὡς ἄρ' ἔφη, καὶ δῶκον ἐφίζανε παῖρὸς ἑοῖο
λαΐνον · αὐτὰρ ἔπειτα Φίλη τροφὸς ὦρτο Πολυζῷ,
γῆραι δὴ ῥικνοῖσιν ἐπισκάζουσα πόδεσσι,

670 βᾶκλῳ ἐρειδομένη, πέρι δὲ μενείαν' ἀγορεύσαι.

Τῇ καὶ παρθενικαὶ πίσυρες σχεδὸν ἐδριόνηο,

ἄδμητες, λευκῇσιν ἐπιχνοάουσαι ἐδείραις.

Στῇ δ' ἄρ' ἐνὶ μέσση ἀγορῇ, ἀνά δ' ἔσχεθε δειρὴν
ἦκα μόλις κυφοῖο μεταφρένου, ὣδὲ τ' εἶπε.

675 “ Δῶρα μὲν, ὥς αὐτῇ περ ἐφανδάνει Ἰψιπυλείη,

,, πέμπωμεν ζείνοισιν, ἐπεὶ καὶ ἄρειον ὑπάσσαι.

,, Ἵμμι γε μὴν τίς μῆτις ἐπαύρεσθαι βιότοιο,

,, αἴ κεν ἐπιβρίση Θρήϊξ στρατὸς; ἢ τις ἄλλος

,, δυσμενέων, ἅτε πολλὰ μετ' ἀνθρώποισι πέλονται,

680 ,, ὥς καὶ νῦν ὅδ' ὁμιλος ἀνωστήως ἀφικάνει;

,, Εἰ δὲ τὸ μὲν μακάρων τις ἀποθρέποι, ἄλλα δ' ὀπίσω

,, μυρία, δημοτῆτος ὑπέρτερα, πῆματ' ἀμύνει.

,, Εὖτ' ἂν δὴ γεραραὶ μὲν ἀποφθινύθωσι γυναῖκες,

,, κευρότεραι δ' ἀγόναι στυγερὸν ποτὶ γῆρας ἵκησθε,

- 615 Κύπριδος, οὐνεκά μιν γεράων ἐπὶ δὴρὸν ἄτισσαν.
 "ὦ μέλειαι, ζήλειό τ' ἐπισμυγεῶς ἀκόρητοι!
 Οὐκ οἶον σὺν τῇσιν εὐς ἐβόαισαν ἀκοίτας
 ἄμφ' εὐνῇ, πᾶν δ' ἄρσεν ὁμοῦ γένος, ὥς κεν ἐπίσσω
 μή τινα λευγαλέοιο Φόνου τίσειαν ἀμοιβήν.
- 620 Οἷη δ' ἐκ πασάν γεγαυροῦ περιφείσας παλρὸς
 Ὑφιπύλεια Θόαντος, ὃ δὴ κατὰ δῆμον ἀνασσα·
 λάρνακι δ' ἐν κοίλῃ μιν ὑπερθ' ἄλως ἦκε φέρεσθαι,
 αἶ κε φύγοι. Καὶ τὸν μὲν ἐς Οἰνοίην ἐρύσαντο
 πρόσθεν, ἄτάρ Σίκινόν γε μεθύσπερον, αὐδηθεῖσαν
- 625 ἤσπον, ἐπακλῆρες, Σικίνου ἄπο, τὸν ἔα Θόαντι
 Νηϊὰς Οἰνοίῃ Νύμφῃ· τέκεν εὐνηθεῖσα.
 Τῇσι δὲ βουκόλαι τε βοῶν, χάλκειά τε δύνειν
 τεύχεα, πυροφόρους τε διαλήμψασθαι ἀρούρας
 ῥήτερον πάσῃσιν Ἀθηναίης πέλεν ἔργων,
- 630 οἷς αἰεὶ τοπάρουθεν ὀμίλειον. Ἀλλὰ γὰρ ἔμπερ
 ἦ θαμὰ δὴ πάπλαινον ἐπὶ πλατύν ὄμμασι πόλιν
 δείματι λευγαλέῳ, ὅπτε Θρήικες ἴασι.
 Τῷ καὶ ἔτ' ἐγγύθε νήσου ἐρεσσομένην ἴδον Ἀργῶ,
 αὐτίκα πανσυδὴ πυλέων ἐκίσσθε Μυρῖνης,
- 635 δῆα τεύχεα δῦσαι, ἐς αἰγιαλὸν προχέοντο,
 Θυιάσιν ὠμοδόροις ἔκειλαι· Φᾶν γὰρ που ἐκάνειν
 Θρήικας· ἠδ' ἅμα τῇσι Θοκντιάς Ὑφιπύλεια
 δύν' ἐνὶ τεύχεσι πατρός. Ἀμνηχανίη δ' ἐπέχυντο
 ἄφθογοι· τοῖόν σφιν ἐπὶ δέος ἠωρεῖτο.
- 640 Τείως δ' αὖτ' ἐκ νηὸς ἀριστῆες προέηκαν
 Αἰθαλίδην, κήρυκα δοῶν, τῷπέρ τε μέλεισθαι
 ἀγγελίας, καὶ σκῆπτρον ἐπίτραπεον Ἑρμείας,
 σφωιτέροιο τοκῆος, ὅς οἱ μνήσιν πόρε πάντων
 ἄφθιτον· οὐδ' ἔτι νῦν περ ἀποιχομένου Ἀχέροντος
- 645 δίνας ἀπροφάτους ψυχὴν ἐπιδέδρομε λήθη.
 Ἀλλ' ἢ γ' ἔμπεδον αἰὲν ἀμειβομένη μεμόρηται,
 ἄλλοθ' ὑποχθονίοις ἐναρίθμιος, ἄλλοτ' ἐς αἰγῶν
 ἡελίου ζωοῖσι μετ' ἀνδράσιν. Ἀλλὰ τί μύθους
 Αἰθαλίδεω χρεῖώ με διηνεκέως ἀγορεύειν;

- 580 Αὐτίκα δ' ἡρὶν πολυλήϊος αἶα Πελασγῶν
 δέετο, Πηλιάδας δὲ παραξήμειον ἐρίπνας,
 αἰὲν ἐπιπράθοντες· ἔδυνε δὲ Σηπιάς ἄκρη,
 φαίνεται δ' εἰναλίη Σκιάδος, φαίνοντο δ' ἅπαντες
 Πειρεσιαί, Μάγνησά θ', ὑπεύδιος ἠπείροιο
 585 ἀκλὴν, καὶ τύμβος Δολοπήϊος· ἐνθ' ἄρα τοίγε
 ἐσπέριοι ἀνέμοιο παλιμπνοίησιν ἔκελσαν,
 κατ' μιν κυδαίνοντες, ὑπὸ κνέφας ἐνθ' ἰομα' μήλων
 κεῖαν, ἑρινόμενης αἰλὸς οὐδματι· διπλῆα δ' ἀκλαῖς
 ἤματ' ἐλινύεσκον· ἀτὰρ τριτάτῃ προέηκαν
 590 νῆα, ταχυσσάμενοι περιώσιον ὑφύθι λαῖφος.
 Τὴν δ' ἀκλὴν Ἀφέτας Ἀργούς ἐτι κυκλήσκειον.
 Ἐνθεν δὲ προτέρωσε παρεξέθεον Μελιβοίην,
 ἀκλὴν τ' αἰγιαλὸν τε δυσήμερον ἐκνεύσαντες.
 Ἦῶθεν δ' Ὀμόλην αὐτοσχεδὸν εἰσορώοντες
 595 πύλιν κεκλιμένην, παρεμέτρεον· οὐδ' ἐτι θερὸν
 μέλαινα ὑπὲρ ποταμοῖο βαλεῖν Ἀμύριοι ῥέεθρα.
 Κεῖθεν δ' εὐρυμένας τε πολυκλύστους τε Φάραγγας
 Ὀσσης Οὐλύμποιο τ' ἐσέδρακον· αὐτὰρ ἔπειτα
 κλίτεα Παλλήνια, Καναστραίην ὑπὲρ ἄκρην,
 600 ἤνωσαν ἐννύχιοι, πνοιῆς ἀνέμοιο θέοντες.
 Ἦρι δὲ νισσομένοισιν Ἄθω ἀνέτελλε πολώνη
 Θρηκίη, ἥ τόσσον ἀπὸ πρὸς Λῆμνον ἐοῦσαν,
 ὅσσον ἐς ἐνδιὸν κεν εὐσόλος ὀλκὰς ἀνύσσαι,
 ἀκρατὴν κορυφῇ σκιάει, καὶ ἐσάχρι Μυρίνης.
 605 Τοῖσιν δ' αὐτῆμαρ μὲν αἶν καὶ ἐπὶ κνέφας οὖρος
 πάσῃ μάλ' ἀκραῖς, τετάνυστο δὲ λαίφεα νηός.
 Αὐτὰρ ἄμ' ἡελίοιο βολαῖς ἀνέμοιο λιπόντος,
 εἰρεσίῃ κραναὴν Σιντήϊδα Λῆμνον ἵκοντο.
 Ἐνθ' ἄμυδις πᾶς δῆμος ὑσερθασίῃσι γυναικῶν
 610 νηλεῖως δέδμητο παροικημένῳ λυκάβαντι.
 Δὴ γὰρ κουριδίας μὲν ἀπηνήναντο γυναῖκας
 ἄνδρες ἐχθρὰντες, ἔχον δ' ἐπὶ ληϊάδεσσι
 τρηχὺν ἔρων, ἃς αὐτοὶ ἀγίνεον ἀντιπέρηθεν
 Θρηκίην δηοῦντες· ἐπεὶ χόλος αἰνὸς ἔπαξε

- 545 τέυχρα · μακραί δ' αἰὲν ἔλευκαίνοντο κέλευθοι,
 ἀτραπὸς ὥς, χλοεροῖο διειδομένη πεδίοιο.
 Πάντες δ' οὐρανόθεν λεῦσσον θεοὶ ἤματα κείνῃ
 ἤα, καὶ ἡμιθέων ἀνδρῶν γένος, οἱ τὶτ' ἄριστος
 πόντον ἐπιπλώεσκον · ἐπ' ἀκροτάτησι δὲ Νύμφαι
- 550 Πηλεΐδες κορυφῇσιν ἐθάμβεον εἰτορόωσαι
 ἔργον Ἀθηναίας Τρωϊνίδος, ἡδὲ καὶ αὐτοὺς
 ἥρωας χεῖρεσσιν ἐπικραδάου' αἰς ἔρετμά.
 Αὐτὰρ ὁ γ' ἐξ ὑπάτου ὄρεος κίεν ἄλχι θαλάσσης
 Χείρων Φιλλυρίης, πολὺν δ' ἐπὶ κύμαλος ἀγῇ
- 555 τέλγε πόδας, καὶ ποδῶν βαρεῖν χεῖρι κλεῦων,
 νόστον ἐπευφάνησαν ἀκηδέα νισσομένοισι ·
 σὺν καὶ οἱ παράκοιτις ἐπωλύνιον φορέουσα
 Πηλεΐδην Ἀχιλῆα, φίλῳ διειδίσκεο πατρί.
 Οἱ δ' ὅτε δὴ λιμένος περιηγέα κάλλιπον ἀλγῇ
- 560 Φραδμοσύνη μήτι τε δαΐφρονος Ἀγνιάδαο
 Τίφους, ἔς ῥ' ἐνὶ χερσὶν εὖζοα τεχνήνῃως
 πηδάλῃ ἀμφιέπεσκέ, ὅφρ' ἐμπέδον ἐξιδύνοι·
 δὴ ῥα τότε μέγαν ἰσθὺν ἐνεσθίσαντο μεσώδμη,
 δῆσάν τε προτόνοισι, τανυσσάμενοι ἐκάτερθε,
- 565 καδδ' αὐτοῦ λῖνα χεῦαν, ἐπ' ἡλακίτην ἐρύσαντες.
 Ἐν δὲ λιγύς πέσεν οὖρος · ἐπ' ἰκρίοφιν δὲ κάλῳας
 ζεσθῆσιν περύνησι διακριδὸν ἀμφιβαλόντες,
 Τισαίην εὐκηλοὶ ὑπὲρ δολιχὴν θέον ἄκρον.
 Τοῖσι δὲ φορμίζων εὐθήμονι μέλπεν αἰοδῇ
- 570 Οἰάγροιο παῖς νηοσσόον εὐπατέρειαν
 Ἄρτεμιν, ἣ κείνας σκοπιάς ἁλὸς ἀμφιέπεσκε,
 ἐνομένη καὶ γαῖαν Ἴωλκίδα · τοὶ δὲ βαθεῖης
 ἰχθύες αἰσσοντες ὑπερθ' ἁλὸς, ἄμμιγα παύροις
 ἄπλετοι, ὑγρὰ κέλευθα διασκαίροντες ἔπονο.
- 575 Ὡς δ' ὅπῃτ' ἀγραύλοιο κατ' ἰχθυαὶ σημαντῆρος
 μυρία μῆλ' ἐφίπονται, ἄδην κεκορημένα ποίης,
 εἰς αὐλιν, ὃ δὲ τ' εἴσι πάρος, σύριγγι λιγείῃ
 καλὰ μελιζόμενος νόμιον μέλος · ὥς ἄρα τοὶ γε
 ἠμάρτευν · τὴν δ' αἰὲν ἐκασσύτερες φέρεν οὖρος.

- 510 Γηγενέες Κύκλωπες ἐκαρτύναντο κεραυνῷ,
βροντῇ τε, σιεροπῇ τε · τὰ γὰρ Διὶ κῦδος ὀπάζει.
Ἥ, καὶ ὁ μὲν Φόρμιγλα σὺν ἀμβροσίῃ σχίσαν αὐδῇ·
τοῦ δ' ἄμοτον λήξαντος ἔτι προὔχοντο κάρηνα
πάντες ἱμῶς, ὀρδοῖσιν ἐπ' οὐασιν ἡρεμέοντες
- 515 κηληθμῷ · τοίην σφιν ἐνέδαιπε θελκτὸν αἰοιδῆς.
Οὐδ' ἐπὶ δὴν μετάπειτα κερασσάμενοι δὴ λοιθαί,
ἦ θέμις ἔσθι, τέως ἐπὶ τε γλώσσησι χέοντο
αἰδομέναις, ὕπνου δὲ διὰ κνέφας ἱμνῶοντο.
Αὐτὰρ ἔτ' αἰγλήεσσα Φαινοῖς ὀμμασιν ἦως
- 520 Πηλίου αἰπεινὰς ἴδεν ἄκρας, ἐκ δ' ἀνέμοιο
εὐδίοι ἐκλύζοντο τινασσομένης ἁλὸς ἄκραι,
δὴ τότε ἀνέγρετο Τῖφος · ἄφαρ δ' ἐρόθυενεν ἱταίρους
βαινέμεναί τ' ἐπὶ νῆα καὶ ἀρτύνασθαι ἔρετμά.
Σμερδαλέον δὲ λιμὴν Παγασῆιος, ἥδε καὶ αὐτῇ
- 525 Πηλιάς ἴαχεν Ἀργῷ, ἐπισπέρχουσα νέεσθαι.
Ἐν γάρ οἱ δόρυ θείον ἐλήλατο, τό δ' ἀνὰ μίσσην
σπείραν Ἀθηναίη Δωδωνίδος ἤρμωσε Φηγοῦ.
Οἱ δ' ἀνὰ σέλιματά βάντες ἐπισχερῶ ἀπῆλαισιν,
ὡς ἐδάσαντο πάροιθεν ἔρεσσεμέν ὧ ἐνὶ χώρῃ,
- 530 εὐκόςτῳ σφετέροισι παρ' ἔντεσιν ἰδριόωντο.
Μέσση δ' Ἀλκαῖος, μέγα τε σθένος Ἡρακλῆος
ἵζανον · ἄλχι δὲ οἱ ῥόπαλον θέτο, καὶ οἱ ἔνερθε
ποσσὶν ὑπεκλύσθη νηὸς τρίπις. εἴλκετο δ' ἤδη
πείσματα, καὶ μέθυ λείβον ὕπερθ' ἁλός. Αὐτὰρ Ἰήσων
- 535 δακρυόεις γυῖης ἀπὸ πατρίδος ὄμματ' ἐνεικεν.
Οἱ δ', ὥστ' ἠέθεο Φοῖβῳ χορὸν ἢ ἐνὶ Πυθοῖ,
ἢ που ἐν Ὀρτυγίῃ, ἢ ἐφ' ὕδασι νῆα Ἰσμηνοῖο
σπῆσάμενοι, Φόρμιγλος ὑπαὶ περὶ βωμὸν ὀμαρτῇ
ἱμμελέως κραιπνοῖσι πέδον ῥήσσωσι πόδεσσιν ·
- 540 ὡς οἱ ὑπ' Ὀρφῆος κισθάρη πέπληγον ἔρετμοῖς
πίντου λάβρον ὕδωρ, ἐπὶ δὲ ῥόδια κλύζοντο ·
ἄφρω δ' ἐνθα καὶ ἐνθα κελαινὴ κήκειεν ἄλμη,
δεινὸν μορμύρουσα ἐρισθενέων μένει ἀνδρῶν.
Σπράπτε δ' ὑπ' ἡελίῳ φλογὶ εἴκελα νηὸς εἰσῆς

- 475 πάντες ὁμῶς, Ἴδμων δὲ καὶ ἄμφαδὴν ἀγόρευσε.
 “ Δαιμόνιε, φρονέεις ὀλοφώϊα καὶ πάρος αὐτῶ.
 „ ἢ εἰ τοι εἰς ἄτην ζῶρὸν μέθυ θαρσαλέον κῆρ
 „ οἰδάνει ἐν σιήθεσσι, θεοὺς δ’ ἀνέηκεν ἀτίξιν;
 „ Ἄλλοι μῦθοι ἔασι παρήγοροι, οἷσί κεν ἀνὴρ
 480 „ θαρσύνοι ἔταρον· σὺ δ’ ἀτάσθαλα πάμπαν ἔειπας.
 „ Τοῖα φάτις καὶ τοὺς πρὶν ἐπιφλύειν μακάρεσσιν
 „ υἱὰς Ἀλκιῶϊδας, οἷς οὐδ’ ὅσον ἰσοφαρίζεις
 „ ἡγορέην· ἔμπης δὲ θοοῖς ἐδάμησαν οἰσλοῖς
 „ ἄμφω Λητοῖδαι, καὶ ἦφθιμοι περ εἰντες.
 485 “ Ὡς ἔφατ’· ἐκ δ’ ἐγέλασσαν ἄδην Ἀφαρῆϊος Ἴδας,
 καὶ μικρὴν ἐπιβάζων ἡμείβετο περτομίοισιν·
 “ Ἀγρεὶ νῦν τόδε σῆσι θεοπροπίησιν ἔνισπε,
 „ εἰ καὶ ἐμοὶ τοιόνδε θεοὶ τελέουσιν ἔλαθρον,
 „ οἷον Ἀλκιῶϊδῃσι πατήρ τεός ἐγυῶλίξε·
 490 „ φράζεο δ’ ὅπως χεῖρας ἐμαῖς σῶος ἐξαλείοιο,
 „ χρεῖῳ θεσπίζων μεταμῶνιον εἴ κεν ἀλώης.
 Χώετ’ ἐνιπιάζων· προτέρω δὲ κε νεῖκος ἐτύχθη,
 εἰ μὴ σφριόωντας ὁμοκλήσαντες ἐταῖροι,
 αὐτὸς τ’ Αἰσονίδης κατερῆτνε· ἂν δὲ καὶ Ὀρφεὺς,
 495 λατῇ ἀνασχόμενος κίθαριν, πείραζεν αἰοδῆς.
 “ Ἢεῖδε δ’ ὡς γαῖα καὶ οὐρανὸς ἠδὲ θάλασσα
 τοπρεῖν ἐπ’ ἀλλήλοισι μιῇ συναρρητύτα μορφῇ,
 νεῖκος ἐξ ὀλοοῦ διέκριθεν ἀμφὶς ἕκαστα·
 ἢ δ’ ὡς ἔμπεδον αἰὲν ἐν αἰθέρι τέκμαρ ἔχουσιν
 500 ἄσπρα, σεληναῖή τε, καὶ ἡελίοιο κέλευθοι·
 οὐρεῶ δ’ ὡς ἀνέτειλε, καὶ ὡς ποταμοὶ κελάδοντες,
 αὐτῇσιν Νύμφησι, καὶ ἔρπετὰ πάντ’ ἐγένοντο.
 “ Ἢεῖδεν δ’ ὡς πρῶτον Ὀφίων Εὐρυνόμῃ τε
 Ὠκεανὶς νιφόμεντος ἔχον κράτος Οὐλύμποιο.
 505 ὥς τε βίη καὶ χερσὶν ὁ μὲν Κρόνῳ εἰκαθε τιμῇ
 ἢ δὲ Ῥέῃ, ἔπεσον δ’ ἐνὶ κύμασιν Ὠκεανοῦ·
 οἱ δὲ τέως μακάρεσσι θεοῖς Τιτῆσιν ἀνάσσαν,
 ὄφρα Ζεὺς ἔτι καῦρος, ἔτι φρεσὶ νήπια εἰδώς,
 Δικταῖον ναίεισκεν ὑπὸ σπέος· οἱ δὲ μιν οὐκ

- 440 “Τμῖν μὲν δὴ μοῖρα θεῶν χρειώ τε περῆσαι
 „ ἐνθάδε κῶας ἄγοντας · ἀπειρέσιαι δ' ἐνὶ μέσσοι
 „ κείσθ' τε δευρό τ' ἔασιν ἀνερχομένοισιν ἄεθλοι.
 „ Αὐτὰρ ἐμοὶ θανέειν στυγερῇ ὑπὸ δαίμονος αἴσῃ
 „ τηλόθι· που πέπρωται ἐπ' Ἀσίδος ἠπείρου.
- 445 „ ἔδε κακοῖς διδωὺς ἔτι καὶ πάρος οἰωνοῖσι
 „ πότμον ἐμὸν, πάτρης ἐξήϊον, ὄφρ' ἐπιβαῖην
 „ νηὸς, εὐκλείη δὲ δόμοις ἐπιβάντι λίπηται.
 „ Ὡς ἄρ' ἔφη · κοῦροι δὲ θεοπροπίης αἰόντες
 νόσῳ μὲν γήθησαν, ἄχος δ' ἔλεν Ἴδμονος αἴσῃ.
- 450 Ἦμος δ' ἥελιος σπαστερὸν παραμείβεται ἦμαρ,
 αἰ δὲ νέον σκοπέλοισιν ὑποσκιόωνται ἄρουραι,
 δειελινὸν κλίνοντος ὑπὸ ζόφον ἡελίοιο,
 τῆμος ἄρ' ἦδη πάντες ἐπὶ φαρμάδοισι βαδίζαν
 φυθαάδα χυνάμενοι, πολιοῦ πρόπαρ αἰγιαλοῖο
- 455 κέκλιονθ' ἐξείης · παρὰ δὲ σφίσι μυρὶ ἔκειτο
 εἶδατα, καὶ μέθυ λαρόν, ἠφυσσαμένων προχόῃσιν
 οἰνοχόων · μετέπειτα δ' ἀμειβάδεις ἀδμήλοισι
 μυθεῦνθ', οἳα τε πολλὰ νέοι παρὰ δαιτὶ καὶ οἴῳ
 τερπνῶς ἐφύδωνται, ὅτ' ἄατος ὕβρις ἄπειη.
- 460 Ἐνθ' αὐτ' Αἰσονίδης μὲν ἀμύχανος εἰν εἴῃ αὐτῶ
 πορφύρεσκεν ἑκάστω, κατηφιόωντι ῥοικῶς.
 τὸν δ' ἄρ' ὑποφρασθεὶς μεγάλη ἐπὶ νείκησεν Ἴδας.
 “ Αἰσονίδη, τίνα τήνδε μετὰ φρεσὶ μεῖτην ἐλίσσεις;
 „ αὐδα ἐνὶ μέσσοισι τεύον νόον! ἦέ σε δαμνᾷ
- 465 „ τάρβος ἐπιπλόμενον, τό τ' ἀνάλκιδας ἄνδρας αὐτύζει;
 „ Ἴσῳ νῦν δόρυ δοῦρον, ὅτῳ περιώσιον ἄλλων
 „ κῦδος ἐνὶ πολέμοισιν αἰέρομαι, — οὐδ' ἐμὶ ἰφέλλει
 „ Ζεὺς τόσον, ὅσσάτιόν περ ἐμὸν δόρυ! — μή νύ τι πῆμα
 „ λοίγιον ἔσσεσθαι, μηδ' ἀκράαντον ἄεθλον,
- 470 „ Ἴδεω ἐσπομένοιο, καὶ εἰ θεὸς ἀντιόψτο.
 „ τοῖόν μ' Ἀρήνηθεν ἀσσητῆρα κομίζεις.
 Ἦ, καὶ ἐπισχόμενος πλεῖον δέπας ἀμφοτέρῃσι
 πῖνε χαλίκρητον λαρόν μέθυ · δέυετο δ' οἴῳ
 χοίλεια, κυάνεαί τε γυνειάδες · οἱ δ' ὁμάδην

- 405 Φιτροὺς ἀζαλὴς σφόδρσαν καθύπερθεν ἐλαίης.
 Τείως δ' αὐτ' ἀγέληθεν ἐπιπροέηκαν ἄγοντες
 βουκόλοι Αἰσονίδαο δύν βόε. τοὺς δ' ἐρύσαντο
 πουρότεροι ἐτάρων βωμοῦ σχεδόν. οἱ δ' ἄρ' ἐκείτα
 χέρνιβά τ' οὐλοχύτας τε παρέσχεθον. αἰτὰρ Ἴησων
- 410 εὐχετο κεκλόμενος πατρώιον Ἀκίλωνα.
 “Κλυθεῖ ἀναξ, Παγατάς τε, πόλιν τ' Αἰτωνίδα ναιῶν,
 “ἡμετέροιο τοκῆος ἐπώνυμον, ὅς μοι ὑπέσθης,
 “Πυθοῖ χρειομένῳ, ἄνυσιν καὶ πείραθ' ἰδοῖο
 “σημανέειν· αὐτὸς γὰρ ἐπαίτιος ἐπλευ ἀέθλων·
- 415 “αὐτὸς νῦν ἄγε νῆα σὺν ἀρτεμέεσσιν ἱταίροις
 “κεῖσέ τε, καὶ παλίνορσον ἐς Ἑλλάδα. σοὶ δ' ἄρ' ὀπίσσω
 “τόσσων, ὅσσοι κεν νοστήσομεν, ἀγλαὰ ταύρων
 “ἱερά κἄλιν βωμῶ ἐπιθήσομεν· ἄλλα δὲ Πυθοῖ,
 “ἄλλα δ' ἐς Ὀρτυγίην ἀπερείσια δῶρα κομίσσω.
- 420 “Νῦν δ' ἴθι, καὶ τήνδ' ἡμ' ἐκητόλε, δέξο θυηλήν,
 “ἣν τοι τῆσδ' ἐπίβασθρα χάριν προτεδείμεθα νηὸς
 “πρωτίσθην· λύσαιμι δ', ἀναξ, ἐπ' ἀπτήμονι μοίρῃ
 “πίσματα, σὴν διὰ μῆτιν· ἐπιπνεύσειε δ' ἀήτης
 “μείλιχος, ἧ κ' ἐπὶ πόντον ἐλευσόμεθ' εὐδιόωντες.
- 425 “Ἢ, καὶ ἄμ' εὐχολῇ προχύτας βάλε. τῷ δ' ἐπὶ βουσι
 ζωσάσθην, Ἀλκαῖος ὑπέρβιος, Ἡρακλῆς τε.
 ἦτοι ἔ μὲν ῥοπάλῳ μέσσον κάρη ἀμφὶ μετώπῳ
 πλῆξεν, ὃ δ' ἀθρόος αὖθι πεσὼν ἐνερεῖσατο γαίῃ·
 Ἀλκαῖος δ' ἐτέρωιο κατὰ πλατὺν αὐχένα κόψας
- 430 χαλκείῳ πελέκει, κρατεροὺς διέκερσε τένοντας·
 ἤριπε δ' ἀμφοτέροισι περιβῆρδης κεράεσσι.
 τοὺς δ' ἔταροι σφάζαν τε θοῶς, δεῖράν τε βοείας,
 κόπρον, δαίτρευνόν τε, καὶ ἱερά μῆρ' ἐτάμοντο,
 κἀδδ' ἄμυδις τά γε πάντα καλύψαντες πύκα δημῶ
- 435 καῖον ἐπὶ σχίζῃσιν· ὃ δ' ἀκρήτους χεῖρσι λοιβαῖς
 Αἰσονίδης. Γήθει δὲ σέλας θηεύμενος Ἴδμιον
 πάντοσε λαμπόμενον θυέων ἄπο, τοῖό τε λιγνὺν
 πορφυρέαις ἐλίκεσσιν ἐναΐσιμον αἰτσοῦσαν·
 αἶψα δ' ἀπηλεγῶς νόον ἐκφατο Λητοῖδαο·

- 370 δούρατα, καὶ βοθίοιο βῆν ἔχοι ἀντίωσαν.
 Σκάπλον δ' αἶψα κατ' εὖρος, ὅσον περιβάλλετο χῶρον,
 ἥδ' ἐκατὰ πρῶραν εἶσω ἄλός, ὅσάτιν περ
 ἔλκομένη χεῖρεσσιν ἐπιδραμίσσθαι ἔμελλεν.
 Αἰεὶ δὲ προτέρω χθαμαλότερον ἐξελάχαινον
- 375 στείρης, ἐν δ' ὕλκῃ ξηστοῖς σιγέσαντο Φάλαγγας.
 τὴν δὲ κατάντη κλινὰν ἐπὶ πρώτῃσι Φάλαγγιν,
 ὥς κεν ἐλισθαίνουσα δι' αὐτῶν φορέοιτο.
 "Τψι δ' ἄρ' ἐνθα καὶ ἐνθα μεταστρίψαντες ἔρετμά,
 πηχύιον προὔχοντα περὶ σκόλμοισιν ἔδρσαν.
- 380 τῶν δ' ἱναμοισαδὶς αὐτοὶ ἐνέσταναν ἀμφοτέρωδε,
 στέρνα θ' ἐμοῦ καὶ χεῖρας ἐπήλασαν. Ἐν δ' ἄρα Τίφῳ
 βῆσαθ', ἵν' ὀτρύνει νέους κατὰ καιρὸν ἐρύσσαι.
 κεκλόμενος δ' ἦυσε μάλα μέγα· τοὶ δὲ παρᾶσσον
 ᾧ κράτει βρῖσαντες ἦν στυφίλιζαν ἔρωῃ
- 385 νεῖδεν ἐξ ἔδρης, ἐπὶ δ' ἐρῶσαντο πόδεσσι
 προπροδιαζόμενοι· ἥ δ' ἔσπετο Πηλιδῆς Ἀργῷ
 ῥίμψα μάλ'· οἱ δ' ἐκάτερθεν ἐπίαχον αἰδύοντες.
 Αἰ δ' ἄρ' ὑπὸ τρόπιδι σιθεαρῇ σιενάχοντο Φάλαγγες
 τριβόμεναι· περὶ δὲ σφιν αἰδὴν κήκιε λιγνύς
- 390 βριθούσῃ, κατόλισθε δ' ἔσω ἄλός· οἱ δὲ μιν αὖθι
 αἶψ' ἀνασειράζοντες ἔχον προτέρωσε κιοῦσαν.
 Σκαλμοῖς δ' ἀμφὶς ἔρετμά κατήρτυον· ἐν δὲ οἱ εἰσπὺν,
 λαίφειά τ' εὐποίητα, καὶ ἄρμαλιν ἐβάλλοντο.
 Αὐτὰρ ἔπει τὰ ἕκαστα περιφραδέως ἀλέγυναν,
- 395 κληῖδας μὲν πρῶτα πάλῳ διμοιρήσαντο,
 ἄνδρ' ἐντυναμένῳ δοιῶ μίαν· ἐκ δ' ἄρα μέσσην
 ἦρεον Ἡρακλεῖ, καὶ ἡρώων ἄτερ ἄλλων
 Ἀλκαίῳ, Τεγέης ὅς ῥα πολίεθρον ἔταίε.
 Τοῖς μέσσην οὔρεσιν ἀπὸ κληῖδας λίποντο
- 400 αἴτω, οὐ τι πάλῳ. ἐπὶ δ' ἔτρεπον αἰνήσαντες
 Τίφῳ ἐυστείρης οἰήϊα νηὸς ἔρυσθαι.
 Ἐνθεν δ' αὖ λαίλαγας ἄλός σχεδὸν ὀχλίζοντες
 νήεον αὐτόθι βωμὸν ἐπ' ἀκρίον Ἀπείωνος,
 Ἀκρίον, Ἐμβασιόιο τ' ἐκώνυμον· ὦκα δὲ τοί γε

- 335 „ ναυτιλῆς, ὅτε μῦνον ἐπιπνεύσωσιν αἴηται.
 „ Ἀλλὰ, Φίλοι, ξυνὸς γὰρ ἐς Ἑλλάδα νόστος ὀπίσσω,
 „ ξυναὶ δ' ἄμμι πέλονται ἐς Αἰήταο κέλευθοι.
 „ τοῦνεκα νῦν τὸν ἄριστον ἀφειδήσαντες, ἔλυσθε
 „ ὄρχαμον ὑμείων, ᾧ κεν τὰ ἕκαστα μέλοιτο,
 340 „ νεῖκεα συνθεσίας τε μετὰ ξείνοισι βαλέσθαι.
 „ Ὡς φάτο· κάππηναν δὲ νέοι θρασὺν Ἡρακλῆα,
 ἤμενον ἐν μέσσοισι· μὴ δὲ ἐ πάντες αὐτῇ
 σημαίνειν ἐπέτελλον· ὁ δ' αὐτόθεν, ἐνθα περ ἦσθα,
 δεξιτερὴν ἀνὰ χεῖρα τανύσσατο, φώνησέν τε.
 345 “ Μή τις ἐμοὶ τόδε κῦδος ὀπαζέτω, οὐ γὰρ ἔγωγε
 „ πείσσομαι· ὅσγε καὶ ἄλλον ἀναστήσεσθαι ἐρύζω.
 „ αὐτὸς, ὅ τις ξυνάγειρε, καὶ ἀρχεῦοι ὁμάδοιο.
 Ἦ ἔα μέγα φρονέων· ἐπὶ δ' ἤνεον, ὡς ἐκέλευεν
 Ἡρακλῆος· ἀνὰ δ' αὐτὸς ἀρήϊος ὤρνυτ' Ἴησων
 350 γηθόσυνος, καὶ τοῖα λιλαιομένοις ἀγόρευεν.
 “ Εἰ μὲν δὴ μοι κῦδος ἐπιτρωπάτε μέλεισθαι,
 „ μηκέτ' ἐπειθ', ὥς καὶ πρὶν, ἐρητύοιτο κέλευθα.
 „ Νῦν γε μὲν ἤδη, Φοῖβον ἀρεσσάμενοι θυέεσσι,
 „ δαῖτ' ἐντυνόμεσθαι παρασχεδόν· ὄφρα δ' ἴωσι.
 355 „ δμῶες ἐμοὶ σλαθμῶν σημάντορες, οἷσι μέμνηθε
 „ δεῦρο βόας ἀγέληθεν ἐν κρίναντας ἐλάσσαι,
 „ τόφρα κε νῆ' ἐρύσαιμεν ἔσω ἅλός, ὅπλ' αὖτε πάντα
 „ ἐνθέμενοι, πεπύλαχθε κατὰ κληῖδας ἐρετμά.
 „ τείως δ' αὖ καὶ βωμὸν ἐπάκτιον Ἐμβασίοιο
 360 „ θεῖομεν Ἀπόλλωνος, ὃ μοι χρεῖων ὑπέδεκτο,
 „ σημαίνειν, δείξειν τε πόρους ἅλός, εἴ κε θυηλαῖς
 „ οὐ ἔθεν ἐξάρχωμαι ἀεθλεύων βασιλῆϊ.
 Ἦ ῥα, καὶ εἰς ἔργον πρῶτος τρώπεθ'· οἱ δ' ἐκάνεσθ' ἄν
 πειθόμενοι· ἀπὸ δ' εἵματ' ἐπήτριμα νηήσαντο.
 365 λειψ' ἐπὶ πλαταμῶνι, τὸν οὐκ ἐπέβαλε θάλασσα
 κύμασι, χειμερὶν δὲ πάλαι ἀποκλύσεν ἅλμη.
 Νῆα δ' ἐπικρατίως, Ἄργον ὑποδημοσύνησιν,
 ἔζωσαν πάμπρωτον εὐσπρεφεῖ· ἐνδοθεν ὅπλ',
 τεινόμενοι ἐκάτερθεν, ἵν' εὖ ἀραροῖατο γόμφου

- 300 „ τλήθῃ φέρειν · θάρσει δὲ συνημοσύνῃσιν Ἀθήνη·
 „ ἥδ' εὖ θεοπροπίοισιν, ἐπεὶ μάλα δεξιά Φοῖβος
 „ ἔχρη, ἀτὰρ μετέπειτά γ' ἀριστήων ἐπαρωγῇ.
 „ Ἀλλὰ σὺ μὲν νῦν αὖθι μετ' ἀμφιπόλοισιν ἔκηλας
 „ μίμνε δόμοις, μὴδ' ὄρνις ἀεικελὴ πέλε νηῖ·
- 305 „ κεῖσε δ' ὁμαρτήσουσιν ἔται δμῶές τε κίοντι.
 Ἦ, καὶ ὁ μὲν προτέρωσε δόμων ἐξῴρτο νέεσθαι.
 Οἷος δ' ἐκ νηοῦ θυάδεος εἶσιν Ἀπίλλων
 Δῆλον ἀν' ἠγαθήν, ἥ ἐκ Κλάρον, ἥ ὄγε Πυθώ,
 ἥ Λυκίην εὐρεῖαν, ἐπὶ Ξάνθοιο ῥοῇσι,
- 310 τοῖος ἀνὰ πλῆθύν δήμου κίον· ἄρτο δ' αὐτῇ
 κεκλωμέναν ἄμυδις. Τῷ δὲ ζύμβλῃτο γεραιῇ
 Ἰφιάς, Ἀρτέμιδος πολιόχου ἀρήτειρα,
 καὶ μιν δεξιτερῆς χειρὸς κύσεν, οὐδὲ τι φάσθαι,
 ἔμπης ἱεμένη, δύνατο, προΐεαντος ὀμίλου·
- 315 οἳ δ' ἢ μὲν λίπετ' αὖθι παρακλιδόν, οἷα γεραιῇ
 ἐπλοτέρων, ὁ δὲ ποδῶν ἀποπλαγχθεὶς ἐλιάσθη.
 Λυτὰρ ἐπεὶ ῥα πόλῃος εὐδμήτους λίπ' ἀγνυῖας,
 αἴτην δ' ἵκανε Παγασηίδα, τῇ μιν ἑταῖροι
 δειδέχατ', Ἀργεῖη ἄμυδις, παρὰ νηὶ μένοντες.
- 320 Στῇ δ' αἶψ' ἐπὶ προμολῆς· οἳ δ' ἀντίοι ἠγερέθοντο.
 Ἔς δ' ἐνόησαν Ἀκασίον ἑμῶς Ἀργον τε, πόλῃος
 νόσφι καταβλώσκοντας, ἐθάμβησαν δ', ἐσιδόντες
 πασσυδίη, Πελῖαιο παρὲκ νόον, ἰδύοντας.
 Δέρμα δ' ὁ μὲν ταύροιο ποδηνεκὲς ἀμφέχετ' ὕμους
- 325 Ἀργος Ἀρεσπορίδης λάχνη μέλαν· αὐτὰρ ὁ καλὴν
 δίπλακα, τὴν οἳ ὅπασσε κασιγνήτῃ Πελόπεια.
 Ἀλλ' ἔμπης τῷ μὲν τε διεξερέεσθαι ἑκάσθῃ
 ἔσχετο· τοὺς δ' ἀγορήνδε συνεδριάσθαι ἄνωγεν.
 αὐτοῦ δ' ἐλθομένοισι ἐπὶ λαΐφεισιν, ἥδ' ἐκ αἰσῶ
 330 κεκλιμένῃ, μάλα πάντες ἐπισχερῶ ἰδρύοντο.
 Τοῖσιν δ' Αἰσῶνος υἱὸς ἐιφρονέων μετέειπεν.
 “ Ἀλλὰ μὲν, ὅσσά τε νηὶ ἐφοπλίσσασθαι εἴοικε,
 „ πάντα μάλ' εὖ κατὰ κόσμον ἐπαρτέα κείται ἰούσι.
 „ Τῷ οὐκ ἂν δηναίων ἐχοίμεθα, τοῖό γ' ἔκηται,

- 265 Αὐτὰρ ὁ τῶν μὲν ἔπειτα κατεπρήνυν ἀνίας,
 θαρσύνων, δμῶεσσι δ' ἀρήϊα τεύχε' αἶρειν
 πέφραδεν· οἱ δὲ σῖγα κατηφῆες ἤειροντο.
 Μήτηρ δ' ὡς ταπρῶτ' ἐπεχεύατο κήχεε παιδί,
 ὡς ἔχετο κλαίουσ' ἀδινώτερον, ἥντε κούρη
- 270 οἷόνθεν ἀσπασίως πολλὴν τροφὸν ἀμφιπεσοῦσα
 μύρεται, ἥ οὐκ εἰσὶν ἔτ' ἄλλοι κηδεμονῆες,
 ἅλ' ὑπὸ μητρειῇ βίοντον βαρὺν ἠγνλάζει,
 καὶ ἐ νέον πολέεσσιν ὀνειδέσιν ἐστυφέλιξε·
 τῇ δέ τ' ὀδυρομένη δέδεται κέαρ ἐνδοθεν ἄτῃ,
- 275 οὐδ' ἔχει ἐκφλύξαι τόσσον γόνον, ὅσσον ὄρεχθεῖ·
 ὡς ἀδινὸν κλαίεσκεν, ἐὼν παῖδ' ἀσκάς ἔχουσα,
 Ἀλκιμέδη, καὶ τοῖον ἔπος φάτο κηδοσύνησιν.
 « Αἰὲ' ὄφελον κεῖν' ἡμαρ, ὅτ' ἐξειπόντος ἄκουσα
 ,, δειλὴ ἐγὼ Πελῖαο κακὴν βασιλῆος ἐφეტμήν,
- 280 ,, αὐτίκ' ἀπὸ ψυχὴν μεδέμεν, κηδέων τε λαθίσθαι,
 ,, ὅφρ' αὐτός με τοῖσι φίλαις ταρχύσαι χερσὶ,
 ,, τέκνον ἐμόν· τὸ γὰρ οἷον ἔην ἔτι λοιπὸν ἐέλδωρ
 ,, ἐκ σέθεν, ἅλ' αὖ δὲ πάντα πάλαι θρεπτήριον πέσσω.
 ,, Νῦν γε μὲν ἡ τοπάρουθεν Ἀχαιῶάδεσσιν ἀγητῇ,
- 285 ,, δμῶϊς ὅπως, κενεοῖσι λελείφομαι ἐν μεγάροισι,
 ,, σείο πόθῳ μινύθουσα δυσάμμορος, ᾧ ἐπὶ ποδῶν
 ,, ἀγλαίην καὶ κῦδος ἔχον πάρος, ᾧ ἐπὶ μόνῳ
 ,, μίτρην πρῶτον ἔλυτα καὶ ὕστατον. ἔξοχα γάρ μοι
 ,, Εἰλείθυια θεὰ πολέος ἐμέγχε τόκοιο.
- 290 ,, ὦ μοι ἐμῆς ἄτης! Τὸ μὲν οὐδ' ὅσον, οὐδ' ἐν ὑνείρῳ
 ,, ὠϊσάμην, εἰ Φρίξος ἐμοὶ κακὸν ἔσσετ' ἀλύξας.
 ὦς ἦγε σιενάχουσαι κινύρετο· ταὶ δὲ γυναῖκες
 ἀμφίπολοι γοάσκον ἐπιστάδον· αὐτὰρ ὁ τήν γε
 μελιχίοις ἐπέεσσι παρηγορέων προσέειπε.
- 295 « Μὴ μοι λενγαλέας ἐνὶ βῶλῳ, μήτηρ, ἀνίας
 ,, ὦδε λίην, ἐπεὶ οὐ μὲν ἐρητύσεις κακότητος
 ,, δάκρυσιν, ἅλ' ἔτι κεν καὶ ἐπ' ἄλγεσιν ἄλγος ἄροις.
 ,, Πήματα γάρ τ' αἰδῆλα θεοὶ θνητοῖσι νέμονται,
 ,, τῶν μοῖραν κατὰ θυμὸν, ἀνιάζουσά περ, ἔμπη

230 κίκλησκον μάλα πάντας, ἐπεὶ Μινύαιο θυγατρῶν
οἱ πλεῖστοι καὶ ἄριστοι ἀφ' αἵματος εὐχετόωντο
ἔμμεναι· ὥς δὲ καὶ αὐτὸν Ἰήσονα γείνατο μήτηρ
Ἀλκιμέδῃ, Κλυμένης Μινυηίδος ἐκγεγαυῖα.

Αὐτὰρ ἐπεὶ δμῶεσσιν ἐπάρτεα πάντ' ἐτέτυκτο,
235 ὅσα κπερ ἐντύνονται ἐπαρτέες ἐνδοθι νῆες,
αὐτ' ἂν ἄγῃ χρέος ἄνδρας ὑπεὶρ ἄλλα ναυτίλῃσθαι,
δὴ τότε ἴσαν μετὰ νῆα δι' ἁστέος, ἐνθα περ ἀκλαί
κλείονται Παγασαὶ Μαγνήτιδες· ἀμφὶ δὲ λαῶν
πληθὺς ἐπερχομένων ἄμυδις θίεν· οἱ δὲ, Φαιεῖνδ
240 ἁστέρες ὥς νεφέεσσι, μετέπρεπον· ὧδε δ' ἑκάστος
ἐννεπεν εἰσορόων σὺν τεύχεσιν αἵσσοντας.

“Ζεῦ ἄνα, τίς Πελῖαο νόος; πόθι τόσσον ὁμίλον
,, ἥρώων γαίης Παναχαΐδος ἐκδοθι βαῖλαι;
,, αὐτῇμάρ κε δόμους ὀλοῷ πυρὶ δηώσειαν
245 ,, Αἰήτω, ὅτε μὴ σφιν ἐκὼν δέρος ἐλγυαλίξῃ.
,, Ἀλλ' οὐ Φυκλὰ κέλευθα, πόνος δ' ἄπρηκτος ἰοῦσιν!
“Ὡς φάσαν ἐνθα καὶ ἐνθα κατὰ πτόλιν· αἱ δὲ χυναῖκες
πολλὰ μάλ' ἀθανάτοισιν ἐς αἰθέρα χεῖρας ἄειρον,
εὐχόμεναι νόστοιο τέλος θυμηδὲς ὀπάσσαι.

250 ἄλλῃ δ' εἰς ἐτέρην ὀλοφύρετο δακρυχέουσα·
“Δειλὴ Ἀλκιμέδῃ, καὶ σοὶ κακὸν, ὅψε περ, ἔμπη
,, ἤλυθεν, οὐδ' ἐτέλεσσας ἐπ' ἀγλαΐῃ βιότοιο.
,, Αἴσων αὖ μέγα δὴ τι δυσάμμορος· ἦ τέ οἱ ἦεν
,, βέλτερον, εἰ τοπάροιθεν ἐνὶ κλερέεσσιν ἐλυσθεῖς
255 ,, νεῖοθι γαίης κεῖτο, κακῶν ἔτι νῆες αἰέθλων.

“Ὡς ὄφελεν καὶ Φρίξον, ὅτ' ὤλετο παρθένος Ἑλῃ,
,, κῦμα μέλαν κριῶ ἄμ' ἐπικλύσαι· ἀλλὰ καὶ αὐδὴν
,, ἀνδρομέην προέηκε κακὸν τέρας, ὥς κεν ἀνίας
,, Ἀλκιμέδῃ μετόπισθε καὶ ἄλγεα μυρία θείῃ.

260 Αἰ' μὲν ἄρ' ὥς ἀγόρευον ἐπὶ προμολῇσι κιόντων.
Ἦδη δὲ δμῶές τε πολεῖς, δμῶαί τ' ἀγέροντο·
μήτηρ δ' ἀμφ' αὐτὸν βεβυλημένη· ὅξιν δ' ἐκάσθην
δύνεν ἄχος· σὺν δὲ σφι πατὴρ ὀλοῷ ὑπὸ γήρα·
ἐντυκάς ἐν λεχέεσσι καλυψάμενος γοῶσκειν.

- 195 ὥδ' ἔτι κουρίζων περιθαρσέα δύνεν ἑμίλον
 ἥρώων. τοῦ δ' οὐ τιν' ὑπέρτερον ἄλλον οἶω,
 νόσφιν γ' Ἡρακλῆος, ἐσελθέμεν, εἴ κ' ἔτι μούνον
 αὖθι μένων λυκάβαντα μετετράφη Αἰτωλοῖσι.
 Καὶ μὴν οἱ μήτρως αὐτὴν ἑδόν, εὖ μὲν ἄκοντι,
 200 εὖ δὲ καὶ ἐν σπιδίῃ δεδαημένος ἀντιφέρεσθαι,
 Θεστιάδης ἸΦΙΚΛΟΣ ἐφωμάρτησε κίοντι.
 Σὺν δὲ ΠΑΛΑΙΜΟΝΙΟΣ Λέρνου πάϊς Ὀλυνεῖοιο,
 Λέρνου ἐπὶ κλησιν, γενεὴν γε μὴν Ἡφαίστιοιο
 τοῦνεκ' ἔην πόδε σιφλός· ἀτὰρ δέμας οὐχ' ἔτις ἔτλη
 205 ἠγορήην τ' ὀνόσασθαι, ὃ καὶ μεταρτίθμιος ἦεν
 πᾶσιν ἄριστήεσσιν, Ἰήσῳ κῦδος αἰέξων.
 Ἐκ δ' ἄρα Φωκῆων κίεν ἸΦΙΤΟΣ Ὀρτυτίδαο
 Ναυθίσλου ἐκγεγαώς· ζείνος δὲ οἱ ἔσκε πάροιθεν,
 ἦμος ἔβη Πυθῶδα θεοπροπίας ἐρευνῶν
 210 ναυτιλίας· τόθι γάρ μιν εὖτε ὑπέδεκτο δόμοισι.
 ΖΗΤΗΣ δ' αὖ ΚΑΛΑΪΣ τε Βορῆιοι υἱες ἵκοντο,
 οὓς ποτ' Ἐρεχθίδης Βορὴν τέκεν Ὠρεΐθυια
 ἰσχατιῇ Θρήκης δυσχειμέρου· ἐνθ' ἄρα τὴν γε
 Θρηῖκιος Βορέης ἀνερείψατο Κεκροπίηδεν,
 215 Ἰλίσσου προπάροιθε χορῶ ἐνὶ δινεύουσιν.
 καὶ μιν ἄγων ἔκαθεν, Σαρπηδονίην ὅθι πέτρην
 κλείουσι, ποταμοῖο παρὰ ῥόον Ἐργίναιο,
 λυγαίοις ἐδάμκασσε περὶ νεφέεσσι καλύψας.
 Τῷ μὲν ἐπ' ἀκροτάτοισι ποδῶν ἐκάτερθεν ἐρεμναῖς
 220 σείον ἀειρομένῳ πτέρυγας, (μέγα θάμβος ἰδέσθαι!)
 χρυσεαῖαι φολίδεσσι διαυγέας· ἀμφὶ δὲ νώτοις
 κρύατος ἐξ ὑπάτοιο καὶ αὐχένος ἐνθα καὶ ἐνθα
 κυάνεαι δονέοντο μετὰ πνοιῇσιν ἔθειραι.
 Οὐδὲ μὲν οὐδ' αὐτοῖο πάϊς μενέαιεν ἈΚΑΣΤΟΣ
 225 ἰφθίμου Πελίου δόμοις ἐνὶ πατρὸς ἑοῖο
 μιμνῶσιν, ἌΡΓΟΣ τε θεῶς ὑποεργὸς Ἀθήνης·
 ἀδ' ἄρα καὶ τῷ μέλῳ ἐνικρινθῆναι ὁμίλῳ.
 Τόσσοι ἄρ' Αἰσωνίδῃ συμμήσπορες ἠγερέθοντο.
 Τοὺς μὲν ἀριστήας ΜΙΝΤΑΣ περινακιστάοντας

- 160 μαρνάμενος, τὸ πέλεσθαι ἐνὶ ξυνοχῇ πολέμοιο.
 Καὶ μὲν ἈΜΦΙΔΑΜΑΣ ΚΗΦΕΤΣ τ' ἴσαν Ἀρκαδίηθεν,
 ὃ Τεγέην καὶ κλῆρον Ἀφειδάντειον ἔβαιον,
 υἱε δὲ ἄνδρ' Ἀλεοῦ· τρίτατος γὰρ μὲν ἔσπετ' ἰοῦσιν
 ἈΓΚΑΙΟΣ, τὸν μὲν ῥα κατῆρ Λυκούργος ἔπεμπε,
 165 τῶν ἄμφω γνωτὸς προγενέστερος. ἀλλ' ὁ μὲν ἤδη
 γηράσκοντ' Ἀλεὼν λίπετ' ἀμπύλιν ὄφρα κομίζοι,
 παῖδα δ' ἐὼν σφετέροισι κασιγνήτοισιν ὅπασσε.
 Βῆ δ' ὁ γὰρ Μαιναλῆς ἄρχλον δέρος, ἀμφίτομον τε
 δεξιτερῇ πᾶσιν πέλεκυν μέγαν. ἔντεα γάρ οἱ
 170 πατροπάτωρ Ἀλεὸς μυχάτη ἐνέκρυψε καλεῖν,
 αἰ' κέν πως ἔτι καὶ τὸν ἐρητύσειε νίεςθαι.
 Βῆ δὲ καὶ ΑΥΓΕΙΗΣ, ὃν δὴ Φάτις Ἥελίοιο
 ἔμμεναι· Ἥλείοισι δ' ὄγ' ἀνδράσιν ἐμβασίλευεν,
 ὄλβφ κυδίσων· μέγα δ' ἔτο Κολχίδα γαῖαν
 175 αὐτὸν τ' Αἰήτην ἰδέειν σημάντορα Κόλχων.
 ἈΣΤΕΡΙΟΣ δὲ καὶ ἈΜΦΙΩΝ Ὑπερασίου υἱε
 Πελοπόννησος ἀφίκανον Ἀχαιῆδος, ἦν ποτε Πέλοος
 πατροπάτωρ ἐπόλισσιν ἐπ' ὄφρυσιν αἰγυαλοῖο.
 Ταίναρον αὐτ' ἐπὶ τοῖσι λιπὼν ἘΤΦΗΜΟΣ ἔκανε,
 180 τὸν ῥα Ποσειδάωνι ποδωκηέσσαντον ἄλλων
 Εὐρώπῃ Τιτυοῖο μεγασθενέος τέκε κόρη.
 Κεῖνος ἀνὴρ καὶ πόντου ἐπὶ γλαυκοῖο θέσκεν
 οἴδματος, οὐδὲ θοοὺς βύβλεν πόδας, ἀλλ' ὅσον ἄκροις
 ἔχνεσι τετγόμενος διερεῖ πεφόρητο κελεύθῳ.
 185 Καὶ δ' ἄλλω δύο παῖδε Ποσειδάωνος ἔκοντο·
 ἦτοι ὁ μὲν πλοῖεθρον ἀγαυοῦ Μιλήτοιο
 νοσφισθεὶς ἘΡΓΙΝΟΣ, ὁ δ' Ἰμβρασίης ἔδος Ἥρης
 Παρθενίης ἈΓΚΑΙΟΣ ὑπέρβιος· ἴσθιρε δ' ἄμφω
 ἡμὲν ναυτιλῆς, ἡδ' ἄρεος εὐχετόωντο.
 190 Οἰνείδης δ' ἐπὶ τοῖσιν ἀφορμηθεὶς Καλυδῶνος
 ἀλκῆεις ΜΕΛΕΑΓΡΟΣ ἀνήλυθε, ΛΑΟΚΟΩΝ τε,
 Λαοκόων Οἰνῆος ἀδελφεὺς, οὐ μὲν ἴης γὰρ
 μητέρος. ἀλλὰ ἔειπεν ἄνθρωπος γυνὴ τέκε· τὸν μὲν ἄρ' Οἰνείδης
 ἤδη γηραλέον κοσμήτορα παῖδες ἰαχάν·

- 129 νεῖον αἶψ' Ἀρκαδῆς Λυγκήϊον Ἄργος ἀμείψας
τὴν ὁδὸν, ἥ ζῶν φέρε κάπριον, ὅς δ' ἐνὶ βήσση
φέρβετο Λαμπεῖς, Ἐρυμάνθιον ἀμμέγα τίφος·
τὸν μὲν ἐνὶ πρώτῃσι Μυκηναίων ἀγορῇσι
δεσμοῖς ἰδόμενον μεγάλων ἀπεθήκατο νώτων·
- 130 αὐτὸς δ' ἦ ἰότητι, παρέκ νόον Εὐρυσθέος,
ἄρμῃθι· σὺν καὶ οἱ Ἴλας κίην, ἱσθλὸς ἱππῶν,
πρωθήτης, ἰὼν τε φορεὺς, φύλακός τε βιοῖτο.
Τῷ δ' ἐπεὶ δὴ θείοιο κίην Δαναοῖο γενέθλη,
ΝΑΥΠΛΙΟΣ. ἥ γὰρ ἔην Κλυτονήου Ναυβολίδαο·
- 135 Ναύβολος αἶψ' Ἀέρον· Ἀέρον γε μὲν ἴδμεν ἔντα
Προΐτου Ναυπλιάδαο· Ποσειδάωνι δὲ κούρη
πρὶν ποτ' Ἀμυμώνῃ Δαναῖς τέκεν εὐνηθεῖσα
Ναύπλιον, ὅς περὶ πάντας ἱκαίνυτο ναυτιλίῃσιν.
ἸΔΜΩΝ δ' ὑστάτιος μετακίανεν, ὅσσοι ἔναιον
- 140 Ἄργος, ἐπεὶ δεδαῶς τὸν ἔον μόνον οἰωνοῖσιν
ἦε, μὴ οἱ δῆμος ἐκκλείης ἀγάσαιοτο.
Οὐ μὲν ὄγ' ἔην Ἀδαντος ἐτήτυμον, ἀλλὰ μιν αὐτὰς
γείνατο κυδαλίμοις ἐναρίθμιον Αἰολίδῃσι
Λητοῖδῃ· αὐτὰς δὲ θεοπροπίας ἐδίδαζεν,
145 οἰωνούς τ' ἀλίγειν, ἡδ' ἐμπυρα σήματ' ἰδέσθαι.
Καὶ μὴν Αἰτωλὶς κρατερὸν ΠΟΛΥΔΕΥΚΕΑ Λῆδῃ
ΚΑΣΤΟΡΑ τ' ὠκυπόδων ὤρσε δεδαημένον ἵππων
Σπάρτηθεν· τοῦ δ' ἦ γε δόμοις ἐνὶ Τυνδαρίοιο
τηλυγέτους ὠδῖνι μιῇ τέκεν· οὐδ' ἀπίθῃσε
- 150 νισσομένοις· Ζητὸς γὰρ ἐπ' ἄξια μῆδετο λέκτρων.
Οἱ τ' Ἀφαρητιάδαι ΛΙΓΚΕΤΣ καὶ ὑπέρβιος ἸΔΑΣ
Ἀρήνηθεν ἔβαν, μεγάλη περιθαρσέες ἀλκῇ
ἀμφοτέρω· Λυγκεὺς δὲ καὶ ὀξυτάτοις ἐκέκαστο
ὄμμασιν, εἰ ἐτεόν γε πέλει κλέος, ἀνέρα κείνον
- 155 ἐηίδως καὶ νέρθε κατὰ χθονὸς ἀνγάζεσθαι.
Σὺν δὲ ΠΕΡΙΚΑΤΜΕΝΟΣ Νηληΐος ὤρτο νέεσθαι,
πρεσβύτατος παίδων, ὅσσοι Πύλῳ ἐξεγένοντο
Νηλῆος θείοιο· Ποσειδάων δὲ οἱ ἀλκὴν
δῶκεν ἀπειρεσίην, ἃδ' ὅττι κεν ἀρήσαιο

- 90 Τοῖσι δ' ἔπ' Αἰακίδαι μετεκίαθον · οὐ μὲν ἄμ' ἄμφω,
οὐδ' ὁμόθεν. νόσφι γὰρ ἀλευάμενοι κατένασθον
Αἰγίνης, ὅτε Φῶκον ἀδελφεὸν ἐξενάριζαν
ἄφραδι· ΤΕΛΑΜΩΝ μὲν ἐν Ἀττίδι νόσσατο νήσῳ ·
ΠΗΛΕΤΣ δὲ Φθίῃ ἐνὶ δάματα ναῖε λιασθεῖς.
- 95 Τοῖς δ' ἔπι Κεκροπίηθεν ὀρήϊος ἤλυθε ΒΟΥΤΗΣ,
παῖς ἀγαθοῦ Τελίοντος, ἑυμελὴς τε ΦΑΛΗΡΟΣ ·
"Ἄλκων μιν προΐηκε πατὴρ ἑός · οὐ μὲν ἔτ' ἄλλους
γῆραος ὕψας ἔχεν βιότοιο τε πηδεμονῆας ·
ἄλλ' ἃ ἐ, τηλόγετόν περ ὅμως καὶ μούνον ἕοντα,
100 πέμπεν, ἵνα θρασέεσσι μετακρέποι ἥρώεσσι.
Θησαῖα δ', ὅς περὶ πάντας Ἐρεχθεΐδας ἐνέκαστο,
Ταιναρίην ἀίδηλος ὑπὸ χθόνα δεσμός ἔρυκε,
Πειρίθῳ ἐσπόμενον κεινὴν ὁδόν. ἥ τέ κεν ἄμφω
ῥῆϊτερον καμᾶτοιο τέλος πάντεσσιν ἔθεντο.
- 105 ΤΙΦΤΣ δ' Ἀγνιάδης Σιφαῖα κάλλιπε δῆμον
Θεσπίων, ἱσθλὸς μὲν ὀρινόμενον προδαῖναι
κῦμ' ἁλὸς εὐρείης, ἱσθλὸς δ' ἀνέμοιο θυέλλαι
καὶ πλόον ἠελίῳ τε καὶ ἀστέρι τεκμήρασθαι.
Αὐτὴ μιν Τριτωνὶς ἀριστήων ἐς ὅμιλον
110 ὤρσεν Ἀθηναίῃ, μετὰ δ' ἤλυθεν ἐλδομένοισιν.
Αὐτὴ γὰρ καὶ νῆα θοὴν κάμε · σὺν δέ οἱ Ἄργεοι
τεῦξεν Ἀρεσφορίδης, κείνης ὑποδημοσύνησι.
τῷ καὶ πασάων προφερεστέρα ἐπλετο νηῶν,
ὅσσαι ὑπ' εἰρυσίῃσιν ἐπειρήσαντο θαλάσσης.
- 115 ΦΛΙΑΣ δ' αὖτ' ἐπὶ τοῖσιν Ἀραιθυρήθεν ἵκανον,
ἐνθ' ἀφνειὸς ἔναϊε Διωνύσοιο ἔκητι,
πατὴρ δ' ἐοῦ, πηγῇσιν ἐφέσθιος Ἀσσωποῖο.
Ἄργόθεν αὖ ΤΑΛΛΟΣ καὶ ἈΡΗΪΟΣ, ὅτε Βίαντος
ἤλυθον, ἰφθιμός τε ΛΕΩΔΟΚΟΣ, οὗς τέκε Πηρὸν
120 Νηληΐς · τῆς δ' ἄμφι δύνῃ ἐμόγησε βαρεῖαν
Αἰολίδης σθαθμαῖσιν ἐν Ἰφίκλοιο Μελάμπους.
Οὐδὲ μὲν οὐδὲ βίῃν κρατερόφρονος ἩΡΑΚΛΗΟΣ
πενθόμεθ' Αἰσονίδαο λιλαιομένου ἀθερίζαι.
ἄλλ' ἐπεὶ αἶε βάξιν ἀγειρομένων ἡρώων,

- 55 Μυρμιδόνος κόρη Φθίας τέκεν Εὐπολέμεια·
τὰ δ' αὖτ' ἐκγεγάτην Μενετηίδος Ἀντιανείρης.
Ἦλυθε δ' ἀφνειὴν προλιπὼν Γυρτῶνα ΚΟΡΩΝΟΣ
Καινείδης, ἐσθλὸς μὲν, ἐοῦ δ' οὐ πατρὸς ἀμείνων.
Καινέα γὰρ ζῶν περ ἐπικλείουσιν αἰετοί·
- 60 Κενταύροισιν ὀλέσθαι, ὅτε σφέας οἶος ἀπ' ἄλλων
ἦλυσ' ἀριστήων· οἳ δ' ἐμπαλιν ὀρυιζόμενοι
ὅτ' ἐμιν ἀβελῆναι προτέρω σθένον, οὔτε δαΐζει
ἀλλ' ἄρρηκτος, ἄκαμπτος ἐδύσατο νεῖδε γαίης,
θεινόμενος σιβαρῆσι καταγύθην ἐλάττησιν.
- 65 Ἦλυθε δ' αὖ ΜΟΨΟΣ Τιταρήσιος, ὃν περὶ πάντων
Λητοῖδης ἐδίδαξε θεοπροπίας οἰωνῶν·
ἦδε καὶ ΕΥΡΥΔΑΜΑΣ Κτιμένου παῖς· ἄλκι δὲ λίμνης
Ξυνιάδος Κτιμένην Δολοπηίδα ναιετάασκε.
Καὶ μὴν Ἀκτωρ υἱὰ ΜΕΝΟΙΤΙΩΝ ἐξ' Ὀπóντος
- 70 ὤρσεν, ἀριστήεσσι σὺν ἀνδράσιν ὄφρα νέοιτο.
Εἶκετο δ' ΕΥΡΥΤΤΙΩΝ τε, καὶ ἀλκήεις ἘΡΙΒΩΤΗΣ,
υἱες, ὁ μὲν Τελέντος, ὁ δ' Ἴρου Ἀχιορίδαο·
ἦτοι ὁ μὲν Τελέντος ἐυκλείης Ἐριβώτης,
Ἴρου δ' Εὐρυτίων. Σὺν καὶ τρίτος ἦκεν ΟἴΛΕΤΣ
- 75 ἔξοχος ἠγορήν, καὶ ἐπαΐζει μετόπισθεν
εὖ δεδαῶς δαίαισιν, ὅτε κλίνωσι φάλαγγας.
Αὐτὰρ ἀπ' Εὐβοίης ΚΑΝΘΟΣ κίε, τόν ῥα Κάνηθε
πέμπεν Ἀθαντιάδης λεληγμένον· οὐ μὲν ἔμειλλε
νασθήσειν Κήρινθον ὑπέρτοπος· αἶσα γὰρ ἦεν
- 80 αὐτὸν ὁμῶς, Μόψον τε δαήμονα μαντοσυνάων,
πλαγχθέντας Λιδύης ἐνὶ πείλοισι θηωθῆναι.
Ὅς οὐκ ἀνθρώποισι κακῶν μήκιστον ἱκαυρεῖν!
ὅππῃτε κῆκείνους Λιδύη ἐνὶ ταρχύσαντο,
τόσσον ἐκάς Κόλχων, ὅσσον τέ περ ἡλείοιο
- 85 μεσσηγὺς δύσιές τε καὶ ἀντολαὶ εἰσορόνται.
Τῷ δ' ἄρ' ἐπὶ ΚΑΤΤΙΟΣ τε καὶ ἸΦΙΤΟΣ ἠγερέθοντο,
Οἰχάλις ἐπίουροι, ἀπηνέος Εὐρύτου υἱες,
Εὐρύτου, ᾧ πόρε τόξον Ἐκηδύλος· οὐδ' ἀπόνηλε
δατίνης· αὐτῷ γὰρ ἐκὼν ἐρίδηνε δατῆρι.

20 Νῦν δ' ἂν ἐγὼ γενεὴν τε καὶ οὐνομα μυθήσαιμην
ἠρώων, δολιχῆς τε πόρους ἄλως, ὅσσα τ' ἔρεξαν
πλαζόμενοι· Μοῦσαι δ' ὑποφῆτορες εἶεν αἰοιδῆς.

Πρῶτά νυν ὈΡΦΗΟΣ μνησώμεθα, τὸν ῥά ποτ' αὐτῇ
Καλλιόπῃ Θρηϊκῇ φατίζεται εὐνηθεῖσα

25 Οἰάγρη σκοπιῆς Πιμπληΐδος ἄσχι τέκεσθαι.
Αὐτὰρ τὸν γ' ἐνέπουσιν ἀτειρίας οὔρεσι πέτρας
θίλξαι αἰοιδῶν ἐνοπῇ, ποταμῶν τε ῥέεθρα.
Φηγοὶ δ' ἀγριαῖδες, κείνης ἔτι σήματα μολπῆς,
ἀκλῆς Θρηϊκίας Ζώης ἐπὶ τηλεθώσας

30 ἐξείης σλιχώσιν ἐπήτορμαι, ἄς ὃ γ' ἐπιπρὸ
θελγομένας φόρμιγγι κατήγαγε Πιερίην.
Ὀρφέα μὲν δὴ τοῖον ἔων ἐπαρωγὸν ἀέθλων
Αἰσονίδης, Χείρωνός ἐφημοσύνησι πιθήτας,
δέξατο, Πιερίῃ Βιστωνίδι κυραλέοντα.

35 Ἦλυθε δ' ἈΣΤΕΡΙΩΝ αὐτοσχεδόν, ὃν ῥά Κομήτης
γέινυτο δινήεντος ἐφ' ὕδασι· Ἀπιδανόιο,
Πειρεσίας, ὅρεος Φυθιῆϊν ἀσχύδι, ναίων,
ἔνθα μὲν Ἀπιδανός τε μέγας, καὶ δῖος Ἐνιπεύς
ἄμφω συμφερόνται, ἀπόπροθι εἰς ἐν ἰόντες.

40 Λάρισσαν δ' ἐπὶ τοῖσι λιπῶν ΠΟΛΥΦΗΜΟΣ ἔκκινε
Εἰλατιδῆς, ὅς πρην μὲν ἐρεθιστέων Λαπιθάων,
ὅπποτε Κενταύροις Λαπίθαι ἐπεθωρήσσοντο,
ὀπλότερος πολέμιζε· τότε αὖ βαρύνθεσκέ οἱ ἤδη
γυῖα, μένεν δ' ἔτι θυμὸς ἀρήϊος, ὡς τοπαῖρος περ.

45 Οὐδὲ μὲν ἸΦΙΚΛΟΣ Φυλακῇ ἐνὶ δηρὸν ἔλειπτο,
μήτρως Αἰσονίδαο· κασιγνήτην γὰρ ἔπειεν
Αἴσων Ἀλκιμέδην Φυλακῆϊδα· τῆς μιν ἀνώγει
πηροσύνη καὶ κῆδος ἐνικρινθῆναι ὁμίλῳ.

Οὐδὲ Φεραῖς ἈΔΜΗΤΟΣ ἐυρήνεσσιν ἀνάσσει
50 μέμνεν ὑπὸ σκοπιῇ ὅρεος Χαλκωδονίοιο.

Οὐδ' Ἀλόπη μέμνον πολυλήϊοι Ἑρμείω
νῖεες, εὖ δεδαῶτε δόλους, ἙΡΥΤΟΣ καὶ ἘΧΙΩΝ.
Τοῖσι δ' ἐπὶ τρίτατος γνωτὸς κίε νισσομένοισιν
ΑἰΘΑΛΙΑΗΣ· καὶ τὸν μὲν ἐπ' Ἀμφρυσοῖσιν ῥέῃσι

ΑΠΟΛΛΩΝΙΟΥ ΑΡΓΟΝΑΥΤΙΚΩΝ

BIBΛION A.

Ἀρχόμενος σέο, Φοῖβε, παλαιγενέων κλέα Φωτῶν
μνήσομαι, οἱ Πόντοιο κατὰ στόμα, καὶ διὰ πέτρας
Κυανέας, βασιλῆος ἐφημοσύνη Πελίας,
χρύσειον μετὰ κῶας ἐνζυγον ἤλασαν Ἀργῶ.

- 5 Τοίην γάρ Πελὶς Φάτιν ἔκλυεν, ὥς μιν ὀπίσσω
μοῖρα μένει στυγερή, τοῦδ' ἀνέρος, ὄντιν' ἴδοιτο
δημόθεν οἰοπέδιλον, ὑπ' ἐννεσίῃσι δαμῆναι.
Δηρὸν δ' οὐ μετέπειρα τοίην κατὰ βάζιν ἸΗΣΩΝ,
χειμερίοιο ῥέεθρα κιὼν διὰ πησσὶν Ἀναύρου,
10 ἄλλο μὲν ἐξεσάωσεν ὑπ' ἱλύος, ἄλλο δ' ἐνερθε
κάλλιπεν αὐθι πίδιλον ἐνισχόμενον προχαῆσιν.
Ἰκετο δ' εἰς Πελίην αὐτοσχιδόν, ἀντιβολήσων
εἰλαπίνης, ἣν πατρὶ Ποσειδάωνι καὶ ἄλλοις
ῥέζε θεοῖς, Ἥρης δὲ Πελασγίδος οὐκ ἀλέγιζεν.
15 Αἴψα δὲ τὸν γ' ἐσιδὼν ἐφράσσατο, καὶ οἱ ἄεθλον
ἔντυε ναυτιλίας πολυκηδέος, ὅφρ' ἐνὶ πόντῳ
ἥε κεν ἄλλοδαποῖσι μετ' ἀνδράσι νόστον ὀλέσση.
Νῆα μὲν οὖν οἱ πρόσθεν ἐπικλείουσιν αἰοῖδοι
Ἄργον Ἀθηναίης, καμέειν ὑποδημοσύνησι.

εἰ Φήσειαν πρὸς Ἀθάμαντα, ὡς εἰ μὴ ἀναιριθεῖη τὰ τέκνα,
τὰ ἐκ τῆς προτέρας γυναικὸς αὐτῷ γεγονότα, Φρίξος καὶ
Εἰλη, οὐκ ἂν ἐκφύσειεν ἡ γῆ τοὺς καρπούς. Πεισθέντες δὲ
οἱ μάντιες λέγουσι ταῦτα ὑποστρέψαντες τῷ Ἀθάμαντι.
Μεθόντων δὲ τῶν παίδων τῆς Νεφέλης, Φρίξου καὶ Εἰλης,
φονεύεσθαι, κριὺς ἀπήλγειλεν αὐτοῖς τὸν ἐπηρτημένον κίνδυνον·
εἶτα ἐπὶ τῶν νώτων λαβὼν εἰσεῖσιν εἰς τὴν θάλασσαν, καὶ
νηχόμενος ἔφερεν αὐτούς. Ἐλθὼν δὲ εἰς τὸ Τρωϊκὸν πέλαγος,
ἀποβάλλει τὴν Εἰλην· ὅθεν καὶ ἀπ' αὐτῆς Ἑλλήσκοντες
ὠνομάσθη. Τὸν δὲ Φρίξον ἐπὶ τὴν Σκυθίαν διακομίζει, ἔνθα
αὐτὸς σφάζει μὲν τὸν κριόν, καὶ δύνει Φυξίῳ Διί, ὅτι ἐξέφυγε
τὴν ἐπιβουλὴν τῆς μητρυιᾶς. Γαμει δὲ Χαλκιόπην τὴν
θυγατέρα Αἰήτου, τοῦ Σκυθῶν βασιλέως, ἀδελφὴν δὲ Μη-
δείας, καὶ ποιεῖ ἐξ αὐτῆς παῖδας τέσσαρας, Ἄργον, Κυτίσ-
σωρον, Μίλανα, Φρόντιν, καὶ οὕτως ἐκαῖσε τελευτᾷ.

μεθέξων καὶ αὐτὸς τῆς τοῦ πατρὸς βασιλείας. Γινόμενος δὲ ἐν τῷ Ἀναύρῳ ποταμῷ (ἔστι δὲ οὗτος Θεσσαλίας) καὶ βουλό-
μενος παρελθεῖν, εὕρισκε ἐπὶ τῆς ὄχθης τὴν Ἥραν, γρατ̃
ὁμοιωθεῖσαν, διαπεράσαι μὲν βουλομένην, φοβουμένην δὲ
καὶ ἐστῶσαν. Λαβὼν δὲ αὐτὴν ὁ Ἰάσων ἐπὶ τῶν ὤμων, δια-
σώζει, κατὰ μέσον τοῦ ποταμοῦ τὸ ἐν πέδιλον καταλιπὼν
ἐπὶ τοῦ πηλοῦ. Εἶτα ἀπέρχεται εἰς τὴν πόλιν μονοπέδιλος,
καὶ εὕρισκε πανήγυριν δημοσίαν, καὶ θυσίαν ἀγομένην τοῖς
θεοῖς παρὰ Πελίου. Θεασάμενος οὖν τὸν Ἰάσωνα μονοπέδιλον
ἰ Πελίας, ὑπομιμνήσκειται τοῦ χρησμοῦ· εὐλαβοῦμενος δὲ
αὐτὸν ἀνελεῖν, ἄθλον αὐτῷ προστάσσει τοιοῦτον, εἰπὼν, ὅτι
ἀπὸ τῶν εἰς τὴν Σκυθίαν, τὸ χρυσόμαλλον δέρας κόμισσον,
καὶ λήψῃ τὴν βασιλείαν τοῦ σοῦ πατρός. Τοῦτο δὲ προσέ-
ταττεν, οὐχ ὡς κωδίου τοῦ χρυσοῦ δεόμενος, ἀλλ' οἶόμενος
αὐτὸν ἐν τῇ ἀλλοδαπῇ ἀναιρεθήσεσθαι ὑπὸ τινος, ἢ ἐν τῇ
θαλάσῃ ναυαγήσειν. Τὸ δὲ κατὰ τὸ χρυσόμαλλον δέρας
ὥδε πως ἔχει·

Ἄθάμας, υἱὸς Αἰόλου, ἀδελφὸς Κρηθεύς, ὡς αὐτὸς φησιν
Ἀπολλώνιος, (III. 360.)

Ἄμφω γάρ Κρηθεὺς Ἀθάμας τ' ἔσαν Αἰόλου υἱε,
ποιεῖ ἐκ Νεφέλης δύο παῖδας, Φρίξον καὶ Ἑλῆν. Τελευτη-
σάσης δὲ αὐτῆς γαμεῖ δευτέραν γυναῖκα, τὴν Ἰνώ. Αὕτη δὲ,
ὡς μητρυιὰ, ἐπεβούλευσε τοῖς παισὶ τοῖς ἐκ τῆς προτέρας
γυναικὸς, καὶ φρύττουσα τὰ σπέρματα παρεῖχε τοῖς γεωργοῖς
πρὸς σπόρον. Οἱ δὲ ἔσπειρον μὲν ἐν τῇ γῇ· ἢ δὲ γῇ λαβοῦσα,
οὐκ ἐδίδον τοὺς ἐτησίους καρπούς, διὰ τὸ πεφύχθαι τὴν
σπόρον. Ἀθάμας οὖν ὡς βασιλεὺς συναγαγὼν τοὺς μάντις,
ἠρώτα αὐτοὺς, μαθεῖν βουλόμενος τὴν αἰτίαν τῆς ἀφορίας.
Ἡ δὲ Ἰνώ πέμπει πρὸς αὐτοὺς, δῶρα ἱππασκελμένη δώσειν,

ποιήματα, εἴτα ἐπιδειξάμενος, σφόδρα εὐδοκίμησεν, ὥς καὶ τῆς Ῥοδίων ἀξιοθῆναι πολιτείας καὶ τιμῆς. Τινὲς δὲ φασὶν, ὅτι ἐπανῆλθεν ἐς Ἀλεξανδρείαν, καὶ αὖτις ἐπιδειξάμενος, εἰς ἄκρον εὐδοκίμησεν, ὥς καὶ τῶν βιβλιοθηκῶν τοῦ Μουσείου ἀξιοθῆναι αὐτὸν, καὶ ταφῆναι δὲ σὺν αὐτῷ τῷ Καλλιμάχῳ, τῷ διδασκάλῳ αὐτοῦ.

Ἐκ τῶν σοῖδα.

Ἀπολλώνιος Ἀλεξανδρεὺς, ἐπὶ ποιητῆς, διατρίψας ἐν Ῥόδῳ, υἱὸς Σιππείως, μαθητῆς Καλλιμάχου, σύγχρονος Ἐρατοσθένους καὶ Εὐφορίωνος καὶ Τιμαρχοῦ, ἐπὶ Πτολεμαίου τοῦ Εὐεργέτου ἐπικληθέντος, καὶ διάδοχος Ἐρατοσθένους γενόμενος ἐν τῇ προστασίᾳ τῆς ἐν Ἀλεξανδρείᾳ βιβλιοθήκης.

ὑποθέσεις τῶν Ἀργοναυτικῶν.

Τυρῶ, ἡ Σαλμανίως θυγάτηρ, ἔτικεν ἐκ Ποσειδῶνος Νηλεῖα καὶ Πελίαν· εἴτα γαμεῖται Κρηθεὶ τῷ Αἰόλου παιδί, καὶ τίκτει ἐξ αὐτοῦ Αἴσωνα, Φέρητα, Ἀμυθάνον. καὶ γίνεται ἐκ μὲν Αἴσωνος Ἰάσων· ἐκ δὲ Φέρητος Ἀδμητος· ἀπὸ δὲ Ἀμυθάνου Μελάμπους. Καὶ ὁ μὲν Ἰάσων ἐκδίδοται Χείρωνι, τρέφεσθαι, καὶ τὴν ἰατρικὴν μάθάνειν, Αἴσωνος τοῦ πατρὸς αὐτοῦ τὴν βασιλείαν τῷ ἰδίῳ ἀδελφῷ Πελίᾳ καταλιπόντος, καὶ κρατεῖν τῆς Θεσσαλίας κελεύσαντος, ἕως ἂν ὑποστραφῇ ὁ Ἰάσων ἀπὸ Χείρωνος. Χρησμὸν δὲ ἦν εἰληφῆς παρὰ τοῦ Ἀπόλλωνος ὁ Πελίας, φυλάττεσθαι τὸν ἐπιόντα πρὸς αὐτὸν μονοπέδιλον· τεθνήξεσθαι γὰρ δι' αὐτόν. Οἱ δὲ Ἰάσων αὐξήσει· ἔρχεται πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς τοῦ πατρὸς.

ΓΕΝΟΣ ἈΠΟΛΛΩΝΙΟΥ.

Ἀπολλώνιος, ὁ τῶν Ἀργοναυτικῶν ποιητής, τὸ μὲν γένος ἦν Ἀλεξανδρεὺς, υἱὸς δὲ Σιλλέως, ὡς δὲ τινες, Ἰλλέως, Φυλῆς Πτολεμαΐδος. Ἐγένετο δὲ ἐπὶ Πτολεμαίου τοῦ Εὐεργέτου, Καλλιμάχου μαθητής. Τοῦτον λέγεται ἔτι ἐφησον ὄντα ἐπιδείξασθαι τὰ Ἀργοναυτικά, καὶ κατεγνώσθαι· μὴ φέροντα δὲ τὴν αἰσχύνην τῶν πολιτῶν, καὶ τὸ ὄνειδος, καὶ τὴν δικεβολήν τῶν ἄλλων ποιητῶν, καταλιπεῖν τὴν πατρίδα, καὶ μετακληθέναι εἰς Ῥόδον· καὶ αὐτὰ ἐπιξέσσαντα διαρθῶσαι, καὶ οὕτως ἐπιδείξασθαι καὶ ὑπερευδοκιμῆσαι. Διὸ καὶ Ῥόδιον αὐτὸν ἐν τοῖς ποιήμασιν ἀναγράφει· ἐπαίδευσέ τε λαμπρῶς ἐν αὐτῇ, καὶ τῆς Ῥοδίων πολιτείας καὶ τιμῆς ἡξιώθη.

Ἀ Λ Λ Ω Σ.

Ἀπολλώνιος, ὁ ποιητής, τὸ μὲν γένος ἦν Ἀλεξανδρεὺς, πατὴρ δὲ Σιλλέως, ἢ Ἰλλέως, μητὴρ δὲ Ῥόδης. Οὗτος ἐμαθήτευσεν Καλλιμάχῳ ἐν Ἀλεξανδρείᾳ ὄντι γραμματικῷ, καὶ συντάξας ταῦτα τὰ ποιήματα ἐπεδείξατο. Σφόδρα δὲ ἀποτυχὼν καὶ ἐρυθριάσας παρεγένετο ἐν τῇ Ῥόδῳ, καὶ ἐπολιτεύσατο, καὶ σοφιστεύει ρητορικοὺς λόγους· ὅθεν καὶ Ῥόδιον αὐτὸν ἀπεκάλεσαν. Ἐνταῦθα τοίνυν διάγων, καὶ ἐπιξίσας αὐτοῦ τὰ

Hoelzlino et Brubachio, curatis, tres priores mihi in primis magno usui fuerunt.

Quae nos in textu mutavimus, haec sunt. Lib. I. v. 1188, ubi *ἐτάροις δῖς εὖ* durum est, nos, Nostrium sequentes, qui *ἐτάροισιν εὖ ἐπ.* habet, *ἐτάροισιν ἐοῖς ἐπ.* reposuimus; nam illud *εὖ* superfluum videtur. V. 1207. Pro *χαλκήσι*, quod Noster habet, metri causa, *χαλκήσιν* recepi. Lib. II. V. 842. ubi Noster legit *ἐνεπι*, recepi *ἐπι*, quod cum *θαλέει* coniungo. Lib. III. V. 77. *ἐνθ'* ex *ἐνθεν*. V. 686. *περαιτέρω* propter sensum. Lib. IIII. V. 269. *εὐρύθοος*. V. 1228. *τότε*. — Doctorum virorum coniecturis semper fere lectionem Codicis, et huius et Homeri formas aliis praetuli. De lectionibus e Codice in textum a nobis receptis, quas in fine subieci crucisque signo notavi, quisque studiorum iudex ipse iudicet.

Errores typographicos, in accentibus et spiritibus plerumque preli vitio commissos, Legentes humaniter corrigant. Equidem et me et bibliopolam omnia fecisse, ut adolescentibus prosimus, sancte protestor. Scripsi Brunsvigae III. Cal. Sextil. MDCCCVI.

At bene scribit Noster *Ἐριχθίδας* Lib. I. V. 101. *Ὀρείδης*. V. 190. *πανσυδῆ*. V. 323. *περιβρῆδης*. V. 431. *ὑποδδείσας*. Lib. III. v. 435. etc. Quae enim orthographia et metricae respondet et antiqua esse videtur. Qua re hanc Codicis rationem semper sum secutus.

Augmentum, more Jonum, Noster plerumque omittit; et hanc rationem retinuimus. E. g. Lib. I. V. 42. *ἐπιθωρήσσοντο*. V. 389. *κῆκιε*. V. 1074. *διαζώεσκον*. etc. Vid. Var. Lectt.

Saepius Noster formas Atticas habet E. g. Lib. I. V. 5. *Πελίας*. V. 14. *Ἥρας*. V. 257. *Δειλός*. V. 285. *λελείψομαι*. Lib. II. V. 441. *πάρει*, etc. Quod quidem, Alexandrinis multum cum Atheniensibus versantibus, haud a vero aberrare videtur, inprimis si consideres, Apollonium apud Rhodios vixisse. —

Praeter hunc Codicem et duobus aliis, Gottin-
gensi et Mediceo, quos ad Stephani editionem *Em-
perius* Noster, V. C. contulerat, et, qua est benevo-
lencia, humaniter mecum communicaverat, usus sum.
Pauca tamen, multis iam ex hisce Codicibus a Brunkio
in textum receptis, inde summenda mihi supererant.
E. g. Lib. I. V. 665. *μητίσσεται* Cf. II. III, 416.
V. 764. *ἔοικε*. V. 799. *Θρηϊκίης* ad *ἀΰοισι* ref. etc.

Ex editionibus a Brunkio, Beckio, Stephano,

Brunkius, qui collationes Codicum, Medicei et Guelpherbytani, a Chr. G. Heyne, V. C. acceperat, in fine praefationis suae subiicit: „Huius (Guelph. Cod.) selectas lectiones iam vulgaverat Jo. Piersonus. Aliquanto melior esset haec editio, si collationes illae citius ad me pervenissent; nam bonas aliquot lectiones in iis reperi, quae mihi aliunde non innotuerunt.“

Piersoni et Brunkii commotus iudicio, accuratam Guelpherbytani Codicis cum Brunkiana editione collationem ita denuo institui, ut, qui hanc et Brunkii textum habeat, Codicem hunc plane cognoscere possit. Qua re omnes eius variantes, vel minutissimas, lectiones ad calcem subiecimus. Pauca tantum de Codice addam. — Rei metricae auctor eius haud gnarus fuisse videtur. Saepius enim et voces et versus desunt; saepius voces vel syllabae redundant et contra metricae leges scribuntur; e. g. Lib. I. V. 332. ἐφοπλισασθαι. V. 995. ἔβαλον. V. 1037. ἔκτοσθεν. V. 1197. λάβε. V. 1209. ἀφυσάμενος. V. 1210. ἐπαρτίσειεν. V. 1226. ὄσσαι. V. 1227 et 1244. ἀπόπροσθεν. V. 1232. βάλε. V. 1247. κάμνησιν. V. 1305. ἀμφιβρύτη. Lib. II. V. 67. ἰμάσσι. V. 333. τέμνεσθ'. V. 394. φύλλα. V. 672. εἰσελάσαντες. V. 682. αὐγάσασθαι. V. 794. ἐβάλλοντο. V. 1040. ἐξείρυσε etc.

taceam — poenās scelere dignas describens, ad formando adolescentulorum animos et mores aptior est. — Quae res mihi in legendis cum pueris scriptoribus haud parva videtur:

Τροφαί θ' αἱ παιδευόμεναι
Μέγα φέρουσ' εἰς ἀρετάν.

Nostra tempora, quae opus sunt, si videre et sapere velimus, optime docent. — Ἐὰν δὲ τὸ ἄλλας μαρτυρῇ, ἐν τίνι ἀλίσθησεται; — Alia educatio et alii mores, ex sapientiae praescripto instituti, nos in veterem libertatem ac dignitatem vindicabunt. — Educatoris praeceptorisque intelligentis hoc esse, haud temere arbitramur. —

Nunc de nostrae editionis ratione pauca adiiciam. Primum Codice Guelpherbytano, humanitate *Langeri*, V.C. uti mihi licuit. Qui Codex est membranaceus, in forma quarta, ut vocant, seculi *) undecimi, et continet non multas quidem, sed nonnullas tamen minime spernendas lectiones; quae sunt verba Piersoni, *Verisimil.* p. 197, qui eius collationem a Jo. Aug. Ernesti acceperat.

*) At Brunsius, *Academiae Helmstadiensis Decus*, inspecto apud me hoc Codice, eum seculi decimi tertii aut quarti esse, iudicavit. — *Recre.* Cf. *Montfauc. Palaeograph. Graec.* p. 324 ubi exemplum a. 1336, iisdem literis scriptum, adducitur.

similitudines cum aptas rei, tum loco usurpatas; ea denique descripta, quae prae caeteris digna essent. Modo paulo plus ingenii ad varietatem, ubertatis ad copiam, facilitatisque ad suavitatem ei contigisset, nec ubique studium exquisitae et subtilis scientiae literarum Graecarum eluceret! Nam profecto, Homerum legens, delectari tibi videre; Apollonium tractans, severe literis operam navare. —

Quod attinet ad id, quod autumat Vir eximiae doctrinae et sinceri subtilisque iudicii; Homerum Apollonio faciliorem esse, hoc minime inficiandum arbitror. At eodem iure, experientia, quam feci in filio meo, vix decem et tres annos nato, edoctus, Apollonium pueris, ne dum adolescentibus, legendum, et, si historiam et tempus respicis, merito Argonauticorum scriptorem Homero antecedere debere, iudico. Multa enim narrat Apollonius, quae Homerum illustrare possunt, et tenerae mentes non modo quae diserta, sed vel magis quae honesta sunt, discant. In Homero *ius* *) *fortioris* ubique commendatur; Apollonius, — ut de Euripide aliisque

*) Cf. *Plato Polit. Lib. X. p. 605. seqq. Philostorg. (H. Eccl. Lib. II, 5.)* qui Ulphilae de libris Regg. Jud. iudicium profert. *Plutarch. in vita Alex. M.* qui, Achille duce, hoc propositum tenuit, et in eo ad extremum usque permansit.

PRAEFATIO.

Apollonius Rhodius dignus sane est, quem omnes, Graecae linguae studiosi, in manibus habeant adolescentuli. At editiones, quae suppetunt — ad quas quidem Brunkiana, quam in librariis frustra quaeris, referenda non est — tanti venduntur, quanti plerique eas emere non possunt. Quare edendi huius Poëtae publico me iuventutis bono suscepisse consilium, facile quisque intelliget, qui eiusmodi laborem ipse tentavit atque expertus est. Quam vellem, ut hac editione, quae parvo parabilis est, studium legendi Apollonii incenderem! Optime de Poëta nostro Longini editor, Morus, (p. 186. in *Animadverss.* Lips. edit. 1769.) iudicat. Si quis, inquit, sumere carminis legendi operam velit, is secundum naturam institutum reperiet (nam situs locorum et iter ordinem reddidit necessarium); episodica plane e re et occasione itineris nata, ut vix digressionis speciem habeant; praecise (vere enim hoc verbo uti possum) et probabiliter rem quamlibet narratam; in ipsis fabulis et παραδόξοις semper opinionem eius aetatis παράδοξον conservatam; mores verosimiliter expressos;

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

LIBRARY

LIBRARY

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

LIBRARY

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

LIBRARY

LIBRARY

Bayerische
Staatsbibliothek
München

LIBRARY

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

LIBRARY

ΑΠΟΛΛΩΝΙΟΥ ΤΟΥ ΡΟΔΙΟΥ

ΑΡΓΟΝΑΥΤΙΚΩΝ ΒΙΒΛΙΑ Δ.

APOLLONII RHODII

ARGONAUTICORUM LIBROS QUATUOR

EX

OPTIMORUM EXEMPLARIUM GUELPHERBYTANIQUE
CODICIS FIDE

IN USUM

SCHOLARUM ET ACADEMIARUM

RECENSUIT

LUDOVICUS HÖRSTEL

SEREN. DUC. BRUNOVIC. PROF. PHILOS. DOCT.

ET SOCIET. DUC. LATIN. ILNENS. SOC. HONOR.

ACCEDIT CODICIS GUELPHERBYTANI CUM BRUNKIANA EDITIONE
ACCURATA COLLATIO.

BRUNSVIGAE

APUD CAROLUM REICHARD, BIBLIOPOLAM,
MDCCCVI.

gr. a. 307^m

Apollonius

A. Gr. a.

30²/₃^m